※ श्रीराधे ※

श्री राधारसिक मण्डल का 13 वां पुष्प

श्री हंस वंश यश सागर

सम्पादक व संकलनकर्ता

बाबा श्री लाडिलीदास जी महाराज

★

प्रकाशक

श्री कन्हैयालाल साबू चैरिटेबिल ट्रस्ट

❋ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ❋

वृन्दावनकलानाथौ हृदयानन्दवर्द्धनौ ।
सुखदौ राधिकाकृष्णौ भजेऽहं कुञ्जगामिनौ ॥

रसिक-सर्वस्व श्रीयुगलकिशोर

प्रकाशक :
श्री कन्हैयालाल साबू चं० ट्रस्ट
जोधपुर

संस्करण :
प्रथम—१००० प्रतियां

न्यौछावर : पच्चीस रुपया

मुद्रक :
श्रीहरिनाम प्रेस,
हरिनाम पथ, वृन्दावन
फोन : ४१५

प्रस्तुत ग्रन्थ-प्रकाशन में सहयोगी
सज्जनों की नामावली —

* श्रीजगदीशदास राठौर
(युगल सखी)
राईधना (मारवाड़)
* श्रीयमुनासूरदास
(कला मंजरी) मीठरी
* पण्डित गंगादत्त शास्त्री
कथावाचक
करौली
* मुखिया श्रीरूपकिशोरदास जी
चैनबिहारी कुञ्ज, ज्ञान गुदड़ी
वृन्दावन
* कुञ्जबिहारीशरण मोदी
जयपुर

प्राप्ति-स्थान --

* बाबा लाडिलीदास जी
श्रीराधा रसिक मण्डल
जयपुर मन्दिर, वृन्दावन (मथुरा)
* श्री जी की बड़ी कुञ्ज,
प्रताप बाजार, वृन्दावन
* श्री राधेश्याम गुप्ता, बुकसेलर
ब्रजवासी पुस्तकालय,
पुराना शहर—वृन्दावन
* कुञ्जबिहारीशरण मोदी
मोदी भवन, खेजड़ों का रास्ता
जयपुर

❋ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ❋

वृन्दावनकलानाथौ हृदयानन्दवर्द्धनौ ।
युवतौ राधिकाकृष्णौ भजेऽहं कुञ्जगामिनौ ॥

रसिक-सर्वस्व श्रीयुगलकिशोर

श्री आचार्य जयन्ती क्यों ?

वैद्यनाथ झा राष्ट्रपति पुरस्कृत आचार्य, श्रीनिम्बार्क सं० म० विद्यालय वृन्दावन

नमो गुरुभ्यः पूर्वेभ्यः सनकादिभ्य आदरात् ।
यत्कृपालेश मात्रेण युग्मतत्त्वं हि लभ्यते ॥१॥

राधाकृष्णगुणग्राम गान व्यासक्तमानसम् ।
आबालकृष्णरसिकं गुरुं नौमि भगीरथम् ॥२॥

वृन्दावन समार्पनि मदीयेऽहैतुकी कृपा ।
मदीया तं गुरु नौमि कृष्ण भक्तं भगीरथम् ॥३॥

वृन्दावने केशिघट्टे मन्त्रराजप्रदेशसम् ।
आबाल कृष्ण रसिके गुरुं वन्दे भगीरथम् ॥४॥

वंशीवटे हरेर्धाम्नि युग्ममन्त्र प्रदे गुरुम् ।
आबाल कृष्ण रसिके गुरुं वन्दे भगीरथम् ॥५॥

विदेह देशालंकारे विदेह पथगामिनम् ।
आबाल कृष्ण रसिके गुरुं वन्दे भगीरथम् ॥६॥

भारतीय सनातन संस्कृतिके मान्यताके अनुसार मानव जीवनका परम लक्ष्य भगवत् प्राप्ति या अपवर्ग है। परन्तु यह आध्यात्मिक दृष्टिका सामान्य सिद्धान्त है, क्योंकि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-पुरुषार्थोंमें मोक्ष ही परम पुरुषार्थ माना गया है। किंतु जीवनका चरमोत्कर्ष तथा सर्वातिशायी लाभ सर्वोपरि वृन्दावन धामके अनुराग रस रञ्जित रसमय मोहन महल के राजा-रानी असमोर्ध्व मधुर प्रियाप्रियतम श्यामा श्यामके असमोर्ध्व सौन्दर्य माधुर्य, असमोर्ध्व लावण्य, असमोर्ध्व सौकुमार्य असमोर्ध्व औदार्य तथा असमोर्ध्व रसविलासके अखण्ड दर्शनकी सौभाग्या-वाप्ति एवं असमोर्ध्व करुण उक्त युगलकिशोर की अन्तरंग सेवाका लाभ ही है। जैसाकि रसिक शेखर राधासुधानिधिकार महाप्रभुका मधुर मनोरथ है—

विचिन्वन्ती केशान् क्वचन करजैः कञ्चुकपटम्,
क्वचाप्यामुञ्चन्ती कुचकनक दीव्यत्कलशयोः।
सुगुल्फे न्यस्यन्ती क्वचन मणिमञ्जीरयुगलम्,
कदा स्यां श्रीराधे तव सुपरिचारिण्यहमहो ॥१॥

इससे उत्कृष्ट कोई लाभ नहीं, कोई फल नहीं—"अक्षण्वतां फलमिदं न परं विदः ॥" (भागवत) यह लाभ इतर राग विस्मारक है। इसके आगे किसी अन्यका—जातिका, धर्मका,

सिद्धान्तका, सम्प्रदायका, विधिनिषेधका–सबका राग मिट जाता –सबका आकर्षण नष्ट हो जाता है। यह वह रस है, जिसके साक्षात्कारके बाद अन्य किसी भी सुखके देखने, सुनने तथा पानेकी इच्छा ही नहीं होती। यह भूमा रस व सुख है—जैसा कि आद्याचार्य भगवान् निम्बार्क ने कहा—"परमाचार्यः श्रीकुमारैः रसमद्गुरवे श्रीमन्नारदाय उपदिष्ट भूमा प्राणो न भवति किन्तु श्रीपुरुषोत्तमः॥ (ब्र०सू०)

इस असमोर्ध्व रस तथा रस विलासका दर्शन, आस्वादन सखीभाव भावितान्तःकरण बड़भागी जीवको गुरु प्रदत्त अष्टादशाक्षर मन्त्रराज के माध्यमसे अखण्ड युगलभावनाके द्वारा ही सम्भव है। जैसा कि गो० तापिनीका वचन है—तं रसेत् तं यजेत् कि पुत्रस्तस्य रसनम्—कामादि कृष्णायेत्यकम्' इत्यादि। सम्प्रदायमें युगल रस माधुरीके अनुभवका मन्त्रराजके माध्यमसे सखीभाव-भावनाके द्वारा ही पूर्वाचार्योंका अनुविधान है। मन्त्रराज में युगल भावना, रसभावना तथा नित्यविहारका चिन्तन है। क्योंकि मन्त्रराजके बीजमें 'क' से साक्षान्मन्मथ श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण तथा 'ई' से वृन्दावनेश्वरी श्रीराधा, 'ल' से युगलका असमोर्ध्व अनन्यात्मक प्रेमसुख तथा चन्द्रबिन्दु से युगल विलास (चुम्बन, आलिंगन आदि) की भावना करनेकी पूर्वाचार्योंकी अनुज्ञा है—'जैसा कि 'ककारो नायकः कृष्णः इत्यादि मन्त्रोंमें कहा गया है। सम्प्रदाय में मन्त्रका साङ्ग, समुद्र, सन्यास, तथा सपरिकर जपनेका विधान है। मन्त्रमें पञ्चांग की भावना परमावश्यक माना गया है। पञ्चांगं जपन् ब्रह्म सम्पद्यते ब्रह्म सम्पद्यते (गो०ता०) मन्त्र पञ्चांग-जपाङ्गत्वेन, मन्त्रावयवत्वेन, समर्पणाङ्गत्वेन, तथा मन्त्रार्थानुशीलनत्वेन आचार्योंने बहुधा प्रतिपादित किये हैं। चतुर्थ मन्त्रार्थानुशीलन रूप पञ्चांगमें भी अन्तरंग, अन्तरंगतर तथा अन्तरंगतम तीन पञ्चांग माने गए हैं। अन्तरंग तथा अन्तरंगतर पञ्चाङ्गोंमें युगलका ऐश्वर्य चिन्तन है—उदाहरणार्थ इस भावनामें श्रीकृष्णके अशेष अवतारों–(पुरुषावतार, गुणावतार तथा लीलावतार) के अवतारी तथा प्रकृति, पुरुष एवं कालके नियामक रूपमें चिन्तनकी भावना है। अन्तरंग तम पञ्चाङ्गमें श्रीयुगल के असमोर्ध्व सौन्दर्यमाधुर्य, असमोर्ध्व विलास, असमोर्ध्व औदार्य, युगलके प्रति सख्यभाव, (मधुरभाव) तथा आत्मा आत्मीय आदि सर्व समर्पण की भावनाका चिन्तन होता है। श्रीसनकादि, नारद तथा नियमानन्द हमारे पूज्य आद्याचार्योंमें माने गए हैं। श्रीसनक, नारद-नियमानन्द प्रवर्तित रसोपासना नित्य बिहार उपासनाका बीज मन्त्रराज ही तथापि बीज ही है। बीज प्रणवात्मक है—प्रणव से कहीं अत्यधिक रससम्पत्ति कामबीजमें निहित है। उक्त आचार्य त्रितयकी मान्यताओंमें नित्यविहार उपासना—रस उपासना सखीभाव उपासना, सर्वातिशायी उपासना है सर्वोपरि उपासना है परम सुखदायी परमाह्लादिनी उपासना है क्योंकि यह परम-ह्लादिनी की उपासना है उक्त आचार्य त्रय, जिन्हें सम्प्रदायमें भगवान् शब्दमें ही पुकारनेकी प्रथा है, वे—इस उपासनाका बड़ा महत्त्व बताते हैं—बड़े विस्तारसे अपने-अपने ग्रन्थोंमें संस्कृत भाषाके माध्यमसे प्रतिपादन किया है–(परन्तु इन ग्रन्थोंमें वर्णित उक्त उपासना वर्तमान में यत्र तत्र वर्ण्यमान भावना से विपरीत दिखाई देती है जिसे समीक्षक रसिक महानुभाव जान सकते हैं।) जिसके लिये हमारे आद्याचार्य भगवान् श्री निम्बार्क ने अपने वेदान्त कामधेनुमें संकेत किया है—उपासनीयं नितरां जनैः सदा...... सखी सहस्रैः परिसेवितां सदा..........सनन्दनाद्यैमुनिभिस्तथोक्तं श्रीनारदायाखिल तत्त्वसाक्षिणे' इत्यादि।

पूर्वोक्त अन्तरंगतम पञ्चाङ्गके असमोर्ध्व सौन्दर्य माधुर्य, असमोर्ध्व विलासके चिन्तनका संकेत आद्याचार्य श्रीसनकादि भगवान् तथा नारद भगवान् की व्याख्या (सनत्कुमार संहिता गौतमीय तन्त्र) तथा ऐश्वर्य चिन्तनका संकेत श्रीनिम्बार्क भगवान् की मन्त्र रहस्य षोडशी की व्याख्या जो रहस्य मीमांसा या रहस्यके ग्रन्थ माने जाते है—और इनका विस्तार रसिक मूर्धन्य प्रातःस्मरणीय श्रीश्रीभट्टदेव जी की आदिवाणी तथा रसिक राजराजेश्वर प्रात:स्मरणीय आचार्यचरण श्रीहरिव्यास देवाचार्य महाराजकी महावाणीजीमें ब्रजभाषाके माध्यमसे विस्तारित किया गया है—जो सम्प्रदायकी सर्वोपरि निधि है।

यद्यपि उक्त नित्य विहार या युगल रस, जो जीवनका सर्वातिशायी लाभ है-एकमात्र प्रियाप्रीतम श्यामा श्याम की अहैतुकी कृपासे प्राप्त हो सकता है—'यमेवैष वृणुते स तेन लभ्य:' जिसे अकारण करुण प्रियाप्रीतम स्वीयत्वेन वरण कर लें, वही बड़भागी जीव उस रसका अनुभव कर सकता है, परन्तु युगल करुणोदयके लिये श्रीगुरु कृपा अनिवार्य है—श्रीगुरुप्रसत्ति परमावश्यक है—बिना गुरु कृपा आचार्य कृपा के श्रीयुगल कृपाका पात्र जीव नहीं बन सकता, अत एव शास्त्राज्ञा है—'स गुरु मेवाभिगच्छेत्' जीव भगवत्प्राप्तिके लिये श्रीगुरुकी ही शरणमें जाए। यहां एवकारसे स्पष्ट होता है कि बिना गुरु कृपाके युगल कृपा नहीं हो सकती। गुरु महिमा तथा आचार्य महिमासे हमारा सारा धार्मिक वाङ्मय ओतप्रोत है। गुरु भगवान् के स्वरूप माने गए हैं—आचार्य मां विजानीयात् गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु विष्णु हैं, गुरु महेश्वर हैं इतना ही नहीं गुरु साक्षात् परब्रह्म हैं' गुरु गोविन्दमें कोई तारतम्य नहीं—गुरु गोविन्द एक प्राण दो देह हैं—गुरु गोविन्द दोनोंके युगपत् सान्निध्यमें कौन प्रथमवन्दनीय यह एक जटिल प्रश्न है—अत: गुरु कृपा गोविन्द कृपा है—गुरु वरण गोविन्द वरण होता है। अत: प्रथम गुरु वरण परमावश्यक है। गुरु दीक्षा अनिवार्य वस्तु है—बिना गुरुदीक्षाके युगल रहस्यका परिज्ञान तथा युगल रसप्राप्ति असंभव है। गुरु दीक्षासे ही विधिवत् आत्म समर्पण सम्पन्न होता है। गुरु रूप स्रुवा द्वारा परमात्मरूप (प्रियाप्रीतम)अग्निमें जीव रूप हविका समर्पण ही दीक्षा है—यही वैष्णवी दीक्षा है—श्रीनिम्बार्कीय प्रपत्ति है। सम्प्रदायका सर्वस्व मन्त्र स्वाहा घटित है—यहां सब कुछ प्रियाप्रीतममें समर्पित हो जाता है। ऐसा समर्पित सर्वस्व गुरुकृपा पात्र बड़भागी जीव ही निकुञ्ज सेवाका अधिकारी हो सकता है।

यहां ज्ञातव्य है कि गुरु वैष्णव हो, विरक्त हो, रसिक हो, यह तो हो ही—साथ ही साम्प्रदायिक हो—साम्प्रदायिक का अर्थ आज दूषित कर दिया गया है, हरिजनका अर्थ भी आज गलत कर दिया गया है-ऐसा नहीं-साम्प्रदायिक का तात्पर्य-गुरु किसी वैदिक सम्प्रदायमें दीक्षित हो जिसका कोई सम्प्रदाय नहीं जो गुरु किसी सम्प्रदायमें दीक्षित न हो, उसका मात्र सार्थक नहीं होता—सम्प्रदाय भी आज-कल नित नए पैदा होते रहते है- यह सम्प्रदाय नहीं यह पंथ है नित नए पैदा होते रहते हैं- यह सम्प्रदाय नहीं यह पंथ है जिसकी अनादि परम्परा नहीं जिसमें श्रुतिका सम्मान नहीं, गीताका समादर नहीं, ब्रह्मसूत्रका गौरव नहीं—जिस भक्ति का जिस उपासनाका जिस रसका, निगमकल्पतरु श्रीमद्भागवत उपजीव्य नहीं, वह सम्प्रदाय सम्प्रदाय नहीं वह पंथ है गंगा वही पतित पावनी होती है—जिसकी परम्परा है—जिसकी धारा मूलधारा से अनवच्छिन्न है-जिसका गंगोत्रीसे सम्बन्ध बना हुआ है—वही मुक्तिदायिनी

है पतित पावनी है "सम्प्रदाय विहीना ये मन्त्रास्ते निष्फला मताः' अतः आचार्य परम्परा आवश्यक है। जिस आचार्य परम्पराका मूल परमात्मा है जिस मन्त्र परम्परा या आचार्य परम्परा की अविरल धारा अविच्छिन्न चली आ रही है वही सम्प्रदाय मंगलकारिणी है। यह, सनकादि नारद नियमानन्द की अविरल रसमयी भक्ति धारा ही सर्वोत्तम भक्तिधारा है—जिसमें आगे चलकर आदि वाणी, महावाणी, केलिमाल आदि अजस्र अखण्ड असमोर्ध्व रसधारा प्रवाहित होकर अनन्तानन्त बड़ भागी जीवोंका कल्याण किया है।

इन सब दृष्टियोंसे गुरुओं अकारण करुण पतित पावन आचार्योंका संस्मरण संस्तुवन वन्दन, वर्धापन (वधाई गान) उन सब आचार्योंके प्राकट्य महोत्सवोंका आयोजन उन मंगलमय अवसरों पर समाजगान, पदगान, सन्तसेवा आदि कार्य अत्यन्त ही मंगलकारी है, आवश्यक है। जिन आचार्योंकी कृपा से जिन अकारण करुण श्रीगुरुदेवकी कृपासे हमें प्रिया प्रीतमकी प्राप्ति हो विश्वका कल्याण हो उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन न करना उनके जयन्ती महोत्सवका आयोजन नहीं करना महापराध है। उन आचार्य चरणों की जयन्ती महोत्सव सम्पादनके लिये बधाईके पदोंकी रचना, रचित पदोंका प्रकाशन आचार्यचरित ग्रन्थका प्रकाशन आदि कार्य अत्यन्त मंगलकारी एवं आवश्यक कार्य हैं।

उपर्युक्त दृष्टियोंसे इस 'श्रीहंसवंश यश सागर' अपर नाम 'आचार्य जयन्ती' नामक ग्रन्थके प्रकाशनका कार्य परम मंगलमय कार्य है। इसका प्रकाशन स्वर्गीय कन्हैयालाल साबूकी पुण्य स्मृतिमें श्रीकन्हैयालाल चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा हुआ है – अतः यह ट्रस्ट धन्यवादका पात्र है।

इस ग्रन्थरत्नके प्रकाशनमें स्वर्गीय सेठ श्रीकन्हैयालाल साबूके आत्मज नावा निवासी परम भागवत परमोदार से० श्रीदुर्गाप्रसाद जी साबू, श्रीरामप्रसादजी साबू श्रीमदनलाल साबू तथा मोहनलाल साबू का सम्पूर्ण आर्थिक सहयोग है अतः ये सभी अत्यन्त धन्यवादके पात्र हैं प्रियाप्रीतम श्रीश्यामाश्याम इन सबका दिनानुदिन लौकिक अभ्युदय करें ये धन-धान्य सम्पन्न रहें तथा इनका मन सदा श्रीभगवद् भागवत सेवामें लगा रहे-यही कामना है।

इस पुस्तकमें श्रीहंस भगवान् से लेकर श्रीहरिव्यास देवाचार्य महाराज तक का तो यशगान है ही। इनके बाद के द्वादश द्वारा प्रवर्तक आचार्योंके भी यशगान तथा उनके प्राकट्य महोत्सव के बधाई गानके पद प्रकाशित किए गए हैं। जिन आधुनिक या अर्वाचीन आचार्योंके पद विरचित नहीं थे उनके सम्बन्धमें हमारे परम रसिक संत श्रीयमुना सूरदासजी (कला मंजरी) मीठरी, परम भागवत श्रीजगदीशदास राठौर जुगल सखी) राईधना तथा परम वैष्णव श्रीगंगादत्तजी करौली ने कृपा कर हमें पद रचना करके दी है। अतः ये महानुभाव भीअत्यन्त आदर के पात्र हैं—इन सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।

संसारमें प्राय भक्तिके अनेकानेक कार्य क्षेत्र हैं। सभी एक से एक मंगलकारी हैं पर मेरी दृष्टिसे भगवत् सम्बन्धमें पुस्तकें लिखना भगवदीय पुस्तकोंका प्रकाशन करना आचार्य चरितों, संत चरितोंका प्रकाशन लेखनका कार्य सर्वातिशायी पुण्यका कार्य है भक्ति कार्य है। उपकारका कार्य है—व्यास और बाल्मीकिका जो उपकार जो देन जगत्को है। उसकी तुलना संसारके किसी भी मंगलकारी कार्य से नहीं हो सकती है।

सनकादिक–हंसभगवान नारद जी

निम्बार्क भगवान

श्रीहरिव्यास देवाचार्य जी
देवी को दीक्षा देते हुए

श्रीभट्टजी की गोद में
श्रीप्रियाप्रीतम

इस दृष्टि से श्रीराधा रसिक मण्डल मीठरी का कार्य कितना महत्त्वपूर्ण है-कहा नहीं जा सकता। इस पुस्तक का प्रकाशन उक्त रसिक मण्डल नामक संस्था के अध्यक्ष रसिकवर परम वैष्णव श्रीलाड़लीदास जी जो इस पुस्तक के मुख्य प्रकाशक हैं, का यह कार्य कितना महत्व रखता है—कहने का विषय नहीं है। मैं रसिक सन्त श्रीलाड़िली जी तथा इस मण्डली के कतिपय रसिक सन्तों को जानता हूँ। इनसे मेरा पुराना परिचय है। उक्त रसिक मण्डल के जन्मदाता, प्रेरणा स्रोत पूज्यपाद नित्य निकुञ्ज लीला परिकर प्रविष्ट रसिक शेखर स्वामी प्रेममूर्ति सुखरामदास जी महाराज के दर्शन का सौभाग्य मुझे मिला है। मैं तीन बार मीठरी गया हूँ। वहां श्रीमद्भागवत की सप्ताह कथा मैंने की है उक्त महाराजजी ने स्वयं मुझ से तीन बार कथा सुनी है।

वहां के (मीठरी) रसिकों की रहनी सहनी, उन सबका प्रिया प्रियतम में अनुराग, उन सबकी नाम निष्ठा, धाम निष्ठा लीला निष्ठा, सेवा निष्ठा कथा है निष्ठा हमने सब देखी हैं—लगभग २५-३० वर्ष पहले मैं वहां गया था। कथा समाप्ति के बाद मैं मीठरी गांव के कई रसिक भक्तों के घर में जाने का मुझे सौभाग्य मिला। वे बड़े प्रेम से मुझे अपने घर ले गए थे- अपनी उपासना का प्रकार दिखाने। मैं उन सबका युगल प्रेम, गुरु निष्ठा, वैष्णव निष्ठा देखकर दंग रह गया। प्रेम मूर्ति प्रेमावतार श्रीसुखरामदास जी महाराज अब नहीं रहे-परन्तु उनके कृपा पात्रों द्वारा जिनमें इस ग्रन्थ के प्रकाशक श्रीलाड़िलीदास जी प्रमुख हैं आज भी जो भगवद् भागवत सेवा की तथा आचार्य चरितों का प्रकाशन समय-समय पर कथा वार्ता का आयोजन आदि मंगलमय कार्य होते हैं, वह सम्प्रदाय के अन्य धनी-मानी संत महन्तों एवं सेठ साहूकारों के लिये अनुकरणीय एवं अनुसरणीय है।

इस आचार्य चरित नामक ग्रन्थ के प्रकाशन के लिये मैं रसिकवर श्रीलाड़िली-जो आजकल विशेष रूप से वृन्दावन वास करते हैं, जो रसिकता की प्रतिमूर्ति हैं जो स्वरूपतः आचरणतश्च वैष्णवता की प्रतिमूर्ति हैं को शतशः धन्यवाद देता हूँ। और उनसे पुनः पुनः अनुरोध करता हूँ कि वे भविष्य में भी इसी तरह साम्प्रदायिक पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य करते रहें।

आज बहुतः सी अमूल्य पुस्तक सम्प्रदाय में अमुद्रित हैं—जिनका प्रकाशन अत्यावश्यक है। इस सन्दर्भ में मैं श्रीलाड़िली जी से प्रार्थना करूंगा कि सम्प्रदाय के मूल ग्रन्थ जो सम्प्रदाय का मूल आधार है—जिस पर सम्प्रदाय की उपासना आधारित है—वह ग्रन्थ श्री निम्बार्क भगवान् की रचना वेदान्त परिजात सौरभ तथा श्रीनिवास भाष्य है—उसका हिन्दी अनुवाद किया हुआ है। उसका अनुवाद प्रातः स्मरणीय दानवीर स्वर्गीय त्यागी जी महाराज की प्रेरणा से हमारे पूज्य गुरुदेव, प्रियाप्रीतम सम्बन्धी अनेक पुस्तकों के रचयिता स्वर्गीय पं० श्री भगीरथजी झा द्वारा अनुवाद किया हुआ रखा है। कितने खेद की बात है—कि वह पुस्तक अभी तक प्रकाशित नहीं हो सकी है।

मैं पुनः पुनः साम्प्रदायिक समस्त धनी-मानी महानुभावों विशेषतया श्रीलाड़िलीजी से प्रार्थना करता हूं कि उक्त ग्रन्थ के प्रकाशन यदि किसी प्रकार आप करा सकें तो यह सबसे बड़ी सम्प्रदाय की सेवा होगी।

अन्त में पुनः श्रीलाड़िलीजी को धन्यवाद देता हूं।

वैद्यनाथ झा, राष्ट्रपति पुरस्कृत प्रधानाचार्य
श्रीनिम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय
वृन्दावन (१६-११-८४)

*

आचार्य महिमा

पद सं० ४३ ❋ राग मांझ ❋

करि करुण कलि जीवन ऊपर, आ जग में प्रगटाये हैं।
लै शरणागत नाम दान दै, जीव अनेक चिताये हैं॥
पात्र अपात्र विचार नहि मन, पकरि धाम पहुँचाये हैं।
यूँ आचार हरि से बढ़कर, 'जुगल सखी' मन भाये हैं॥

पद सं० ४४ ❋ राग मांझ ❋

श्री आचरण रंग महल ते, आये जगत उद्धारन।
सकल विश्व अज्ञान नष्ट करि, भक्ति परा प्रचारन॥
अनगिन पापी पार लगावें, कृपा करें बिन कारन।
'जुगल सखी' जस गाय निरन्तर, सर्बस करिये वारन॥

पद सं० ४५ ❋ राग मांझ ❋

श्री आचारज जन्म महोत्सव, जो करि हेत मनावें।
तन मन धन सब अर्पन करिके, मन में अति हुलसावें॥
ताको अपनो करि पिय प्यारी, निज छबि दरस करावें।
'जुगल सखी' जग जीत जन्म को, अन्त परम पद पावें॥

पद सं० ४६ ❋ राग मांझ ❋

श्री आचारज जन्म महोत्सव, ऐसे हि नित आवो।
ध्वजा पताका तोरण द्वारे, बन्दन माल बन्धावो॥
सुन्दर साज सजाय रसिक मिल, जन्म सोहिलो गावो।
'जुगल सखी' नित श्री दम्पति को, दरस बधाई पावो॥

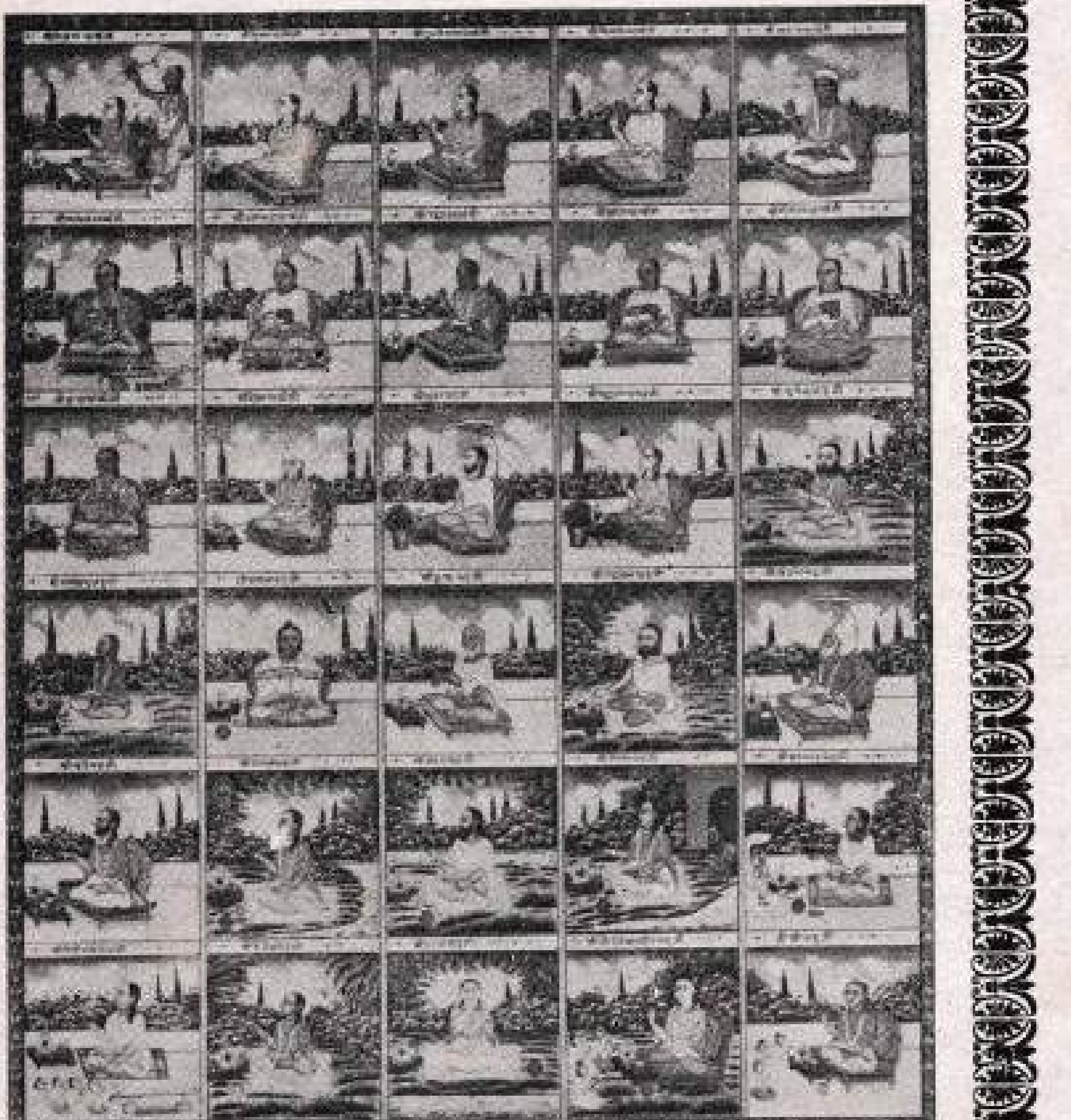

तीस प्रमुख सम्प्रदाय – आचार्य

सनकादिक–हंसभगवान नारद जी

निम्बार्क भगवान

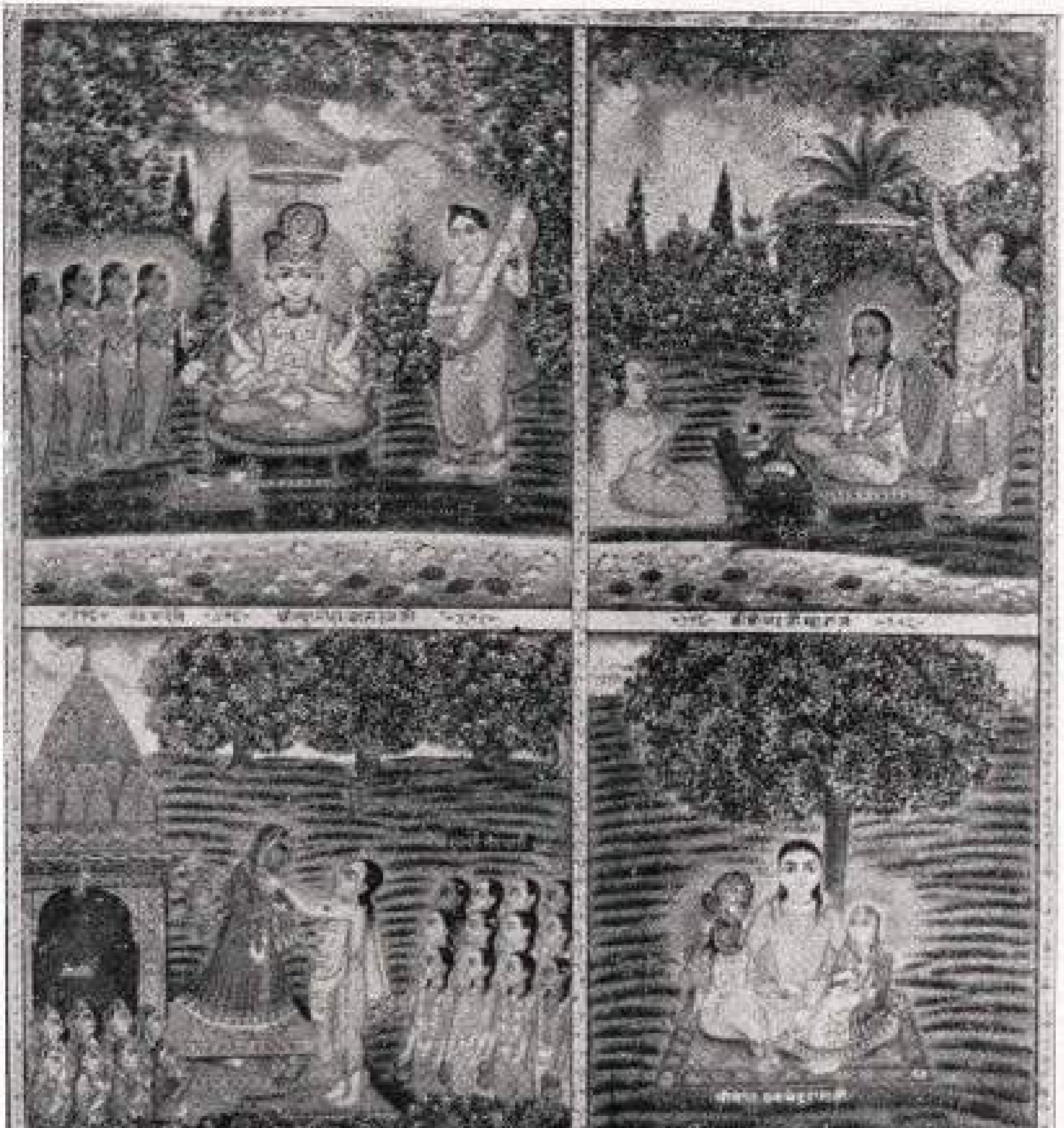

श्रीहरिव्यास देवाचार्य जी
देवी को दीक्षा देते हुए

श्रीभट्टजी की गोद में
श्रीप्रियाप्रीतम

श्रीमदखिल महामुनीन्द्राचार्यचक्रचूड़ामणि रसिकराजराजेश्वर

ज० गु० श्री निम्बार्क भगवान

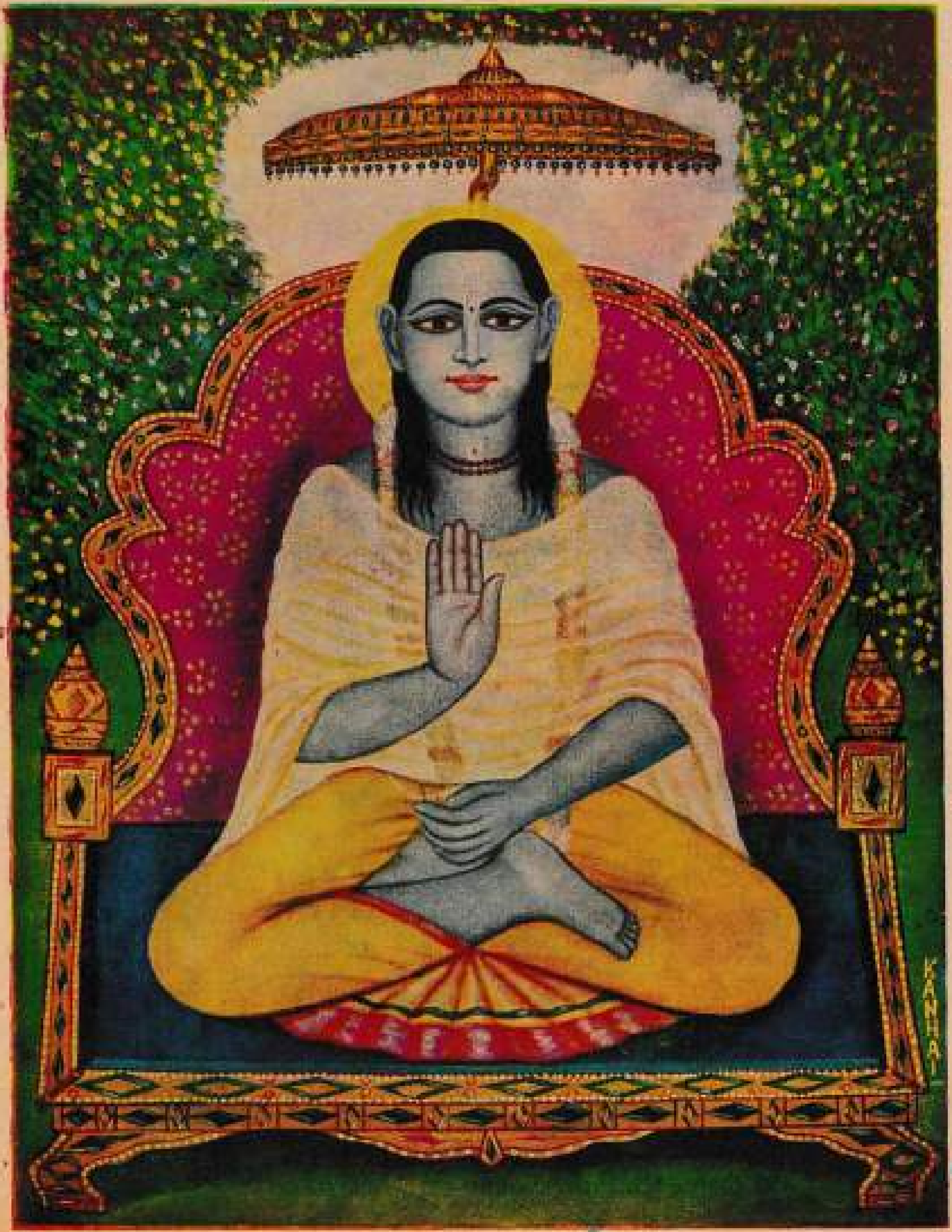

आचार्य - प्रणाली

तिथि	नाम—आचार्य	
चैत्र शुक्ला १	— श्रीकेशव भट्टाचार्य जी	(३१)
" " ६	— श्रीपुरुषोत्तमचार्य जी	(७)
वैशाख कृष्णा ३	— श्रीपद्मनाभ भट्टाचार्य जी	(१८)
" " ५	— श्रीरामचन्द्र भट्टाचार्यजी	(२०)
वैशाख शुक्ला ८	—श्रीविलासाचार्य जी	(८)
ज्येष्ठ कृष्णा ६	—श्रीवामनभट्टाचार्य जी	(२१)
ज्येष्ठ शुक्ला ४	–श्रीकेशवकाश्मिरी भट्टाचार्यजी	(३३)
" " ७	श्रीस्वरूपाचार्य जी	(९)
आषाढ़ कृष्णा ९	—श्रीकृष्णभट्टाचार्य जी	(२२)
आषाढ़ शुक्ला १०	—श्रीमाधवाचार्य जी	(१०)
" " १५	—श्रीरूपरसिक जी	(३६)
श्रावण कृष्णा ७	—श्रीगोपीनाथ भट्टाचार्य जी	(३०)
श्रावण शुक्ला ३	— श्रीबलभद्राचार्य जी	(११)
भाद्रपद कृष्णा ११	—श्रीगोपालाचार्य जी	(१४)
" " १२	—श्रीपद्माचार्य जी	(१२)
आश्विन कृष्णा १०	—श्रीभूरिभट्टाचार्य जी	(२५)
आश्विन शुक्ला २	—श्रीभट्टदेवाचार्य जी	(३४)
" " १३	—श्रीश्यामाचार्य जी	(१३)
कार्तिक कृष्णा १२	—श्रीहरिव्यास देवाचार्यजी	(३५)

तिथि	नाम—आचार्य	
कार्तिक शुक्ला ८	श्रीस्वभूदेवाचार्य जी	(३६)
" " ९	—श्रीहंस भगवान	(१)
" " ९	—श्रीसनकादिक भगवान	(२)
" " ९	—श्रीश्रवण भट्टाचार्य जी	(२४)
" " ११	—श्रीमाधव भट्टाचार्यजी	(२६)
" " १५	—श्रीनिम्बार्क भगवान	(४)
मार्गशीष शुक्ला १२	—श्रीनारद भगवान	(३)
" " १५	—श्रीकृष्णाचार्य जी	(१५)
पौष कृष्णा ८	—श्रीपद्माकर भट्टाचार्य	(२३)
" " ११	—श्रीगोपाल भट्टाचार्य जी	(२८)
माघ कृष्णा १४	- श्रीबलभद्राचार्य जी	(२९)
माघ शुक्ला २	—श्रीसुन्दरभट्टाचार्य जी	(१७)
" " ५	—श्रीनिवासाचार्य जी	(५)
" " ५	--श्रीदेवाचार्य जी	(१६)
फाल्गुन शुक्ला ४	—श्रीविश्वाचार्य जी	(६)
चैत्र कृष्णा २	—श्रीगांगलभट्टाचार्य जी	(३२)
" " ४	—श्रीउपेन्द्रभट्टाचार्य जी	(१९)
" " १२	—श्रीश्यामभट्टाचार्य जी	(२७)

श्रीमती एवं श्री कन्हैयालाल जी साबू

जिनकी स्मृति में कन्हैयालाल साबू चं० ट्रस्ट द्वारा प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशित की गयी ।

विषय-सूची

□

विषय	पृष्ठ
श्री हंसभगवान् की मङ्गल बधाई	१
श्री सनकादिक भगवान जयति	१८
श्री नारद जी महाराज की मङ्गल बधाई	३२
श्री निम्बार्क भगवान् जयति	५१
श्री श्री निवासाचार्य जी की मङ्गल बधाई	१४५
श्री औदम्बराचार्य जी मंगल बधाई	१६४
श्री गौरमुखाचार्य जी की मङ्गल बधाई	१६७
श्री विश्वाचार्य जी की मंगल बधाई	१७०
श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी की मङ्गल बधाई	१७६
श्री विलासाचार्य जी की मङ्गल बधाई	१८७
श्री स्वरूपाचार्य जी की मङ्गल बधाई	१६५
श्री माधवाचार्य जी मङ्गल बधाई	२०१
श्री बलभद्राचार्य जी की मङ्गल बधाई	२०७
श्री पद्माचार्य जी की मङ्गल बधाई	२१३
श्री श्यामाचार्य जी की मङ्गल बधाई	२१६
श्री गोपालाचार्य जी की मङ्गल बधाई	२२५
श्री कृपाचार्य जी की मङ्गल बधाई	२३१
श्री देवाचार्य जी की मङ्गल बधाई	२३७
श्री सुन्दरभट्टाचार्य जी की मंगल बधाई	२४३
श्री पद्मनाभभट्टाचार्य की मंगल बधाई	२५०
श्री उपेन्द्रभट्टाचार्य जी की मंगल बधाई	२५६
श्री रामचन्द्रभट्टाचार्य जी की मंगल बधाई	२६३
श्री वामन भट्टाचार्य जी की मंगल बधाई	२७०

विषय	पृष्ठ
श्री कृष्ण भट्टाचार्य जी की मंगल बधाई	२७७
श्री पद्माकर भट्टाचार्य जी की मंगल बधाई	२८४
श्री श्रवन भट्टाचार्य जी की मंगल बधाई	२९१
श्री भूरिभट्टाचार्य जी महाराज	२९८
श्री माधव भट्टाचार्य जी महाराज	३०५
श्री श्याम भट्टाचार्य जी महाराज	३१२
श्री गोपाल भट्टाचार्य जी महाराज	३१९
श्री बलभद्र भट्टाचार्य जी महाराज	३२६
श्री गोपीनाथ भट्टाचार्य जी महाराज	३३३
श्री केशव भट्टाचार्य जी महाराज	३४१
श्री गांगल भट्टाचार्य जी महाराज	३४९
श्री केशव काश्मीरि भट्टाचार्य जी महाराज	३५५
श्री भट्टदेवाचार्य जी महाराज	३६६
श्री हरिव्यास देवाचार्य जी महाराज	३९२

❀ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ❀

श्रीहंसवंश-यशसागर

★

❋ (१) श्री हंसभगवान् की मंगल बधाई ❋

तिथि—अक्षय नवमी (कार्त्तिक शुक्ल ९)

❋ श्लोक ❋

नमस्तस्मै भगवते कृष्णायाकुण्ठ मेधसे।
राधाऽधरसुधासिन्धौ नमो नित्य विहारिणे॥
राधां कृष्णस्वरूपां वै कृष्णं राधा स्वरूपिणम्।
कलात्मानं निकुञ्जस्थं गुरु रूपं सदा भजे॥

❀ श्री कृष्ण अलिजी कृत बड़ा मंगल ❀

❋ दोहा ❋

कार्तिक शुक्ला पच्छ में नौमी दिन अभिराम।
हंस रूप वपु धारि के सुफल किये मन काम॥
नमो नमो श्री हंस वपु धरन हरन अघ जाल।
दरसायो सनकादि हित चित हरि रूप रसाल॥

* पद–राग सूहा बिलावल *

जै जै श्री हंस रूप गोपाल कमल दल लोचना।
भक्तन सदा सहाय दीन दुःख मोचना॥
शुक्ल वरण मुख कान्ति कोटि दिनकर प्रभा।
चतुर्व्यूह छवि देन हार देवन सभा॥
सभा देवन मुकट मणि जन सदा रच्छा करत हैं।
युगन प्रति जब विपति बाढ़ैं तबहि करुणा ढरत हैं॥
ऐसेहि आदि अनादि प्रणतन भक्त भव भय मोचना।
जै जै श्री हंस रूप गोपाल कमल दल लोचना॥१॥
जै जै श्री हंस रूप गोपाल अधम उद्धार हैं।
तत छिन सुनत पुकार हरन भव भार हैं॥
ब्रह्मा तप कियो घोर प्रिय प्रभु रीझि हैं।
ह्वै प्रसन्न दें काम प्रेम रस भीजि हैं॥
भीजि हैं यह दृढ़ भरोसो शरण मन वच क्रम लई।
तिहि समै मनु ब्रह्म तें अति भागवत संतत भई॥
सनकादि चारों अति विलच्छण श्यामसुन्दर वपु धरें।
पंच वर्ष घुंघरारि अलकें कान्ति मुख कहत न परें॥
कृत युगी नौमी अखय जो अति पुनीत सो सार है।
जै जै श्री हंस रूप गोपाल अधम उद्धार है॥२॥
जै जै श्री हंस रूप गोपाल सदा जन पर द्रवें।
युग युग धरि धरि रूप उधारें जे भ्रमें॥
सनकादिक कियो प्रश्न पिता ते अति बड़ो।
विषय पंच अरु चित्त परस्पर है गड़ो॥

गड़ो जो ये गुन तजैं चित कहिय तात जो हिय ठयो।
सुनि प्रश्न चतुरानन चकित मति भई अति संशय छयो॥
हरि तुरत लेत संभार निज जन तिहि छिन मन अति भ्रमैं।
जै जै श्री हंस रूप गोपाल सदा जन पर द्रवैं॥३॥

जै जै श्री हंस रूप गोपाल परम करुणा करी।
सुन्दर वर वपु धारि आय छवि विस्तरी॥
परम प्रकाश चहुँ ओर अतिहि सुहावनी।
अद्भुत रूप विशाल अधिक शोभा बनी॥
बनी शोभा जन्म दिन छवि कहाँ लौं वरणन करौं।
दुन्दुभि देव बजाय वर्षैं सुमन हिय आनन्द भरौं॥
निरखि देव विमान हर्षैं स्तुति तिहि छिन विस्तरी।
जै जै श्री हंस रूप गोपाल परम करुणा करी॥४॥

जै जै श्री हंस रूप गोपाल विराजै मुदित मन।
बोलैं वचन रसाल माधुरी मन हरन॥
विषय चित्त की सार गह्यो सर्वेश्वर के चरन।
ज्ञान भक्ति की रीति प्रीति परमेश्वर के शरन॥
शरन रहसि उपदेश दियो शिष्य सनकादिक किये।
दै मन्त्र शरणागत सखी वपु धारि निज परिकर लिये॥
तब ते यही सम्प्रदा चलि अति निवृत्ति मारग परम धन।
जै जै श्री हंस रूप गोपाल विराजैं मुदित मन॥५॥

जै जै श्री हंस रूप गोपाल परम मंगल भयो।
प्रगटे सहित समाज जन्म दिन छवि छयो॥

बजत बधायो दुगुण परम आनन्द है।
गुणिजन गावत गीत परग शुभ छन्द हैं॥
छन्द है मुखचन्द निरख सिहाहिं सुख कहत न बनै।
तन मन परम उत्साह जेतो अमित गणना को गनै॥
कृष्ण अलि बलि हार वांछित वास वृन्दावन दियो।
जै जै श्री हंस रूप गोपाल परम मंगल भयो॥६॥१॥

❀ छोटा मंगल ❀

नमो नमो श्री हंस गोपाल।
प्रगटे कार्तिक शुक्ल नौमि दिन रसिक जनन पर होय कृपाल॥
प्रथमहिं ब्रह्मा जू प्रति पारा सनकादिक कछु प्रश्नहि काज।
रसानन्द श्री विपिन महात्तम हमहिं कहो प्रभु सब शिर ताज॥
गूढ़ तत्व कहिबे में आलस जान प्रगट भये परम दयाल।
जो जो प्रश्न कियो सनकादिक सो सबही कह्यो रहसि रसाल॥
समाधान करि जानि आपनो दीक्षा दीन्हीं मन्त्र गोपाल।
रूप रसिक हिय हेतु पुरातन प्रचुर करन युगजन प्रतिपाल॥२॥

❀ द्वितीय बड़ा मंगल ❀

जै जै श्री गोपाल संत हित अवतरें।
ब्रह्मा शेष महेश देव जै जै करें॥
मत्स्यादिक अवतार सबै इनते भये।
सो सर्वेश्वर राय गोप वल्लभ भये॥
भये वल्लभ गोप कुल के तिहिं जु सुन्दर वपु धरें।
घुट कज्जल नील नीरज मेघ नहिं उपमा परें॥

चंचला द्युति पीत वस्तर वैजयन्ती उर धरे।
जै जै श्री गोपाल सन्त हित अवतरे ॥१॥

जै जै श्री गोपाल शिखि पिच्छ शिर धरें।
मृग मद केसर खोर तिलक रोचन करें॥
झषपति कुण्डल लोल कपोलन पर अरें।
अलक भलक रहि नील शील मधुकर हरें॥
हरें मधुकर गन्ध जिनके कंज खंजन दृग बनें।
अरुण अधर पै श्वेतमुक्ता चिबुक शोभा अन गनें॥
अहि भोग बाहु विसाल वलय हाथ पहुँची कर धनें।
जै जै श्री गोपाल शिखि पिच्छ शिर धरें ॥२॥

जै जै श्री गोपाल गले कौस्तुभ मणी।
श्री वत्सादिक हृदय गुंज मुक्ता मणी॥
चल दल पत्र सुढार उदर नाभी घनी।
अति सूक्ष्म कटि देश किंकिणी रव सनी॥
सनी रव ते चरण नूपुर अरुण बनत सुहावनें।
अंगुरी नखन की कान्ति मानो मेघ घन दश शशि सनें॥
पाद तल शुभ चिह्न चिह्नित संत जन मोहन मणी।
जै जै श्री गोपाल गले कौस्तुक मणी ॥३॥

जै जै श्री गोपाल वृन्दावन राजहीं।
वाम अंग वृषभानु सुता छवि छाजहीं॥
दिव्य सखिन के वृन्द रूप गुन वपु बनी।
तत सेवा फल रूप जुगल मूरति सनी॥

सनी मूरति जुगल की इत कृष्ण वामा भामिनी।
मेघ घन के कोर मानो थिर रही है दामिनी ॥
दिव्य गुन रस रूप सागर नित्य मो मन साजहीं।
जै जै श्री गोपाल बृन्दावन राजहीं ॥४॥३॥

❀ छोटा मंगल ❀

आज महा मंगल भयो माई।
श्रीकृष्ण जू हंस रूप धरि प्रगटे आनन्द कह्यो न जाई ॥
श्री सनकादिक नारद निम्बार्क सबके हिये सिराई।
प्रिया सखी छबि कहि न जाय कछु देखत कोटिक चंद लजाई ॥४॥

नमो नमो जै श्रीमद् हंस।
ब्रह्मा चिन्तित प्रगट भये प्रभु मुनिजन मान सरोवर हंस ॥
सनकादिक हित यह वपु धार्यो प्रश्नोत्तर मिस किये नृसंस।
ज्ञान विराग भक्ति रस सागर करुणामय हरिदास प्रसंस ॥५॥

❀ पद—राग भीमपलासी ❀

प्रगटे हंस रूप सुकुमार।
कार्तिक सुदी नौमी सनकादिक उपदेशन रस सार ॥
सम्प्रदाय मारग स्थापन प्रथम भये अवतार।
जग आदि स्वाद रस कारन पार करन संसार ॥
निज रहस्य के पात्र जानि मुनि दिखरायो सुख सार।
युगल मन्त्र दे नाम धाम निज बृन्दावन अधिकार ॥
सखी रूप दीनो रंग भीनो तत् सुख कृपा अपार।
प्रेम परे उत्कृष्ट परा जिन देत न लाई वार ॥

ब्रह्मा जू अधिकार मगन भये निरखत नित्य बिहार।
अगवानी प्रभु के परिकर पर श्री रूप रसिक बलिहार ॥६॥

* पद–राग भाऊ धमार ताल *

आज बधाई बजत सुहाई।
श्रीकृष्ण जू हंस रूप धरि प्रगटे त्रिभुवन के सुखदाई ॥१॥
जै जै शब्द करे सुर नर मुनि ब्रह्म लोक में आई।
विद्याधर गन्धर्व जो गावत बाजे विविध बजाई ॥२॥
रत्न जटित सिंहासन शोभित बैठे हंस जु आई।
शुक्ल वर्ण अति अद्भुत छबि लखि कोटिक चंद लजाई ॥३॥
मुक्तामाल वनमाल मनोहर पीत वसन सुघराई।
मुद्रा तत्व अभय निज जन हित मारग दरसाई ॥४॥
चरण कमल अति सुखद सुशीतल सेवत जो मन लाई।
दश नख चन्द्र प्रकाशत तिहिं छिन तिमिर अज्ञान मिटाई ॥५॥
पद्मज सुत मुनि श्री सनकादिक निज पितु के ढिंग आई।
चित्त विषय निरसन जो प्रश्न कियो ब्रह्मा मोह बढ़ाई ॥६॥
प्रश्न तिरन के कारण श्रीहरि पद्मज सुमिरे अति चितलाई।
हंस रूप धरि नभ ते उतरे ब्रह्मा मान बढ़ाई ॥७॥
देख जो पुनि प्रभु निकट आयके पद वंदन कियो सिर नाई।
प्रश्न कियो निज पितु आगे कर को भवान् यहाँ आई ॥८॥
तत्व जिज्ञासु ऋषिन को वचन सुनि श्रीहंसजु मृदु मुसकाई।
प्रश्न खण्डन मिस आतम स्वरूप जो निगमागम दरसाई ॥९॥
अभय हाथ धरि शिष्य किये तब प्रभु लीने अपनाई।
ज्ञान भक्ति उपदेश विविध करि मन संदेह मिटाई ॥१०॥७॥

* पद—राग चर्चरी, इकताला *

श्रीहंसजू के चरण - कमल सेऊँ सुखदाई।
शंख चक्र यव पताक अद्भुत छवि छाई ॥१॥
शुक्ल वरण अति अनूप शोभा कछु कहि न जाई।
कोटि चन्द्र वारौं तापै रतिपति की मति भुलाई ॥२॥
कमल - दल लोचन विशाल अधरन अरुणाई।
लाल दशनि दमक मनकि हरन शोभा अति माई ॥३॥
ब्रह्मादिक ध्यान धरत सुर नर मुनि सेवत नित।
नारद मुनि वीणा ले निशिदिन गुण गाई ॥४॥
पद्मयोनि मान करन सनकादिक संशय हरन।
आत्म - तत्व प्रगट करन सम्प्रदा चलाई ॥५॥
जो कोऊ जन शरण होत तिनको निज सुख जु द्योत।
निरखि हरखि 'प्रिया - सखी', छवि पर बलि जाई ॥६॥८॥

* पद *

श्रीकृष्ण हंस रूप भये ब्रह्मा हित लाई।
निज जन मन मोह हरत, भक्त - वत्सलताई ॥१॥
कोटि भानु उदय भयो, त्रिभुवन को तिमिर गयो।
मुनि मन आनन्द भयो, दुन्दुभी बजाई ॥२॥
किन्नर गन्धर्व गावैं, ऋषि जो वेद फल बतावैं।
नमो नमो जै जै ध्वनि, छिति अम्बर छाई ॥३॥
सनकादिक मुनिन आय, चरण कमल शीश नवाय।
'को भवान्'—ये प्रश्न कियो, नभ तें उतरि आई ॥४॥

प्रश्न खण्डन मिस जो कियो, पर तत्व उपदेश दियो।
भिन्नाभिन्न मत सिखाय, भक्ति को दृढ़ाई ॥५॥
आचारज वपु जु धरयो, भव - सागर रोग हरयो।
'प्रिया सखी' सेवें चरण, निशि दिन हित गाई ॥६॥८॥

※ पद ※

जै जै श्री हंस रूप दम्पति वपु धारे।
राजत हैं नित्य धाम, गौर श्याम छवि अभिराम॥
इच्छा वपु धार भये, शुक्ल वर्ण प्यारे ॥१॥
सनकादिक प्रश्न कियो, ब्रह्मा सुनि मौन लियो।
प्रगट अवतार कियो, नीर क्षीर न्यारे ॥२॥
विधि के आनन्द भये, वारिज - पद शीश नये।
अस्तुति कर जोरि निज जन रखवारे ॥३॥
सनकादिक शरण पाय, दियो निज मन्त्र - सार।
रस दे अनुराग दया, दृष्टि सों निहारे ॥४॥
अक्षय नवमी प्रकाश, गावत गुण गण हुलास।
'रूप रसिक' मगन भये, तन मन धन वारे ॥५॥१०॥

※ पद ※

कार्तिक शुक्ला अक्षय नौमी, हंस रूप प्रगटाये हैं।
ब्रह्मा की करुणा सुनि स्वामी, अपने दरस दिखाये हैं ॥१॥
शुक्ल वरण मन हरण करन सुख, सुन्दर रूप सुहाये हैं।
परम प्रकाश तेज परिपूरण, लखि छवि सकल छकाये हैं॥२॥
देव दुन्दुभी हरष बजाये, बहु विधि नाचे गाये हैं।
महा महोत्सव कियो सकल मिल, उर आनन्द बढ़ाये हैं ॥३॥

नाना विधि पकवान मिठाई, प्रभु को भोग लगाये हैं ।
धूप दीप धर करी आरती, हरषि फूल बरसाये हैं ॥४॥
जै जै हंस गोपाल लाड़िले, स्तुति कर भगनाये हैं ।
'सरस माधुरी' दर्शन करके, मनवांछित फल पाये हैं ॥५॥११॥

* पद *

प्रगट भये हंस रूप भगवान ।
अति कृपाल करुणानिधि प्यारे, सुन्दर शोभा - खान ॥१॥
गौर वरण मन हरण महा प्रभु, करत मन्द मुसकान ।
कमल नैन सुख देन सबन के, कुण्डल झलकत कान ॥२॥
मुकुट जटित शिर राजत नीको, भाल तिलक सुखदान ।
गोल कपोल अलक घुंघरारी, नकबेसर लटकान ॥३॥
शंख चक्र गदा पद्म विराजत, निरखत मन हुलसान ।
नख शिख भूषण वसन सजि रहे, भक्तन जीवन प्रान ॥४॥
सनकादिक विधि सों जो पूछ्यो, उत्तर दियो महान ।
'सरस माधुरी' संशय मेट्यो, ऐसो कृपानिधान ॥५॥१२॥

* पद *

जय जय हंस रूप गोपाल ।
माया पूतन जीव ताप हर, सदा भक्त - प्रतिपाल ॥१॥
महिमा जासु वेद नित गावत, कहि कहि नेति रसाल ।
'नरहरिदास' गहैं शरणागति, छिन में करत निहाल ॥२॥१३॥

* पद *

प्रगटे हंस रूप भगवान ।
भई बधाई मन की भाई, सनकादिक सुख दान ॥१॥

परम कृपा करि प्रश्नोत्तर दे, संशय मेट्यो ज्ञान ।
मंगल भयो सकल त्रिभुवन में, नभ छये देव - विमान ।।२।।
तिमिर ग्रसित जीवन हित थापी, सम्प्रदाय सुख - खान ।
(श्री) 'कृष्णअली' के भये मनोरथ मुदि करत गुण गान ।।३।।१४।।

※ पद ※

नमो नमो जय जय श्री हंस ।
कोटि भानु सम तेज प्रकाशित, तिमिर अज्ञान कियो सब ध्वंस ।।१।।
ब्रह्मादिक सुर नर मुनि गावत, ज्ञान विराग भक्ति परशंस ।
(श्री)'प्रियासखी' के हिये बसो नित, जनहित त्रिभुवनके अवतंस ।।२।।१५।।

※ पद–राग पीलू ※

चिरजीवो हंस गोपाल रसिक वर ।
युग युग भक्ति प्रचार करैं प्रभु, धरि अनेक अवतार विमलवर।।१।।
अचल राज भुव मण्डल पोषैं, सनकादिक गुरु हंस मनोहर ।
भवसागर तारन दृढ़ नौका, 'आनन्दघन' पावैं चरण-कमल वर ।।२।।१६।।
जय जय जय श्री हंस गोपाल ।
करुणासिन्धु प्रणत - आरतिहर, चिद्घन विग्रह नैन विशाला ।।१।।
विधि मन मोह नसावन कारण, प्रगट भये प्रभु दीनदयाल ।
परमधर्म श्रीसनकादिक प्रति, कियो उपदेश दीन-प्रतिपाल ।।२।।
तिन मुनि श्रीनारद प्रति वरन्यो, परम्परा प्रगटी जु रसाल ।
किशोरीगोपाल पतितपावन जस, गावत निसिदिन परम कृपाल।।३।।१७।।

※ पद ※

प्रगटे हंस रूप नारायण ।
कार्तिक शुक्ल अखै नौमी दिन, सनकादिक उपदेशन ।।१।।

सम्प्रदाय मारग स्थापन हित, प्रथम भये अवतार।
जग की आदि स्वाद रस कारण, पार करन संसार ॥२॥
निज रहस्य के पात्र जानि मुनि, दिखरायो सुख सार।
युगल मन्त्र दै धाम नाम, श्रीवृन्दावन अधिकार ॥३॥
सखी रूप दीनो रंग भीनो, ततसुख कृपा अपार।
प्रेम परे उतकृष्ट परा जिन, देत न लाई वार ॥४॥
ब्रह्मा जु अधिकार मग्न भये, निरखत नित्य विहार।
अगिवानी पर करिकै 'रूप रसिक' प्रभु लै बलिहार ॥५॥१८॥

※ दोहा ※

हंस रूप गोपाल कै, बजत बधाई आज।
चतुरव्यूह प्रगटे सखी 'रूप रसिक' सिरताज ॥१॥

※ पद—राग विलाल त्रैताल ※

श्री हंस रूप रसिकाभिराम कै। आज बधावो सगुण धाम कै ॥टेक॥
शुक्ल सुनौमी कातिक मासा। प्रगटे सनकादिक सुखरासा ॥१॥
पंच वर्ष तिन लसै शरीरा। निरखत मिटै जन्म भव-पीरा ॥२॥
सुन्दर केश शीश पर राजै। भाल विशाल तिलक छवि छाजै॥३॥
अधर दशन अरुणाई सोहैं। भृकुटि कुटिल अलक मन मोहैं ॥४॥
नैन कमल दल परम सलोने। हेरनि रूप लगैं उरझौने ॥५॥
श्रवण सुहावन अति मन-भावन। हरि रस अमृतकै गटकावन ॥६॥
उन्नत नासा शुक छवि छीनैं। कम्बु सुकण्ठ कपोत लजीनैं ॥७॥
हृदय कमल राजैं प्रिय प्यारी। उदर नाभि गहरी गुण भारी ॥८॥
बाहु विशाल जंघतर आवैं। हस्त कमल बहु सुख उपजावैं ॥९॥
जंघ युगल पिण्डूरी फबि रही। चरण कमल छवि जात न कही ॥१०॥

सो नर धन्य शरण जो आवै। निरभय होय युगल पद पावै ॥११॥
त्रिगुण परे निर्गुण पद दाता। प्रथम पिता कहिये जु विधाता ॥१२॥
ब्रह्मा सृष्टि करन अधिकारी। मगन रहै अधिकार मझारी ॥१३॥
तिनसों मुनिवर प्रश्न जु करी। ब्रह्मा की मति भ्रम में परी ॥१४॥
ब्रह्मा जू तहाँ रहे विचारी। प्रगट भये प्रीतम अवतारी ॥१५॥
जन्म करम दिन इनकों कहिये। उत्सव करे परम पद लहिये ॥१६॥
प्रथम सु सम्प्रदाय प्रगटावन। आचारज वपु भये मन भावन ॥१७॥
चतुरव्यूह मूरत मनहरनी। 'रूप रसिक' हिए रस विस्तरनी॥१८॥१६॥

* पद *

जय जय हंस रूप भगवान।
सनकादिक उपदेशहि कारण, प्रगट उदय भये भान ॥१॥
छीर नीर ज्यों विषय चित्तकूँ, भिन्न भिन्न कर ठान।
प्रगट कियो यों तत्व पदारथ, गावैं वेद पुराण ॥२॥
सनकादिक ये मारग अनुसर, मत अविरोध बखान।
नारदादि ऋषि जिन पद परसे, पावत सुख अभिराम ॥३॥२०॥

* पद—राग कान्हरो *

श्रीकृष्ण जु हंस धारयो वपु।
तारण तरण भव सिन्धु को खिवैया।
भुवन चतुरदश छायो है मंगल, नासे अमंगल विपत बढइया ॥१॥
सनक सनन्दन सनतकुमार, सनातन को नित्यकेलि दिखइया ॥२॥
सहचरि भाव बताय लाडिलो, सर्वेश्वरपद प्रीति दिवइया ॥३॥
ब्रज दूलह हँसि लेत वारने, सदा मुबारक रहो मेरे रइया ॥४॥२१॥

✻ कवित्त ✻

आय सनकादिक विरञ्चि सौं करयौ है प्रश्न,
चित्त और विषय कौ कहौ जो निरधारे हैं।
कार्तिक पुनीत अखै नौमी कौ जनम जानौ,
जग में प्रकाशमान भये सुख भारे हैं ॥१॥
भागवत पूरण पुराण में प्रमाण मान,
कहैं बलदेव भक्त बहुतिक तारे हैं।
नीर - क्षीर न्यारे करिवे के काज हंस रूप,
आपहीं गोविन्द गौऊलोक ते सिधारे हैं ॥२॥२२॥

❁ श्री हंस भगवान का बड़ा मंगल ❁

✻ श्लोक ✻

सुपक्षं श्वेतवर्णञ्च सुचञ्चुः स्वायतेक्षणम्।
सनकादिज्ञानदातारं हंसं श्रीकृष्णमाश्रये ॥१॥

✻ दोहा ✻

भयउ विमोहित विधि जबै, सनकादिक सुन प्रश्न।
रस जीवन रसिकन दियो, जयति हंस श्रीकृष्ण ॥१॥
ज्ञान - नीर में भजय - पय, घुलमिल रहेउ महान।
निज चञ्चू कीनेउ पृथक, नमो हंस भगवान ॥२॥

✻ छप्पय ✻

विधि लोक में जाय जबै सनकादि मुनीगण।
पूछेउ विधि सन प्रश्न पृथक कस दोउ विषय मन ॥
उत्तर विधि नहि फुरेउ इष्ट तब सुमिरन कीनो।
हंस करी अवतार उचित उत्तर हरि दीनो ॥

कही हंस - गीता स्वमुख, श्रीभागवत बखान।
सम्प्रदाय प्रगटी रसिक, नमो हंस भगवान ॥१॥

* पद *

जयति हंस भगवान विधाता - दुख - दमन।
प्रगटेउ सुमिरत विधि शुक्ल उज्ज्वल वरन॥
दृग सुपद्म छवि खान कोटि दिनकर प्रभा।
युगल किशोर स्वरूप छटा छई विधि - सभा॥
विधि - सभा अति छटा छई प्रभु कृपा सनकादिक ढरी।
प्रश्न तिन उत्तर जु दैकै रूप निज चितयो हरी॥
हरिप्रयादि अलि महल तुम उर चितायेउ सबै मुनि ॥१॥

जयति हंस भगवान हंस गीता कही।
रस साधन जिहि लिखेउ रसिक - बनि आ वही॥
व्याख्या कहो सनकादि ब्राह्म उपनिषद है।
लिखेउ सूत्र मुनि नारद प्रेम की हद है॥
प्रेम की हद है जु लख निम्बार्क कहे दस छन्द हैं।
श्रुतिसार गायेउ जिनहि में भानुसुता नँदनन्द है।
तिहि शिष श्री जु निवास कीर्ति गुरु की गही ॥२॥

जयति हंस भगवान विनय सनकादि लख।
प्रगटेउ शालिग्राम रूप नैनन निमिष॥
सो सर्वेश्वर प्रभु निम्बजन इष्ट हैं।
सेवा कुञ्ज सुहान श्रुति कह श्रेष्ठ हैं॥
श्रुति मुख कहैं श्रेष्ठ हैं सो गण्डकी पावन करन।

महल मोहन रूप प्रगटे रसिकजन के आभरण।
प्रतिच्छण वैष्णव वृन्द लखत छवि अनिमिख ॥३॥

जयति हंस भगवान की मूरति मोहनी।
प्राञ्जलि संग सनकादि सुछवि चित सोहनी॥
रसिक दृग चितहारि सु झाँकी रस भरी।
सुमिरत नसत विकार झरत रस की झरी॥
झरत रस की झरी प्रतिच्छण हंस वंश सुहावनी।
बनत बरनत रसन दृगनहिं दृग रसन नहिं गावनी।
दृग कोर लहि अलि गंग बुहरत महल मोहन सोहनी ॥४॥२३॥

❁ छोटा मंगल ❁

※ पद ※

नमो नमो हरि हंस हमारे।
कुन्द इन्दु द्यु ति निन्दित सुन्दर, शुक्लवर्ण सुठि उज्ज्वल धारे ॥१॥
अनियारे कजियारे चितहर, अति चञ्चल दृग सुठि रतनारे।
भक्त जनन के जीवन सम्पति, रसिक जनन के उर उजियारे ॥२॥
भजन ज्ञान श्रु ति सिंधु मिलेउ युग, कीनेउ पृथक दास रखवारे।
सर्व प्रथम उपदेशक दीनन, परम धर्म जो सब सुख सारे ॥३॥
जे पद पद्म रसिकजन जीवन, हरि संवाहत नित सिर धारे।
तिनको दान सहज जग दीनो, कुञ्ज महल के वासि बनारे ॥४॥
विधि दुख नाशक सनकादिक के, संशय छेदक जन भव पारे।
पावन गंग जासु पद-रज लहि, महल सोहनी देत सवारे ॥५॥२४॥

॥ पद ॥

❀ श्री हंस प्रभु के जन्म की बधाई ❀

बाजत आजु बधाई सुहाई।
ब्रह्मलोक में हंस लाड़िले, प्रगटे शोभा छाई ॥१॥
नाचत ब्रह्मा भरे मोद में, सनकादिक हरषाई।
शुक्ल वरण मृदु पद अरुणारे, नख छवि चन्द्र सुहाई ॥२॥
श्रुतिसागर में नीर क्षीर जस, मिलेउ जु सहज गहाई।
सो निज चोंच पृथक कर दीनो, रसिकन के सुखदाई ॥३॥
सनकादि हित रस उपदेस्यो, ग्रन्थ भागौत लिखाई।
'गंगअली' लह कोर कृपा की, रसिकजु नाम लिखाई ॥४॥२५॥

॥ पद ॥

मंगल हंस रूप अवतार।
मंगल जै श्रीसनक सनन्दन, संग सनातन सनतकुमार ॥१॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य प्रगट किए, शरणागत हिए सुखसार।
मंगल श्रीनारद मुनि-मुनिवर, मंगल जै श्री अरुणकुमार ॥२॥
मंगल श्रीद्वादश आचारज, तिनपद महिमा अमित अपार।
मंगल सुन्दर भट्ट आदि श्री, अष्टादश भये प्रेमागार ॥३॥
मंगल केशवभट्ट मुकटमणि, अनगन जन किए भव उद्धार।
मंगल जै श्रीभट्ट रसिकवर, गौरश्याम छवि दृगनि निहार ॥४॥
मंगल श्रीहरिव्यासदेव जै, दम्पति निरखत नित्य विहार।
तिनके चरण शरण हरिजन जे, ते सबजन है मम परिवार ॥५॥
मंगल विपिनराज छवि निरखत, नाना कुञ्ज-निकुञ्ज विहार।
मंगल जमुना केलिरूपिणी, नीर तीर फूली फुलवार ॥६॥

मंगल विहरत गौर-श्याम मिलि,मंगल सहचरि सँग सुकुमार।
अग्रवर्तिनी श्री रङ्ग देवी, अष्ट सखिनि के भुण्ड अपार ॥७॥
मंगल गावत हिय हरषावत, उमङ्ग अङ्ग रस प्रेमाकार।
मंगल श्यामाश्याम लडावत,छिनछिन प्रीति प्रमुदित बलिहार॥८॥
निशिदिन आनन्द अम्बुद बरसत रहै प्रेम जल धार।
मंगल हित श्रीहरिप्रिया निरखत, मनि मंजरि सखी जैजैकार।
मंगल अलीमाधुरी परिकर, सखि पद वन्दौं बारम्बार ॥९॥२६॥

※ (२) श्री सनकादि भगवान् जयति ※

तिथि—अक्षय नवमी (कार्त्तिक शुक्ला ९)

※ श्लोक ※

हरिणीं हारिणीं हीणां हरितां चतुरक्रियाम्।
कौमारीं सततं वन्दे तप्तचामीकरप्रभाम् ॥१॥

※ दोहा ※

अद्भुत निम्ब सुसम्प्रदा, प्रथम शिष्य अवतार।
जिन प्रगटायेउ हंस गुरु, जय सनकादि कुमार ॥१॥
जो नहिं प्रगटत हरिशरण, मन्त्र निरत रसस्वादि।
तौ प्रगटत कस हंस - हरि, नमो गुरु सनकादि ॥२॥

※ बड़ा मंगल प्रारम्भिक सनकादि भगवान् का ※

जय सनकादि आचार्य, प्रथम वैष्णव मणी।
रसिकन हित अवतार, सुरस प्रगटेउ धनी ॥

पाय नरान अदेश, रचेउ जब सृष्टि विधि।
निरमेउ पञ्च अविद्य, भरेउ दुख उर मधि॥
भरेउ दुख उर मधि विधि जब हृदय हरि सुमिरण छये।
कार्त्ति सुदि तिथि नवमि मानते चार शिशु परगट भये॥
वर्ष पञ्चक वय सु सुन्दर श्याम अंग कान्ति बनी।
जय सनकादि आचार्य प्रथम वैष्णव मणी॥१॥

जय सनकादि भक्त ब्रह्मा सपूत सुत।
मोक्ष धर्म आचार्य पितुन आदेश कृत॥
गए इक दिन धाम हरि के चरण तुलसी रस सनी।
गई नासा गंध बिसरेउ ब्रह्म मति जो श्रुति भनी॥
ब्रह्ममति जो श्रुति भनी सो विनस हरि रसमें सने।
पंच रस माधुर्य भक्ति उर जो प्रगटी रस घने॥
प्रथम बाँधी तुलसी कण्ठी भक्तिप्रद वैष्णवन द्रुत।
जय सनकादि भक्त ब्रह्मा सपूत सुत॥२॥

जय सनकादिक भक्त रसिक परसाद के।
तत्क्षण पायेउ भिलत भरे रस स्वाद के॥
अणु राखेउ लघु भ्रात जब शिव कर दयो।
सो जु शिवा के लखत मोद उर सुख लयो॥
मोद उर सुख लयो शिव जब शिवा पति शापित करे।
तुम जो पति उच्छेष कोऊ विष्णुजन नहिं मुख धरे॥
दीन उमा अधिकार सबन तप साध के।
जय सनकादिक भक्त रसिक परसाद के॥३॥

जय सनकादि अचार्य गए विधि धाम में।
पूछेउ पितुसन प्रश्न भरे रस भाव में॥
विषय चित्त दोऊ परस्पर अति ही गड़े।
होंय पृथक कस रीति बताओ पितु बड़े॥
रीति बताओ पितु बड़े तुम चित्त जिहि विधि रस सनै।
सिन्धु भव यह जीव उतरहि प्रभु कमल पद अलि बनै॥
गंग न समझेउ विधि सुरचना काम में।
जय सनकादि अचार्य गए विधि धाम में॥४॥२७॥

※ दोहा ※

हरिणी हारिण हरित अरु, हीणा चार स्वरूप।
वन्दहु सनकादिक अली, कनकांगी सुख रूप॥

※ सोरठा ※

नयन पुतरि आगार, सुख शैया विलसत युगल।
जय सनकादि कुमार, हरिण्यादि अलि रूप नित॥

※ दोहा ※

अक्षय नवमी युगादि हरिण्यादि अवतार।
महल टहल दायक रहस गायउ कुञ्ज विहार॥

※ छप्पय ※

रचत विधी जब सृष्टि अविद्या रच दुखदायी।
सुमिरेउ मन श्री हरी कुसुम झर नभ ते छायी॥
प्रगटे चार सुबाल श्याम अङ्ग छवि धारी।
हरि शरणं मुख मन्त्र कुटिल कच दृग रतनारी॥

सनक सनन्दन सनातन, चौथे सनत्कुमार।
वन्दहु वैष्णव प्रथम मणी, हरिग्रयादि सुकुमार ॥१॥

❀ श्री सनकादि का बड़ा मंगल ❀

❀ पद ❀

जय सनकादि अचार्य हंस सुत मुनि प्रवर।
दीनेउ नारद ज्ञान सोइ व्रज कुसुम सर॥
बहुरि शेष सन सुनेउ ग्रन्थ जो भागवत।
धायेउ गुरुपद जटा आर्द्र पाताल गत॥
पाताल गत मुनि ग्रन्थ लहि सुठि दियेउ मुनि सांख्यायना।
सोइ कपिल जननी सुभाषी कपिल गीता रस सना॥
कपिल दीनी सोई बृहस्पति पराशर ॥१॥

जय सनकादि अचार्य भागवत विस्तरी।
स्वर्ग सुनायेउ गुरु भक्त उद्धव धरी॥
दीन पराशर सोइ पुलस कहे मित्र सुत।
सुनेउ दोउ पुनि भक्त हरी मुख धाम गत॥
सुनेउ हरि मुख धाम गत सनकादि मुनि बदरी बने।
लखेउ नारद विमन तन अति कली के दुख में सने।
हरिद्वार सप्ताह विधि मुनि उर धरी ॥२॥

जय सनकादि अचार्य पृथु अवतार सिस।
दीनेउ ज्ञान सुहान पृथुहि भागौत यश॥
भाषेउ हरिपथ ज्ञान आपुने भुज तरण।
भक्ति मार्ग जहाज सु केवट जनार्दन॥

जनार्दन केवट सु जाके श्याम गीता मुख कही।
कर्म को प्रभु गुह्य भाषेउ गुह्यतर कही ज्ञान ही ॥
गुह्यतम कही भक्ति शरणागति मिष ॥३॥

जय सनकादि अचार्य अनादि महल अलि।
विधि वैष्णव उपदेश चरित किए मधुर वलि ॥
शिवा शाप लै उग्र नरक अपवर्ग मम।
जिन सुन विष्णाचार्य भये श्री रुद्र ब्रह्म ॥
श्री रुद्र ब्रह्म आचार्य बन त्रय सम्प्रदा जस विस्तरे।
मृदुलमति यह चरित मुनि सुनि वचन अलवल मुखटरे ॥
'गंग अलि' शुठि चरित विनासक मल कलि ॥४॥२८॥

❀ छोटा मंगल ❀

❀ पद ❀

जो नहिं सनकादिक जग आते।
श्रुति सर मिलेउ भजन उद्धारक, कौन हंस प्रगटाते ॥१॥
परम धर्म श्रुतिसार अनूपम, को जग हेत चिताते।
पितु वच अनदर कायाधव यदु, का विधि भक्त कहाते ॥२॥
होती कहा दशा पतितन की, शरण कौन की जाते।
साधन - हीन मलीन जनन कों, मारग कौन बताते ॥३॥
अरचा साधन हरि सुमिरण रस, को जग में बरषाते।
ब्रह्मनिष्ठ सूखे ज्ञानिन को, कौन भक्ति - पथ लाते ॥४॥
असन वसन सब कथा श्रवण हरि, को यह व्यसन बताते।
वेद - अर्थ भागवत ग्रन्थ में, को विदुषन हित गाते ॥५॥

हरि व्यापक नारद जस शिष्या, को जग हेत पठाते।
कपिल मुनी जस प्रभू शिष्य ते, कौन सांख्य प्रगटाते ॥६॥
योग ज्ञान कर्महि में रच पच, सिर धुनि सब पछताते।
पतित पावनी 'गंग अली' गल, को कण्ठी बँधवाते ॥७॥२६॥

* पद–राग चर्चरी *

जै जै सनकादि आदि हरिजन सुखदाई,
हंस वंश प्रगट भये, लोकन आनन्द छये।
निरखत छवि अंग - अंग विधि - मन हरषाई ॥१॥
भक्ती निर्वेद ज्ञान, प्रगटे रस मूर्तिमान।
अम्बर छिति दशौं दिशा, मंगल ध्वनि छाई ॥२॥
चारि रूप एक संग, एक वैस एक रँग।
अद्भुत कौमार वेष, लखि दृग ललचाई ॥३॥
सम्प्रदाय प्रगट करी, उज्ज्वल रस प्रेम भरी।
'रूप रसिक' हर्ष भई, मिलि मंगल गाई ॥४॥३०॥

* पद–राग दण्डक झपताल *

देव परम धर्मादि पर रूप परमेश्वर,
ज्ञान विज्ञान वैराग्य मूलम्।
सकल जगदादि सनकादि विधिना सुवन,
विघन मोचन त्रिविध ताप शूलम् ॥१॥
देव काम क्रोधादि मद-मोह मत्सर असुर,
लोभ पाखण्ड तरुवर कुठारम्।
परस्पर प्रश्न रस कृष्ण शिष्यादि सुख,
शमन दुख दवन मन निर्विकारम् ॥२॥

देव अखिल गुरुरूप गोतीत गोलोकगत,
अच्छरातीत रस रसिक स्वादी।
मग्न भये भक्ति भागौत रत भक्त वपु,
भाव - भाविक भरम छेदे अनादी ॥३॥
देव सन्त हित करन संशय हरन संहिता,
शुद्ध सतधर्म निर्धारकारी।
धाम वृन्दाटवी वाम वर सहचरी,
कुञ्ज कलकेलि कौतिक अहारी ॥४॥
देव नित्य नैमित्य निर्गुण सगुण तत्ववित,
सृष्ट सुविचार करि इष्टधारी।
शब्द परब्रह्मरत सुनत ब्रह्मा चकित,
हंस उपदेश संशय निवारी ॥५॥
देव सत्य ते नित्यवर वारिधर धार चर,
सुर धुनी शेष सु विचार करता।
धरि अनन्य टेक सु विवेक विधि जान मन,
मननि मत्त उर अनन्त भाव भरता ॥६॥
देव उग्र विग्रह प्रज्वलित अति अनल वत्त,
तेज वल अतुल आनन्द राशी।
भक्तवत्सल विमल ललित ललितादि सुख,
निगम आगम अगम रस - प्रकाशी ॥७॥
देव सम्प्रदा शुद्ध अविरुद्ध मन अवनि सरित,
वत सुभग हरि स्यन्द चालम्।

तासु मधि रमत हरिदास आमै अधिक,
'दास कैशोर' उर - सर - मरालम् ॥८॥३१॥

✻ पद ✻

जय जय जय श्री सनत कुमार ।
जय जय सनक सनन्द सनातन, चतुरव्यूह जनहित अवतार ॥१॥
सजल जलद अरविंद नीलमणि, कांति विनिंदक तन सुकुमार ।
करुणा शांति रहस्य रस पूरण, भवभय भंजन परम उदार ॥२॥
हंस वंश परकाशक नाशक, अखिल अविद्या सहित विकार ।
सम्प्रदायिक सिर छत्र दयानिधि, ज्ञान विराग भक्ति आगार ॥३॥
'हरिही शरण' मुख द्रवत रसायन, हरिजस रसिक दीन उपकार ।
किशोरी गोपाल प्राण जीवनधन, बलि-बलि जाऊँ बारम्बार ॥४॥३२॥

✻ पद–राग खमाच या कान्हरो ✻

जयति सनकादि सब जक्त की आदि के,
भजन विन बादि सब भजन जानौं ।
सर्व श्रुतिसार भागवत में कियो,
निर्धार यह प्रगट नाहि जु छानौं ॥१॥
विधाता करै उतपत्ति सकल जगत की,
रमा पालन करैं शिव संघारा ।
त्रिगुण ए प्रवृति में रत सदा निर्गुण,
निरवृत्ति सनकादि करै मुक्ति सारा ॥२॥
गुण अगुण न्यारी लीला यहै वेद,
आगम पुराणादि सब ग्रन्थ माहीं ।

अगुण सनकादि सब विश्व गुरु विना तिहु,
काल युग च्यारी में मुक्ति नाहीं ॥३॥
यहे अधिकार सनकादि निज आपुनो,
जानि वैकुण्ठ ते भक्ति आनी।
भक्ति रस पञ्च युग युग विषे जीव,
निस्तार हित देत सनकादि ज्ञानी ॥४॥
सतयुग शान्त रस दास्य त्रेता वछल,
द्वापरे सख्य रस कलौ माहीं।
देत हैं आप निज शिष्य परशिष्य तत,
शिष्य कर प्रगट ए सर्वदा हीं ॥५॥
हंस के शिष्य सनकादि सनकादिके,
वीनधर के समझि निम्बभानू।
शिष्य तिनते निवासादि योगेश्वरा,
चतुर युग मुक्तिप्रद यों जु जानू ॥६॥
शान्त हरि ध्यान मख दास्य वच्छल्य,
पूजा व दुरि नाम सखि या प्रकारा।
देत चारगे युगन मांहि ए जगत गुरु,
कहैं सब ग्रन्थ वेदादि सारा ॥७॥
सदा चिरजीवी जीवन मुकत च्यारी,
आचार्य ए राधिका कृष्ण रूपा।
जीवन निस्तार हित नितहि त्रयलोक में,
फिरत ए गुणागुण भक्त भूपा ॥८॥

जयति जै पञ्चहायन उर धरे त,
गुरुवरं मानस कुमारं जयति जै।
जयति सिद्धेश योगेश भक्तेश हरि-
भक्ति आदौ प्रचारं जयति जै ॥९॥
जयति अविरोध मत निष्ठ सकलेश,
करुणा - पयोनिधि ओंकार रूपम्।
सदा अव्याहतौ गति सरवज्ञ जै,
व्योमयाने महात्तम अनूपम् ॥१०॥
जै गुणातीत अव्यक्त आनन्द सत्,
चित् उदधि - मग्न जय महादेवम्।
सर्व आचार्यमणि हरिकृपा बिना को,
लहै सनकादि महागाध भेवम् ॥११॥
जैति चतुरंग ब्रह्माण्ड की मुक्ति हित,
प्रगट सब दिन रहत नाद रूपम्।
चारि तनु होइ हरि कृपादि सहचरि निपुन,
राधिका कृष्ण सँग नित अनूपम् ॥१२॥
जैति अग्रज मुनीश्वर विभो महा हरि-
भक्ति प्रगट करन कृपासिन्धो।
प्रणत गोविन्द सुर घोर कलिकाल तें,
करौ रच्छा सदा दीनबन्धो ॥१३॥२३॥

* पद–राग मारू वा बिहाग *

सेव्य है सनतकुमार सनातन।
तिनके हित प्रभु आप पधारे, संशय मेटो आन ॥१॥

आज सखी धनि भाग हमारो, छकि हैं नैन प्रमान ।
सुकृत हमारो धन्य भयोरी, प्रगट्यो प्रेम प्रधान ॥२॥
मंगल गावो चौक पुरावो, छावो विविध वितान ।
ध्वजा पताका कदली रोपो, बन्दन माल सुठान ॥३॥
कार्तिक मास पुनीत दिवस अति, शुक्ल पक्ष सकुचान ।
वासर मध्य सकल दिस पूरन, योग सुलग्न विधान ॥४॥
नव निधि आइ अक्षय नौमी दिन, मत अविरोध बखान ।
करो अलंकृत महल सहेली, नित नैमित्त समान ॥५॥
उत्सव भयो तिहुँ पुर माही सुर, छायो व्योम विमान ।
जै जैकार करत लोकनपति, सबकी भूख बुतान ॥६॥
नृत्य कला में कुशल गुनीजन, सब विधि बुद्धिनिधान ।
दीने दान विविध नग हीरा, अमर वधू ललचान ॥७॥
ता छिन को सुख को कवि वरने, मति शारदहु भुलान ।
ब्रह्मा हरषि करत न्योछावरि, बाँटत भक्ती दान ॥८॥
मुक्ति फिरत घर घर के द्वारे, करत न कोउ कान ।
कृपा दृष्टि करि श्रीहरि हेरे, सबके हिये सिरान ॥९॥
दे दे जात अशीस मुनीजन, चिरजीवो हंस कुल भान ।
भीर अजिरमें किहिमति भाषौं, को आवत को जात न जान ॥१०॥
(तहाँ श्री) नारद करते चल्यो अमृतसर, छायो अखण्ड प्रमान ।
निम्बग्राम निम्बारकस्वामी, तिन कह्यो भाष्यकार के कान ॥११॥
तहाँ ते उमड़ चल्यो सरिता चलीजू दलमति वा दिनमान ।
अब एक छींट हरष सदा पावे, भूखी जड़ अज्ञान ॥१२॥३४॥

* पद *

भज मन सनक सनन्दन मुनिवर, हंस गोपाल दुलारे जू।
जब-जब होतजु हानि धर्म निज, करुणा करि गुरु आवें जू ॥१॥
मत अविरोध प्रकाश करें प्रभु, घर-घर भक्ति प्रचारें जू।
नवधा दसधा सहज ही पावें, जो कोउ ध्यान लगावें जू ॥२॥
पंच वरष नैष्ठिक व्रत सोहै, अलकें घुंघरवारी जू।
श्रीमुख कमल कहाँ मति वरनों, कोटिचन्द्र छवि छाई जू ॥३॥
भौंह धनुष अधरन अरुणाई, नासा शुकतुण्ड लजावें जू।
जन जु मत महारस भीनें, युगल रूप मद छाकें जू ॥४॥
हरियश सुनन श्रवण अतिलोभी, पीवत न कबहु अघावें जू।
गोल कपोल दीप्त आदर्श से, चिबुक गाढ़ मन मोहै जू ॥५॥
त्रय रेखा युत कम्बु कण्ठ जन, के त्रय ताप नसावें जू।
द्वादश तिलक पद्मदल माला, युगल दाम गल सोहै जू ॥६॥
विस्तृत वक्षस्थल निज आलय, दम्पति को सुख ऐना जू।
गज छौना की सूंड़ सरिस भुज, हस्त कमल अरुणारे जू ॥७॥
त्रिवली उदर सोपान नाभिसर, यमुन भँवर छवि छीने जू।
कटि केहरि को ध्यान करे जो, कामादि मत गज भागें जू ॥८॥
कदली नितम्ब जघन शोभा घर, पिंडुरि सरस मन भावें जू।
चरण पृष्ठ अंगुरी नख सोहैं, अर्धचन्द्र अनुहारी जू ॥९॥
शिख ते नखलों रूप अनूपम, श्रीकुमार सुख ऐना जू।
मुखरामृत रहत रसभीने, भुवन चतुर्दश स्वामी जू ॥१०॥
इनके आश्रित अभय बिना नर, भटकत भव वेगारी जू।
पादाम्बुज मन मधुकर सेवहु, करण धार भल पाये जू ॥११॥

बहुते और युगन के साधन, यथाशक्ति सब गावें जू ।
देहु सो हरषि प्रिया अब मोकों, श्री वनराज बसाओ जू ॥१२॥३५॥

✻ पद-राग जोगिया आसावरी ✻

जन्म महोत्सव आज महाई ।
ब्रह्मलोक में आनन्द गावत, सुर मिलि सरस बधाई ॥१॥
प्रगटे चतुर्व्यूह सुन्दर वर, श्याम वरण छवि कही न जाई ।
सनक सनन्दन और सनातन, सनतकुमार चारहु भाई ॥२॥
ब्रह्मा के मन ते उतपति भये, पञ्च बरस सम वैस सुहाई ।
प्रथम सृष्टि के आदि अवतरे, दिनकर शत सम तेज लखाई ॥३॥
विषय चित्त न्यारे हों जिहिं विधि, पितु सों प्रश्न कियो हरषाई ।
चतुरानन कछु दियो न उत्तर, लज्जित ह्वै दई नारि नवाई ॥४॥
मन ही मन में अस्तुति कीन्ही, हे हरि मैं तुम्हरी शरणाई ।
हंस गोपाल प्रगट भये तबहिं, अपने सुत की करन सहाई ॥५॥
ज्ञानभक्ति ते विषय चित्त दोउ, विलग होहिं दई युक्ति जनाई ।
नीर-छीर जिमि विलग हँस करें, एहि विधि अतिउत्तम समझाई॥६॥
ताहि छिन सनकादिक चारों, चरण परे प्रभुजी की आई ।
शरणागत करि अभय हस्त धरि, मन्त्रराज तब दियो सुनाई ॥७॥
करिके शिष्य दई यह आज्ञा, निवृत्ति मारग देहु चलाई ।
आदि आचारज स्थापन करि हरि, नैष्ठिक रीति दई दरशाई ॥८॥
आनन्द भयो सकल त्रिभुवन में, प्रफुलित भये ऋषी मुनिराई ।
'सरस माधुरी' छकी निरख छवि, चरण वंदना करि बलि जाई ॥९॥३६॥

* पद *

नमो नमो नित चारों भाई।
सनक सनन्दन बहुरि सनातन, सनत्कुमार सदाई ॥१॥
जिनके हित अवतार धरे हरि, निज मुख वेदन गाई।
'नरहरिदास' बसो मन मेरे, प्रिया सहित श्रीश्याम कन्हाई ॥२॥३७॥

* पद *

जै जै सनकादि उदारा, बन्दौं पद बारम्बारा।
वपु श्याम रूप उजियारा, जिन विधि सों प्रश्न उचारा।
तेहि उत्तर देत विधि हारा ॥ वन्दौं०॥१॥
तब हंस रूप हरि धारा, ब्रह्मा को मान सम्हारा।
दई उत्तर प्रश्न के सारा ॥ वन्दौं०॥२॥
हो ज्ञान-भक्ति के राजा, अस कह्यो गरीब निवाजा।
चहुँ दिसि कियो भक्ति प्रचारा ॥ वन्दौं०॥३॥
जे चरण शरण तव आये, ते अभयदान जन पाये।
दास गोपाल जु आस तिहारा ॥ वन्दौं०॥४॥३८॥

* पद *

मीठी गावहु आजु बधाई।
लाल लाड़िली अंस निवासिन, चार अली महि आई ॥१॥
हारिणी हरिणी हीणा हरिता, महल खवास सुहाई।
सोई मुनि सनकादिक रूपा, ब्रह्म सदन प्रगटाई ॥२॥
दुन्दुभि बाजत इन्द्री स्वामी, बन्दनवार बँधाई।
नाचत गायत्री सावित्री, जय जय गात बधाई ॥३॥

यह रस सनकादिक नहिं जानत, कहत जु गूढ़ महाई ।
कछु जन इन अलि रूप न जानत, तिन मुख वचन सुनाई ॥४॥
कछुक कहत ये शान्त भक्ति के, रस आचार्य जनाई ।
सो प्रभु रूप भावना जैसी, दीखत है मुनिराई ॥५॥
सत्य बात जो इन अवतारन, को प्रगटत रस राई ।
इन पद कृपा रसिकजन ब्रज के, सीखे भक्ति सुहाई ॥
'गंग अली' पद - पद्म कृपा तें, कण्ठी गले बंधाई ॥६॥३६॥

※ (३) श्री नारद भगवान् जयति ※

तिथि—व्यञ्जन द्वादशी (मार्गशीर्ष शुक्ला १२)

❀ श्री नारद जी महाराज की मंगल बधाई ❀

※ श्लोक ※

मुग्धां स्निग्धां विदग्धाञ्चासन्दिग्धाञ्चतुरक्रियाम ।
वन्देऽरुणिक्रियाभासां देवर्षिप्रमदाकृतिम ॥१॥

※ दोहा ※

हंस वंश सनकादि शिष, त्रिभुवन भक्ति प्रचार ।
अगहन शुक्ला द्वादशी, प्रगटे वीणा धार ॥१॥
आचारजवर वीणधर, सुर नर तारन काज ।
प्रगटे श्रीऋषिराज मुनी, परम बधाई आज ॥२॥

❀ बड़ा मंगल ❀

❀ पद ❀

जै जै श्री नारद आचारज भागवत धर्म के।
लीला रस माधुर्य जुगल पद मर्म के॥
सहचरि वपु वर धारि सुजुगल रिझावहीं।
वीन बजाय उमाह सो विवि गुन गावहीं॥
गावहीं मन भाय चाहत पद सुदम्पति सुख लह्यो।
भये अंक ब्रह्मा ते प्रगट सनकादिकन दीक्षित कियो॥
नित्य बिहार अहार जिनके सहज रस अति मर्म के।
जै जै श्री नारद आचारज भागवत धर्म के॥१॥

जै जै श्री नारद आचार्य प्रगट भये वीन धरी।
किय जीवन उद्धार सम्प्रदा प्रगट करी॥
मारग शुक्ल द्वादशी सुव्यञ्जन शुभ घड़ी।
रसिक जनन हिय आश पुजाई अति बड़ी॥
बड़ी अति मन भरी शोभाधाम लखि आनन्द भयो।
ऋषिराज प्रगटे होत जै धुनि देव नर हिय सुभ छयो॥
सनकादिकन परताप भूतल होय प्रगट करी।
जै जै श्री नारद आचार्य प्रगट भये वीन धरी॥२॥

जै जै श्री नारद आचार्य प्रेम रस मत्त हैं॥
श्री सनकादि प्रसाद सों जानत तत्व हैं॥
लीला रहसि निकुञ्ज भाव हिय में धरें।
विचरत जीव कृतार्थ करत चहुँ दिसि फिरें॥

फिरें जीवन करे सनमुख परम करुणा धारि के।
वाल्मीकि व्यास प्रह्लाद ध्रुव उपदेश भवार्णव पार के॥
गुरुदीक्षा सनकादिकन मों गूढ़ पायो तत्व है।
जै जै श्री नारद आचार्य प्रेम रस मत्त हैं॥३॥

जै जै श्री नारद आचार्य देव ऋषिराज हैं।
हंशवंश अवतंस भक्ति की खान हैं॥
अमित जीव सन्मुख प्रभु अनुदिन करें।
हरि लीला माधुर्य पीयूष हृदय धरें॥
धरें छिन छिन गहे हरि गुन तोऊ तृप्त न होयहीं।
नित नई लीला स्वाद लोकन फिरत चहुँदिसि जोयहीं॥
कृष्ण अलि चहुँ रही दुन्दुभि अमित बाजे बाज हैं।
जै जै श्री नारद आचार्य देव ऋषिराज हैं॥४॥४०॥

❀ छोटा मंगल ❀

❋ पद ❋

नमो नमो नारद मुनिराज।
विषयिन प्रेम भक्ति उपदेशी, छल बल किये सवन के काज॥१॥
जिन सुचित्त दे हित कीन्हो हैं, सो सब सुधरे साधु समाज।
'व्यास' कृष्णलीला रँग राचे, मिट गई लोक वेद की लाज॥२॥४१॥

❋ पद–राग ललित ❋

आज बधाई परम सुहाई।
श्री नारद मुनि वीणाधारी, प्रगट भये मुनिजन हरषाई॥१॥
आचारजवर सब गुण सम्पन्न, श्रीसनकादिक लाल सहाई।
लीनी दीक्षा परम गुप्त धन, सहचरिभाव भयो मनभाई॥२॥

युगल रूप नित प्रति रसिकन को, रस-वारिद वरषा बरसाई।
'रूपरसिक' जन-चातक हित प्रभु, स्वाति बूँद अद्भुत प्रगटाई॥३॥४२॥

※ पद—राग चर्चरी ※

(श्री) नारद अवतार भयो सन्तन सुखकारी।
जीवन उपदेश करत लोक हितकारी॥१॥
गोपमास अति पुनीत, ब्रह्मा-अंक शुठि सुनीत।
शुक्लपक्ष द्वादशी शुभ व्यञ्जन तिथि भारी॥२॥
गौरवरण तेज पुञ्ज, वीणा शुभ लिए हाथ।
तालग्राम मान लेत गावत गुण प्यारी॥३॥
सनकादिक कृपा पाय, भूमें पधारे आय।
वाल्मीक व्यास आदि ध्रुव के उपकारी॥४॥
प्रह्लादहिं उपदेश कियो, दक्ष सुतन योग दियो।
पञ्चरात्र कर प्रचार पूजा-विधि गाई॥५॥
निम्बारक शिष्य किये, सर्वेश्वर पूज्य दिये।
भिन्नाभिन्न मत सिखाय सम्प्रदा चलाई॥६॥
श्रीनारद शरण पाय, भक्त गए प्रभु कूँ धाय।
'रूपरसिक' चरण शरण महिमा तव गाई॥७॥४३॥

※ पद—राग विलावल ※

वीणाधारी रसिकन सुखकारी, प्रगटे जगहितकारी।
हंसवंश सनकादि-शिष्य प्रभु, त्रिभुवन भक्ति प्रचारी॥१॥
जे जन विमुख हुते ते सन्मुख, कीन्हे कृपा अपारी।
उदर-दरी में दे उपदेश, प्रह्लादहि सुख भारी॥२॥

अगहन शुक्ल द्वादशी व्यञ्जन, वपु धार्यो उपकारी।
'रूपरसिक' जन तन मन फूले, निरखत नैंन प्रचारी ॥३॥४४॥

* पद—राग चर्चरी *

जै जै श्रीनित्यरूप नारद ऋषि राई।
मुग्धादिक रूप धार राजत हैं नित विहार।
दम्पति के अंग संग सेवत रुचि लाई ॥१॥
सनकादिक शरण आय, लीयो निज तत्व पाय।
प्रगटे अवतार रूप हरिजन सुखदाई ॥२॥
आदि - शिष्य निम्बभानु, बालमीक व्यास जानु।
ध्रुव से प्रह्लाद आदि बहु पद दरसाई ॥३॥
हेमन्त प्रथम मास, शुक्ला द्वादशी प्रकाश।
'रूपरसिक' प्रगट भये रस मंगल गाई ॥४॥४५॥

* पद *

सेऊँ श्रीनारद मुनि के चरण।
ध्रुवजन प्रहलाद प्रियव्रत, सकल संशय हरण ॥१॥
सतयुगे सनकादि वपु धरि, वीन त्रेता सुधरण।
द्वापरे श्रीअरुण ऋषि घर, जयन्ती - सुख - करण ॥२॥
व्रजदूलह हरिव्यास पद भज, कलह कल्मष हरण।
हंस वंशहि हरष दाता, रहो इनकी शरण ॥३॥४६॥

* पद—राग बिलावल *

आज बधाई बजत सुहाई।
ब्रह्म अंक ते नारद प्रगटे, त्रिभुवन के सुखदाई ॥१॥

गुणि गन्धर्व सबै जुरि आये, गावत सरस बधाई ।
बीन मृदंग उपंग बाँसुरी, नौबत सुरत सहनाइ मिलाई॥२॥
सनतकुमार शिष्य श्रीनारद, महिमा वेद पुराणन गाई ।
तिनके शिष्य अमित अपार कछु, मोपे बरणि न जाई॥३॥
प्रथम व्यास उपदेश जु कीन्हे, मन सन्देह मिटाई ।
ध्रुव प्रहलाद प्रचेता प्रियव्रत, इन सबको जिन भक्ति दृढ़ाई॥४॥
महा कर्म जड़ प्राचीनवर्हि, ताको ज्ञान विराग सिखाई ।
दक्ष-सुवन हर्यश्व अयुत जे, तिनको गूढ़ मार्ग दरसाई ॥५॥
एक दिना वसुदेव के गृह गए, तिन पूजा करि ढिंग बैठाई ।
प्रश्न कियो भागवत धर्म कहो, ताते विश्वते भय मिटि जाई॥६॥
तिनको कियो उपदेश श्रीनारद, नव योगेश्वर-कथा सुनाई ।
'प्रिया-सखी' जिन नाम जपे ते, भव-सन्ताप सबै मिटि जाई॥७॥४७॥

✻ पद—राग ईमन कल्याण ✻

श्रीनारद मुनि वीणाधारी ।
कृष्णचरित गावत भुवि विचरत, घर-घर प्रेमभक्ति विस्तारी ॥१॥
जिनकी कृपादृष्टि के हेरे, भव-सन्ताप मिटै दुख भारी ।
'प्रियासखी' के स्वामी प्रगटे, कोटिक जीव उधारी ॥२॥४८॥

✻ पद—राग तिलंग ✻

आज बधाई को दिन नीको ।
श्री सनकादिकजू के नारद, प्रगटे लाल भाँवतो जी को ॥१॥
त्रिभुवन मंगल महामहोत्सव, मन भायो सबही को ।
'प्रियासखी' के हिये बसो नित, सुखदायक प्रियापी को ॥२॥४९॥

* पद—राग दण्डक *

देव, कृष्ण आवेश वपु कृष्ण रति कान्ति की,
देव ऋषि नौमि नारद विलासी।
गान गन्धर्व हरिध्यान कल्याण गुण,
मान मद मोह कामादि नाशी ॥१॥
देव, सत्य संकल्प सन्देह नाशक सकल,
कल्प - कल्पान्त आद्यन्त द्रष्टा।
भक्त - हितकरन भागवत उपदेश करि,
व्यास विश्वास उर धर अधिष्टा ॥२॥
देव, नृपति प्रियव्रत बन भृत्य मुनिवृत्य भर,
चरण आश्रित्य तपकृत्य करता।
मातु पितु त्रास तजि आश विश्वास,
वनवास हित मन्त्र ध्रुव विघ्न हरता ॥३॥
देव, दनुज कुल मलिन मन पंक पंकज उदित,
मुदित प्रहलाद परलोक जापी।
तव वचन रचन रोचक रमापति प्रगट,
खंभ ते नखन विद्धरत पापी ॥४॥
देव, प्रगट दश सहस्र द्विज सुवन पित हितकर,
शरण नारायणी सुर सुवारम।
कीन्ह सब शिष्य सन्देह विन दच्छ सुनि,
सर्पवत शाप धरि निर्विकारम ॥५॥
देव, परम प्राचीनवर्हि विदित यज्ञ कृत,
अज्ञ जन तत्व वह दगन लीला।

नैन अंजन पुरञ्जन कथा कथित कल,
लहत जन स्वाद पुनि मननशीला ॥६॥
देव, यन्त्र मधि मन्त्रवत तन्त्र निगमागमनि,
वदत श्रीकृष्ण निज श्रवण पानम् ।
प्रेम मद मत्त उन्मत्त रस रूप रम,
रमित निज शीश जुग करत पानम् ॥७॥
देव, सम्प्रदाय सनक सनकादि पद शीष सुठि,
शिष्य शोभित अगुण गुण निधानम् ।
देहि हरिदास विश्वास श्रीगुरु शरण,
'दास कैशोर' दिगदर्श दानम् ॥८॥५०॥

* पद—राग रसिया *

जगतगुरु विद्याधर महाराज, अरज एक सुनिये आज हमार ।
तुम तो राधाकृष्ण अनुरागी, उनकी भक्ति भजन-रस पागी ।
बालमीक अजामिल सुर नर, असुर उधारन हार ॥१॥
ध्रुव प्रहलाद प्रचेता जानो, प्राचीनवर्हि कर्मठ मानो ।
प्रेम पन्थ दै इन सब हित को, बेड़ा कर दियो पार ॥२॥
जे कोउ चरण-शरण तकि आवैं, अभयदान जन निश्चय पावैं ।
'दास गोपाल' दया निधि दीजै, दम्पति - पद रतिसार ॥३॥५१॥

* पद *

आज बधाई ब्रह्म भवन में, हेली लागत परम सुहाय ।
अगहन शुक्ला द्वादशी व्यंजन, प्यारी जु आज्ञा पाय ॥१॥
मोहि तोहि भेद नहिं सजनी, करहु काज चित लाय ।
मुग्धा सखि नारद वपु प्रगटे, विश्व सकल सुखदाय ॥२॥

श्रीकुमार के लाल जन्म दिन, रहि तिहुँ पुर धुनि छाय ।
गुनि गन्धर्व सबै जुरि आये, गावत जस हुलसाय ॥३॥
सामवेद ध्वनि करत महामुनि, अमर पुष्प झरि लाय ।
ध्वजा पताका कदली रोपी, पीत वितान तनाय ॥४॥
हरद दूब दधि अच्छत माला, वन्दनवार बँधाय ।
मंगल कलश साजि ऋषि-वनिता, कुवँर निरखि मुसक्याय ॥५॥
चारु सोहिले उचरत भामिनि, कोकिल कंठ सजाय ।
नाचत कूदत करत कुतूहल, पाय समय सुखदाय ॥६॥
घोरि हरिद्रा परस्पर छिरकत, फूले अङ्ग न माय ।
हंस वंश कल कीरति गावैं, ऊँचे कर जु उठाय ॥७॥
धेनु रूप वसुधा पय श्रवयो, कियो अवरोव सुहाय ।
उभली सरस सोहनी शोभा, अङ्ग अनङ्ग लजाय ॥८॥
गौर वरण तन कान्ति विराजै, ललिताजू मन भाय ।
नैन कमल रस मत्त सलोने, अधर अधिक अरुणाय ॥९॥
कम्बु कण्ठ भुजलम्ब सलोनी, नाभि भवँर छवि छाय ।
वीणा अंक उपरना धोती, कटि लखि सिंह लजाय ॥१०॥
पुष्ट जंघ पिंडुरी मन अटक्यो, वरनत बुद्धि सिराय ।
दश नख चन्द प्रकाश मनोहर, संसृति - तिमिर मिटाय ॥११॥
चरण कमल शीतल सुखदाई, जो जन ध्यान लगाय ।
ज्ञान विराग भक्ति दृढ़ पावै, यामें संशय नाय ॥१२॥
वृन्दाविपिन विलास रास रस, ललित केलि दरसाय ।
यमुना - पुलिन निकट वंशीवट, गौर श्याम दृग छाय ॥१३॥

यह सुख सम्पति सहज मिले घर, छाप निम्बारक पाय।
'उद्धवदेव' हरष प्रिया हित सों, राखे निकट बसाय ॥१४॥५२॥

* पद–राग भैरवी *

अब सुधि लीजे श्रीनारद मुनिवर।
पिय प्यारी संग मुग्धा सखि ह्वै, वीणा ले साधत मधुरे स्वर ॥१॥
विविध गुण गाय रिझाय सुघरवर, सेवत आठो याम निरन्तर।
प्राणप्रिया दोउ देत उतीरण, तत्सुख मगन रहत निशिवासर ॥२॥
अधम उधारन 'हरिप्रिया' स्वामिनी,
मुदित हरषि प्रिया शीष धरीकर ॥३॥५३॥

* पद *

जै जै श्रीनारद मुनि स्वामी।
ज्ञान विराग भक्ति की मूरति,
त्रिभुवन के अति ही अभिरामी ॥१॥
व्यास ध्रुव प्रहलाद प्रचेता,
प्राचीनबर्हि प्रियव्रत आदि सुर असुरन के वीणाधर स्वामी।
'प्रियासखी' जिन पदरज परसत, पावत वृन्दावन सुखधामी ॥२॥५४॥

* पद *

जय जय श्रीनारद मुनि मुनिवर।
गौर वरन तन परम मनोहर, पीतवसन सिर जटा वीन कर ॥१॥
प्रेम मगन गावत निसिवासर, हरिजस मधुर पतित पावन तर।
पराभक्ति दायक सब लायक, धायक कल्मष हृदय रूप भर ॥२॥
ध्रुव प्रहलाद आदि अगनितभट, कृपापात्र जगमगत कलपतरु।
पञ्चरात्र हरि अरचनकी विधि, वरनन करी दीन सिखि जलधर ॥
किशोरीगोपाल युगलधन चाहत, दीजिय नाथ विरद निज अनुसर॥३॥५५

❋ पद–राग पञ्चम ❋

जयति जैंति नारद विशाख महा भक्ति हरि,
जक्त पारद सदा मुक्त रूपम।
जयति सनकादि शिष देव ऋषि श्रुति सकल,
माहि लिखि वास महिमा अनूपम ॥१॥
छल व दुरि कलन करि भल सकल को कियो,
करत अरु करहिंगे अति दयालम।
तिहूँ पुरगामि त्रय लोक मधि नामि अभि-
रामि वपु एक रस तिहूँ कालम ॥२॥
जैंति जे निम्ब-आदित्य निज गुरुवर,
जैंति सर्वज्ञ जै वीनधारी।
जैंति जै वेदव्यासादि हितकरन जैं,
हरण संसृति शरण दोषहारी ॥३॥
जैंति बालमीकि उपदेशि शतकोटि श्री,
राम अद्भुत चरित जिन करायो।
ताको एक अच्चर श्रवन धरत नर,
महा पापीश श्रुति अनघ गायो ॥४॥
जैंति दक्षि पुत्र म्यारा सहस मुक्त कर,
प्रियव्रतादिक अमितन पतित तारे।
जैंति जै ध्रुव सदा ध्रुव करन जैंति प्रहलाद के,
सकल विधि काज सारे ॥५॥
जैंति अति गान परवीन हरि भक्ति रस,
लीन जै जैंति जै दीनबन्धो।

जैति त्रेता युगाचार्य महा आर्यमणि,
कार्य कर भक्ति जै दया सिन्धो ॥६॥
जैति श्रीराधिका कृष्ण संग सहचरी,
नाम मुग्धा अमल श्रुति बखानी।
जैति सनकादि सदज्ञान सब भक्त,
परधान कल्याणप्रद भक्त दानी ॥७॥
जैति सर्वज्ञ अति तज्ञ ईश्वर अगन,
अज्ञ जन यज्ञपति सों मिलाये।
वेद आगम पुराणादि सब ग्रन्थ से,
मुक्तिकर एक नारद बताये ॥८॥
जैति जय हंसवंशावतंस प्रभो,
मतामविरोध मत दान दाता।
प्रणत 'गोविन्द' सुर परम गुरु उर सदा,
वीनधर भक्त हरिभक्ति पाता ॥९॥५६॥

※ पद–राग जंगला ※

श्रीनारद मुनि वीणाधारी।
कृष्णचरित गावत भुव विचरत, घर-घर प्रेमभक्ति विस्तारी ॥१॥
जिनकी कृपा दृष्टि के हेरे, भव-सन्ताप मिटै दुख भारी।
'प्रियासखी' के स्वामी प्रगटे, कोटिक जीव सहज उद्धारी ॥२॥५७॥

※ पद ※

आजु बधाई बजत सुहाई।
श्रीसनकादिक शिष्य जु नारद, प्रगटे सब सुखदाई ॥१॥

वीणा कर लै श्रीहरि गुण नित, गावत हिये सरस हुलसाई ।
'प्रियासखी' जिनके दरसन ते, प्रेमाभक्ति हृदै सरसाई ॥२॥५८॥

* पद-राग षट् तिताल *

जै जै श्रीनारद मुनिवर वीणाधारी,
प्रेम भक्ति के ये ही दातारी ॥१॥
सुर मिलाइ बजावैं छवि सों, जब न रीझि आवै,
ढिग भायन नृत्य आगे करैं पिय प्यारी ॥२॥
सप्त सुर तीन ग्राम इकईस मूर्छना उनचास,
कोटि तान गाइ बताय दिखावैं न्यारीन्यारी ॥३॥
सुनि दम्पति अति करत प्रशंसा ये जु धन्य तुम,
कहि न जात लाघवता तिहारी ॥४॥
इहि विधि गावैं बजावैं रिझावैं लाड़ लड़ावैं,
चायन पल छिन करत रहत मनुहारी ॥५॥
तहाँ 'दयासखी' घनश्याम प्रिया छवि पर,
डारौं तोरि तृण रीझि कहै वारी-वारी हम वारी॥६॥५९॥

❀ ढाढी ढाढिन लीला ❀

ढाढिन वचन :- * दोहा *

मै न रहौं सुनो हे पिया, तेरो हियो कठोर ।
जगत - गुरु के दरस बिना, कौन रहे मति बौर ॥१॥
लै चल हौं तो जाऊँगी, मेरो कछु न बसाय ।
मन पंछी तो उड़ि गयो, तुम ते पहिले जाय ॥२॥

* पद–राग बरवा *

मैं ब्रह्म भवन में नाचूँगी।
शची सरस्वती आदि छकाऊँ, मन भाँवती बधाई लाऊँ।
तहाँ रंग अनेक रचाऊँगी ॥१॥
मम उर उमँग उठी सुनि पिया, जनम जगत गुरु नारद लिया।
तिन तज और न जाचूँगी ॥२॥
हा हाँसी ऐसी जिनि कीजै, मोहि वीनधर दरसन दीजै।
नित चेरी तेरी कहाऊँगी ॥३॥
दसधा भक्ति रीझ में लाऊँ, मुग्धा सखी की दासि कहाऊँ।
हरष प्रिया जुत पाऊँगी ॥४॥६०॥

* पद–राग रेखता-कहरवा *

ब्रह्म भवन आगार बधाइयाँ बाजे बधाइयाँ बाजै।
मेरे ये ही उर आस तव सुवन लड़ाऊँ आजै ॥१॥
लीगो जु दान मन भायो दान मन भायो भये नारद कुमार।
पाये जु मैं तुमसे सनक तुमसे जु सनन्दन।
तुमसे जु सनातन तुमसे जु कुमार दातार ॥२॥
दीजै टहल मन मानो जन अपनो जानि हितू संग रहाऊँ।
दीजै हरषि गुरुदेवा, न जानों कछु सेवा, प्रियालाल गुण गाऊँ॥३॥६१॥

* पद–राग पीलू *

ढाढिन अजब रँगीली आई।
हँसि हँसि नृत्य करै मन मोहे, करत जु वंश बड़ाई ॥१॥
चपल अंग सुकुमार छबीली, हितू मिलन कूँ आई।
तिलक बिन्दु अनुराग भरे दृग, वेनी पीठ सरकाई ॥२॥

ऋषि समूह ममत्व बतावें, पूरब प्रीति जताई।
हीरा हार हमेल गरें, पहुँची भुजबन्द सुहाई ॥३॥
सारी पीत कुसुम लहँगा, नूपुर नेवन धुनि छाई।
लेत ललित गति होय त्रिभंगी, मध्य भाग लचकाई ॥४॥
देत दान ऋषिराज रीझ कैं, लेत नजर उमगाई।
मनसा सुफल भई पूरी, गुरु - रूप दृगन दरसाई ॥५॥
वीन - धरन - पद रति नित चहौं, उपाउ भूरि बधाई।
निरखौं मुग्ध हितू श्रीहरिप्रिया, हरखो शोच बहाई ॥६॥६२॥

* पद—राग बरवा, ताल चलत *

ढाढिन नाचे री ऋषिराज अँगना।
माँगत नेग भाग बड़ भूरी, मनसा सुफल आज होय पूरी।
मम सुजस सुकृत भये तेरे ललना ॥१॥
पाइ सुअवसर विनय सुनाऊँ, जो जिय भाव बधाई पाऊँ।
बाढ़ै सर्वेश्वरपद रति चरना ॥२॥
भाव - भक्ति के भूषन दीजै, अँगिया शील - सन्तोष करीजै।
नथ रसिक संग प्रेम सारी देना ॥३॥
तट वंशीवट वास लेऊँगी, रंग अली की टहल करूँगी।
जहँ 'आनन्दघन' बहे रस-झरना ॥४॥
तुम तजि औरन काहू जाचूँ, हंसवंश-यश कहि नित नाचूँ।
करौं अटल राज जग थिर रहना ॥५॥६३॥

* पद—राग सारंग, ताल चलता *

नेग देउ ऋषि सजन मेरो।
सनक सम्प्रदा को हौं ढाढी, जन्म-जन्म चरणन को चेरो ॥१॥

नित जस गाऊँ अन्त न जाऊँ, गोवरधन उत्तर मो खेरो।
विमल वंश की कीरति गाई, मो मति अल्प सुजस बहुतेरो ॥२॥
वीणाधरन करन जग पावन, भव-वारिधि को पायो है वेरो।
अबकी खेय हमारी बारी, करहु पार जग होत सवेरो।
श्रीवनवास हरषि देउ स्वामी, 'प्रियादास' की आस घनेरो ॥३॥६४॥

* पद—राग धनाश्री *

ढाढी उमग्यो देत असीस।
जुग - जुग अटल राज तुव लालन, सुनि मुनिगन के ईश ॥१॥
गंग यमुनवत सुजस बढ़ो नित, रहो हमारे शीष।
ध्रुव प्रहलाद प्रचेता प्रिय व्रत, व्यासादि गुरुवर जगदीश ॥
पीऊँ वारि जल हरषि प्रियापद, पाऊँ विश्वावीस ॥२॥६५॥

* पद *

भाइ बधाई आजि दिल वांछित साही आई।
कुल - मण्डन गुण रूप अनूपम, प्रगटे श्री ऋषिराई ॥१॥
भये अजाचिक जाचिकजन सब, ऊनता रहन न पाई।
दै दै जात असीस उमगि अति, लै लै जात बधाई ॥२॥६६॥

❀ श्री नारद जी का बड़ा मंगल ❀

* सोरठा *

मंगल शयन प्रजन्त, जुग जुगाय पुनि सुवावत।
जय वीणा बजवन्त, नारद मुग्धा सहचरी ॥१॥

* दोहा *

मार्गशीर्ष सुदि पावनी, व्यंजन द्वादशि नाम।
मुग्धा नारद मुनि तन, प्रगटेउ विधि के धाम ॥१॥

॥ छप्पय ॥

मुग्धा अलि मुनि रूप प्रभु लहि गुरु हित अज्ञा ।
मीन मार अपराध जन्मत्रय धारेउ विज्ञा ॥
प्रथम जन्म गन्धर्व द्वितीय दासी - सुत जाये ।
सन्त सीथ - परसाद बहुरि ब्रह्मा प्रगटाये ॥
राक्षस हू जिहि कृपा लहि पावत श्रीव्रजराज ।
बन्दहु वीणा युगल रट श्रीनारद मुनिराज ॥१॥

॥ पद ॥

जय नारद आचार्य श्रीमुग्धा सहचरी ।
मंजुल मोहन महल टहल नित रस भरी ॥
वीणा स्वकर बजाय जगावत चन्द्र युग ।
निशि में गाय सुवात महल आनन्द भुग ॥
आनन्द भुग वैकुण्ठ सोइ प्रभु मन जग अवतरी ।
मार्ग सुदि द्वादसी निज जन्म धरि पावन करी ।
पाव किय विधि गोद सुहावन सुख भरी ॥१॥

जय नारद आचार्य गुरु अपराध गही ।
स्वीकारेउ त्रय जन्म रसिकजन मुख कही ॥
शूद्र जन्म गुरु सीथ कि महिमा जन चिती ।
गए तुम्बरु संग धाम हरि शुभ मती ॥
शुभ मती श्रीशाप पायेउ ढिग उलूक सु जायकै ।
गान विद्या पाय मुनिवर भरेउ गर्व सु छायकै ॥
निगम नगर मुनि आय गर्व मुनि जल बही ॥२॥

जय नारद आचार्य देवदत बीण लही।
हरिद्रव कीनी गंग कमण्डलु ब्रह्म गही॥
जीतेउ तप कृत काम सु कीनेउ गर्व पुनि।
दीनेउ हरि हित शाप राम - अवतार गुनि॥
राम कर अवतार गुनि हरि माया मुनि हित दरसयी।
कीन सतयुग वहि शिष नृप कथा पुरंजन मुख कही॥
त्रेता शिष वाल्मीकि भये उपदेश गही॥३॥

जय नारद आचार्य पिता भागौत सुनि।
कीनेउ द्वापर शिष्य व्यास अवतार गुनि॥
श्वेत द्वीप मुनि जायके दरस हरि के किए।
हरि हूं जिहि स्तोत्र पाठ कृत सुख लिए॥
कृत सुख लिये व्रज कुसुमसर सनकादि शरणागति लही।
हरिदास लहि मुनि नाम पावन पाञ्चरात्र सुनिर्मयी॥
देव दर्शन मुनि कृपा 'गंगअली' पावन जु गुनी॥४॥६७॥

❁ छोटा मंगल ❁

❋ पद ❋

नमो नमो नारद देवर्षी।
देवदत्त वीणा कर मण्डित, राधा कृष्ण नाम मुख वर्षी॥१॥
मृदु पद नृत्यत जवै तालगति, नभ महि जंगम थावर हर्षी।
प्रथमोत्सव सरितट संकल्पी, ससुत भक्तिके दुःख विकर्षी॥२॥
सनकादिक मुख ग्रन्थ भागवत, श्रोता प्यारे संग महर्षी।
जा रस को ब्रह्मा रुद्रादिक, ललना रमा करत तप तरसी॥३॥

सो रस मिलन मात्र मुनि दानी, असुरन हितहू कृपा सुसरसी ।
पावन - गंग अजहुँ महिमण्डल, कृपाकटाक्ष कोर कछु परसी ॥४॥६८॥

✻ बधाई का पद ✻

विधि - गृह बाजत आजु बधाई ।
नौं ब्रह्मा सँग नारद जैसे, सुत प्रगटे सुख छाई ॥१॥
झाँझ मृदंग मँजीरा दुन्दुभि, बाजत है सहनाई ।
सब भ्राता भाई नारदकों, नाचत अंक उठाई ॥२॥
महर्लोक जन तप सतवासी, बरसत कुसुम सुहाई ।
भाषत मोहन महल अलीवर, हमरे विधि प्रगटाई ॥३॥
मुग्धा स्निग्धा अरु सन्दिग्धा, परमुग्धा सुखदाई ।
प्रिय अंग जो बसत निरन्तर, ते नारद बनि आई ॥४॥
पूछत हम तुमसे जो भैया, देहु उत्तर समुझाई ।
नारद मिले मिले नहिं हरिजू, असुर देव मनुजाई ॥५॥
जिहि स्तोत्र श्याम नित पाठी, उग्रसैन समुझाई ।
कलहकार हू सन्त भये जग, हरि की कृपा बड़ाई ॥६॥
ग्रन्थ भागवत अरु रामायण, जिन मुख कहि लिखवाई ।
कृपा कटाक्ष कोर 'अलिगंगा', पावन विदित सुहाई ॥७॥६९॥

※ (३) श्री निम्बार्क भगवान् जयति ※

[तिथि—कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा १५]

★

※ श्लोक ※

शिञ्जन् - नूपुर - पादपद्मयुगलां हंसीगतिं बिभ्रतीं,
चञ्चत्खञ्जनमञ्जुलोचनयुगां पीनोल्लसत्कन्धराम् ।
शुम्भत्काञ्चनकंकणद्युतिमिलत्पाणौ चलच्चामरं,
कुर्वाणां हरिराधिकोपरि सदा श्रीरङ्गदेवीं भजे ॥१॥

※ दोहा ※

निम्बभानु उद्योत जहँ, भाव कमल परकास ।
रस - पञ्चक मकरन्द के, सेवक पद रज दास ॥१॥
भयो प्रगट जब निम्बरवि, गयो तिमिर अज्ञान ।
नयो युगल लीला ललित, रस प्रगट्यो भुवि आन ॥२॥
आचारज वर अवतरे, निम्बग्राम सुख साज ।
मन भायो सब जनन को, भयो बधायो आज ॥३॥
पुहुप बृष्टि सुरवर करें, प्रमुदित सब नर नार ।
आज बधाई निम्बपुर, अरुण ऋषि दरबार ॥४॥

※ बड़ा मंगल ※

※ पद ※

ज जै श्रीनिम्बार्क आचारज अवतरे ।
युगल सु आज्ञा पाय सुदर्शन वपु धरे ॥
कुमति मति पाखण्ड देखि हरि यों कही ।
थापो मत अविरोध तुम्हें आज्ञा दई ॥

दई आज्ञा पाय हरिकर - चक्र वपु धारण कियो।
सनकादि नारद हार्द हिय धरि धरनितल पावन कियो॥
तैलंग द्विजवर रूप धरि अविरोध मत पुनि अनुसरे।
जै जै श्रीनिम्बार्क आचारज अवतरे॥१॥

जै जै श्रीनिम्बार्क आचारज गाइये।
भवनिधि पार अपार पार पर पाइये॥
औदुम्बर श्रीनिवास गौरमुख जे भये।
जिन पदरजकूँ पाय धाय प्रभु पद गहे॥
गहे पद प्रभु के जु नित प्रति दिव्य वपु ह्वै सेवहीं।
युगलपद मकरन्द रज मधु मधुप ज्यों अब लेवहीं॥
आदि मध्य अवसान जिनको वेद भेद न पाइये।
जै जै श्रीनिम्बार्क आचारज गाइये॥२॥

जै जै श्रीनिम्बार्क आचार्य शिर भूषणा।
भक्ति ज्ञान की खान आन मग दूषणा॥
जे नर आवें शरण छाप कर जे धरे।
जन्म जन्म के पाप ताप त्रय परहरे॥
परहरै त्रय ताप तिनके कर्म धर्म विनाशहीं।
सकल मुनिगण निगम कर धर व्यास वेदन में कही॥
तापादि पंचक धारि उर में जगत ते पुनि रूषणा।
जै जै श्रीनिम्बार्क आचार्य शिर भूषणा॥३॥

जै जै श्रीनिम्बार्क गोवर्धन राजहीं।
नित लीला रस पान आन सुख त्याजहीं॥

श्रीवृन्दावन मध्य रहस्य रस परचरें।
निम्बग्राम निज धाम काम पूरण करें॥
करें पूरण काम सबके शरण जे जन आवहीं।
श्रीनिम्बभानु कृपालु को 'सुखराम' गुणगण गावहीं॥
धरे युग-युग रूप नाना वैष्णवन सुख साजहीं।
जै जै श्रीनिम्बार्क गोवर्धन राजहीं॥४॥७०॥

❁ छोटा मंगल ❁

* पद *

मंगल मूरति नियमानन्द।
मंगल युगलकिशोर हंस वपु, श्रीसनकादिक आनन्दकन्द॥१॥
मंगल श्रीनारद मुनि मुनिवर, मंगल निम्बदिवाकर चन्द।
मंगल श्रीललितादि सखीगण, हंसवंश सन्तन के वृन्द॥२॥
मंगल श्रीवृन्दावन यमुना, तट वंशीवट निकट अनन्द।
मंगल नाम जपत जे 'श्रीभट', कटैं अनेक जनम के फन्द॥३॥७१॥

* पद *

मंगल मूरति अरुणकुमार।
मंगल मूरति मात जयन्ती, छिनछिन प्रमुदित रहत निहार॥१॥
मंगल हंस सनक नारद मुनि, ज्ञान भक्ति कीये परिचार।
मंगल सन्तन के सुखदायक, मंगल चक्र रूप अवतार॥२॥
मंगल जस प्रगट्यौ चहुँ ओरी, दैवी जीवन के उद्धार।
मंगल केलि-निकुञ्ज प्रगट करि, गौर श्याम सेवत सुकुमार॥३॥
मंगल श्रीरंगदेवि आदि मिल, सहस सखिनके झुण्ड अपार।

अष्टयाम सेवत रहैं रुचि लै, अष्ट सखिन के निज अधिकार।
'अलीमाधुरी' निरख हरष हिय, चरण शरण जै जै बलिहार॥४॥७२॥

* पद *

आज महामंगल भयो माई।
प्रगटे श्रीनिम्बारक स्वामी, आनन्द कह्यो न जाई॥१॥
ज्ञान विराग भक्ति सबहिन को, दियो कृपा करि आई।
'प्रियासखी' जन भये मनचीते, अभय निसान बजाई॥२॥७३॥

* पद–राग चर्चरी *

जै जै श्रीनिम्बभान गोवर्धन निज स्थान,
निम्बग्राम बसत धाय सन्तन सुखदाई।
ऋषियन के वृन्द आय देवन की घटा छाय,
भक्तन को कियो भाय वेदन ध्वनि छाई॥१॥
श्याम गात अति सुहात मुद्रावर अभय हाथ,
ज्ञान खान यश वितान चिन्तामणि पाई।
गुणियनके अचिन्त्यधाम भक्तन के पूर्ण काम,
चरण शरण 'रूपरसिक' गावत बधाई॥२॥७४॥

* पद *

आज बधाई निम्बग्राम वर, परम सुहाई अरुण ऋषी घर।
ऋषि पत्नी की कूख कल्पतर, प्रगटे हैं श्री आचारज वर॥१॥
कार्तिक मास शुक्ल पच्छ पूनो, शुभ नच्छत्र संयोग बिमलवर।
चक्र सुदर्शन आय अवतरे, रसिकन हित पगधर भूतल पर॥२॥
जात कर्म के काजैं मुनिवर, बौल पठाय लिये गृह भीतर।
निम्बादित्य नाम प्रसिद्ध करि, हरषे सुख बरषे बहिरन्तर॥३॥

वन्दीजन विरुदावली गावत, यश प्रगटावत निपट निरन्तर ।
दान मान सम्मान सबन को, यथायोग्य धन दीन्हों द्विजवर ॥४॥
द्विजपत्नी और सब सहवासिन, मंगल गावत परम मनोहर ।
देत असीस सदा चिरजीवो, दीयो सुख सम्पति निज घर घर ॥५॥
बाजे बाजैं सब सुख साजैं, गावैं घन ज्यौं गरज रम्य सुर ।
पुष्प-वृष्टि देवन मिलि कीन्ही, प्रमुदित भये सकल नारी नर॥६॥
रसिकजनन मिलि आनन्द बाढ्यो, वेद-शास्त्र मर्याद कल्पतर ।
तत्वसार अरु गूढ़भाव निज, रहसि प्रकाशक गुण अपरम्पर ॥७॥
दासभाव जिनके हिय हित यह, वपु धार्‌यो प्रभु ताप अभयकर ।
'रूपरसिक' चातकजन उमगें, निरखि नैन निज स्वाति बंदभर ॥८॥७५॥

* पद—राग विहाग *

दृढ़ व्रत निम्बभानु पद प्रेम ।
विन साधन आराधन के विन, विन समाधि विन नेम ॥१॥
कृपा दृष्टि करि किए मनोरथ, अनायास जो भये से क्षेम ।
राधा-मदनगोपाल मनोहर, हरत सकल दुख हेम ॥२॥७६॥

* पद *

जै जै श्रीनिम्बारक स्वामी ।
पद सरोज सेवत ते जिनके, मिटत हिये की खामी ॥१॥
युगल केलि लीला हरषावन, आचारज सर नामी ।
'कृष्णअली' को करहु कृपा कर, महल टहल अनुगामी॥२॥७७॥

* पद *

आज बधायो निम्बग्राम वर, जायो जयन्ती - पूत ।
कहि न जाय तिहि अवसर को सुख, बाढ्यो रंग अकूत ॥१॥

वापी कूप तड़ाग सरित सर, स्वच्छ जो निरमल वारि ।
नाना विधि जल जन्तु कलोलत, लागत बोली प्यारि ॥२॥
मानसि गंग तरंग लेत पय, पूरित प्रगट प्रताप ।
तीरन पै नाना रंग पंछी, करत है मधुर अलाप ॥३॥
दरस परस मज्जन सुमिरण तिनके, त्रय ताप नशात ।
हाटक-नग-निर्मित सोपानन, विद्रुम-चित्र सुहात ॥४॥
नीलपीत सित अरुण कमल खिले, भ्रमर करत गुंजार ।
कुक्कुट सारस हंसन जोड़ा, बोलें समैं अनुसार ॥५॥
श्याम सचिक्कन शिला सलिल मधि, होत जो नित अविशेष ।
बुरजनि छत्रिन मोतिन झालरि, बाजे बजें अलेस ॥६॥
विविध कल्पतरु लता जु झुकि रहि, फूल फलनके भार ।
तिनपर ललित सुबेलि लपटि रहि, द्रवत है रसके फ्वार ॥७॥
ता चहुँधा बनबाग अनूपम, विविध ऋषी पर्णशाल ।
उत्तर दिशा अरुण-आश्रम जहँ, विहरें जयन्ती-लाल ॥८॥
गोवर्धन की सुभग तलहटी, हरिभरि भूमि सुहाय ।
चम्पक अम्ब कदम्ब निम्ब चल-दल कदली मन भाय ॥९॥
नारिकेल कचनार नरंगी, वट जु अशोक अनार ।
पाडर परन निवारनि जूही, पीत चमेलिन लगी कतार॥१०॥
तहँ नित निम्बदिवाकर कीजिय, तिनसों बहुत पिछानि ।
इन्द्रनील मणि श्याम कलेवर, ऋषिकुमार सुखदानि ॥११॥
भाषत नित्य निकुञ्ज-माधुरी, दृग जो रूप छकान ।
युगल केलि हिय-सम्पुट राजत, देत अभय वरदान ॥१२॥

मोर चकोर करि चातक पिक, पल न तजत उन गौन।
उद्धव कुण्ड विराजत उद्धव, लतारूप गहि मौन ॥१३॥
राधाकुण्ड की शोभा सुन्दर, उमगत लेत हिलोर।
महिमा कार्तिक कृष्ण अष्टमी, आवत तीरथ दौर ॥१४॥
नगर रम्य चहुँ ओर वाटिका, महलनि विमल उजास।
पूरब ललिता-कुण्ड मनोहर, श्रीनिवास को बास ॥१५॥
निशिदिन बसत निवासाचारज, करत बिबिध उपदेश।
राधाकुण्ड बास विधि दुर्लभ, जपत हैं देव महेश ॥१६॥
कुसुम सरोवर क्रीड़ा आलय, लगत जु प्यारी ठौर।
तहँ विहरत दोउ मीत मनोहर, नहिं जानत कित निशि भोर ॥१७॥
चुनि-चुनि कुसुम सिंगार बनावत, हितू हरिप्रिया सुखदाय।
रंग अली सह परिकर सेवत, ललित विशाख सुहाय ॥१८॥
पूरब दिशि नारद मुनि आश्रम, निरखत चित चुराय।
सर मधि महल झरोखा जारी, बनविहार मनभाय ॥१९॥
नील पीत कर कंज फिरावत, निरखत चंचल छाँय।
श्रीमुग्धाजू बीन बजावत, युगल रीझि मुसकाँय ॥२०॥
पोखर ग्वाल किलोलकुण्ड शुभ, लसत विहारि अवास।
दिव्य जु चन्द्रसरोवर मोहै, नित करें रास-विलास ॥२१॥
मणिन जटित मंडल रुचिकारी, गह्वर उठत तरंग।
रासेश्वरी रमत वैभव जुत, लिए रंगादिक संग ॥२२॥
वसि आन्यौर और नहि भावे, युगल दरस की भूख।
गोविन्दकुण्ड चरण जल तीरथ, कोकिलादि करें कूक ॥२३॥

दक्षिण श्रीगुरुदेव विराजें, रहें अमित ऋषि छाय ।
शास्त्र जन्य उपदेश करें प्रभु, भेदाभेद दिखाय ॥२४॥
नवल अप्सराकुण्ड पच्छिमदिशि, मन्दिर स्वामि लुभाय ।
सेवत शरद बसन्त दिवा-निशि, त्रिविध समीर सुहाय ॥२५॥
श्याम ढाक ने शोभा जीती, खग मृग करत किलोल ।
बिम्बकुवँर की निरखि अंग छबि, बोलत मीठे बोल ॥२६॥
सुरभी बिछुवा कुण्ड ऐरावत, हरदी कुण्ड सुनि लेव ।
जतीपुरा गिरिधरन बिराजत, सेवत तहँ गुरुदेव ॥२७॥
होरी खेल नहाय पिय प्यारी, नाम जु कुण्ड गुलाल ।
जानि अजानि जु शैल शिखरतर, होत नित्य नये ख्याल ॥२८॥
गोवरधन हरदेव विराजें, ऊंची शिखर सुरम्य ।
दानघाटी पै दान लेत जिहि, वेद बदत सु अगम्य ॥२९॥
यहि विधि श्रीनिम्बारक बिचरत, करत जु सब मनभाय ।
अब सजनी चित चेत करो मन, गहि रहु इनके पाय ॥३०॥
बसहु निम्बपुर अनत न जैये, चक्र सुदर्शन छाय ।
भव बाधा दुख दारिद तिनके, नाम लेत नसि जाय ॥३१॥
हंसवंश - अवतंस प्रभू मैं, बिनवौं करि कर जोरि ।
हरषि प्रिया प्रियदास चरणरति, दीजिय कहत निहोरि॥३२॥
उलटे सुलटे अच्छर जोरि के, गावत रस जस गीत ।
मन चंचल ठहरत नहिं ताते, हरि गुरु चरित पुनीत ॥३३॥७८॥

❋ पद ❋

निम्बग्राम में आज बधाई ।
लोक लोक अति आनन्द बाढ्यो, सुरनर मुनिन पुष्प बरसाई॥१॥

शौनकादि मुनि हित के कारण, प्रगटे चक्र सुदर्शन आई।
'प्रियासखी' जन भये मनचीते, अभय निसान बजाई ॥२॥७६॥

❋ पद ❋

आज अनूपम बजत बधाई।
अरुण कमल लोचन दुख मोचन,
अति अद्‌भुत निधि पाई ॥१॥
खग मृग नग रवि शशि चारण मुनि,
गुणिगण आनंद उर न समाई।
भृगुसुत सुत 'सुखराम' निरखि छबि,
तन मन धन न्यौछावरि जाई ॥२॥८०॥

❋ पद-राग सोहिलो ❋

बधायो ऋषिराज के, प्रगट्यो है सोहन रूप।
मास कार्तिक दिवस पूनो, कृत्तिका शुभ वार।
जयन्ती को पुण्य वपु धरि, चक्र रूप अवतार ॥१॥
पुष्प वृष्टिन व्योम छायो, दुन्दुभी बहु वार।
घट ओट वधु संग देव सगरे, करैं जै जैकार ॥२॥
द्विजन की वधु साज सुन्दर, अंग सब सिंगार।
यूथ मिलि चहुँ ओर गावत, गीत मंगल चार ॥३॥
आज ही भूमी तज्यो है, विमुख गन को भार।
धर्म वैष्णव कमल कुमुदिनी, करी बहुत पुकार ॥४॥
भक्ति नवधा साध पहली, जनन में परचार।
करेंगे पुनि पाद परसत, कूर्म को उद्धार ॥५॥

फल उदुम्बर पाद परसे, ऋषी रूप जु धार।
हार्द हिय को पाय को पुनि, करैं बहुत पुकार ॥६॥
चरण इनके शरण आये, गौरमुख तजि भार।
परम पद को सुगम पाये, कृपा इनकी सार ॥७॥
नाम इनको रटें निशिदिन, रूप पुनि गुणधाम।
युगलपद कर नित्य सेवा, मधुप तो 'सुखराम' ॥८॥८१॥

* पद–राग हमीर *

सब मिलि गावोरी आज बधाई।
प्रगटे श्रीनिम्बारक स्वामी, सन्तन के सुखदाई ॥१॥
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा शुभ दिन, शरद ऋतू सरसाई।
मंगल कलश खम्भ कदली के, घर-घर बजत बधाई ॥२॥
अरुण ऋषी मन आनन्द बाढ्यो, सर्वस दियो लुटाई।
जयन्ति-नन्दन को मुख निरखत, 'रूपरसिक' बलि जाई ॥३॥८२॥

* पद–राग चर्चरी *

निम्बार्क दीन बन्धो, सुन पुकार मेरी।
पतितन में पतित नाथ, शरण आयो तेरी ॥१॥
तात मात भगिनि भ्रात, परिजन सुखदाई।
सबहीं सम्बन्ध त्यागि, आयो शरणाई ॥२॥
काम क्रोध लोभ मोह, दावानल भारी।
निशिदिन हौं जरत नाथ, लीजिए उबारी ॥३॥
अम्बरीष भक्त जान, रच्छा करि धाई।
तैसे ही निज दास जानि, राखौ शरणाई ॥४॥

भक्त वत्सल नाथ नाम, वेदन में गायो।
'श्रीभट' तव चरण परसि, अभय दान पायो ॥५॥८३॥

* पद–राग सारंग *

प्रभु निम्बादित्य प्रगट भये।
विमुख उलूक छिपे जन पंकज, विकसे मोद छये ॥१॥
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा दीक्षित, अरुण ऋषी मन मोद नये।
धनि धनि कूख जयन्ती माता, पुण्य पूर्व पूरण जु भये ॥२॥
सोमवार पुनि नक्षत्र कृत्तिका, जन अनन्य मन शूल गये।
जै जैकार भयो वसुधा पर, सुरपुर अमर - निशान हये ॥३॥
गोवर्धन गिरि ते पश्चिम दिशि, निम्बग्राम आगमन भये।
ब्रह्मा को रवि रूप दिखायो, मन भ्रम सब नसये ॥४॥
गावत मंगल गीत सुहर्षित, नर नारिन के ठाट ठये।
अति उदार मन अरुण ऋषी वर, दान देत मन्दिर रितये ॥५॥
सम्प्रदाय थापी दृढ़ कृत युग, हरिजन सब हरिरस भिजये।
हंसवंश कुल कलश सेत ध्वज, 'गोविन्दशरण' जाचक रिझये॥६॥८४॥

* पद–राग सारंग *

जै जै श्रीनिम्बार्क देव।
जिनके चरण-शरण बिन गति नहिं,
कह्यो सुयश वेदन में भेव ॥१॥
आन धर्म मृग जिन हित मृगपति,
रहत न वन कोउ आन समाज।
विमुख उलूक छिपे रवि दर्शन,
भयो भक्ति को अविचल राज ॥२॥

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा शुभ दिन,
अरुण ऋषी घर वर अवतार।
निम्बग्राम में बजत बधाई,
विप्रन दीने दान अपार ॥३॥
विमुख विपिन छेदन कुठार सम,
इन्धन पापहि अग्नि सुदेश।
'गोविन्दशरण' उदय हंस वंश को,
थापनि धर्म अवनि पर शेष ॥४॥८५॥

* पद–राग सारंग *

नियमानन्द जगतगुरु गाइये।
जिनके दरश पतित पावन पूरब अघ-ओघ नशाइये ॥१॥
आचारज मणि दिनमणि दर्शन, तम अज्ञान मिटाइये।
निम्बग्राम आश्रम अति पावन, वेद पुराण बुझाइये ॥२॥
तहाँ प्रगट भये रसिक जनन हित, रूप दृगन दरसाइये।
जलनिधि सोखन कुम्भज जनमे, भक्ति इन्दु सरसाई ॥३॥
वादी गज मत वारण के हित, पंचानन सुखदाइये।
धन्यभाग पितु अरुण रिषी के, जयन्ती लाल लड़ाइये॥४॥
वृन्दावन लीला रस दायक, नायक रसिक सुधाइये।
नन्दनन्दन वृषभानुनन्दिनी, पदरति नित्य बढ़ाइये ॥५॥
श्याम तमाल वरण शोभा लखि, प्रेम वारि बरसाइये।
भूरिभाग 'गोविन्दशरण' के, गहे चरण सरसाइये ॥६॥८६॥

❋ पद ❋

रंगीली बधाई आज बाजै, अरी ए।
ताधिलां धुम किट तड़न्न धा मृदंग गाजै ॥१॥
देश देश के गुनि सब आये, अरुण ऋषी दरवाजै।
इक रसना मोपै कहत न आवै, सब सुख साज समाजै ॥२॥
प्रगट भये श्रीनिम्बारक स्वामी, 'रसिकगोविन्द' सिर ताजै ॥३॥८७॥

❋ पद ❋

भज रे मन बार-बार, अरुण के दुलारे।
सदा सदा संग तेरे, प्राण रखवारे ॥१॥
डूबत भवसिन्धु माहिं, कर गहि उबारे।
दियो निज विपिन बास, सर्वस धन प्यारे ॥२॥
श्याम गात अति बिशाल, लोचन अनियारे।
बार-बार छवि निहार, हिये माहिं ला रे।
'रूपरसिक' मान सीख चरणन चित ला रे ॥३॥८८॥

❋ पद—राग मारू ❋

आज बधायो भयो मन भायो।
सुत जनमत श्री अरुण ऋषी घर, सुर समाज चलि आयो ॥१॥
धन्य जयन्ती मातु धन्य यह, कार्तिक मास सुहायो।
धनि धनि तिथि पूर्णमासी निज, उर अभिलाष पुरायो ॥२॥
कोउ कहे कौन सुकृत जननी को, जिन कर यह फल पायो।
कोउ कहे कृपा सुलभ हरि की है, विरद वेद विधि गायो ॥३॥
कोउ कहे करहु तैयार साँथिये, मोतिन चौक सुहायो।
कलश केलि ध्वज बन्दनमाला, सगर नगर छवि छायो ॥४॥

सकल लोक मंगल सुनि आँगन, सुजश अपार सुनायो ।
यहि अवसर मुनिराज वीणकर, लिये दरश दरशायो ॥५॥
द्विजवर देखि लेखि निज भागहिं, तन मन मोद न मायो ।
सदाचार की रीति अरचि मुनि, पुनि सुत चरण छुवायो ॥६॥
अभय हाथ धरि शिष्य करत भये, रस वारिद बरसायो ।
'रूप रसिक' जन भये मनचीते, अभय निसान बजायो ॥७॥८६॥

* पद–राग चर्चरी *

जै जै श्रीनिम्बभानु, सुरनर मुनि धरत ध्यान,
श्रीसुदर्शनावतार सन्तनि सुखदाई ।
जैनिन को खण्ड कियो, दुष्टनको दण्ड दियो,
सम्प्रदाय थापी हंसवंश लै सदाई ॥१॥
पुरुषोत्तम आज्ञा पाय, भू-पर पधारे आय,
श्री श्रीनिम्बार्कदेव नारद सुखदाई ।
दक्षिण सुदेश भृगु - बंश माँझ धारी देह,
ज्ञान औ विराग भक्ति सबको सिखाई ॥२॥
मीमांसा काणाद तर्क निपुण लेके नष्ट किये,
पाञ्जलि कापिल अद्वैत को बहाई ।
केवल द्वैतवादी ये, विशिष्टाद्वैतवादी सबै,
द्वैताद्वैत मत मथि डारिके चुड़ाई ॥३॥
कलिघोर अन्धकार, मध्य लै उजालो कियो,
मत ले कपालवेध एकादशी धाई ।
जै जै श्रीनिम्बार्कदेव, ब्रह्मा शिव शेष देव,
आरती उतारें सबै भक्तन सुखदाई ॥४॥

सनकादिक नारद ये, आचारज राज,
हंसवंशी 'कृष्णदास' जैति जै सुनाई ॥५॥९०॥

* पद–राग बिलावल *

माई री, आज तो बधाई सरसाई सुखदाई लागे,
अरुण के कुमार चारु सन्तन सुखदाई।
कनक कुम्भ ध्वज पताक, मुक्तनफल वन्दनमाल,
दूर्वाक्षत पल्लव छवि गेह - गेह छाई ॥१॥
जग में आनन्द भयो, भक्तन दुख दूर गयो,
जागे वेद ज्ञान सिन्धु तेज परम लाई।
नास्तिक मत तिमिर गयो, वेद पद्मभानु भयो,
जगमगात जगत माहिं जस सुर नारि गाई ॥२॥९१॥

* पद–राग भैरव *

चलो सखि, निम्बग्राम सुख लहिए।
जयन्ती - सुत की बरष - गाँठ है, मन अभिलाष पुरैये ॥१॥
प्रमुदित मन गुणभरी परस्पर, हाथन कञ्चन थारी।
गावत सकल समय के मंगल, चलीं हरषि पुरनारी ॥२॥
सगुण रूप करुणामय केशव, मही उतारन भार।
प्रगट्यो रसिक जनन को निजपद, बिप्रवेश अवतार ॥३॥
श्रीराधा औ मदनगोपाल की, सेवा करि अभिराम।
कलि निस्तारन हेत देत सुख, दियो सगुण निजधाम ॥४॥९२॥

* पद–राग सारंग *

नियमानन्द भजो मन मेरे।
कोटि भानु सम तेज प्रगट जग, प्रबल चक्र हरि फेरे ॥१॥

प्रगट पुराण भागवत गावत, अम्बरीष द्विज घेरे।
सदा भक्त - पालक निज नामहिं, पालत कृपा भरे रे ॥२॥
नख-शिख सुन्दर ध्यान जो ताते, नाम सुदर्शन हेरे।
प्रगट भये ऋषिराज अरुण गृह, जानि धर्म निज घेरे ॥३॥
नाम धरन आये चतुरानन, दण्डी वेश धरे रे।
न्योतो करि बोले भोजनहित, सन्ध्या लखि न किये रे ॥४॥
धरि निज तेज निम्ब पादप पर, दरसाये रवि नेरे।
भोजन करि निशि चिह्न निरखि, तब कौतुक माहि छकेरे॥५॥
निम्बभानु निम्बारक निम्बादित्य नाम धरि टेरे।
कृष्णतोष यह नाम सखन में, खेलत खेल नये रे ॥६॥
युगल महल में श्रीरङ्गदेवी, दम्पति नित रिझये रे।
प्रगटत जो ता वंश - प्रशंसक, होत सकल भव बेरे ॥७॥
आवत शरण कपट तजि जे जन, होत महल निज चेरे।
हंसवंश - अवतंस सदा हरिव्यास बसो मो हिये रे।
'किशोरीदास' जाचत कर जोरे, गाऊं सुयश नये रे ॥८॥६३॥

* पद *

आज सखी ऋषिराज द्वार पै, अद्भुत बजत बधाई री।
घुरत निसान दुन्दुभी बाजे, पटह मृदंग सुहाई री ॥१॥
भेरी टेरत सुनावत मंगल, मनहु बुलावन आई री।
घर-घर ते सब सजि-सजि निकसीं, विप्रवधू छबि छाई री ॥२॥
मंगल गावत आवत सजनी, दिशदिश अधिक सुहाई री।
नाचत कूदत हरषत बरषत, दधि की कीच मचाई री ॥३॥

केशर चौक पुरावत आँगन, सामवेद ध्वनि छाई री।
सींक सवाँर साँथिया रोपे, वन्दनमाल बँधाई री ॥४॥
अन्न वसन मनभावन पावत, सब जन आस पुराई री।
धेनु अमित द्विजवर घर ओरत, नाना वरण मँगाई री ॥५॥
मागध सूत वन्दिजन द्वारै, उत्तम कीरति गाई री।
भूषण वसन अमोलक दे दे, सबकी आस पुराई री ॥६॥
आज अरुण ऋषि नन्दराय भये, महरि जयन्ती माई री।
'श्रीभट' सुभट बधाई गावत, अद्‌भुत गति दरसाई री ॥७॥८४॥

* पद *

निम्बग्राम सखि आज बधाई।
अरुणऋषी घर नवनिधि प्रगटे, रसिक मुकुटमणि राई ॥१॥
नवरस प्रगट करैं भूतल में, भक्तन के सुखदाई।
'गोविन्दशरण' पद-पंकज परसे, भव-भय ताप नशाई ॥२॥८५॥

* पद—राग पूर्वी *

बजत बधाई आज भली री।
अरुण ऋषी घर पुत्र भये हैं, अति आनन्द घली री ॥१॥
मोतिन चौक पुरावो सजनी, धरो कलश कदली री।
विप्र बुलाय स्वस्ति बँचवाओ, जैसे वेद विधी री ॥२॥
जयन्ति-नन्दन को मुख निरखत ही, प्रेमवेलि उलही री।
'प्रियासखी' आनंद सुख सरिता, चहुँदिश ले उमड़ी री ॥३॥८६॥

* पद *

आज बधाई बजत सुहाई।
अरुण रिषी घर पुत्र भये, श्रीनिम्बार्क आचारज राई ॥१॥

निम्बग्राम में महामहोत्सव, सकल लोक सुख सम्पति छाई।
रसिकजनन के भये मनोरथ, मनवांछित निधि सहजहिं पाई॥२॥
पूरण कुम्भ भवन में धरिकैं, हरी दूब बँधवाई।
कदली रोपत धरत सांथिया, मोतिन चौक पुराई॥३॥
गृह-गृह ध्वजा पताका शोभित, बन्दनवार बँधाई।
रतनजटित सिंहासन सुन्दर, सरस वितान तनाई॥४॥
तहाँ बैठे श्रीजयन्तीनन्दन, छवि पर कोटिक चन्द्र लजाई।
इन्द्रनीलमणि श्याम मनोहर, पीत बसन सुघराई॥५॥
कडुला कंकण अंगद पहुँची, अँगुली जटित जराई।
कोटिभानु सम कांति विराजत, अज्ञान-तिमिर सब जात नसाई॥६॥

विप्र वेदध्वनि करत यथाविध, अरुणरिषी ने स्वस्ति बँचाई।
गुणि गन्धर्व सबै जुरि आये, गावत सुखद बधाई॥७॥
गोपी गोप झुण्डनि मिलि, निम्बग्राम में आई।
नाचत गावत मुदित परस्पर, केशर अंग लगाई॥८॥
मँगल वस्तु लिये कर कमलन, लागत परम सुहाई।
दधि नवनीत परस्पर छिरकत, अरगजा कीच मचाई॥९॥
भीजे बसन अंग लपटाने, उदित उरोज हार हरकाई।
मुखकमलनपर अलक सगबगी, देखत दामिनि कोटि लजाई॥१०॥

निम्बग्राम के गली गिरारे, दूध दही की सरित बहाई।
वे इनके वे उनके छिरकत, मानो भादों झरी लगाई॥११॥
बीन मृदंग उपंग बाँसुरी, सारंगी सुर ताल मिलाई।
नौबत घन ज्यों गाजत साजत, बजत सरस सहनाई॥१२॥

मागध सूत वन्दिजन सबने, मनभाँवती बधाई पाई।
देत अशीष चले अपने गृह, जयन्तिसुवन की लेत बलाई ॥१३॥
सुर नर-मुनि सब यह सुख देखत, तन मन सुधि बिसराई।
अति आनन्द समुद्र मगन भये, देव सुमन बरषाई ॥१४॥
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा शुभदिन, यह उत्सव सुखदाई।
'प्रियासखी' के हिये बसो नित, सब सन्ताप नशाई ॥१५॥८७॥

* पद *

जयन्ती-नन्दन की बरसगाँठ आज, सब मिलि मंगल गावो री।
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा शुभ दिन, मोतिन चौक पुरावो री ॥१॥
धरो सांथिया कदली रोपो, बन्दनवार बधाओ री।
बीन मृदंग उपंग बाँसुरी, बाजे विविध बजाओ री ॥२॥
अति सुगन्ध नीर उज्ज्वल में, लाले उबट न्हावो री।
पीत बसन आभूषण नाना, हरषि निरखि पहिरावो री ॥३॥
सुन्दर श्याम सलोने लोने, देखत नैन सिरावो री।
'प्रियासखी' इनकी छबि ऊपर, तन मन धन सब वारो री ॥४॥८८॥

* पद *

निम्बार्क निम्बार्क निम्बार्क कहो रे।
त्रिविध ताप जरयो जात काहे कूँ सह्यो रे ॥१॥
हंसवंश तिमिर ध्वंस शरण आय रहो रे।
सनकादिक नारदमुनि निम्बभानु कह्यो रे ॥२॥
श्रीनिवास सदानन्द आदि वाक्य गहो रे।
विषयन विषरूप जान, काहे कू चहो रे ॥३॥

काम क्रोध लोभ मोह सिन्धु क्यों बहो रे।
चक्ररूप भक्तभूप पाद-पद्म गहो रे ॥४॥
आदि अनादि सम्प्रदाय भूल क्यों रहो रे।
ज्ञान पाय सुख समाज निम्बग्राम रहो रे ॥५॥८८॥

* पद *

आज अमित मंगल भयो माई, पुत्र जयन्ती जायो री।
इन्द्रनील मणि वर तनु किरणन, गृहतम हरण नशायो री ॥१॥
देव दनुज गन्धर्व सर्वजन, गुण गावत मनभायो री।
गृह-गृह तें ऋषि वधु चलि आवत, गावत राग सुहायो री ॥२॥
जनु तर वर सरवर पशु पच्छी, आनन्द उर न समायो री।
विधि बासव शिव शेष वेश धरि, लोक-लोक ते आयो री ॥३॥
यह कहि गावत सब मनभावत, देव-देव प्रगटाये री।
कोउ कहे यह श्रीरङ्गदेवी, विधि आज्ञा ते आये री ॥४॥
कोउ कहे यह तोषकृष्ण, श्रीकृष्ण सखा मन भायो री।
अपर कहे मोहन की वंशी, अधर सुधारस प्यायो री ॥५॥
कहत कोउ हरि-कर-लकुटी यह, गोरज अंग लपटायो री।
श्रीराधा तन की यह कान्ति, प्रगट रूप दरसायो री ॥६॥
नारायण कर चक्र सुदर्शन, अब ऋषि वेश बनायो री।
निवृत्ति मार्ग प्रकाश करन, आचारज वपु धरि आयो री ॥७॥
युगलकिशोर प्रेम के सम्पुट, सात्विक अँग अँग लायो री।
अनगन वपु धरि सब रस सेवत, रसिकराज सरसायो री ॥८॥
कलि कल्मष दुख दूर करन, जन को त्रयताप नशायो री।
ज्ञान विराग भक्ति शरणागति, गुरु आज्ञा मुख गायो री ॥९॥

ताप पुण्ड्र मनु नाम यज्ञविधि, वैष्णवधर्म चलायो री।
हंस सनक नारद मग अनुसरि, सरवस रस बरसायो री ॥१०॥
भवसागर तारन दृढ़ नौका, करणधार यह पायो री।
'श्रीगोविन्दशरण' बिन इनको, चरण शरण को धायो री॥११॥१००॥

* पद—राग बरवा *

निम्बग्राम में आज बधाई, बाजत परम सुहाई।
प्रगटे श्रीनिम्बारक स्वामी, रसिक जनन सुखदाई ॥१॥
लोक-लोक अति आनन्द बाढ्यो, सुख सलिता सरसाई।
जै जै शब्द करे सुर नर मुनि, नभ तें पुष्पवृष्टि बरसाई ॥२॥
ब्रज नारी मिलि मंगल गावत, आनन्द कह्यो न जाई।
'प्रियसखी' के हिये बसो नित, मनवाञ्छित निधि पाई ॥३॥१०१॥

* पद—राग चर्चरी *

अब तो विनय सुनिय कान, अरुण जू के बारे।
दीनन दुख हरण नाथ, करुणा रूप धारे ॥१॥
जानी निज धर्म हानि, प्रगट भये सुखकी खानि।
युग युग उपकार करत अमित विघ्न टारे ॥२॥
पतित पावन नाम सुन्यो, सकल शास्त्र वेद भन्यो।
चक्ररूप भक्तभूप कलिमल भ्रम जारे ॥३॥
काम क्रोध लोभ मोह, तृष्णामद मत्त छोभ।
इन्द्री - लोलुप अपार, खुले दशहु द्वारे ॥४॥
अब न कछु चलत जोर, घेर जग-अटवी चोर।
माया तम घोर निशा, हाय पति तिहारे ॥५॥

हा हा प्रभु एती देर, दरसन लागी औसेर।
छिन - छिन हू हूक उठत, लागत दिन भारे ॥६॥
आशा श्रीवननिवास, हरिव्यास जनन वास।
हर्षि प्रिया - प्रीतम पद, सेवा सुख सारे ॥७॥१०२॥

* पद–राग धोमा तिताला *

चलि सखि निम्बग्राम, बधाई आज भली री।
नवसत साज सिंगार सौंज, सजि आवो चली री ॥१॥
जहँ गिरिवर परम सुरम्य, कुसुमित कुञ्ज थली री।
तहँ क्रीडत खग मृग पुञ्ज, गूंजत मधुप अली री ॥२॥
सरिता सुभग सुढार, विकसित कंज कली री।
तहँ सारस हंस समूह, बोलत प्रेम ढली री ॥३॥
अरुण ऋषिवर धाम, सरस वितान तने री।
तहँ राजत रसिक नरेश, निम्ब रवि मुदित मने री ॥४॥
घनश्यामल दुति अङ्ग, पीतपट ललित बने री।
लोचन कंज विशाल, युगल रस नेह सने री ॥५॥
चितवन परम रसाल, रसिक प्रतिपाल पने री।
दिव्य सुचन्दन भाल, शोभा अमित ठने री ॥६॥
विलसत उर बनमाल, कमलवर सुखद गने री।
बचन रचन रसजाल, दम्पति सुरत रने री ॥७॥
दायक विपिन विलास, मिथुन रस रँग सने री।
सेवत सुर मुनि वृन्द, कल्पतरु चरण घने री ॥८॥
जै 'श्रीरसिकगोविन्द' अभिराम, जयन्तीलाल जने री।
सजनी देत अशीष, विमल यश विशद भने री ॥९॥१०३॥

* पद—आशीष *

लाल मेरो भाँवतो चिरजीवो।
बाढ्यो अमित कोटि संतति ही, हरषि सिराऊँ हीयो ॥१॥
सुर नर हर्षि निशान बजावत, नारद जू सुख लीयो।
निम्बभानु के जन्म समय के, गावत गुनगन श्रीयो ॥२॥
'गोपाललाल' प्रभु को मुख देखत, वारि-वारि जल पीयो।
अब मोहि देहु चारु पद-पल्लव, जिय भायो वपु कीयो ॥३॥१०४॥

* पद—आशीष *

जयन्तीजू, चिरजीवो लाल तिहारो।
आगम निगम पुराण कहत हैं, हरिजन को रखवारो ॥१॥
तीन भुवन दाहक त्रिपुरारी, इन उनको पुर जारो।
भायो भयो सकल मुनिजन को, हंस वंश उजियारो ॥२॥
उपज्यो पुण्य पुञ्ज ऋषिजू को, जिन शिशु रूप निहारो।
'आनन्दघन' प्रगटे भूतल पै, जीवन प्राण हमारो ॥३॥१०५॥

* पद *

अरुण कुवँरको बरसगाँठ सुनि, ऋषिसमाज चलि आयो री।
तन-मन-धन न्योछावरि करि-करि, भक्ति अभयपद पायो री ॥१॥
अरुण ऋषी सबहीं सनमाने, सबकी चाह पुरायो री।
भये मनोरथ पूरण सबके, अपने-अपने घर आये री ॥२॥
यति को रूप विधाता धरिके, भिक्षा के मिस आये री।
मातु जयन्ती पद-पंकज गहि, आदर करि बैठाये री ॥३॥
भक्ष्य भोज्य अरु लेह्य चोष्य सब, भोजन अमित बनाये री।
सन्ध्या समय जानि संन्यासी, कर गहि दण्ड सिधाये री ॥४॥

अरुण कुमार बाल संग खेलत, माता टेरि बुलाये री।
जननी को मुख देखि उदासी, नियमानन्द हँसि आये री ॥५॥
गृह तें यती विमुख नहिं जावे, यह उपाय मन भाये री।
पाद-पद्म गहि यति के हँसि के, भिक्षा करन बुलाये री ॥६॥
निम्ब वृक्ष पर संन्यासी को, दिनकर प्रगट दिखाये री।
रवि को देखि यतीवर बैठे, भोजन विविध अघाये री ॥७॥
कर अचवन गृह तें जब निकसे, घड़ी चार निशि आये री।
चकित भये विलोकि यह सम्पति, मन विचार यह लाये री ॥८॥
यह नहि तेज दिवाकर को मन, भ्रम तम दूर नशाये री।
कोटि सूर्य सम तेज सुदर्शन, चक्र रूप धरि आये री ॥९॥
अपनो तेज दिखाय आप मोहि, भोजन विविध कराये री।
यह विचार करि नामकरण विधि, विधिते आप कराये री ॥१०॥
जन्म-नाम अनिरुद्ध जू इनको, गुणत्रय दोष नशाये री।
व्रत-पञ्चक को नेम धारि पुनि, नियमानन्द कहाये री ॥११॥
निम्ब वृक्ष पर अर्क दिखायो, नाम निम्बारक पाये री।
जो यह नाम जपत निशिवासर, त्रिविध ताप नशाये री ॥१२॥
भव-भंजन मुनिजन मन रंजन, रुख गंजन सरसाये री।
नारायण कर चक्र सुदर्शन, जन निस्तारन आये री ॥१३॥
या विधि नामकरण कर पद्मज, अपने लोक सिधाए री।
'श्रीगोविन्दशरण' सबजन सुन, तन मन अति हुलसाये री ॥१४॥१०६

* पद—आशीष *

चिरजीवो लाल भाँवतो जिय को।
शुभ नक्षत्र शुभ तिथि मुहूर्त, प्रगट भयो सुखदाई हियको ॥१॥

युग-युग राज करो सुख विलसो,
कबहु न होय बार जिन बाको।
देत असीष 'कृष्णअली' उमगत,
सफल मनोरथ अब सबही को ॥२॥१०७॥

※ पद ※

नमो नमो आचारज दिनमणि।
चार पदारथदाता भवनिधि, त्राता रसिकनिकी चिन्तामणि ॥१॥
सम्प्रदाय थापक युग-युग में, भागवत धर्म प्रकाशी।
जिनकी चरण-शरण गए पाये, वृन्दाविपिन विलासी ॥२॥
रसिक-सभा-मण्डन भव-खण्डन, प्रगट भये सुख दाता।
चतुर्व्यूह धारक शुभ कारक, जग जलनिधि के त्राता ॥३॥
'गोविन्दशरण' पिता अरुणऋषि धनि, धन्य जयन्तीमाता।
धन्य कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, जन्म लियो विख्याता ॥४॥१०८॥

※ पद ※

आज बधायो बजत सुहायो, अरुण ऋषी जु के द्वार।
चहुँ दिस घोस कुलाहल छायो, घर-घर लेत बगार ॥१॥
चलहुँ वेगि यों कहत परस्पर, दिन पायो है आज।
हम पै विधि अनुकूल भयो है, मनभायो किये काज ॥२॥
दधि माखन के मौंठ भरोरी, हरदी लेप कराय।
गोधन सकल शृङ्गारिये हो, थापें पीठ लगाय ॥३॥
दूधन गिरि गोवर्धन पूजो, पीत जु बसन धराय।
इनकी कृपा हमारे नव निधि, रहत है सहज सुभाय ॥४॥

विलम्ब न करो चहुँ दिशि ते सखि, आवत गोप कुमार।
जात रिषिन की मण्डली वे, करत वेद उच्चार ॥५॥
मागध सूत वन्दीजन चारण, कहत हौं कम्बल लाहु।
गायक नृत्य कवि बहु गुणिजन, नाट्य नटी उर चाहु ॥६॥
ब्रज-वनितन की को कहे जस, शोभा बढ़ी विशाल।
नाना रंग के पहिरि दुकूलन, हाथन कंचन थाल ॥७॥
कोकिल कण्ठ लजावही जस, करें सोहिलो गान।
तान तरंगन रंग बढ्यो है, सुनी परत नहिं कान ॥८॥
व्योम विमान कुसुम झरि कीनी, सुर-वनिता ललचाय।
भूरि भाग्य ब्रज-सुन्दरि जिन हित, होत जु नित नव चाय ॥९॥
यहि विधि अति आनन्द गई सो, रंग प्रभा सुत पौरी।
भवन नहीं निज भावहि सजनी, मिलत परस्पर दौरी ॥१०॥
इत उत ते सब कहत लहत सुख, पायो सुजस उजास।
नगर चहुँ दिशि बाग बनन सों, रुचि रस बारहु मास ॥११॥
सुनत वचन निज काज न त्यागे, सजे चौहट-हाट बजार।
थापे कञ्चन कलश सुपल्लव, चौक जु द्वारन द्वार ॥१२॥
ध्वजा पताका कदली रोपी, वन्दन माल बँधाय।
बीथिन अतर गुलाब सुसींची, अगर धूप महकाय ॥१३॥
पीत बितान विचित्र तने तिन, मध्य जु वेदि अनूप।
सामवेद ध्वनि करत महामुनि, ऊँचे स्वर सुख रूप ॥१४॥
भवन प्रवेश कियो ब्रज युवतिन, लगी माय के पाय।
निरखहि श्याम तमाल लाल-छवि, दोउ कर लेत बलाय ॥१५॥

अँगुली टोपी अच्छत रोरी, दधि दूर्वा फल फूल।
धरि जु भेंट अंग अंग पुलक कछु, कहत समय अनुकूल ॥१६॥
भाग्य विभव जस सुकृत तिहारो, को है वरणन हार।
कूख कल्पतरु विरवा उपज्यो, नन्दकुवँर उनहार ॥१७॥
युग युग राज करो हम माँगहिं, मस्तक अँचरा ओटि।
भक्त शिरोमणि तेरो लाडिलो, जीवे कल्प जु कोटि ॥१८॥
देहु जु नेग साँथिये चेतो, भाउज परम उदार।
तो सुत गोद खिलाऊँ निशिदिन, तजूँ न तुम्हरो द्वार ॥१९॥
दीनी आज्ञा करहु जो भावैं, तुम्हरो ही परताप।
सींकन युत द्वारन पै माँडे, कीन्हों जु मधुर अलाप ॥२०॥
यह कहि धाय अजिर मधि आई, उचरत बैन पुनीत।
कोकिल कण्ठ लजावति भामिनी, प्रगट करत रस-रीत ॥२१॥
झूमक दै दै नाचहीं हो, अङ्गन अङ्ग मिलाय।
प्रेम-प्रफुल्लित तन-मन फूली, फिरत मगन मन चाय ॥२२॥
ब्रजवासिन के कहा कहुँ सुख को, जिनके हरि आधीन।
हेरी दै दै कूदहीं हो, कहत सबै विधि दीन ॥२३॥
दधि हरदी के माठन भरिके, जाचत शीषन धार।
निम्बग्राम के गली गिरारे, बहि चले खार पनार ॥२४॥
माखन के लौंदा चले हो, मारत बाँह उठाय।
गोवर्धन की तरहटी कोउ, लोटत खैंचत धाय ॥२५॥
दै दै लै लै हो हो बोलत, कोलाहल रह्यो छाय।
कोउ न काहू की प्रभुता मानत, करत अपन मन भाय ॥२६॥

रपटत झपटत दपटत लपटत, बाहुन मण्डल जोर।
खेलत हँसत हँसावत मटकत, करत रंग की रोर ॥२७॥
मानसि गंग नहावहीं फिर, दही हरद लपटाय।
दधि काँदो भादों मानो झरि, सुरपति रह्यो लजाय ॥२८॥
गोधन - बच्छ किलोलहीं हो, करि - करि ऊँचे पुच्छ।
सोने सींग जड़ाऊ सोहे, मस्तक मोतियन गुच्छ ॥२९॥
रँग रँग झूल सुहावनी खुर, रुपे ताँबे पीठ।
कण्ठ हमेल पैंजनी पायन, देखि लगे जिहि दीठ ॥३०॥
देत दान सनमान अरुण जू, जैसी जाहि सुहाय।
अन्न बसन आभूषण दीने, मंगन रहे थकाय ॥३१॥
गोपन की पहिरावनी कीन्ही, जाको जैसी भाय।
पाग पिछौरी तोरा टोडर, देखत धनद लजाय ॥३२॥
रँग रँग जामा पहिर मुदित ऋषि, चरणन भाल छुवाय।
लैसुत गोद जयन्ती बैठी, गोपिन के ढिंग जाय ॥३३॥
तुम्हरे पुण्य प्रभाव ते यह दिन, श्रीहरि दीयो मोहि।
अब बहिना जो जाको भावैं, कहहु करौं मैं सोहि ॥३४॥
नाना चित्र विचित्रित अम्बर, पहिरो री सुखदाय।
हँसुली हार हमेल जड़ाऊ, बाजूबन्द सुहाय ॥३५॥
पहिरो लहँगा कुसुम के कंकन, मुँदरी अरु हथ फूल।
पायल बिछिया बाजने की धुनि, सुनत मदन मन शूल ॥३६॥
निम्बग्राम नरनारि मुदित भये, करत जु जै जै कार।
ऐसो दिवस सदा या पुर में, करत रहो करतार ॥३७॥

भाट वंश विरुदावलि गावहिं, ढाढी कर रहे ख्याल।
भाँड जो नाना स्वाँग बनावैं, देत कोउ करताल ॥३८॥
नाट्य नटी निरतत उघटत हैं, नाना तान तरंग।
लेत ललित गति मोहनी हो, बाढी उरन उमंग ॥३९॥
यथायोग्य सबको धन दीयो, प्रमुदित देत असीस।
मातु जयन्ती - सुवन को बाढ़ै, वेल जु बिस्वाबीस ॥४०॥
जैसो दिन है आज को सखि, तैसो ही नित होय।
निम्बादित्य कृपाल चरित में, तन मन रहो समोय ॥४१॥
भूरि बधाई बँटी सबन को, अब आई मो वार।
हरषि 'प्रिया प्रियदास' को होवे, ललित केलि उर हार ॥४२॥१०९॥

* पद *

जै जै श्रीनिम्बार्क निम्बारक।
अम्बरीष की लाज राखी, दुर्वासा - गर्व - निवारक ॥१॥
और युग में नाम सुदर्शन, भृगु वंश अवतारक।
याकी छाप धरी जग में जन, होत सवैभव पारक ॥२॥
श्रुति पुराण छाप महातम, ताप करत तन दूरी।
श्रीनारायण कह्यो लक्ष्मी सों, ब्रह्म - संहिता रूरी ॥३॥
कृतयुग नाम भयो निम्बादित, निम्ब ग्राम के वासी।
अरुणऋषी पिता मातु जयन्ती, युग-युग धर्म प्रकाशी॥४॥
आचारज-आश्रय बिन नर को, होत न वैष्णव नाम।
'गोविन्दशरण' कहें रसिकभये बिन, मिले न हरिपद धाम॥५॥११०॥

* पद–राग चर्चरी *

भज मन आचार्य भूप, नख शिख मन हरन रूप,
आनन्द स्वरूप प्रभू अरुण के दुलारे।
श्याम सुन्दर अंग चारु, शोभा मन हरण मार,
सकल सुखन सार श्री जयन्ती जू के बारे ॥१॥
जब जब होय धर्महानि, करुणा कृपा की खानि,
धारत वपु दुष्ट दलन दीनन रखवारे।
युग - युग अवतार धरत, भक्तन उद्धार करत,
विमुखन महिभार हरत भुज आजानु धारे ॥२॥
राधा - हरिचरण - कंज, मधुकर व्रत करत गुञ्ज,
वृन्दावन नव निकुञ्ज सेवत मतवारे।
रङ्गदेवी नाम सदा, सेवत हित श्यामा - श्याम,
शोभा गुण धाम संग सहचरि अमिता रे ॥३॥
जन पर अति ही कृपाल, माता हित करत बाल,
वृन्दावन अति रसाल देत प्रणत प्यारे।
जै जै श्रीहरिव्यास, पूरन जन करन आस,
राखौ निकट किशोरी दास दुख-कदम्ब टारे ॥४॥१११॥

* पद–राग बसन्त *

जै श्री निम्बादित्य आनन्द मूल।
खेलत बसन्त कालिन्दी कूल ॥१॥
दैवी जीवन उद्धार हेत।
वपु आचारज अवतार लेत ॥२॥

करुणा रस पागे अति उदार।
वर कृपा शरण किए जन अपार ॥३॥
पाखण्ड - धर्म - वन दहन काज।
प्रभु धूमकेतु सम धर्म पाज ॥४॥
गिरि गर्व चूर हित वज्र देव।
कामादि - कर्म - अहि गरुड़ देव ॥५॥
गज मतवारे वादो अनेक।
तुम पंचानन तिन हित जु एक ॥६॥
कामादिक सर तहँ अति गंभीर।
तिहि शोषण को कुम्भज शरीर ॥७॥
हरिभक्ति - लता पोषनहि चन्द।
भवरोग रहित भये भक्तवृन्द ॥८॥
मग सम्प्रदाय सुरतरु समान।
तम रहे कौन विधि उदय भान ॥९॥
जग जीव परे संसार कूप।
तिनको तुमही अवलम्ब रूप ॥१०॥
यद्यपि ईश्वर शीतल सुभाय।
निज जनहित राजत मधुर भाय ॥११॥
भव भय टारन सुख दान मान।
त्रय ताप दूरि करि जस - निधान ॥१२॥
हरि - सेवा - सुख आनन्द युक्त।
राजैं शुद्ध भेष जग भूप भक्त ॥१३॥

परमहंस मण्डल सुदेश ।
ज्यों तारागण मधि तारकेश ॥१४॥
नवधा गुलाल नवरँग अनूप ।
झोरि भरि डारत भक्त-भूप ॥१५॥
हरिगुण-बाजे बाजैं झाँझ ताल ।
बीना मृदंग सुर अति रसाल ॥१६॥
गावत बसन्त घुमड्यो पराग ।
सुनि सुनि उपज्यो तहँ परम राग ॥१७॥
सनकादि कहत जु ज्ञान भेद ।
ज्ञान भये मन मिट्यो है खेद ॥१८॥
गहि लावत नारद दौरि जाय ।
हरि रंग सबै जन दिये भिजाय ॥१९॥
दशधा मृग मद मुख दियो लगाय ।
हो हो कहि नाचत मुदित भाय ॥२०॥
भये प्रेम मगन तन नहिं सँभार ।
नर-नारिन को नहिं रह्यो विचार ॥२१॥
उज्ज्वल रस श्रीभट घट भराय ।
छिरकत सब जन पर भरे भाय ॥२२॥
हरिव्यास नेह सौंधो जु सार ।
करुणा रस बूका मची मार ॥२३॥
श्रीपरशुराम मृदु रस अबीर ।
हरिवंश रूप सबै अमृत सीर ॥२४॥

श्रीनारायण केसरि सुसीर।
वृन्दावन भिजवैं हिए चीर ॥२५॥
श्री श्री गोविन्द चोवा सिंगार।
महु लायक रत आनन्द अपार ॥२६॥
फगुवा मधि दीजै भक्ति दान।
"गोविन्दशरण" जन राखो मान ॥२७॥११२॥

✻ पद ✻

भजु श्री नियमानन्द कृपाल।
भुज आजानु दुष्ट - मद - खण्डन, दीन जनन रच्छ पाल ॥१॥
जब जब होत जु हानि धर्म निज, बढ़त जु दुष्ट विशाल।
धरि नाना विधि रूप दयानिधि, मेटत जन - दुख - जाल ॥२॥
अब प्रगटे तैलंग विप्र घर, अरुण ऋषी हरिभक्त गुणाल।
माता नाम जयन्ती गुण निधि, सुन्दर धर्म प्रतिव्रत पाल ॥३॥
नखशिख भूषण बसन साज अंग, करत आरती चूमत भाल।
सुन्दर श्याम अंग शोभा निधि, वदन मदन अगनित उर माल ॥४॥
नौबत बजत बधाई माँगत, ढाँढी-ढाढिन करत है ख्याल।
देत दान सनमान रतन धन, भूषन चीर धेनु गज लाल ॥५॥
देत अशीष विप्र नानाविधि, निगम मन्त्र बरषत सुरमाल।
चतुरानन धरि नाम विपुल जग, पावन जन प्रतिपाल ॥६॥
निम्बभानु श्रीनिम्बारक, श्रीनिम्बादित्य सुख्याल।
आय शिष्य कीन्हे श्रीनारद, जानि चक्रहरि प्रगटे दयाल ॥७॥

गावत वेद पुरान प्रगट जस, सनकादिक शिष हंसगोपाल ।
तिनके सुपात्र श्रीनारद मुनि, परम्परा यह चाल ॥८॥
श्रीनिवास निजदास प्रथमजिन, रची भाष्यकौंस्तुभ मणिमाल ।
अगनित खल पामर मतवादी, जीति किए हरिभक्त रसाल ॥९॥
जे हरिविमुख मूढ़ शठ कामी, कूकर ज्यों भूँकत निज गाल ।
यह लोकहुँ परलोक खोय खल, फिरि है विकल बिहाल ॥१०॥
जे जन आवत शरण कपट तजि, निरभय होत मृत्यु यम काल ।
'किशोरीदास' हरिव्यास-कृपा-बल, नित हरि उर राजत बनमाल॥११॥११३

* पद *

आज अरुण ऋषि के घर आली, करुणाकर प्रगटाये री ।
वरुणादिक सब देव व्योम ते, पुष्पवृष्टि बरसाये री ॥१॥
देव दुन्दुभी बाजत नीको, देव - यान छवि छाये री ।
ऋषि समाज सब मिलि मिलि आवें, सामवेद-ऋचा गाये री ॥२॥
सब जन के मन मंगल दरसे, अति उमंग चित चाये री ।
ज्ञान भक्ति रस निधि प्रगटानी, कुख जयन्ती पाये री ॥३॥
वेद - पुराण - विरुद्ध सबै मत, रविवत मंगु नशाये री ।
सब पाखण्ड - तिमिर तर भाजे, वेद - भेद गरजाये री ॥४॥
नव-नव नवधा गावत आवत, पावत सब मन भाये री ।
'श्रीगोविन्दशरण' सुख सागर, निरखि-निरखि सुख पाये री॥५॥११४॥

* पद—राग दण्डक *

देख री देख छवि अरुण ऋषि कुँवर की,
कोटि शशि और काम जाय लाजै ।

भानु कोटिक मानो एक संग उदय भये,
चतुर्दश भुवन को तिमिर भाजे ॥१॥
श्याम सुन्दर सुअङ्ग पीत पट कटि धरें,
हृदय वन मोतियन माल राजै।
कम्बु वर कण्ठ उर विशद सोहे सुभग,
आजानु बाहु अभय - दान काजै ॥२॥
मधुर मृदु बैन मुसिक्यान अति रस भरी,
नैन अम्बुज ईषत अरुण साजै।
'प्रियासखी' निरखि अङ्ग-अङ्ग शोभितहि अति,
जयन्ती-नन्दन रसिक राज राजै ॥३॥११५॥

※ पद—राग दण्डक ※

जयति श्रीमत सदा निम्ब - आदित्य प्रभु,
उदित नित सच्चिदानन्द - राशी।
भक्ति - रस ज्ञान विज्ञान वैराग तप,
योग प्रेमादि किरनै प्रकाशी ॥१॥
हरि भजन तेज जग जगमगात तिमिर-
अज्ञान हरि अविद्या - निशा नाशी।
छिपे पाखण्ड उडुगन उलूक उड़ि,
गये दुरित दुःख दोष दारिद दुराशी ॥२॥
भसे तस्कर काम कोध सकुचे कुमुद,
विमुख खल कुटिल नास्तिक निराशी।

कोक सब लोक भई मोद मंगलमयी,
सुमति - चकई अधिक हिय हुलासी ॥३॥
रसिक जन अलि मण्डली हरषो भली,
सन्त उर कमल अवली प्रकाशी ।
वेद - वाणी विमल वदत द्विजवर विदित,
ब्रह्म विद्यादि बन के विलासी ॥४॥
चतुर वपु धरन सुख करन तारन तरन,
हरन संशय सकल कर्म - फाँसी ।
प्रथम श्रीसुदर्शन चक्र भक्तन रक्षक,
विष्णु वैकुण्ठ पति कर निवासी ॥५॥
द्वितीय सखा तोष सखी रङ्गदेवी तृतीय,
कुञ्ज बन युगल सङ्ग कृत खवासी ।
चतुर्थ आचारज गुरु पतित पावन प्रगट,
गिरि गोवर्धन निम्बग्राम वासी ॥६॥
श्रीहंस - वंश - अवतंस कवि - कुल - कलश,
प्रशंसित सुजस अभिमत ददासी ।
द्वैत - अद्वैत मत जीव किये कृतारथ,
दई हरिभक्ति मेटी चौरासी ॥७॥
दरस हित द्वार बहु भीर रहत नृपन की,
महत जन परम पद रज उपासी ।
सेवहीं सिद्ध साधक सुज्ञानी गुनी,
मुनीजन यती योगी संन्यासी ॥८॥

प्रणत प्रतिपाल कलिकाल में कल्पतरु,
कृपा करि विपत्ति सबकी विनासी।
वृन्दावन रहसि दीनी रसिक गोविन्द को,
सदा कीनी युगल - महल - दासी ॥६॥११६॥

॥ पद—राग दण्डक ॥

देव, शुद्ध सन्तत सदा सम्प्रदा मुकुट-मणि,
आदि नहिं अन्त निम्बार्क स्वामी।
परम प्राचीन रस रङ्गदेवी वपुष,
विमल वृन्दाटवी वर सुधामी ॥१॥

देव, कृष्ण-कर-चक्र वक्त्रादि नाशन सदन,
कदन बन दनुज त्रैलोक जापम्।
सूर शशि च्युत जलधि अग्नि ऐनादि ऋतु,
निस - दिवस तारिका त्रिसत तापम ॥२॥

देव, सप्त द्वीपादि पर कूट वर प्रचुर करि,
देव दनुज नाग नर नम्र करता।
भानु लखि अनज प्रज्वलित अति तेज तम-
हरन हरि - भक्त - उर शोक हरता ॥३॥

देव, श्रवन मख निमिष नैमिषारण्य द्विज डरि,
करत व्रत दैत्य यज्ञादि ध्वंसी।
क्षीर - सागर - शयन अयन हरि पाय वर,
ल्याय बन शीश छेदन प्रशंसी ॥४॥

देव, अमल अस्तव विदित वदत नामावली,
अचल आसन असन जलन ध्यानम् ।
उर धरन प्रतिमा प्रगट निकट सुठि,
अरचि अति नम्र नमि करत ध्यानम् ॥५॥

देव,भ्रमत ऋषि सुखित नखशिख रंगे प्रेम-रंग,
शब्द अद्भुत अमित युगल रूपम् ।
अचल चल कमल पद परसि अलिवत विमल,
प्रश्न युत शिष्य मन्त्रित अनूपम् ॥६॥

देव, विदित वृन्दाविपिन सघनतरु मान सर,
सुघर साधन धरन सिद्ध धारम् ।
पत्र - क्वाथादि भक्षण भजन लक्ष्य हरि,
रिक्ष लखि प्रश्न गुण बैन चारम् ॥७॥

देव, निम्बोपरि निरखि आदित्य निम्बादित्य,
नाम निर्मित उर सुप्रकासा ।
देहि हरिदास पद आस रस गुरु शरण,
विपिन वर वास 'श्रीकैशोर दासा' ॥८॥१७॥

* पद *

जय जय जय श्रीनियमानन्द ।
प्रगट भये श्रीचक्रसुदर्शन, जन हित करुणा - कन्द ॥१॥
नील जलज मरकतमणि निन्दक, अङ्ग-अङ्ग छवि निरखि आनन्द ।
कोटि सूर्य सम तेज अखण्डित, शीतलता अङ्ग कोटिकचन्द ॥२॥

भाल विशाल तिलक द्वादश, हरिनाम अलंकृत दृग-अरविन्द।
कंठ तुलसि नलिनाक्ष मालिका, भुज आजानु मेटत दुख द्वन्द॥३॥
नाभि गंभीर त्रिवलि शोभा सर, पीत बसन मानो नँदनन्द।
चरण-द्वन्द्व अरविन्द अरुण तल, रसिकन मानस मत्त अलिन्द॥४॥
उपदेशहि जब बैठि सिंहासन, रूप धरै मन छन्द।
नखशिख सुन्दर ध्यान करत जो, पावत परमानन्द॥५॥
साम दाम अरु दण्ड भेद करि, तारे अगनित मन्द।
परम उदार करत श्रुति साखी, दीनन सों सनमन्द॥६॥
कृपापात्र नारद मुनि करके, सो पुनि सनक - सनन्द।
सो श्रीहंस गोपाल के जिहि, नित नचत मुनिन्द॥७॥
श्रीनिवास केशव श्रीभट प्रभु, काटत जनके फन्द।
किशोरी गोपाल पतित - पावन प्रभु, राखो शरण सुछन्द॥८॥११८॥

※ पद ※

आज सखी मेरे मन आनन्द।
प्रगट्यो रसिक जनन को सर्वस, पूरण आनन्द कन्द॥१॥
कार्तिक मास शरद ऋतु नीको, तैसोई पूरण चन्द।
धार्यो वपु निम्बारक स्वामी, मिटे जगतके भव-भय-फन्द॥२॥
अशरण शरण किए निजकर गहि, काटि कर्म दीन्हे गोविन्द।
सकल जीव उद्धार हेतु प्रभु, आज्ञा दीनी श्रीनँदनन्द॥३॥
रचे ग्रन्थ श्रुति सम्मत नीके, निज कर नाना छन्द-प्रबन्ध।
मदन गोपाल लाल चिरजीवो, दूर गए सबही दुख-द्वन्द॥४॥११९॥

* पद *

बजत बधायो री हेली, द्विज ऋषिराज के।
लगत सुहायो री हेली, यह दिन आज के॥१॥
आज को दिन शुभ सुहायो, मास कार्तिक भावनो।
शरद रितु पून्यो तिथी बुध, मेष लग्न सुहावनो॥२॥
अरुण रिषि घर पुत्र प्रगटे, निरखि अति सुख पाइये।
मनहु मन्मथ परम सुन्दर, अमित रवि शशि भाइये॥३॥
सबै मिलि आवो री हेली, हृदय सुख उपजाइये।
अङ्ग-अङ्ग भावो री हेली, मंगल बधाई गाइये॥४॥
गाइये नव परम मंगल, मोतिन चौक पुराइये।
हेम-कुम्भ रु खम्भ कदली, बन्दन माल बँधाइये॥५॥
पगो सब या सुखहि सजनी, भक्तिरस मन लाइये।
जन्म दिन यह निम्ब रवि को, महा भागन पाइये॥६॥
जो रस साँचो री हेली, इन पद जानिये।
हरि कर वासो री हेली, तन धरि आनिये॥७॥
आनिये धरि हिये सजनी, रङ्गदेवी वपु धरे।
हंस वंश प्रकाश कर, सनकादि मारग अनुसरे॥८॥
अर्थ-पञ्चक क्रिया-पञ्चक, रस जु पञ्चक पुनि करे।
शान्त सुख वात्सल्य दास, शृङ्गार रस शुभ उर धरे॥९॥
हिलि मिलि नाचो री हेली, गुन गन गाइये।
आनँद साचो री हेली, अनगन पाइये॥१०॥
पाइये सुख हिये सजनी, दिवस रजनी विलसिये।
काय मन धन वचन सब विधि, लाय अब नहिं अलसिये॥११॥

'शरण श्रीगोविन्द' रसबस, सरस रस मिलि पीजिये।
(श्री)निम्बभानु दयालको यश,गाय नित प्रति जीजिये॥१२॥१२०॥

※ पद ※

बाजे बजत अरुण रिषि द्वार।
जयन्ती - सुत की बरसगाँठ की, शोभा बनी सुचार॥१॥
ध्वजा पताका कदली राजत, बाँधे बन्दनवार।
आईं सकल पुरवासिनि सजि-सजि, धरि कर कंचन थार॥२॥
गावत समय सुहाये मंगल, नृत्यत बहु विधि नार।
आनँद सरस भयो तिहुँ पुर में, बरसत पुष्प अपार॥३॥
नारदादि व्यासादि भागवत, आये परम उदार।
प्रगट्यो हरि गोपाल लाल प्रभु, चक्र रूप अवतार॥४॥१२१॥

※ पद ※

बरसगाँठ आज निम्बादित्य की, चलो हो बधाई जाय।
कनक थार धरि कर कंजन में, नाना साज सजाय॥१॥
कठुला कंकन अङ्गद पहुँची, अँगुली जटित जराय।
जयन्ति - सुवन को लै पहिरायो, निरखत नैन सिराय॥२॥
घर - घर ध्वजा पताका रोपत, बजत सरस सहनाय।
'प्रियासखी' ता दिन की छबि कछु, मोपै बरनि न जाय॥३॥१२२॥

※ पालने का पद ※

ललन को पालनो गढ़ि लायो।
कंचन खम्भ सरस बहु डाँड़ी, रतन जटित मँढि लायो॥१॥

आस करूँ या घर की निशिदिन, अब अवसर शुभ पायो ।
प्रगट्यो नवल 'गोपाललाल' प्रभु, तीन लोक जस छायो ॥२॥
हौं सुनि श्रवण चल्यो अति आतुर, द्वार तिहारे आयो ।
निम्बभानु मोहि दीजै निज पद, जो श्रुति सन्तन गायो ॥३॥१२३॥

* पद–राग भैरवी *

झूलत आज पालने प्यारे ।
पीत झँगुलिया शोभित भूषण, अलकें छुटी केश घुँघरारे ॥१॥
नासा मुक्ता अरुणाधर राजे, नैन कमल बिन अंजन कारे ।
चरण चारु सोहन मनमोहन, 'गोपाललाल' दग धर पुचकारे ॥२॥१२४॥

* पद *

रानी जू पूजत हैं आजु दिनेश ।
गोद लसैं सुत कोटि गुनन छवि, सेवत जाहि सुरेश ॥१॥
नाम सुदर्शन रूप सुदर्शन, निरखत शारद शेष ।
निम्बभानु अवतार धर्यो हरि, तारण जीव अशेष ॥२॥
कियो सकल रसिकन मन मान्यो, रह्यो न दुख को लेश ।
'गोपाललाल' सुख लह्यो निरखिपद, ब्रह्मरूप शिशु केश ॥३॥१२५॥

* पद *

मन्दुलरा बाजे चौगुनो फूल ।
आज सखी जयन्ती-सुत जायो, सुधि रहे देव-ऋषि भूल ॥१॥
शोभा सरस समाज मनोहर, हरष आय तिहिं कूल ।
निरखि-निरखि 'गोपाललाल' छवि, गये सकल मिटि शूल ॥२॥१२६॥

❋ पद ❋

बाजत आवत बीना बैन।
जयन्ती-सुत की बरसगाँठ है, सफल करौ चलि नैन ॥१॥
बाँटत है जो जाको मनभायो, मानिक हीरा धैन।
प्रगट्यो हरि सन्तन सुखदाई, भयो सकल जग चैन ॥२॥
खल उद्योत ज्योति पाखण्डी, पाप कर्मरत जैन।
सो सब मलिन भये लखि सुख, गोपाल प्रभू सुख दैन ॥३॥१२७॥

❋ पद ❋

जय जय जय श्रीनियमानन्द।
सजल जलद तन रसिकमुकुटमणि,
करुणा-सागर आनन्दकन्द ॥१॥
प्रफुल्लित नीलकमल-दल लोचन,
भव-भय मोचन परम उदार।
हंस-वंश-अवतंस ध्वंस दुख,
सुख दरसावन नित्य-बिहार ॥२॥
हरिकर वासी सब सुखराशी,
करत खवासी युगल किशोर।
वृन्दावनवासी रहसि बिलासी,
नहिं जानत कित रजनी-भोर ॥३॥
श्रीरङ्गदेवी अतिहित भेवी,
सेवी वृन्दाविपिन विलास।

श्रीनिम्बारक पर - उपकारक,
विपति निवारक पूरण आश ॥४॥
परभक्ति - दाता जन - त्राता,
विख्याता निज धर्म अखण्ड ।
महा मोह अति तिमिर - निवारक,
ज्ञान - विराग विमल मार्तण्ड ॥५॥
जन - मन - रञ्जन सेवत सज्जन,
अवगुण गंजन अखिल विकार ।
श्रीराधा सर्वेश्वर पद भज,
अमित किए भव पार ॥६॥
प्रेम प्रकाशक युगल उपासक,
जन - उर वासक दीनदयाल ।
'किशोरीदास' का त्रास हरहु प्रभु,
निज प्रण राखहु परम कृपाल ॥७॥१२८॥

* पद *

बाजे आनन्द बधाई सखीरी, बाजे आनन्द बधाई री ।
कुल - भूषण अवतार लियो सुत, अरुणऋषी सुखदाई री ।
जाको रूप निरखि चुम्बक मन, लोह रह्यो लपटाई री ॥१॥
निगम निरूपत नेति गिरा जेहि, बरनत गुन सकुचाई री ।
तेहि प्रिय प्राण सजीवन यह शिशु, जनहित हेतु पठाई री ॥२॥
होइ है प्रगट अपूरब सजनी, भव - सरि चेतु महाई री ।
जो रस सुलभ न लोक सुपर्वहु, केतिक यतन गनाई री ॥३॥

मृत दशा भवितव्य कहा कोऊ, आली मन पतियाई री।
त्रिभुवन तीनकाल दुर्लभ रस, सो भव प्रगट तुलाई री ।।४।।
जा दिनते याने गर्भ लियो सखि, अचरज लखि चमकाई री।
मातु जयन्तीको तेजवदन छवि, अधिक-अधिक अधिकाई री।।५।।
पहिलेहिं जानि परी सजनी यह, ईश कृपा वनि आई री।
यहि मत मानि बहुरि भव बूझत, सो नहिं विधि निरमाई री।।६।।
यह प्रण दास सुदर्शन भाषत, कण्टक कर्म मिटाई री।
पापी पतित तरहिं भव दुस्तर, यम मुख चोट चलाई री ।।७।।१२६।।

* पद *

निम्ब - दिवाकर की बलिहारी।
नाम - प्रभाव अनेक तरे जिहि, ईश कृपाते भवभय टारी ।।१।।
निम्ब बड़ो सब रोग नसावन, ए जग मुक्ति करे अधिकारी।
नाम दिनेश कलेश हरे भ्रम, भूलि निजातम छाई अँधारी ।।२।।
पायो प्रकाश हुलास बड़े उर, देखत वल्लभ मूरति प्यारी।
साधन सर्व किये को लहै फल, संकट लोक विशोक विसारी।।३।।
भाषत वेद प्रमाण सुदर्शन, सम्मत आठ दिगादिक चारी।
कृष्ण कृपा सुख को न लह्यो जग, ए कर चक्र सदा हितकारी।।४।।१३०।।

* पद *

बजत बधाई आज निम्बपुर सरस भली री।
मुदित भये नर - नारि उदै कुमुद कली री ।।१।।
धनि - धनि कार्तिक मास पूणिमा सुफल करी री।
सायंकाल सुयोग सुकृत की बेलि फली री ।।२।।

अरुण ऋषी जु के द्वार करत द्विज वेद धुनी री।
नगर रम्य चहुँ ओर सुशोभित कलश धरी री ॥३॥
महल ध्वजा फहराय सुहागिनी चौक रचे री।
दुन्दुभि बजत निशान सुपीत वितान तने री ॥४॥
द्वारन वन्दन माल तोरन कदलि लसे री।
अगर धूप महाकाय औ अरुण अबीर उड़े री ॥५॥
वन्दी मागध सूत सो देत अशीष खरे री।
परमहंस शुभ वंश सदा अटल रहे री ॥६॥
गावत भामिनि गीत अजिर में भीर भई री।
कोकिल कण्ठ लजाहिं अलापत तान नई री ॥७॥
करत हैं चरित बखान जयन्ती जु लालन केरी।
नित्य बिहारिनि प्यारी की सहचरी रङ्ग अली री ॥८॥
रासेश्वरी सनमान कृपा करि भुवि पठई री।
वैभव विपिन विलास अवनि कहु प्यारी सखी री ॥९॥
सो यह नियमानन्द वेद अस वाक्य सुने री।
धरि नाना विधि रूप विश्व पै काज करी री ॥१०॥
यह जस करत बखान नचत तेन - सुधि - भूली री।
प्रमुदित देव - विमान देव कीनी कुसुम - झरी री ॥११॥
भूषण बसन विचित्र दिये नहिं जात गनेरी।
हरष निरत पिय दास बास वन माँगत टेरी ॥१२॥१३१॥

* पद *

आज बधाई मंगल प्यारी ।
निम्बभानु की बरसगाँठ के, गावत गुनगन सब नर नारी ॥१॥
श्रीव्रजराज राज आयुध तन प्रगट्यो, अशरण शरण खरारी ।
निम्बग्राम अभिराम बन्यो मखि, उपमा कहे सो को कवि भारी॥२॥
युग-युग मध्य करी तिन रच्छा, रसिक परचि पुनि सृष्टि उधारी ।
वसुधा प्रेममयी रस वर्षा, करी युगल सुकुवाँरी ॥३॥
सर्वाचार्य शिरोमणि प्यारो, मदन गोपाल मुरारी ।
सोइ प्रभु प्रणत जननको सर्वस, श्यामा-श्याम व्रत धारी ॥४॥१३२॥

* पद *

श्रीनिम्बार्क स्वामी परम निष्कामी,
महामुनि उत्सव गाय बधाई ।
प्रगट भये श्रीअरुण ऋषी के, नारद गुरू सुहाई ॥१॥
सम्प्रदाय सुठि शरण भयो ते, छिन-छिन मोद बढ़ाई ।
श्रीपीताम्बरदेव परसि पद 'श्री दासकिशोर' सुहाई ॥२॥१३३॥

* पद-ढाढिन बचन *

मोय अरुण ऋषी घर ले चलि पिया ।
मातु जयन्ती ने लालन जायो,
सुजस वितान तिहूँ पुर छायो ।
सुन-सुन मेरा लरजै जिया ॥१॥
जात चले मंगन दश दिश ते,
भूरि भाग अबको है इन ते ।
निम्बदिवाकर दर्श दिया ॥२॥

अहो प्राणपति विनती सुनिये,
चलो वेग अब विलम्ब न करिये।
मेरो दरश विन धरके जिया ॥३॥
संग चलूँगी मैं नहिं मानूँ,
तुमसे अधिक बधाई लाऊँ।
रङ्ग प्रभा सुत ढाँढनिया ॥४॥
"आनन्दघन" की बेलि बढ़ैगी,
भक्ति-चकोरि हिये हुलसैगी।
ऐसो समय कब आवनिया ॥५॥१३४॥

* पद *

ढाढिन नाचै ऋषिराज अँगना।
माँगत नेग भाग्य बड़ भूरी,
मनसा सुफल आज होय पूरी।
मम सुजस सुकृत भये तेरे ललना ॥१॥
पायो सुअवसर विनय सुनाऊँ,
जो-जिय भावे बधाई पाऊँ।
बाढ़े सर्वेश्वर पद रति रचना ॥२॥
भाव भक्ति के भूषण दीजै,
अँगिया शील सन्तोष करीजै।
नय रसिक सँग प्रेम सारी देना ॥३॥
तट वंशीवट वास लेऊँगी,
रंग अली की टहल करूँगी।
जहँ "आनन्दघन" बहै रस-भरना ॥४॥

तुम तजि और न काहू जाचूँ,
हंसवंश - जस कहि नित नाचूँ ।
करो अटल राज जग थिर रहना ॥५॥१३५॥

※ गजल ※

सुनिये श्रीनिम्बार्क भगवान गोवर्धन के रहने वारे ।
वपु चक्र सुदर्शन धारे, सब कुमति तिमिर अघ जारे ।
वैष्णवधर्म अवनि परचारे, विष्णु मार्ग दिखाने वारे ॥१॥
तुम तो अम्बरीष रच्छपाल, तुम दुर्वासा किए बेहाल ।
सदा हरिभक्तन के प्रतिपाल, काशीक्षेत्र जलानेवारे ॥२॥
जो हरिभक्ति सहित मनलावैं, ते अभयदान जग पावैं ।
शरण तव 'दासगोपाल'कृपाल,राधाकृष्ण मिलानेवारे ॥४॥१३६॥

※ पद ※

अरुण ऋषि बाजे द्वार बधाई ।
बाल अरु वृद्ध मुनिवृन्द कोविद जुरे,
गुणन गम्भीर मन मोद छाई ॥१॥
चतुर दैवज्ञ श्रुति शोधि ज्यौतिष मतो,
नखत ग्रह लग्न गनि फल बतावैं ।
समय अविरोध सविरोध सुख सों सने,
जानि परभाव दूषन दुरावैं ॥२॥
लालमत मानि इहलोक परलोक सुख,
लाभ धर्मादि हरिभक्ति पावैं ।
हरिचक्र अवतार लयो मेष लग्न जन्म भयो,
चन्द्र दूसर राहु तीसर लखावैं ॥३॥

गुरु चौथे विराजै सातवें शनि भृगु राजैं,
सौम्य सुख सन्तत बढ़ावैं ।
अष्टम रवि बुद्ध जानों नवम शुभ केतु मानो,
लाभ जस विश्व छावै ॥४॥
दशम मंगल आये यह फल सब बताए,
मत्त गज लखि सिंह काँपै ।
द्वापर अन्त प्रगट भये इन्द्रिय जिन,
साधन करि भक्ति ज्ञान वैराग्य थापैं ॥५॥
सुनो सभा सुखसनी अरुण-सुत जय भनी,
मनहुँ सुरधेनु नर रूप धारी ।
जन सुदर्शन-जस कहे, कौन कवि पार लहे,
गावत गुण अनन्त भार शीष डारी ॥६॥१३७॥

* पद *

जय जय श्रीनिम्बभानु आचारज राई ।
राजत श्रीनित्यधाम, सेवत श्रीश्यामाश्याम ।
रुचि के अनुसार रङ्गदेवी मन भाई ॥१॥
आज्ञा विधि पाय सेज, कोटिभानु चक्र तेज ।
भक्तन को सर्व ओर तोषत मन लाई ॥२॥
प्रगटे अवतार रूप, रसिकन के रस अनूप ।
भक्ती अनुराग रङ्ग अङ्ग - अङ्ग छाई ॥३॥
कार्तिक पून्यो प्रकाश, गावत मङ्गल हुलास ।
'रूपरसिक' मगन भये शरणागति पाई ॥४॥१३८॥

*** पद ***

निम्बग्राम निम्बार्क प्रगटे सुखदाई ।
चन्द्र कोटि भानु कोटि - कोटि काम लजाई ॥१॥
गौर श्याम हू दै झलक, रूप मत लसत पलक ।
नील कमल दल सुनैन हँसनि मधुरताई ॥२॥
त्रिभुवन पावन सुकरन, त्रिविध ताप हरण चरण ।
नाम धाम लीला रति निशिदिन गुण गाई ॥३॥
ज्ञान भक्ति प्रेम मनो मूरति बनि आई ।
श्याम वरण तेज पुञ्ज अद्भुत छवि छाई ॥
आचारज सर्वोपरि परहित अवतार आप ।
रूप तो अनूप निरखि दासी बलि जाई ॥४॥१३६॥

*** पद ***

आज जयन्ती सुत जायो प्रभु रहे देव ऋषि भूल ।
शोभा सरस समाज मनोहर,
सब हरषित आये तिहि कूल ॥१॥
निरखि - निरखि गोपाल प्रभू छवि,
गये सकल मिट शूल ॥२॥१४०॥

*** पद--राग भैरव ***

जय जय जयति जयन्ती नन्द ।
अशरण शरण देत सुख कन्द ॥१॥
लीला वपु धर प्रगटे चन्द ।
सकल कला पूरन गोविन्द ॥२॥

मार्ग बताय काटि यम फन्द।
सन्मुख किए बहुत मतिमन्द ॥३॥
नाम लेत नाशत दुख-द्वन्द।
आचारज प्रभु आनन्द कन्द ॥४॥
रास-रसिक रसिकन मन इन्दु।
सखी रूप आयुध नँदनन्दन ॥५॥
सोइ युगल रस बरषत विन्द।
मदन गोपाल लाल मकरन्द ॥६॥१४१॥

* पद—दण्डक राग कान्हरो *

जयति जैति जै निम्ब-आदित्य निति चारि तन,
सर्व छिति कृष्ण-सेवा प्रचारी।
द्वापराचार्य औदार्य महा आर्य मुनि,
गुण-महासिन्धु जन-कार्य-कारी ॥१॥
जैति श्रीद्वारिका छाप रूप प्रभो,
सुदर्शन चक्र जै अघ विनाशी।
जैति श्रीनिम्ब-सविता जयति व्यास जु,
जैति जय सर्वदा स्वप्रकाशी ॥२॥
बहुरि रङ्गदेवी आदिक चतुर सहचरी,
राधिका कृष्ण संग सदा राजै।
बाहिरैं भीतरैं युगल मन लियो नित,
करत हरि भृत्य के अमित काजै ॥३॥

निम्बग्रामेश सर्वेश हरिभक्त,
राजेश जै जैति करुणा - निकेतम् ।
पुरीश्वरी धरन संसृति स्वजन हरन जय,
शरण अशरण सकल करन हेतम् ॥४॥
जैति सुखराशि अविनाशि भव-पाश-हर,
बल्लल रस द्वापरे सबनि दीनो ।
जयति भगवन्त निज तन्त श्रीकृष्ण को,
जानि सब सन्त को काज कीनो ॥५॥
सकल दिश जीत जय भक्त गुणातीत,
अविरोधि जन मीत सद्गुणागारम् ।
निम्ब सेचन करे सर्व सुख अर्थ यह,
अर्थ आदित्य तम नाशकारम् ॥६॥
हंस के शिष्य सनकादि सनकादिके,
शिष्य नारद सकल श्रुति बखानैं ।
बीनधर - शिष्य राजेश श्रीनिम्बर्राव,
लोक - वेदादि में नाहि छानै ॥७॥
गुणागुण चारि वपु बहुरि कलियुग मही,
धारि सब जीव को हित विचारयौ ।
जैति जे अद्भुतादित्य हरिभक्ति करि,
सकल को मोह-तम भ्रम विदारयौ ॥८॥
कलौ सब विघ्नहर सर्व सुखकर सदा,
नाम तव सुभग सुरतरु अनूपम ।

सोइ बहु भाग अनुराग करि धरि हिये,
जपत सो सही पावत स्वरूपम् ॥९॥
अमित लीला चरित नाम गुण रूप तव,
भव - जनित पाप अपराध - हन्ता ।
प्रणत 'गोविन्द' सुर निम्ब आदित्य गुरु,
देहु रति युगल-पद संग सन्ता ॥१०॥१४२॥

* छप्पय *

कामधेनु करुणा - अयन श्रीनिम्बार्क रूपनिधि ।
कोटि भानु सम तेज भक्त हित शीतल चन्दा ।
मत वादी गजराज राज मृग नियमानन्दा ॥
जन उद्धारण हेत हरन प्रगटे महिभारा ।
श्रीकृष्ण नाम को दान सुजस राजत संसारा ॥
दिन दानी सन्तन सुखद शरणागत पालन अवधि ।
कामधेनु करुणा - अयन श्रीनिम्बार्क रूप निधि ॥१४३॥

* पद *

बाजत बधाई सरसाई सुखदाई एरी,
निम्ब दिनकर अवतार कोऊ आए हैं ।
ब्रजतिय नटति अलापि राग नीको-नीको,
पग पटका गत नूपुर बजाए हैं ॥१॥
ताता थेई ताथेई मधुर सुर छायो नाक,
बाजत मृदंग धिधिटिक जस गाये हैं ।
सहित वधूटी नाक विबुध बजावें गावें,
चढ़िके विमान मेह निम्बग्राम छाए हैं ॥२॥

सुरतरु सुमन सवारि मालनी को ए री,
समय सुहावनो समुझि वरसाए हैं।
गलित-संकोच पुर आइ बाल-रूप लखि,
तन मन पुलकि सुरति बिसराये हैं ॥३॥
समुझ रह्यो न काहु आपनो परायो कौन,
आनन्द अघाय धाय हिय लपटाये हैं।
बलि-बलि बोलत प्रमोद मानि बानी प्यारो,
समय 'सुदरसन' सम्पति लुटाये हैं ॥४॥१४४॥

* पद—राग धनाश्री *

आजु बाजे रंगीली बधाई।
लोने लाल प्रगट भयो सजनी, अरुण ऋषी सुखदाई ॥१॥
नील रतन कृत मनहु पूतरी, विधु मुख लखि सकुचाई।
विहग-रोम मखमल-सों कोमल, अङ्ग परम छबि छाई ॥२॥
दूषण - रहित सकल जग भूषण, पूषण - तेज महाई।
शीतल शशि शतकोटि मनोहर, अमित प्रभा बल खाई ॥३॥
चक्र सुदरसन आप प्रगट किधौं, ऋषि को भाग्य भलाई।
श्रीपति परम प्रताप बनो सुत, सुन्दर वपु दरसाई ॥४॥
कै यश सकल बटोरि विरचि विधि, प्रगट्यो निज निपुनाई।
कै रङ्गदेवी बीस सकल गुण, आगरि जीवन हित चित चाई ॥५॥
कै कोउ पुरुष प्रधान कृपा करि, यह कौतुक निरमाई।
आचारज वपु आपु प्रगट भये, मैं पारख कछु पाई ॥६॥
जेहि यश विशद पुलकि तन जहँतहँ, वरणत लोग-लोगाई।
लै सुत गोद वदन लखि चुम्बति, धन्य जयन्ती माई ॥७॥

मुनिवर वृन्द सहित प्रिय भाविनी, लखि मुख लेत बलाई।
जय जय निगमगिरा मुनि-मन्दिर, सुनिय न बैन पराई ॥८॥
आदर देत हरषि ऋषि सबको, मिलि मिलि हीय लगाई।
बाजन विविध बजाइ गुणीजन, नृत्य करत जस गाई ॥९॥
भूषण बसन अशन देइ तिन्हको, हिय हरषत ऋषि राई।
मनहु अलौकिक मोद महोदधि, उमड़्यो कूल बहाई ॥१०॥
मन भावत पावत जन याचक, रह सुख उर उपलाई।
परमानन्द सरल रजु पोहित, ते मन माल बनाई ॥११॥
प्रीति सहित कर जोरि 'सुदरशन', विधिसों विनय सुनाई।
यह सुख दै बरखे सबही दिन, लीला ललित सुहाई ॥१२॥१४५॥

* पद–राग भैरव *

आज सकल विप्रन वर वनिता, चलिहैं मारग धाम।
कुख जयन्ती की सुत प्रगट्यो, भये जु पूरन काम ॥१॥
मंगल सजि मंगल धरि थारिन, मंगल गावत वाम।
मंगल कलश साजि करि आगे, जूथ जूथ अभिराम ॥२॥
बरसत कुसुम देव मुनि हरसत, ते आये तिहि ठाम।
उपज्यो हरि सन्तत हित काजे, निम्बारक करि नाम ॥३॥
जाचक विप्र दान सनमाने, उचित आशिषा पाई।
चिरजीवो जग को सुखसागर, भई जु मन की भाई ॥४॥
अनन्य प्रेम दशधा को आकर, प्रगट कियो जिन आय।
'श्रीभट' रसिकजनन सुखदायक, भक्ति वितान बनाय ॥५॥१४६॥

※ पालने का पद- राग सारंग ※

निम्बारक भगवान जन्म की आज बधाई बरनू ।
तिन माही अच्युतकुल श्रुति स्मृति पुरानन निरनू ॥
सृष्टि आदि आचारज आरज,
तिनके पावन गुणन मिदरनू ।
सम्प्रदाय - शिर छत्र मुकुट मणि,
"दासकिशोर" लियो सो शरनू ॥१॥
परम पुरुष भगवान नरोत्तम,
उत्तम श्रीनिम्बारक स्वामी ।
इच्छा विग्रह विघ्न हरण वपु,
विद्यमान अब लों निसकामी ॥
देव असुर नर नाग शरण सब,
होत अनम्र जासु मति भ्रामी ।
"दासकिशोर" परसि पद - पङ्कज,
रज धरि शीष दरसि दृग स्वामी ॥२॥१४७॥

※ पद—रागश्री ※

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा शुभ तिथि,
श्री निम्बारक उत्सव भारी ।
सम्प्रदाय - अनुगत - रत जे जन,
करि अनुकरण विविध विस्तारी ॥१॥
गावत गीत पुनीत मीत मिलि,
सह न सकत खल कुटिल विकारी ।

"दास किशोर" तोर पद - पंकज,
शरण सिहात गुरुनि अनुसारी ॥२॥१४८॥

* पद *

तुव पद पंकज अलिवत् मो मन,
बसो दरसि आचारज रूपा।
करि न सक्त निर्द्धार तोर वपु,
श्रीवृन्दावन वनमणि भूपा ॥१॥
वृन्दा नाम धाम मधि सहचरि,
सचित सुठौंन सौंज अनुरूपा।
"दास किशोर" शरणं सर्वोपरि,
ता मधि श्रीहरिदास अनूपा ॥२॥१४९॥

* पद *

निम्बारक स्वामी की शरनि नयामी,
जिनि जन जनम बिगारयौ।
जनम अनेक त्रिजग योनिन परि,
अब कहा नर तन धारयौ ॥१॥
करि विवेक धरि टेक अनन्यन,
पाव जू बाजि महारयौ।
"दास किशोर" शीष सत गुरु पद,
धरि सब शोक निवारयौ ॥२॥१५०॥

* पद *

बधाई धुनि छाई निम्बारक निधि पाई।
प्रगटे आदि-आदि आचारज अद्भुत, सब सन्तन सुखदाई ॥१॥

सहचरि प्रथम चक्र हरि कर मधि, अति अद्भुत छवि छाई ।
थकित भागवत क्वनि कथा सुनि, "दास किशोर" सुहाई ॥२॥१५१॥

* पद *

दृगन दरसाई बधाई ।
प्रगट भये वृन्दा वपु धरि तहाँ, विटप बेलि छवि पाई ॥१॥
यमुना नलिन पुलिन बंशीवट, भ्रमर खगनि धुनि गाई ।
'दासकिशोर' दरसि दम्पति रति, अमित केलि उपजाई ॥२॥१५२॥

* पद–राग केदारो *

प्रगट भई निम्बार्क बधाई ।
मास कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा सुभग परम,
मंगल दिवस सरस सुखदाई ॥१॥
अधिक उत्सव करत सन्त रस भरत सब,
टरत नहिं टेक सुविवेक उपजाई ॥२॥
"दास किशोर" लखि घोर संसार तुव,
चरण करि ठौर गुरु-शरणि आई ॥३॥१५३॥

* पद *

देव ऋषि भवन सुनि मंगल बधाई ।
रङ्गदेवी वपु धारि निम्बादित्य आये,
सम्प्रदा-सरित हरि स्यन्दि चलि आई ॥१॥
अमित पाषण्ड दलि मलिन मनमोद भरि,
सन्त सन्तत सुखद सुरुचि उपजाई ॥२॥
"श्रीदासकिशोर" भये ठौर-ठौर निदि गनि?
दरसि सपरसि हरषि शीष पद नाई ॥३॥१५४॥

* पद *

करत उत्साह निम्बारक उपासी।
अरचि सुठि सन्त धन खरचि संसार तै,
विरचि कृष्ण - पद परचि विश्वासी ॥१॥
वचन मुख मिष्ट रस दृष्टि द्रष्टा अतुल,
सहनि अन चहनि गति लहन रसराशी।
मानमद रहित सुख लहत हिलमिलि विमल,
श्री ये 'दासकिशोर' परलोकमति भासी ॥२॥१५५॥

* दोहा—आभास *

निम्बगाँव चलि लेहु सुख, बजत बधाई साज।
जयन्ती - सुत की है सरस, बरसगाँठि शुभ आज ॥१॥
भयो लाल मनभावतो, आज अरुण ऋषि धाम।
बजत बधाई गहगही, पूजय सब मन काम ॥२॥

* पद *

आज बधाई मन की भाई, बजत अरुण-ऋषि द्वार।
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा शुभतिथि निम्बचन्द अवतार॥१॥
रंग अली जू नित परिकर हित, आचारज वपु धार।
किये सनाथ प्रगट है जीवन, तिमिर-ग्रसित संसार ॥२॥
युगल - प्रेम - रससिन्धु बहायो, दरसायो सुख सार।
आस पुजाई "कृष्णअली", सुखदाई परम उदार ॥३॥१५६॥

* पद *

श्रीनिम्बार्क श्रीनिम्बार्क कहु रे मन मेरे।
टहल महल मिलत है मनमानी, जिनकी कृपा करिके हेरे ॥१॥

बिना प्रयास तरे भवसागर, मिटिहैं कलिमल-ताप घनेरे।
'कृष्णअली' दृढ़ राखु भरोसो, ह्वै हैं सफल मनोरथ तेरे ॥२॥१५७॥

* पद *

चलो सखी निम्बगाँव सुख लहियै।
जयन्ती - सुत की बरसगाँठ है, मन अभिलाष पुरैयै ॥१॥
बँटत बधाई मनभाई तहाँ, मिलत जाहि जो चहियै।
'कृष्णअली' मन बसै चरणरति, युगल हिये सरसैयै ॥२॥१५८॥

* पद *

शुभ दिन शुभ आनन्द मुहूरति, अति उछाह दरसाया।
कातिक शुभ शुक्ला पूरन शशि, रस का झर बरसाया ॥१॥
दरसन को ऋषि नारि उमग सब, उगर बगर घर छाया।
देत अशीष रूप अद्भुत लखि, मनहुँ कृष्ण फिर जाया ॥२॥
ह्वै प्रसन्न श्रीमातु जयन्ती, मेवन गोद भराई।
औ सबकौ बहु आदर दीनो, हित सों ढिग बैठाई ॥३॥
जैसे भादों नन्द महर के, सुख की झरी लगाई।
तैसे ही श्रीअरुण रिषी के, अद्भुत भई बधाई ॥४॥
अरुण रिषी के पुत्र भयो हम, रवि सोहले सुख पावे।
जन्म - जन्म के ढाढी तेरे, लाल जन्म सुनि आये ॥५॥
जो - जो माँगो सो - सो पायो, गाये आनन्द बधाये।
ऐसो दियो चल्यो नहिं तिन पै, रंकन राव करायो ॥६॥
दे असीस उनमत्त छकी छवि, फिर देवे को आवैं।
देखत रूप कुवँर को फिरि मन, आनन्द उर न समावैं ॥७॥

अंचल लैं-लै विधि तन हेरैं, अपनो भाग मनावैं।
'प्रियासखी' आनन्द-मगन भई, नैन मीज पैरावैं ॥८॥१५९॥

* पद—राग धनाश्री *

रिषीजन घर को ढाढी आयौ।
जन्म सुन्यौ जयन्ति-सुत को, अति सोहिलो गायौ ॥१॥
अरुण ऋषी महाराज रीझ कैं, दीनो दान सवायौ।
'रसिकगोविन्द' की बाँह पकरि कैं, श्री बनवास बसायो ॥२॥१६०॥

* पद *

हुँ तो थाकी ढाढनि छुँ जी राज।
कुवँर-जन्म सुनि हर्षंहुँ आई, सुनि रिषिजन महाराज ॥१॥
मनवांछित फल लेस्याँ म्हे थाँसूँ, यो दिन पायौ छै आज।
प्रगटे श्रीनिम्बारक स्वामी, 'रसिक गोविन्द' सिरताज ॥२॥१६१॥

* पद—राग खमाच *

म्हें तो थाका जाचक छाँ जी राज।
लाल जन्म सुनि आया म्हे था कैं, सुनो रिषियन के राज ॥१॥
ज्ञान भक्ति फल लेस्याँ म्हे थासूँ, सन्तन को जी समाज।
'रसिक गोविन्द' को यह वर दीजें, नाहि आन सूँ काज ॥२॥१६२॥

* पद—राग रेखता *

दिये गज बाजि की तेजी, कहे आंमेन ते तेजी।
सुनहरी जीन हो देदार, सबै मोती जु सौं सिंगार ॥१॥
सुहाई पालकी दीनो, सुनहरी साज सौं कीनी।
जिनो लगैं मोतियों झब्बे, तिनों लखि मोहिते सब्बे ॥२॥

दिये जामा जरी के जू, दुपट्टे तार कसिके जू।
दई बहु रङ्ग की पगरी, सुहाई रूप की अगरी ॥३॥
दये कानों के जे मोती, भरी तिन में अती जोती।
दिये हाथों के जो चूड़े, मनोहर रूप के रूड़े ॥४॥
दई बहुरंग की नालो, बड़े मुक्तान की मालो।
चुकावो नेग जी मेरे, जीयो 'रूप रसिक' तेरे ॥५॥१६३॥

* पद—राग कानड़ो *

सब मिलि आये ऋषी-भवन में, भाड़ बधाई मागन वे।
नाचत गावत नकल बनावत, मानो मदमाते भागन वे ॥१॥
राग-रंग तो नाहिं सुनावें, भरे पूरे बहो सांगन वे।
'जनहरि' निरखन बदन लाल कौ, कबके ठाढ़े आँगन वे ॥२॥१६४॥

* पद—राग भारोंवा काफी *

कृष्ण सजनी गावौं सुखद सुहेलरा।
अरुण मदन आनन्द रूप धन, प्रगट्यो कुवँर नवेलरा ॥१॥
मधुर मृदंग बजत नव-नव गति, धिधकिट उपजै परेलरा।
ऋषि-बधू नाचत मंगल गावत, मचो अद्भुत कस खेलरा ॥२॥
चढ़े विमान सुमन सुर बरसत, निरखत आनन्द केलरा।
'गोपाल सखी' बलिहार जन्म दिन, माँगत बधाई बेलरा ॥३॥१६५॥

* पद *

ढाढिन अरुण रिषी घर आई, डिमागत बधाई बेलरा।
सहित समाज निरत करै हँसि-हँसि, माँगत सुखद बधाई ॥१॥
दियो जयन्ती हार हर्ष कर, लै पुनि झगरो मचाई।
बहुत काल में श्री महाराज, ऐसो दिवस में पाई ॥२॥

माँगत वेल बधाई, भक्ति यों करो अजाचक माई ।
हँसि रिषि भूषन और वसन लै, ढाढिन या पहिराई ॥३॥
दे असीस अवतार सुदरसन, चिरजीवो सुखदाई ।
'दास गोपाल' शरण निम्बारक, श्याम सखी बलि जाई ॥४॥१६६॥

* पद *

आजु मेरे मन आनन्द भयौ, हौं गोवर्धन ते आयो ।
तुमरे पुत्र भयो हौं सुनिके, अति आतुर उठि धायो ॥१॥
बन्दीजन और भिक्षुक सुनि-सुनि, देश-देश ते आयो ।
एक पहिलेई आशा लागो, बहुत दिनन कैं छालौ ॥२॥
तिन पहिरे कंचनमय मुक्ता, नाना वसन अनूप ।
मोय मिले मारग में मानों, जात कहूँ के भूप ॥३॥
तुम तो परम उदार ऋषी जू, जो माँग्यो सो दीनों ।
तुम-सो और कौन त्रिभुवन में, तुम हित सबको कीनों ॥४॥
'आनन्दघन' हरिप्रिया हितू संग, कुञ्ज केलि दरसायो ।
दीजे वेगि कृपा करि मोपे, जो मेरे मन आयो ॥५॥१६७॥

* पद *

बधायो बधायो, हाँ-हाँ जू बधायो बधायो ।
सुत जीवे बधायो - बधायो, दूध पीवे बधायो - बधायो ॥१॥
खेले ऋषि-अंगनैया बधायो, मैं तो लूंगी बलैया बधायो ॥२॥
आजु बड़ो सुख जानि पुलकि तन, नाचन गावन आयो ।
देखो हरस रस छायो गगन-मही, मुनिवर पारस पायो ॥३॥

ऋषि-सुत मातु जयन्ती-नन्दन, की महिमा श्रुति गायो।
जाको जनम सुख ऐसो प्रगट भयो, को न प्रमोद अघायो ॥४॥
माखन दूध दधि मृगमद को, केशर कीच मचायो।
डारत एकहि एक परस्पर, नटि तनु सुधि बिसरायो ॥५॥
बोलत बैन जयन्ती-सुत की, जय जय जय जस गायो।
यह कौतुक अवलोकि सुदरसन, ऋषि-पद शीष नवायो ॥६॥१६८॥

* पद *

ढाढी अरुण ऋषी के द्वारे।
बोलत बैन बधायो आसिस, देकर जोरि जुहारे ॥१॥
नाचत वंश प्रशंसत ऋषिको, आनन्दसों तनु-सुधि न सम्हारे।
प्रेम मगन बलि-बलि मुख बोलत, बालक रूप अनूप निहारे ॥२॥
देत निछावरि भूरि अरुण रिषि, लेत हरसि पट अंग सुधारे।
बालक पर धन वारि पुलकि तन, जाचक लखि जेहि तेहि दिशि डारे॥३॥
लाल दरश निज भाग्य विभव लखि, आनँद सो उर भरत भँडारे।
'दास सुदरसन' देव मनावत, चिरजीवे रिषि तनय तिहारे ॥४॥१६९॥

* पद—जन्म कुण्डली *

आजु सुत जन्म सुखसिन्धु उर उपलयो,
अरुण रिषि के द्वार बाजे बधाई।
बाल अरु वृद्ध मुनि वृन्द कोविद जुरे,
गुणन गम्भीर मन मोद अति छाई ॥१॥
चतुर दैवज्ञ श्रुति शोधि ज्योतिष मतो,
नखत ग्रह लग्न गनि फलको बतावै है।

समय अविरोध सविरोध सुख सो सने,
जानि परभाव परदूषण हु दुरावे है ॥२॥
लाल मति मानि इहलोक परलोक सुख,
लाभ जो न हरिभक्ति हित को न जान चावै।
आदि पद रहि अनरुद्ध शिशु नाम वृष-
वार है जो चन्द्र विग्रह लखावै ॥३॥
मकरगत भौम नव धर्म साधन सही,
कन्या के सौम्य सन्तत हू बढ़ावे।
कर्कटे देव गुरु बन्धु - सौहार्द फल,
मीन भृगु लाभ जस विश्वमें जो छावै ॥४॥
तुलाके है मन्द युत राहु फल बाद रमत,
मत्त गज मन मनो हुलखि सिंहहू जो कांपै।
सप्तमे भानु इन्द्रियजित व्रत महा,
मेषगत केतु वैराग्य हू को थापै ॥५॥
सुनि सभा सुखसनी जयति जय अरुणसुत,
मनहु सुर धेनु नर रूप धारो।
जन सुदरसन कहे प्रगटि कौन कवि जस-
कहै जाहि गुणगणत श्रुति सीस धारो ॥६॥१७०॥

※ श्लोक ※

कृष्णप्रभावात्मकनिर्गुणाय सदात्मने दिव्यमहत्तमाय।
निम्बार्कनाम्ने गुरवेऽद्भुताय तस्मै नमश्चक्रसुदर्शनाय ॥१॥

❋ पद–आशीर्वाद राग ठुमरी ईमनकी ❋

अरुण ऋषि सुकृत सुजस नयो-नयो होय।

क्षीरसिन्धु सुर असुर बिलोये जिन,
चौदह रतन नयनन सों हे जोये।
समय निधि नीको प्रफुल्ल कियो ही को,
लक्ष्मी कुँवर जामें रतन प्रगट भयो हो ॥१॥
रिषि - सुत सुख भोगे सदा चिर जीवे,
लहु गुण ज्ञान सुरस को सीवे।
कुशल विधि राखे ऐसे पूरब आपनी जन भाषे हैं।
तिमिर भ्रम बदन निरखि कर गयो हो ॥२॥१७१॥

❋ पद–बधाई ❋

जन्मगांठि दिन आजु कुवँर को, नौबत बाजि रहो रिषिद्वारे।
ले सुत गोद जयन्ती माता, बैठी मन्दिर रूप अगारे ॥१॥
पुरतिय रिषि-वनिता नव नागरि, सजि शुभ मंगल कंचन थारे।
गावत गीत मनोहर सोहर, आवत शुभ सिंगार सवाँरे ॥२॥
निम्बदिवाकर छवि अवलोकत, तनमन सुरति अपान बिसारे।
लेति बलाय पुलकि गुण गावत, लाल बदन जलजात निहारे॥३॥
आरति करि धन देति निछावरि, जय धुनि याचकवृन्द पुकारे।
सिद्धि-प्रभाव बढ़े धन मन्दिर, लखि सुर सानन्द सुमन न वारे ॥४॥
अरुण रिषि सनमानि सबहि को, सरल सुदरसन विनय उचारे।
आसीस देत नमित सुख मानत, आपु नमत वर वृद्ध विचारे ॥५॥१७२॥

* पद—राग धनाश्री *

जन्मगाँठि दिन आजु कुवँर को,
रंगीली बधाई कैसी बाजि रहो है।
तीनि काल त्रिभुवन रिषिगण में,
यह सुख सो नहि मानो सही है ॥१॥
भाग विभव अवलोकि अरुण को,
केहि असि मति जो न आपु चही है।
निम्ब दिवाकर की छवि निरखत,
सो सुख धन्य कौन कही है ॥२॥
सो शिशु चरण कमल की आशा,
भव-भय डरपि न कौन गही है।
निज कृत गुण अभिमान समय तेहि,
प्रेम प्रवाहन काहि बही है ॥३॥
उर अनुभवत सबै सुत मत को,
माखन वो सुख सकल मही है।
निज सुख हेत न चेत करे अब,
विषधर ताहि अभाग अही है ॥४॥
ईश-कृपा भई 'दास सुदरसन',
रिषि-सुत-पद अवलम्ब लही है।
बूडत कठिन अगम भव-सागर,
सुख विलस्यो कछु वो न चही है ॥५॥१७३॥

❀ श्रीनागाजू कृत श्रीस्वामीजू की बधाई ❀

❀ पद–राग मारू ❀

अरुण जू मेरे मन आनन्द भयो, हों नन्दीसुर ते आयो ॥१॥
तिहारे सुत को उद्भव सुनि हों, फूल्यो अंग न मायो ।
पावन परम पुनीत तिहारो, चाहत वंश सुनायो ॥२॥
श्रीनारायण-नाभि-अमृत-सर, प्रगट्यो कमल सुहायो ।
ता मधि प्रगट भये चतुरानन, चारि वेद हरि गायो ॥३॥
प्रथम सृष्टि पुनि सबके आर्य, श्रीकुमार वपु कीनो ।
हरी शरण श्रीनिज मुख गायो, इष्ट को व्रत तिन लीनो ॥४॥
पुनि दश पुत्र किये चतुरानन, सकल तपोधन धारी ।
तिनमें ज्येष्ठ श्रेष्ठ श्रीभृगुजी, श्रीहरि के हितकारी ॥५॥
तिनके च्यवन सकल सुखसागर, परमतत्व हरि मान्यो ।
निज प्रभाव सों कन्या ब्याही, श्रीभागवत बखान्यो ॥६॥
अल्पवान पुनि तिनके प्रगटे, करम-शास्त्र तिन भाख्यो ।
औरव सुमन भये पुनि तिनके, जिन श्रीसामवेद उर राख्यो ॥७॥
तिनके श्रीजमदग्नी प्रगटे, भजन तपोधन धारी ।
तिनके श्रीरङ्ग प्रभाकर प्रगटे, तुव पितुजन हितकारी ॥८॥
वंशतिलक द्विजराज मुकुटमणि, महिमा कही न जाई ।
श्रीचतुरशिरोमणि तिहारे प्रगटे, निम्बभानु सुखदाई ॥९॥
अपने सुत की वारि निछावरि, देव जु इच्छा मेरी ।
तिहारे लालको वदन विलोकों, नित सेऊँ पौरी तेरी ॥१०॥१७४॥

* पद–राग भैरवी वा पीलू *

आज बधाई जयन्ती के घर।
निम्बारक भगवान जनम लियो,
सम्पति सों जो गयो त्रिभुवन भर ॥१॥
अरुण ऋषी आनन्द उमंग उर,
न्यौछावरि सु करत नारी - नर।
'राधावल्लभ' शरण जाय बलि,
चक्र सुदरसन के चरणन पर ॥२॥१७५॥

* पद–राग ललित *

आजु सोहिलो होइ रह्यो जग।
जयन्ती रानी ढोटा जायो,
त्रिभुवन को गयो पाप - ताप भग ॥१॥
सम्प्रदाय - शिरोमणि लाल प्रगट भयो,
देउ कहा मैं उपमा को नग।
'राधावल्लभ' शरण जाय बलि,
चक्र सुदरसन को पाय के न लग ॥२॥१७६॥

* पद–राग बरवा *

रंगीली बधाई जग होइ रही आजु।
निम्बारक भगवान जनम लियो, सम्प्रदाय उर गयो है भाजु ॥१॥
कहि न जाय वह रूप माधुरी, अवतारी अवतार काजु।
'राधावल्लभ' शरण जाय बलि,
चरण सरोज को पकरि गाजु ॥२॥१७७॥

* पद *

हमारे ढाढी आयो ढाढी, हमारे ढाढी आयो ढाढी।
निम्बारक जू जनम लियो है, शोभा उमड्यो भाढी ॥१॥
जयन्ती को आनन्द भयो है, को कवि वरणो साढी।
'राधावल्लभ' शरण जाय वलि, निरखि आजु बदि ढाढी ॥२॥१७८॥

* दोहा *

निम्बग्राम जै जै जहाँ, अद्भुत छवि अभिराम।
सर्वेश्वर साक्षात् श्रीनिम्बभानु को धाम ॥१॥

* पद–राग भैरव *

जै जै श्रीनिम्बग्राम निम्बादित्यधाम,
करन काम पूरण मन दरन छवि छाई।
मंगलमय नाम निरखि पावत विश्राम महा,
अद्भुत अभिराम महिमा वेदन में गाई ॥१॥
सौभग खुरसाल साल ताल तरल तरु तमाल,
आसुपाल नासपाल जासु जाल जाई।
पनस प्रियाल पुञ्ज तुङ्ग नारिकेल नाल,
जंब निम्ब नीप साल माल महमहाई ॥२॥
करवीर करनकेलि एलि बेलि वरन बाग,
नागर पुन्नाग जाग जगत मा गई।
नय नय नय रही डारि फल और फूलनके भारि,
वंश निकट निर्मल का सारि वारिध सरसाई ॥३॥
मध्य कमल-कलि फूलत कान्ति भूलि रहे ललित भाँति,
तिनपर मँडराति मधुप-पाँति मधु लुभाई।

कूजत कल-हंस मोर, कोक कोकिला चकोर,
चातकी सुकीर भीर चटचटा हडाई ॥४॥
रतन जटित चारु कूल, मंडल मन्दार-मूल,
शोभित श्रीसर्वेश्वर सकल शक्ति राई ।
जै जै निम्बार्क देव, आचारज वर्य एव,
श्रीनिवास आदि सेवक रत हैं सदाई ॥५॥
चरणजात आतपत्र, धरैं भरैं मनसि मोद,
करैं चोर कंभासय केवल चित लाई ।
आस - पास खेल खास के खवास पासन तें,
'रूपरसिक' दासन तें पावें दासताई ॥६॥१७६॥

❊ पद—राग मल्हार ❊

अरुण - सदन नव मंगल माई ।
कृख जयन्ती सुभग सु शुभ तिथि,
शुक्तितें अद्‌भुत इन्द्रमणि प्रगटाई ॥१॥
विधि शिव शेष सुरेश वेद सब,
वृन्दारक की भई मनभाई ।
रमारमण कर चक्र सुदरसन,
निज भक्तन हित तन दरसाई ॥२॥
अपनो तेज निम्ब पर धारे,
कमल जयति की मति बौराई ।
श्रीनिम्बारक नाम पाय मुनि,
नारद चरण शरण मति धाई ॥३॥

जगमगात जग में जस जिनको,
सम्प्रदाय सनकादिक पाई।
"श्री निम्बारक शरण देव" पद-
पंकज परस अभय भयें पाई ॥४॥१८०॥

* पद—राग धनाश्री *

श्रीनिम्बारक नेक निहारहि।
पदमासन करि मुद्रा ज्ञान धरि, सिखवत ब्रह्म विचारहि ॥१॥
श्याम तामरस दाम शरीरहि। लोचन ललित हरत भव भीरहि॥२॥
शोभा शील ज्ञान गुन मन्दिर। सुन्दर परम सुजानहि ॥३॥
रंजन सन्त अखिल अघ गंजन। भंजन विषय विकारहि ॥४॥
हंसवंश अवतंस ध्वंस दुख। सुषमा - निधि अगाधहि ॥५॥
सुनि शठ सदा रंकके धन ज्यों। 'श्रीभट' प्रभुहि निहारहि ॥६॥१८१॥

* दोहा—ढाढी वचन *

ढाढी निसि सपनो भयो, सोवत सेज मझार।
सायंकाल सुयोग भो, निम्बारक अवतार ॥१॥
बजत बधाई सोहनी, तू कत करत अबार।
तुरत उठ्यो उमग्यो हिये, मनमें करन विचार ॥२॥
ढाढिन सपन जनायके, कहत भयो मतिधीर।
जाको दरसन करन में, मिटे जु भव की भीर ॥३॥
श्रीभृगुवंसिन कौ प्रिया, हौं निज ढाढी कहाउँ।
अमित बधाई लाउँगो, तू रहि सोयेहि ठाँउ ॥४॥

*** दोहा-ढाढिन वचन ***

सुनत उदासी मन भई, गयो कमल कुमुलाय ।
अति आदर सौं बन सुनि, बोली पद सिर नाँय ॥१॥
मोहू को दरसे निशा, मातु जयन्ती - लाल ।
तबते मन वहाँ जा बस्यो, तन जु इहाँ बेहाल ॥२॥
चलूँ अवश्य मैं ना रहूँ, तुम मन करहुँ विचार ।
प्रगट भई मम स्वामिनी, धरि इच्छा अवतार ॥३॥
तुम्हें सुजस शुभ कृत फल, मोको पिय अति चाहु ।
दोउ चलैं जस गायनैं, नाचैं सहित उमाहु ॥४॥

*** पद-ढाढिन वचन राग दादरा पीलू ***

मोहि अरुण ऋषि घर ले चलो पिया ।
मातु जयन्ती लालन जायो ।
सुजस - वितान तिहूँ पुर छायो ।
सुनि - सुनि मेरो लरजे जिया ॥१॥
जात चले मंगन चहुँ दिसि ते ।
भूरि भाग्य अब को है इन ते ।
जिन निम्बदिवाकर दरस किया ॥२॥
संग चलूँगी मैं नहिं मानूँ ।
तुम ते अधिक बधाई आनूं ।
तब रंगप्रभा - सुत ढाढिनिया ॥३॥
अहो प्राणपति विनती सुनिए ।
चलहु वेग अब विलम्ब न करिये ।
मेरो दरसन बिनु धरकत जु हिया ॥४॥

"आनन्दघन" की बेलि बढ़ेगी।
भक्ति - चकोरि हिये हरषेंगी।
फिर ऐसो समय कब आवनिया ॥५॥१८२॥

* पद—राग बरवा, चाल ख्याल *

॥ ढाढी बचन ॥

मैं परखी तो प्रीत सयानी, चलहु अरुण ऋषि ऐना हो।
सजहुँ सिंगार अंग अलबेली, (वहाँ) कहियो मीठे बैना हो ॥१॥
कौन सुकृतको पुण्य उदय भयो, जिन यह दिवस दिखायो हो।
जबते श्रवन परी मृदुवानी, जिया जाय निम्बपुर छायो हो ॥२॥
मातु जयन्ती लालन प्यारी, सो मम इष्ट कहावें हो।
उनहीं के गुण गाऊँ निसदिन, लगत जगत सब फीके हो ॥३॥
वहीं बसेंगे दरस करेंगे, ये ही मतो मोहि भायो हो।
सौंज सहित आश्रय देहुँ विप्रन, येहाँ करें पहले बधायो हो ॥४॥
दीने दान बहुमान सहित हिय, फूले अंग न मायो हो।
'व्रजदूलह' आनन्द मुदित ह्वै, चारु सोहिले गायो हो ॥५॥१८३॥

* दोहा *

हँसि प्यारी गलबाँह द, चल्यो जस करत बखानि।
हंस सनक नारद भये, अब निम्बारक जानि ॥१॥
हानि होत जब धर्म की, धरे विविध अवतार।
मातु जयन्ती लाडिले, चक्ररूप वपु धार ॥२॥
व्यूह विषै अनिरुद्ध ह्वै, सखा कृष्ण - अस्तोक।
श्रीराधाजू तन - प्रभा, सुमिरत करें अशोक ॥३॥

लकुट मुरलि ह्वै संग में, सेवत मित चित लाय।
क्रीडा रंग जु रसप्रदा, रंग अली मन भाय ॥४॥
ऐसे रूप अनेक धरि, सेवत हैं नित नाथ।
कहत सुनत गए निम्बपुर, निरख शैल नयो माथ ॥५॥

* सभा में पहुंच के ढाढी बचन *

* दोहा *

पहुँच सभा में दरस करि, निरख थकित भये नैन।
ऋषि - समूह पद वन्दि कै, बोल्यौ गदगद बैन ॥१॥
नाम चतुर चिन्तामणि, सुमतो मेरी भाम।
भृगुवंसिन जस गाउँ नित, नन्दीस्वर मो गाँव ॥२॥
पिता व गुरुन प्रणालिका, दोनो कहिहौं भेहु।
जस अनेक बरनन करूँ, मनवंछित वर देहु ॥३॥
ऐसे कहि पुनि ध्यान करि, कीन्हो मधुर अलाप।
प्रेम प्रफुल्लित उघट गति, वरणत प्रगट प्रताप ॥४॥

* पद–राग मारू *

अरुन जू मेरे मन आनन्द भयो, हों नन्दीसुर ते आयो।
तिहारे सुत को उद्‌भव सुनि हों, फूल्यो अंग न मायो ॥१॥
पावन परम पुनीत तिहारो, चाहत वंश सुनायो।
श्रीनारायण-नाभि-अमृतसर, ता मधि प्रगट्यो कमल सुहायो ॥२॥
ता मधि प्रगट भये चतुरानन, चारि वेद हरि गायो।
प्रथम सृष्टि पुनि सबके आर्य, श्रीकुमार वपु कीनो।
हरि शरण श्रीनिज मुख गायो, नइ एक व्रत तिन लीनो ॥३॥

पुनि दश पुत्र किये चतुरानन, सकल तपोधन धारी ।
तिनमें ज्येष्ठ श्रेष्ठ श्रीभृगुजी, श्रीहरि के हितकारी ॥४॥
तिनके च्यवन सकल सुख सागर, परम तत्त्व हरि मान्यो ।
निज प्रभाव सों कन्या ब्याही, श्रीभागवत बखान्यो ॥५॥
अल्पवान पुनि तिनके प्रगटे, करम शास्त्र तिन भाख्यो ।
औरव सुवन भये पुनि तिनके, जिन श्रीसामवेद उर राख्यो ॥६॥
तिनके जामदग्निनि पुनि प्रगटे, भजन तपोधन धारी ।
तिनके रंग प्रभाकर प्रगटे, तुव पितु जनहित कारी ॥७॥
वंश तिलक द्विजराज मुकुटमणि, महिमा कही न जाई ।
'चतुर शिरोमणि' तिहारे प्रगटे, निम्बभानु सुखदाई ॥८॥
अपने सुत की करि न्यौछावरि, देव जु इच्छा मेरी ।
तिहारे लाल को पदन विलोकों, सेऊँ पौरी तेरी ॥९॥१८४॥

* पद—राग बरवा *

दीजिये नेग जयन्ती जू मेरी ।
विमल वंशकी कीरति गाइ, कहा लगि कहूँ सुजस बहुतेरो ॥१॥
तुम सुत श्याम कमलदल लोचन, होय माय मो नैनन नेरो ।
चरण कमल शीतल सुखदाई, सेवत जो द्वारन ही तेरो ॥२॥
बहुत दिनन ते आस लगी उर, अब जनि तजहु दया करि हेरो॥
अरुणकुमार मार-मद-मोचन, ये स्वामी मैं घर को चेरो ॥३॥
और न कबहूँ जाँचूँ न काहू, एक अधार अनन्य व्रत केरो ।
जुग-जुग राज करो हम मस्तक, सुबस सब सोये निम्बपुर खेरो॥४॥
श्रीहरिव्यासी दासन के संग, हरष प्रिया प्रियदास के नेरो ॥५॥१८५॥

* पद–राग रेखता *

बधाई दीजिये ऋषि जू, तिहारे ढाढी आये हैं।
जयन्ती - लाल गुण गावें, नहीं कछु अन्त जावे हैं ॥१॥
भई आशा सुफल मन की, अरुण ऋषि कुवँर पाये हैं।
साख - साखान से तुम्हरे, विरद बन्दी कहावे हैं ॥२॥
सलोने श्याम घन सुन्दर, हमारे नैन तारे हैं।
झँगुलिया पीत तन सोहैं, गले मणिमाल धारे हैं ॥३॥
चरण पंकज सुखद शीतल, अंगुलि नख-चन्द भासे हैं।
गही है छाँह इनकी जो, तिन्हो हिये तिमिर नासे हैं ॥४॥
तनक करुणा जु करि हेरे, मिटे सब भव की बाधा है।
'हरस प्रियादास' यो भाषै, धन्य जिन नाम साधा है ॥५॥१८६॥

* पद–राग बरवा *

मैं तो अरुण ऋषि जु की ढाढनिया।
मात जयन्ती लाल लडाऊँ।
जन्म - जन्म पद चेरी कहाऊँ।
मम स्वामिनि भुवि पर जन्म लिया ॥१॥
नाम रंगदा रसदा विशदा।
नव बासादिक नाम भूरिदा।
श्रीमुग्धाजु की प्रिय अलियाँ ॥२॥
श्रीवृन्दावन केलि माधुरी।
नित्य विहार सो कंठ - हार री।
सेवा सहज सुरति नित ध्यावनियाँ ॥३॥

अब वसुधा रस - रेलि बहेगी।
जो बड़भागिन सोई लहेगी।
(जामें) हित हरिप्रिया भई खेवरिया ॥४॥

अब न तजूंगी संग रहूँगी।
अति दुस्तर भव सिन्धु तरूँगी।
मैं बिछुड़ि जगत बहु दुःख लिया ॥५॥

इनही के गुण नित प्रति गाऊँ।
चरण कमल तजि अनन्त न जाऊँ।
यह पाऊँ बधाई न और जिया ॥६॥

मो उर आशा पूरी कीजे।
जो माँगों सो दया करि दीजे।
निशि दिन नाचूँ तुम आँगनियाँ ॥७॥

यह कहि के उन्मत्त भई है।
गावत तान तरंग नई है।
छकी रूप - सुधा मृदु बोलनिया ॥८॥

ऊँचे कर करि भाव बतावे।
हंस वंश की कीर्ति सुनावे।
है नेह - नगर की वासिनिया ॥९॥

"हरष प्रिया प्रियदास" संगनी।
सेव्य परा वृषभानुनन्दिनी।
है ब्रजदूलह की टहलनियाँ ॥१०॥१८७॥

❋ पद–राग धनाश्री ❋

ढाढिन नाचत रंग भरी।
ऋषि - समूह में भाव बतावे, उघटत तान खरी ।।१।।
बहुत दिनन तप साधन कीन्हें, पाइ सो आज घरी।
मातु जयन्ती - लालन छवि लखि, भई यो आशा पूरी ।।२।।
दीजिये नेग चुकाय माय मेरो, पट भूषन अंग भरी।
मोतिन माँग नैन दियो काजर, तिलक भाल देउ भूरी ।।३।।
श्रवन ललित ताटंक अलक, छुटि आये कपोल अरी।
वैना वेसर शुभ्र भौंह चोटी, मुक्तन गुच्छ करी ।।४।।
चिबुक चारु गल मोती माल, सिर सारो सुभग हरी।
श्याम कंचुकी लई माँग के, सोहे छापेदार सगरी ।।५।।
बाँह बरागजरा पहुँची कर, मूँदरी रतन जरी।
कटि किंकिनी घेर को लहँगा, ढिंग लावण्य रूप भरी ।।६।।
नूपुर नेवर पायल बिछुआ, पहरि असीस करी।
औरहु अमित दान सनमानी, भाग सुहाग भरी ।।७।।
जुग-जुग जीवो रसिक चूड़ामणि, बढ़ो भक्ति-बेली सुथरो।
"हरष प्रिया" ढाढिन की चेरी, आशा बाट खरी ।।८।।१८८।।

❋ पद–राग ब्रजवासी ख्याल ❋

अरुन ऋषी महाराज तुम्हारे, ढाढी ढाढिन आये जु।
मातु जयन्ती लालन जायो, सुभग बधाई लाये जु ।।१।।
तुम जस गावें अन्त न जावें, परम्परा चलि आये जु।
रंगप्रभा के आप प्रगट भये, जब हम सोहिले गाये जु ।।२।।

अपनी कला प्रकाश करेंगे, सब ऋषि - सभा रिझावे जु ।
नाचे गावें हुरक बजावे, मन भाये वर पावे जु ॥३॥
सबरी कला प्रकाश करे हम, ज्ञान गुनो के जाये जु ।
हरियल दूब मुनिन कर दीनी, चरणन सीस नवाये जु ॥४॥
सावधान ह्वै निरत करन लगे, तोरा तिश लाये जु ।
नैन औ हाथन भाव बतावे, पग नूपुर झनकाये जु ॥५॥
वंक चितौन फेर कर नाचे, नाना भाव बतावे जु ।
मुकर भौंह टेढ़े अंगन करि, ऋषि ठोडिन कर ध्यावे जु ॥६॥
नकल बनावे ढिंग जाय बैठे, हँस - हँसाय सुख पावे जु ।
ज्यों के त्यों ही रूप बनावे, वाके विरद कहावें जु ॥७॥
हंसवंश - कुल - कीरति गावें, पूरव रीति जनावें जु ।
ऊँचौ हस्त उठाय हरि कहें, ये जग निस्तारन आवें जु ॥८॥
श्रीभृगुवंश उदार सुजस जग, हर हिये चरण सुहाये जु ।
दोउकुल सूरज रसिकशिरोमणि, श्रीनिम्बारक मन भाये जु॥९॥
इन्द्र नीलमणि श्याम कलेवर, पीत झँगुलिया सोहें जु ।
कुञ्चित केश भाल गोरोचन, भौंह धनुष मन मोहे जु ॥१०॥
सुभग कपोल नैन अनियारे, नासा शुकतुण्ड लजावे जु ।
चिबुक जु गाढ़ कंठ त्रयरेखा, मणिमाल पदिक बिच भावे जु॥११॥
बाहु विशाल जंघतर आवें, कर पहुँचि ललित मन मोहे जु ।
चलदल हृदय उदर त्रिवली, नाभि अमृतसर सोहें जु ॥१२॥
कटि केहरि नितम्ब पुष्ट अति, पिण्डुरी गुल्फ वर भ्राजें जु ।
चरण चारु अरविन्द हरन दुख, अँगुरी नखचन्द्र विराजे जु ॥१३॥

चातक भक्त रटत है प्यासे, यह श्यामघटा झुकि आई जु ।
छाँह बसत त्रैताप दूरि ह्वै जगत - घूप नहिं व्यापै जु ॥१४॥
इनको नाम जपत डरपै यम, विमुखनको हिय काँपै जु ।
महिमा और कहा बरनै जस, तीन लोक में छावै जु ॥१५॥
दुरवासा अम्बरीष शम्भु ब्रह्मादिक, मन में भावै जु ।
चक्र सुदरसन सुमिरत हिय, कामादि दंभ सब भाजै जु ॥१६॥
भुवन चतुर्दश के उजियारे, शिशु रूप गोद में राजैं जु ।
श्रीगिरिराज बड़े आयू जुग - जुग हम शिशु रहावैं जु ॥१७॥
हंस सनक नारद निम्बारक, द्वादश अष्टदश गावैं जु ।
स्वर्ग नरक अपवर्ग तुल्य गिनै, नाम रूप निधि पावै जु ॥१८॥
यों गुन करत बखान सुरति कर, हियो उमग भरि आयो जु ।
मुग्ध रंग गुन हितु हरिप्रिया, बिछुड़े जग दुख पायो जु ॥१९॥
अब डर लगत परै जो अन्तर, तानहि ठीक ठिकानो जु ।
'हरषप्रिया' प्रियेदास निहोरत, लजत नाथ विरद बनो जु ॥२०॥१८९॥

* दोहा *

शिञ्जत नूपुर पद्म पद, हंसी चाल रसाल ।
गंजन गर्व सु खंज - दृग, कंध सुपीन विशाल ॥१॥
कंकण युत कर कमल लै, ढोर चमर युग सेवि ।
भजहु सु मोहन महल में, गुरुवर श्रीरङ्गदेवि ॥२॥

* सोरठा *

अष्टरूप श्रीनिम्ब, रङ्गदेवि मंजुल चवँर ।
ढोरत युगल सुबिम्ब, जयति कल्प के तल्प अनु ॥३॥

* श्लोक *

श्रीचक्रस्य सुदर्शनस्य च तथा प्रद्युम्न - पुत्रस्य च,
रूपं धूसरवर्णगोश्च सुभगं स्तोकस्य यष्टेस्तथा।
राधायाः शुभकान्ति वेणुमपि च श्रीरङ्गदेवीतनुं,
रूपाण्यष्ट दधान नित्यममलं निम्बार्कदेवं भजे ॥४॥

* छप्पय *

प्रथम महल युग रूप, अङ्ग कान्ति श्रीराधा।
द्वितीय सखी रङ्गदेवि, युगल नित सेवा साधा।
चार रूप व्रज यष्टि, सखा गो वेणु रूपा।
एक पुरी अनिरुद्ध चक्र वैकुण्ठ अनूप।
लीला अष्ट सु निम्बतरु यति दिखायेउ रवि विभु।
जय खल खण्डन मन्दजन, अष्टरूप निम्बार्क प्रभु ॥

* बड़ा मंगल *

जय निम्बार्क आचार्य सन्त - नभ - दिनमणी।
खण्ड कुहर पाखण्ड जगमगत सब दुनी।
अष्ट रूप अनादि सन्त निज मुख भने।
रूपद्वय मोहन महल रस में सने।
मोहन महल रस में सने इक कान्ति राधा रसिक हित।
द्वितीय श्रीरङ्गदेवी सहचरि बुलावत युग सेव चित ॥
जासु आश्रय रसिक लहि, महल सेवा रस सनी ॥१॥

जय निम्बार्क आचार्य चार रस देत जन।
चार रूप व्रज द्वार बुलावत हस्त सन।

दास्य भक्ति रस हेत यष्टि हरि हाथ में।
वत्सल भक्ति प्रदात गाय हरि साथ में।
गाय हरि के साथ में जो, सख्य भक्ति रस भरे।
तिनहिं तोक जु सखा हरि, संग सख्य भक्ति उर धरे॥
मधुर भक्ति देत हरि, हस्त वंशी मधुर धुनि ॥२॥

जय निम्बार्क आचार्य द्वारका द्वार थित।
धृत अनिरुद्ध स्वरूप बुलावत भक्त नित।
ऐश्वर्य उपासक भक्तहित मुनि रूप यह।
मोर स्वरूप आचार्य प्रभु वाणी जु कह।
प्रभु वाणी कही जो सो भागवत में शुक भणी।
आचार्य तनु धरि जग उधारत भक्त पै किरपा घनी॥
उपासक जे द्वारका के तिन डुबावत रस सरित ॥३॥

जय निम्बार्क आचार्य द्वार वैकुण्ठ के।
चक्रराज धृत रूप देत खल दण्ड के।
जे वैकुण्ठ उपास सु साधक वृन्द जन।
दास्य शान्त आसक्त ज्ञान वैराग्य मन।
ज्ञान अरु वैराग्य मन परम साधन मगन उर।
धृत सुदर्शन रूप तिनहित सर्वदा निम्बार्क गुरु॥
'गंग सहचरि' महल बुहरत और रस सुख छंडिकै ॥४॥१६०॥

* श्लोक *

सर्वसद्गुणसम्पन्नां वन्दे कार्तिकपूर्णिमाम्।
यस्यां निम्बार्करूपेण प्रादुरासीत् श्रीसखी ॥१॥

✽ दोहा ✽

जिहि दिन निम्बारक अली, प्रगटी नीम सुग्राम।
कार्ति शुक्ल सो पूर्णिमा, वन्दौं तिथी ललाम ॥२॥

✽ बड़ा मंगल ✽

जय जय नियमानन्द नीम वन अवतरे।
पूनम कार्तिक मास तिथि पावन करे।
यति रवि निम्ब दिखाय भये निम्बार्क सुधि।
द्वितीय प्रचण्ड जु शाक्त नाम विद्यानिधि।
नाम विद्यानिधि द्विज सो किय पराजित मुनिवरा।
शिष्य सोई श्रीवास गुरुवर भयउ रसिकन सुखकरा॥
रचि "लघुस्तवराज" गुरु स्तुति करे॥१॥

जय निम्बार्क अचार्य भूमंडला विजयकृत।
कुरु खेत तरु तरें जबै अर्चना रत।
लख चार्वाक समूह उदुम्बर दृग तबै।
प्रगटेउ शिष्य स्वरूप जिते नास्तिक सबै।
जिते नास्तिक सबै मुनिवर उदुम्बर आचार्य जग।
गुरु पारस परस प्रगटेउ मनहु पारस अति सुभग॥
रचेउ 'निम्ब-विक्रान्ति' गुरु कर शुभ चरित॥२॥

जय निम्बार्क आचार्य निमिष-वन-पावने।
शाक्त विद्याधर जु जीतेउ शिष्य निरमेउ आपुने।
नाम गौरमुख कीन सहस रच नाम है।
तारी डूबत नाम सरित मुनि ग्राम है।

सरित में मुनि ग्राम तारे कूर्म मुनि पावन करे।
नास्तिकोत्सव जाय मुनिवर पदांगुष्ठहि जल भरे॥
दीनेउ दुष्टन दण्ड कीर्ति कल छावने॥३॥

जय निम्बार्क आचार्य कृपा कुम्भज लही।
लखी पुन्या रामगंगा शाप मुनि रक्षा वही।
पदांगुष्ठ सो परस कीन मुनि पावनी।
कुम्भज स्तुति कीन सु परम सुहावनी।

कीन स्तुति अति सुहावन तम - पाखण्ड दिवाकरा।
अष्ट - लीला निम्बकृत यह गात वैष्णव रस भरा।
पूर्व वैष्णवाचार्य "गंग अली" पद वही॥४॥१८१॥

* बधाई *

निम्बपुर बाजत आजु बधाई।
मातु जयन्ती के सुत प्रगटे, नियमानन्द सुहाई॥१॥
सुनेउ अरुण मुनि बेटा जन्मेउ, कुण्ड सुदर्शन न्हाई।
दीनेउ दान अमित गोवृन्दा, द्विजजन गात बधाई॥२॥
सुन्दर आंगण कमलाकारी, गोमय दीन लिपाई।
द्वार - द्वार में पतोअन, वन्दन माल बँधाई॥३॥
तियन स्वकर मणि पन्न मोती, सुन्दर चौक पुराई।
बिछे बिछौना मखमल रेशम, सुछनि मसन्द सुहाई॥४॥
तहँ व्रजवासी मुनिवर बैठे, निगम ध्वनि मुख छाई।
करत स्वकर संस्कार सुहावन, द्विजवर मुदित महाई॥५॥

वीणा ताल मृदंग नगारे, बाजत झाँझ सुहाई ।
मागध सूत और बन्दीजन, गावत गुण सरसाई ॥६॥
नृत्यत चन्द्रमुखी मुरि-मुरि कै, कोमल हस्त उठाई ।
गावत गीत बधाई मीठी, आहा वचन सुनाई ॥७॥
कहैं व्रजवासी हम व्रजजन की, प्रभु आशा पुजवाई ।
आजु हमारे व्रज में फिर से, प्रगटे युग सुखदाई ॥८॥
दूध दधि मटुका भर-भर कै, रये सीस ढरकाई ।
मलमल माखन मुख दधिकादों, रचत विप्र समुदाई ॥९॥
इन्द्रादिक जय-जय मुख भाषत, कुसुम वर्ष झरलाई ।
पंक्ति विमान ठड़ी नभ मंडल, जय-जय वचन सुनाई ॥१०॥
हंस नारायण हँसत सुगोपुर, मन्द-मन्द मुसकाई ।
सनकादिक हर्षित उर भारी, बाडेउ वंश सुहाई ॥११॥
मुनि नारद शिष मेरो कहकै, रहे नभ बीन बजाई ।
'गंगअली' तहँ माखन रपटत, गुरु कर लीन उठाई॥१२॥१६२॥

❋ पद—छोटा मंगल ❋

जो जग निम्बारक नहीं होते ।
महल युगल सेवाहित अलिवन, कुसुममाल को पोते ॥१॥
वनपति-चेत्र परा-हल कर्षि, केलि-बीज को बोते ।
राधा-राधा नाम टेर मुख, कौन रसिक सुख सोते ॥२॥
जेते रस श्रृङ्गार सुगायक, ढिखिल नरक में रोते ।
युगल लाल रति केलि-सिन्धुमें, को खातो रस गोते॥३॥
को भागवत ग्रन्थ आचरतो, गायो राधा तोते ।

कर्म ज्ञान अरु योग अंग के, बोझ सबै सिर ढोते ।
निम्ब-चरण-नख-चन्द्र-छटा बिन, कौन गंग अघ धोते॥४॥१८३॥

* दोहा—ढाढिन वचन *

ढाढन कहे कर जोर के, सुन ढाढी पति प्रान ।
अरुण ऋषी घर प्रगट भये, निम्बारक भगवान ॥१॥
चक्र सुदरसन ने लियो, आय अवनि अवतार ।
निम्बग्राम गिरिराज में, घर - घर मंगलचार ॥२॥
मातु जयन्ती मन मगन, निज सुत को ले गोद ।
पय प्यावत पुलकत परम, निरखत बाल विनोद ॥३॥
हिलमिल कर हम तुम चलें, देन बधाई आज ।
निज तन भूषन बसन सज, नाचें मध्य समाज ॥४॥
निरखें मुख मनमोहनो, श्रीमन्नियमानन्द ।
'सरस माधुरी' लख लला, प्रगटे परमानन्द ॥५॥१८४॥

* पद *

मोकों निम्बग्राम ले चलो पिया,
श्रीनिम्बारक स्वामी जन्म लिया ।
बज रही नौबत और नफीरी,
सुन - सुन धुन हुलसावे हिया ॥१॥
अरुण ऋषी सुत मुख देखन को,
ललचावत है मेरा जिया ।
रसिकाचारज प्रगट भये हैं,
विधिना मंगल दिवस किया ॥२॥

करुणा कर जग के जीवन पर,
महाप्रभू आ दरस दिया।
"सरस माधुरी" संग चलूंगी,
मन भावन मैं तेरी तिया ॥३॥१९५॥

※ पद ※

नाचे - नाचेरे ऋषिराज दरबार, ढाढिन नाचे रंगभरी।
मातु जयन्ती लालन जायो, सुनके धाई मैं तज घरबार ॥१॥
निम्बग्राम में नौबत बाजे, झमझम झाँझन की झनकार।
फहरत नवल निसान ध्वजा बहु, बँधी मनोहर वन्दनवार ॥२॥
झुण्ड-झुण्ड आई व्रज-युवती, गावत हिलमिल मंगलचार।
नखशिष भूषन वसन साज तन, पग पायल बिछियनकी बहार॥३॥
झंगुली टोपी रतन विभूषन, चली चतुर भर कंचन थार।
अरुण ऋषी घर आनन्द छायो, मन भायो कीनो करतार॥४॥
छये विमान गगन सुर प्रमुदित, पुष्प वृष्टि करें जै जैकार।
'सरस माधुरी' व्रज मण्डल में, महामहोत्सव भयो अपार ॥५॥१९६॥

※ पद ※

मैं तो थाँकी घर की ढाढिन आई।
सुनो जयन्ती माता मोकों, दीजे हरष बधाई ॥१॥
हरी दूब जमुना जल सींची, तुम्हरे हित मैं लाई।
मंगलीक यहि जान जतन कर, लीजे शीष चढ़ाई ॥२॥
लालन मुख लख मगन भई मैं, फूली अंग न माई।
श्याम वरण मन हरन लाड़लो, करी न जाय बड़ाई ॥३॥

नखशिख भूषन वसन जरी के, देवो मोहे पहिराई ।
ढाढी को सिरपेंच किलंगी, जामा और कबाई ॥४॥
गज घोड़ा रथ और पालकी, देहु हमें मँगवाई ।
तुम्हें जाँच फिर और न जाचैं, ऐसो करो उपाई ॥५॥
जन्म करम गुन गाय लालके, करें सदा सेवकाई ।
'सरस माधुरी' सुत तेरे की, छवि रहे नैन समाई ॥६॥१६७॥

* पद *

मातु जयन्ती जस जग छायो, जायो लालन प्यारो ।
अरुण ऋषीश्वर पुन्य प्रगट भयो, भाग्य उदय भयो भारो ॥१॥
चक्र सुदरसन लक्ष्मीपति ने, जो निज कर में धारो ।
सोइ आचारज निम्बग्राम में, किरपा कर अवतारो ॥२॥
द्विज तैलंग दई बड़ उपमा, प्रगटो जगत उजारो ।
हंस सम्प्रदा को संस्थापक, सन्तन प्राण अधारो ॥३॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य प्रेमनिधि, पतित उधारन हारो ।
मत अविरोध प्रचार करेंगे, यह निश्चय उर धारो ॥४॥
रसिक सभा मण्डन अघ खण्डन, मो नैनन को तारो ।
'सरसमाधुरी' निरख छकी छवि, तन मन धन सब वारो ॥५॥१६८॥

* पद—आशीष *

जयन्ती, जीवो तेरो लाल ।
श्याम बरन मनहरन लाड़लो, सुन्दर नैन विशाल ॥१॥
बढ़ो वयस दिनही दिन दूनी, न्हात खसो जिन बाल ।
सन्तन सुखदाई सुत तुमरो, रसिकन को प्रतिपाल ॥२॥

हंस - वंश - जस विस्तारन को, धारो रूप रसाल।
प्रेम - भक्ति - दाता जनत्राता, दीनदयाल कृपाल ॥३॥
शरणागत को सहज मिलावें, राधा - मदन गुपाल।
'सरस माधुरी' नखशिष शोभा, निरखत भई निहाल ॥४॥१९९॥

* दोहा—ढाढी वचन *

प्रथम सुमर श्रीशुकमुनी, धार हृदय निज ध्यान।
श्यामचरन के दास को, वन्दों करि सनमान ॥१॥
श्रीमद् गुरु गोविन्द को, प्रणवों सहित विधान।
निम्बारक भगवान् की, करों बधाई गान ॥२॥
अरुण ऋषीश्वर वंश को, ढाढी शुभ गुण खान।
पुत्र जन्म सुनकर चल्यो, महा मोद मन ठान ॥३॥
पहुँचो जा ऋषिराज पुर, निम्बग्राम शुचि नाम।
सभा मध्य सबहीन को, पुनि पुनि करी प्रणाम ॥४॥
करत प्रशंसा विविध विधि, जै जै बोले बैन।
सुफल फलो कुल ऋषिन को, करो सदा सुख चैन ॥५॥
सुजस सुनावत सभा में, गावत हिय हुलसाय।
नाचत गति लैं लैं नई, नाना भाव बताय ॥६॥
बोलत मुख वंशावली, परम्परा जा वंश।
'सरस माधुरी' हंसकुल - कीरति करत प्रशंस ॥७॥२००॥

* पद-प्रार्थना *

सुनो अरुण ऋषिराज तुम्हारे, निम्बारक प्रगटाये हैं।
लेन बधाई देन आशिषा, ढाढी - ढाढन आये हैं ॥१॥

हरी दूब रस - भरी हमारी, लेहु हेत कर लाये हैं।
पुत्र जन्म सुनते ही हम दोउ, निज घर ते उठ धाये हैं ॥२॥
सभा निरख के सन्त-मुनिन की, हिय माहीं हरसाये हैं।
श्रीमद् हंस-ंश सुन्दर जस, कहने को हुलसाये हैं ॥३॥
चक्र सुदरसन आचारज है, भक्तन दरस दिखाये हैं।
'सरस माधुरी' श्याम सलोने, मेरे मन में भाये हैं ॥४॥२०१॥

* पद *

जानो मोकों निज ढाढी रिषिराज।
पुत्र-जन्म सुन अति सुख पायो, आयो तुम घर आज ॥१॥
हंसवंश जग भयो प्रशंसित, सुफल भये मन काज।
तेज प्रताप जगत में जगमग, हो तुम धर्म-जहाज ॥२॥
कुल - कीरति गाऊँ हुलसाऊँ, नाचूँ मध्य समाज।
वंशावली सुनाऊँ सारी, सभा माहि सिरताज ॥३॥
लेऊँ बधाई मन की भाई, गज रथ सुन्दर बाज।
'सरस माधुरी' करो अजाचक, सब दुख जावें भाज ॥४॥२०२॥

* पद *

सुनो अरुण रिषि तुम्हरे सुतको, जो जन ध्यान लगावेंगे।
जग में सुजस सो गुनो छावे, बड़भागी कहलावेंगे ॥१॥
शरण गहें जो चरणकमल की, सो सब विधि सुख पावेंगे।
चार पदारथ दें निज जन को, दुख दारिद्र मिटावेंगे ॥२॥
मन्त्र जपें कर भाव मानसी, भक्ति हिये सरसावेंगे।
तिनको परम कृपा करुणा कर, श्यामा श्याम मिलावेंगे ॥३॥

वास लहैं वृन्दावन कुञ्जन, सेवा कर हुलसावेंगे।
'सरस माधुरी' रहैं महल में, छवि के माहि छकावेंगे ॥४॥२०३॥

* पद *

जयन्ती लाल की मैं करूँ बधाई गान।
कार्तिक सुदी सुन्दर पूनोतिथि, जा दिन प्रगटे आन।
मेष लग्न नत्त्र सुकृत का, अति उत्तम लो जान ॥१॥
सन्ध्या समय प्रगट भये प्यारे, श्याम वरण रसखान।
आई सिमट सकल ऋषिपत्नी, महामोद मन ठान ॥२॥
भूषन-वसन दिये बहु भांतिन, कियो सकल सनमान।
तिल चावरी बतासे मेवा, बाँटी बीरी पान ॥३॥
अरुण ऋषि आनन्द मगन मन, बहुविधि दीने दान।
अनगिन गऊ दई विप्रन को, वत्स सहित सुख मान ॥४॥
रथ घोड़े गज सज अम्बारी, नखशिष सोंज समान।
हीरा मोती रतन थाल भर, दीने कृपा निधान ॥५॥
सुरपुर त्याग देवगन आये, छाये गगन विमान।
फूल वृष्टि कर 'सरस माधुरी', जैं जै करत बखान ॥६॥२०४॥

* पद—राग आसावरी *

सुनो जु अरुण रिषि सांचे हैं हमारे बैन,
पुत्र सुख दैन सुजस तुम्हरो बढ़ावेंगे ॥१॥
नारद जू आवें अभय हस्त सिर धरावें,
मन्त्रराजको सुनावें शिष्य आपनो बनावेंगे ॥२॥
संन्यासी वेश धार ब्रह्म आवें आप द्वार,
तिनको तृपताय अर्क निम्बये दिखावेंगे ॥३॥

भट्ट भासकार गौरमुख और औदुम्बर,
आश्रित हो चरण जीव जगके चितावेंगे ॥४॥
नर्वदा किनारे सीस कच्छप के चरण धारें,
पारषद बनायके वैकुण्ठ को पठावेंगे ॥५॥
तोक सखा रूपधार नित्य करें वनविहार,
रहैं कदम संग प्रेम रंग सरसावेंगे ॥६॥
नैमिषार निम्बग्राम मथुरा द्वारवती धाम,
नानारूप धार भक्त-रक्षा करन धावेंगे ॥७॥
रंगदेवी सखी नाम नित्य सेवें श्यामा-श्याम,
धन्य 'सरसमाधुरी' जो इनके गुण गावेंगे॥८॥२०५॥

* पद *

ढाढी हंस बंश को आयो।
पुत्र जयन्ती जन्म सुनत मैं, गोवरधन ते धायो ॥१॥
ढाढन सहित सभा-मण्डप में, बहुविधि नाचो गायो।
निम्बारक लालन दरसन कर, रोम-रोम रस छायो ॥२॥
सुन बंशावलि अरुण रिषीजू, अपने निकट बुलायो।
भूषन-वसन जरी-जेवर बहु, नखशिष लों पहिरायो ॥३॥
गजरथ घोरे और पालकी, देकर के तृपतायो।
दिये दान सनमान घने कर, लेकर मैं जु अघायो ॥४॥
त्याग जाचना भयो अजाचक, हिय माहीं हुलसायो।
'सरसमाधुरी' मन इच्छा फल, मैंने सब भर पायो ॥५॥२०६॥

* पद—आशिषा, राग विहाग *

अरुण ऋषि सुखी रहो सुत तेरो ।
जुग-जुग जियो जयन्ती-लालन, यही वचन है मेरो ॥१॥
रसिक जननको प्रान-जीवनधन, त्रिभुवन करन उजेरो ।
शरण गहे जो आन इनहिकी, लहै गोलोक बसेरो ॥२॥
रहो सदा अनुकूल विधाता, जग जस बढ़ो घनेरो ।
'सरस माधुरी' चरन कमल को, भयो भाव कर चेरो ॥३॥२०७॥

* (५) श्री श्रीनिवासाचार्यजी की मंगल बधाई *

[तिथि—माघ शुक्ला पञ्चमी ५]

* श्लोक *

नव्यां नूतनचीरधारणपरां नीलप्रभाद्योतिताम्,
नीलेन्दीवरदीर्घसुन्दरदृशां नीलं निरीचन्नम् ।
वृन्दारण्यनिकुञ्जवासमुदितं राजीवनेत्रं हरिम्,
ध्यायन्तीं धरणिस्थिरेण मनसा श्रीनव्यवासां भजे॥१॥

[श्रीमहावाणी]

* दोहा *

दिवस वसन्त सु पञ्चमी, शुभ नचत्र सुखसार ।
श्रीमन्निम्बदिनेशके, श्रीनिवास अवतार ॥१॥
माघ शुक्ल श्रीपञ्चमी, सब संयोग सुधार ।
श्रीनिवास प्रभु अवतरे, निम्बारक आगार ॥२॥

※ पद—बड़ा मंगल ※

जै जै श्री श्रीनिवास आचारज दिनमणी ।
निजपद कंज प्रसन्न आस पूरी घणी ॥
वेद - सरोज नितान्त वाक्य भये डहडहे ।
नास्तिक बौध जैन वैन तजि थकि रहे ॥

थकि रहे तजि वैन नास्तिक बौध-जिन-पाखण्ड गये ।
मायावाद-भुजंग-खगपति विपति पति दूर दर भये ॥
वेद को शिरभाग निज ध्वनि भाष्य रचि कौस्तुभमणी ।
जै जै श्री श्रीनिवास आचारज दिनमणी ॥१॥

जै जै श्री श्रीनिवास आचारज राजहीं ।
हरिकर - कंज निवास हंस - कुल साजहीं ॥
मुखरामृत करि पान मत्त निशिदिन रहे ।
मत अविरोध प्रकार सार निज मुख कहे ॥

कहे निज मुखसार मत अविरोध शुभ परगट कियो ।
सनकादि नारद व्यास शुकमुनि सूत शौनक को हियो॥
हृदय धरि सिद्धान्त इनको स्वमत रचि थाप्यो सही ।
जै जै श्री श्रीनिवास आचारज राजहीं ॥२॥

जै जै श्री श्रीनिवास आचारज सरस हैं ।
श्रीमन्नियमानन्द - पादरज जिन गहैं ॥
श्रीमद्राधाकुण्ड वास नित प्रति यही ।
नैष्ठिक व्रत उर धार पार परस्यो सही ॥

सही परस्यो पार गुण को वेद भेद न पावहीं।
शेष शिव विधि इन्द्र मुनिगण नेतिनेति कर गावहीं॥
जीव-माया-ईश-विषयक तिमिर नाशक दरस हैं।
जैं जै श्री श्रीनिवास आचारज सरस हैं॥३॥

जै जै श्री श्रीनिवास आचारज वपु धरैं।
भिन्नाभिन्न-प्रकार-सार तत उर धरैं॥
भानु-सुता-पति-रूप-नाम गुण उर बसैं।
सरस हृदय आनन्द चन्द्र अमृत लसैं॥

लसैं अमृत चन्द्र में जस रूप राधाकान्त को।
हिये राजत मान भानत ज्ञान सब सिद्धान्त को॥
चरण पंकज शरण आये दास कूँ जिन परिहरैं।
जै जै श्री श्रीनिवास आचारज वपु धरैं॥४॥२०८॥

* पद-द्वितीय मंगल *

जै जैं श्री श्रीनिवासाचार्य प्रगट भये।
सब जुग जीव उधारन प्रभु निज व्रत लिये॥
हरि-कर-कमल निवास जिनको नित रहे।
पाञ्चजन्य-अवतार यह इनको निगम कहे॥

कहें वेद-पुराण सबही शुद्ध ब्रह्महि जानियो।
ज्ञान भक्ति विस्तार कारण धरणितल पावन कियो॥
ध्रुव-कपोल के परस होत ही आत्म तत्त्व प्रापत भये।
जै जै श्री श्रीनिवासाचार्य प्रगट भये॥१॥

जै जै श्रीनिवासाचार्य भाष्यकार शिरोमणि ।
तिमिर अज्ञान हरणको उदय मानो दिनमणि ॥
श्रीनिम्बार्क पद - कमल जब ते छुए ।
भिन्नाभिन्न मत तब तिनकूँ दिये ॥
दिये मत तिनकूँ जो तबही, अष्ट वर्ष की वय भई ।
नैष्ठिक व्रत तब धारिके जब, भुवि पर विचरे सही ॥
दिशा दशहू जीति लीनी, शरण आये सब दुनी ।
जै जै श्रीनिवासाचार्य भाष्यकार - शिरोमणि ॥२॥
जै जै श्रीनिवासाचार्य हंस - वंश - अवतंस हैं ।
निजजन हियको ध्वान्त करत नित ध्वंस है ॥
जो कोउ आवै शरण ताप सबकी हरें ।
निजकर धरिके शीष श्रीहरि सन्मुख करें ॥
करें हरि सन्मुख जो जन ज्ञान भक्ति सिखावहीं ।
युगल चरणन रति निरन्तर गुण अनन्त जु गावहीं ॥
उपनिषद हरि - मुख वचन अरु ब्रह्मसूत्र पै भाष्य है ।
जै जै श्रीनिवासाचार्य हंस - वंश - अवतंस अवतंस हैं ॥३॥
जै जै श्रीनिवासाचार्य राधाकुण्ड राजहीं ।
श्यामा - श्याम पद कंज सों प्रीति बढ़ावहीं ॥
श्रीवृन्दावनधाम अनूपम महिमा वही ।
नव निकुञ्ज प्यारी संग रहे धरे वपु सखी ॥
सखी - वपु धरि रहे नित प्रति 'नव्यवामा' नाम है ।
वसन - सेवा में सुतत्पर नित्य विहार अहार है ॥

'प्रियासखी' कर - वंन लै लाड़िली सुख साजहीं ।
जै जै श्रीनिवासाचार्य राधाकुण्ड राजहीं ॥४॥२०९॥

* छोटा मंगल *

आज बधाई को दिन नीको ।
श्री श्रीनिवास आचारज प्रगटे,
रसिक शिरोमणि जीवन जी को ॥१॥
पाञ्चजन्य अवतार धर्म हित,
हरिकर कमल निवास है जिनको ।
'प्रियासखी' भए हंसवंश में,
ध्वान्त हरै सब त्रिभुवन हिय को ॥२॥२१०॥

* पद *

आज बधाई परम सुहाई, प्रगट भये श्रीनिवास ।
माघ शुक्ला पञ्चमी मंगल, शुभ नक्षत्र ग्रह रास ॥१॥
दीन दयाल कृपाल कल्पतरु, दायक हिये हुलास ।
मगन होय मंगल मिलि गावो, पावो प्रेम प्रकाश ॥२॥
श्रीनिम्बार्क-लाल जन्म दिन, सकल अघन को नाश ।
'रूपरसिक' जन-चातक इनके दरशन मिट गई प्यास ॥३॥२११॥

* पद-राग बिलावल *

श्रीनिवास आचारज प्रगटे, महल बधाई बजत भली री ।
सखी सहेली सहचरि प्रमुदित, अगवानी भई रंग रली री ॥१॥
कदली खम्भ पताका तोरन, पञ्चपल्लवयुत कनश धरीरी ।
पीत वितान झालरें मोती, द्वारन वन्दनमाल बलेरी ॥२॥

शाभित चौक रचे नाना रंग, दिव्य औषधी अक्षत रोरी ।
दधि नवनीत फूलफल दुर्वा, अतर अरगजा केसर घोरी ॥३॥
रंग अोकन सजी गुलालें, चोवा कुमकुम गेंदक हेरी ।
फूली माँ तिये धरत सुदेवी, कहत उताल देर क्यों हेरी ॥४॥
कनक सिंहासन बैठे दम्पति, पहरि वसन्ती वसन नये री ।
मदन महोत्सव अम्ब-मौर शिर, मृगनैनी के काज भये री ॥५॥
मधु मेवा पकवान मिठाई, भक्ष्य भोज्य अरु चोष्य धरे री ।
आरोगत दोउ दुलहिन दूल्हे, देत लेत मनुहार करें री ॥६॥
जमुनोदक अँचवावति ललिता, सुरुचि विशाखा दीनी वीरी ।
चम्पकलता सुगन्ध लगायो, चित्रा वायु दुरावत नीरी ॥७॥
तुङ्गविद्या इन्दुलेखा चँवर, विश्वाभा किये छत्र नये री ।
कलकण्ठ्यादि लिये बहुसामा, विपिन विनोद न जात कह्योरी ॥८॥
मुग्धासु तिलक रचावत रुचिसों, श्रीफल भेट देहिय हुलसी री ।
कियो आरती साज बजन लगे, रग गुलालन धूम मचीरी ॥९॥
छूट रंग कुमकुमा बरसै, कुसुम गुच्छ चोवा छिरकें री ।
नित्यकिशोर-किशोरी हरषें, ब्याह गमन के खेल सचेरी ॥१०॥
वारि फेरि जल करि न्यौछावरि, मंजरी लूटि करे इक ठोरी ।
नव-निकुञ्ज में सैन कराये, दरसन की लागे अवसेरी ॥११॥
यह सुख दृगन दिखाय जगतगुरु, जुग-जुगमें अवतार धरेंरी ।
'हर्षप्रिया' प्रिय देर अपनपो, सेये चरण भव-बन्दि कटे री ॥१२॥२१२॥

* पद *

आज बधायो श्रीनिम्ब दिनेश के,
आचारज शिरताज भूप घर ।

दिवस वसन्त पंचमी उत्तम,
जा दिन जन्म निवास रूप धर ॥१॥
सर्व अमंगल हरन करन सुख,
सुषमा - सागर अधिक अधिकतर।
इनके चरण - धूरिके ग्राहक,
पावैं सुखद धाम अपरंपर ॥२॥
नृत्य करो वाजन्त्र बजाओ,
मंगल गावो परम मनोहर।
'रूपरसिक' जन सब सुख पावो,
हिय हुलसावो होत रंग भर ॥३॥२१३॥

* पद–राग चर्चरी *

जै जै जै श्रीनिवास वपु आद्याचारी।
राजत हैं नित्यधाम, नववासा सखी नाम,
सहचरी श्रीरंगभरी दम्पति मन प्यारी ॥१॥
आय मिलि संग-संग, प्रेम भरे अंग-अंग,
भक्ति अनुराग रङ्ग किए परचारी ॥२॥
गायो मिलि नित-विहार, रसिकन हित रस है सार,
रहसि केलि प्रगट करी निज जन सुखकारी ॥३॥
प्रगटे पंचमि वसन्त, मंगल गावत अनन्त,
'श्रीरूपरसिक' चरनकमल रज हिये धारी ॥४॥२१४॥

* पद *

हो बधाई बाजत आज भली।
श्रीनिवास आचारज प्रगटे हैं रहि रङ्ग रली ॥१॥

तेज प्रचण्ड दिनेश उदै मानो ताकी कुमति गली ।
मत-पाखण्ड-कुमुदनी सकुचे, गहे पद तिमिर टली ॥२॥
सन्त - हृदय - सर भरे प्रेमजल, विकसी कमल कली ।
नित्य किशोर तहाँ दोऊ विहरें, कीरति अचल चली ॥३॥
प्रथम खेल अनुराग फाग मच्यो, दशधा मुख न मली ।
रस अबीर चले भाव कुमकुमा, करुण रंग उमली ॥४॥
नाना ग्रन्थ संग पिचकारी ओट पीताञ्चल चोट घली ।
तर कीन्हे गुरु रूप माधुरी, सुकृति बेलि फली ॥५॥
शिथिल अंग रहे भूलि अपनपो, श्रीवनराज थली ।
नियमानन्द भक्ति दियो फगुवा, किये रङ्ग महली ॥६॥
जयति नमो जय जयति महाप्रभु, सब जग विपति दली ।
उद्धव देव हर्षि हेरो स्वामी, नातर काल छली ॥७॥२१५॥

✻ पद—राग बसन्त ✻

आज बधाई बजत सुहाई, चलो सखी मिलि देखन जायँ ।
श्रीनिम्बारक जू के प्रगटे, श्रीनिवास कछु कह्यो न जाय ॥१॥
माघ जु शुक्ल पञ्चमी शुभदिन, बसन्त-उत्सव सबै सुहाय ।
विविध राग गुन गन्धर्व गावत, बीन मृदंग उपंग बजाय ॥२॥
मोतिन चौक पुरावो आँगन, धरहुँ साँथिया सींक लगाय ।
मंगल कलश निकट कदली धरि, वन्दनमाल द्वार बँधवाय ॥३॥
लियो अवतार सखी नव्यवासा, देखत कोटिक चन्द्र लजाय ।
'प्रियासखी' के हिये बसो नित, रसिकशिरोमणि सब सुखदाय ॥४॥२१६॥

* पद *

श्रीनिवास प्रगटे भूतल पै, भाग हमारे जागे हैं।
नैमिष क्षेत्र कोलाहल छायो, पुरजन करत बधाए हैं॥१॥
थापे कंचन-कलश कदलि ध्वज, वन्दनमाल सुहाये हैं।
कलश इन्दु सम विमल वेदिका, पीत वितान तनाए हैं॥२॥
सामवेद-ध्वनि करत महामुनि, फूले अंग न माये हैं।
वीथी अतर अरगजा सींची, करत काज चित चाये हैं॥३॥
महकत धूप दुन्दुभी बाजे, तुमुल शब्द गहराये हैं।
तार चर्म स्वर साधि साज लिए, रागमूर्ति बनि आये हैं॥४॥
वन्दी मागध सूत ढाँढिया, नाट्य नटी गुन भाये हैं।
नाचें भाव बताय तरल गति, नाना स्वाँग बनाए हैं॥५॥
माँगत नेग कहत वंशावली, मनवांछित वर पाये हैं।
द्विजपत्नी मिलि मंगल गावें, कोकिल कंठ लजाये हैं॥६॥
धर्मतिलक द्विजराज-मुकुटमणि, भूषण-वसन मँगाए हैं।
जैसो जिनके मनको भायो, तैसो तिन पहराये हैं॥७॥
देत अशीष चले तत्ववेत्ता, जग त्रयताप मिटाये हैं।
दशहु दिशा अविरोध करेंगे, समझि हिये हरषाये हैं॥८॥२१७॥

* पद *

जगत गुरु प्रगटे आनन्दकन्द।
पाञ्चजन्य अवतार मनोहर, पूरण परमानन्द॥१॥
नाम सुनत विमुखन हिय काँपे, मृगपति-नाद गयन्द।
शास्त्र-सेतु मर्यादा थापक, कीरति निरमल चन्द॥२॥

भक्ति दान दे अभय करैं नित, काटत भव के फन्द।
चरण छाँह ते दूर क्रूर नर, ते समझो मति मन्द ॥३॥
सकृत् शरण आये अपनाए, यों भाषत श्रुति छन्द।
'हरषिप्रिया' वृन्दावन पावैं, तब जानो निरद्वन्द ॥४॥२१८॥

* पद–राग पीलु *

आज बधायो श्रीनिम्बदिनेशके, प्रगटे श्रीनिवास आचारज।
भिन्नाभिन्न मतादि अधिपती, सारे सकल जगतके कारज ॥१॥
नाम धाम लीला रस थापक, जुग-जुग दिव्य धरैं वपु आरज।
जैमिन्यादि बौद्ध पाखण्डिन, मर्दन मान भक्त-भव पारज ॥२॥
पाञ्चजन्य अवतार महाप्रभु, हंसवंश मरयादा सारज।
फूली फिरत 'हरषिप्रिया' तनमन, पाये चरण अमित भय टारज ॥३॥२१६॥

* पद *

श्रीपञ्चमी परम मंगल दिन,
दीक्षित जन्म श्रीनिवास लयो री।
ऋषि मुनिगन सब अति आनन्द करें,
वेद ध्वनि हिय उमग्यो री ॥१॥
ऋषि शाण्डिल्य विप्र घर सजनी,
भाष्यकार अवतार भयो री।
अति प्रसन्न भये ऋषि लखि शोभा,
मन लोभा देख्यो न सुन्यो री ॥२॥
द्वादश वर्ष सकल विद्या पढ़ि,
सकल विश्व को विजय करी री।

फिर आये व्रज देश मधुपुरी,
व्रजवासिन में रोर परयो री ॥३॥
गोवर्धन पच्छिम दिशि आश्रम,
वेदीं परनकुटी सरसी री।
तहाँ वसत नित निम्बदिवाकर,
विविध गुल्म लताप्रान्त लसी री ॥४॥
तिन सों कह्यो सब आश्रित हैं हम,
निम्ब ग्राम में वसत अहें री।
उन हारे हम हारि समझिये,
चलत भये गिरि नैनन हेरी ॥५॥
पाञ्चजन्य श्रीचक्र दर्श भयो,
प्रफुलित मन अँग शीष नयो री।
आसन दे सनमान कियो प्रभु,
भोजन की चरचा जु किये री ॥६॥
सन्ध्या - अशन यती व्रत नाशे,
लैन परीक्षा वैन भनेरी।
निज तन प्रगट कियो जु निम्ब पर,
दशहु दिशा को तिमिर हनेरी ॥७॥
कोटि सूर्य सम तेज सुदर्शन,
दरशत कलिमल विषम जरेरी।
खल भये मलिन साधु मिलि फूले,
नमो जयति जय जय उचरें री ॥८॥

करी प्रदक्षिण अस्तुति नाना,
तब मन ही मन अति हुलसे री।
भ्रुव कपोल परसत श्रुति भाषैं,
तिन महिमा कहु को समझैं री ॥९॥
होम अग्नि करि निम्ब दिवाकर,
होन लगी तहँ वेद ध्वनी री।
पंच संस्कार मन्त्र करि दीयो,
गुरु शरणागति रीति भनी री ॥१०॥
पञ्चक अर्थ किया पञ्चक दे,
रस - पञ्चक शृङ्गार सही री।
श्रीसर्वेश्वर पूज्यपादरज,
वैभव श्रीवनराज कही री ॥११॥
भिन्नाभिन्न - मताधिपती करि,
आज्ञा राधाकुण्ड दई री।
ब्रह्मसूत्र रच्यो भाष्य कौस्तुभ,
चक्रवर्ती मत थाप्यो सही री ॥१२॥
ये सुनि व्योम विमान कुसुम झरि,
रंग गुलालन धूम मची री।
प्रमुदित भक्त करें कौतूहल,
नाना सौंज बधाई रची री ॥१३॥
जगतगुरु सर्वेश्वर खेलें,
शोभा को नहि पार सखी री।

फूलैं ब्रजजन गावैं बजावैं,
भाग्य बली जिन दृगन लखी री ॥१४॥
दिवस बसन्त - पञ्चमी शुभ दिन,
यह उत्सव निम्बग्राम भयो री।
कहत सुनत गावत जो यह जस,
बाढ़ै नित अनुराग नयो री ॥१५॥
त्रिगुण परे निगुण पद दाता,
हंस - वंश - यश अचल रह्यो री।
द्वादश अष्टादश आचारज,
नित्य - विहार नेम निभयो री ॥१६॥
चरित अनन्त पार को पावै,
कहत सुनत जश हिये बसे री।
बहुत गई थोरी रहि 'हरषिप्रिया',
तुम्हरी कहाऊँ जगत हँसे री ॥१७॥२०॥

* पद—राग चर्चरी *

श्रीनिवास प्रगट भये, सन्तन हित माई।
नाम धाम लीला रूप, महिमा गुन गाई ॥१॥
दच्छिण में देह धरी, सकल विश्व विजय करी,
गौरवर्ण तेज - पुञ्ज अद्भुत छवि छाई।
संग सहस्र प्रबल विप्र, आये ब्रजदेश छिप्र,
निम्बग्राम सुख को धाम, दिनके अन्त आई ॥२॥
स्वामी कही असन करो, सन्ध्या भई कैसे करौं,
निज तन कियो प्रगट निम्बार्क पद धाई।

अहो नाथ भ्रम जु गयो, अस्तुति करि नेम लियो,
हूजिए कृपाल देहु दीक्षा सुखदाई ॥३॥
ताप पुण्ड्र कण्ठमाल, मन्त्रराज दे गोपाल,
नाम सेवा युगल लाल वृन्दावन राई।
पञ्चक व्रत रीति सचे, कौस्तुभमणि भाष्य रचे,
ललित राधाकुण्ड मध्य बैठक मन भाई ॥४॥
मायावाद - तिमिर हरे, भक्तन के काज सरे,
भिन्नाभिन्न मत प्रचार पद्धति चलाई।
बौद्ध गाणपत्य जैन गिरी पुरी खुले नैन,
कहे नाथ भूले मग दीजिये बताई ॥५॥
शिष्य होय सुख जु लहे, या विध नित भीर रहे,
सुनि प्रताप नृप अनन्त आवें शरणाई।
नाना शास्त्र संग अचल, दम्पति-पद प्रीति अमल,
कटे कर्म हृदय - ग्रन्थि पीवें रस अघाई ॥६॥
उत्सव विधि तव अनूप, राजें मध्य भक्त भूप,
होरी डोल फूल महल चन्दन जल नहाई।
पावस रथ रस हिंडोर, पवित्रा राखी बहोर,
कृष्णाष्टमी प्रिया - जन्म आनन्द अधिकाई ॥७॥
दान साँझी दशमी रास, दीपमाल गिरिनिवास,
ब्याह व्यञ्जन दिन वसन्त पाटोत्सव पाई।
विधि अनेक भोग राग, अचवन बीरी पुनाग,
चोवा केशर अबीर पिचकन मन लाई ॥८॥

राधासर मचे रंग, हंस सनक जस अभंग,
जै जै सुर सिद्ध भने कुसुमन बरसाई।
भावगम्य लीलालोक, सतसंग मिलि मिटे शोक,
'हरषि प्रिया' बार - बार चरणनि बलि जाई ॥८॥२२१॥

* पद *

आज हरि प्रगट कियो सुखसार।
आनन्द भक्ति प्रेम रस सींवाँ, निम्बचन्द्र अवतार ॥१॥
वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि नीकी, शुभ उद्देश विचार।
श्रुति स्मृति धर्म-पुराण सकल मथि, सर्व शास्त्र निरधार ॥२॥
कर्‍यो निवास शिष्य सो निज मुख, परम रम्य परकार।
सनकादिकन सनातन युग वर, बरन्यो आप सुधार ॥३॥
सोई सब गोपाल लाल प्रभु, गायो बारम्बार।
नित्य अनन्य शरण सेवासुख, वृन्दाविपिन विहार ॥४॥२२२॥

* पद *

उत्सव नीको आज को माई।
प्रगट्यो रसिक शिरोमणि प्यारो, रसिकन के सिरताज को।
केशवदेव देव मनरंजन, भवभंजन रसराज को।
माई बड़े भागते पायो।
प्रगट्यो लाल रसिक मनरंजन कुवँर सरस चित भायो।
वैशाख शुक्ल तृतीया शुभ शोभित, आनन्द सकल सुहायो।
घर - घर बढ़ी रुचिर रुचि नीकी, जो नारद मुनि गायो ॥
प्रेमा भक्ति युगलवर शरणों सनक सम्प्रदा दायो।
निज अवतार 'गोपाल लाल' प्रभु, कृष्ण जयन्ती आयो ॥

कियो उपदेश निवास शिष्य को, सब भाँतिन समझायो।
प्रगट करी हरि - सेवा निज जस, वृन्दाविपिन बतायो ॥२२३॥

* पद *

अब हरि प्रगट रूप निज कीनो।
वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि नीकी, दास आपनो चीन्हो।
जो गुरुदेव देवऋषि भाष्यो, शुभ उपदेश प्रवीनो ॥१॥
द्वैताद्वैत युगलवर शरणो, सेवासुख रस दीनो।
नित्य निकुञ्ज सरस तनया तट, डोलत रास हास रस लीनो॥२॥
प्रेमा - भक्ति अनन्य भाव गुण, श्रीनिवास रँग भीनो।
सबतें परम रम्य वृन्दावन, लीला नित्य बजत नित बीनो ॥३॥
त्रेता युग जो कह्यो करि, दृढ़ व्रत धर सुर झीनो।
तेही भये किशोर - किशोरी, कर परचत गहि लीनो ॥४॥
आचारज वपु रसिक मुकुटमनि, सकल जगत सुख दीनो।
'गोपाल लाल' निम्बारकपद बिनु, करे ध्यान सब हीनो ॥५॥

* पद *

सब मिलि गावो मंगलचार।
निम्बारक आचार्य रसिकवर, कियो भक्ति विस्तार ॥१॥
आनंद निधि प्रगटी सब घर - घर, दशधा प्रेम प्रकार।
कटे कर्म - बन्धन हरिजन के, निरखत युगल विहार ॥२॥
अर्थ धर्म औ काम मोक्ष ये, सकल मिटे सु विकार।
लीला नित्य सरस वृन्दावन, सेवा युगल सुधार ॥३॥

मिटी त्रास यमकी अति भारी, शरणो मिल्यो सुचारु।
अनन्य रंग 'गोपाल लाल' प्रभु, प्यारी प्राण - अधार ॥४॥२२५॥

※ दोहा ※

नव्य चीर नीलप्रभा, मुदित निकुञ्ज निवास।
पद्मदृष्टि हरि ध्यायनी, भजहु सुदेवि नव वास ॥१॥

※ छप्पय ※

रंगदेवि अवतार सुनेउ जब तिया सुदेवी।
आपुही प्रगटी मही संग लै शंख सुसेवी ॥
शाक्त-गृह अवतार शाक्त मत पालनकारी।
गुरु निम्बार्क कृपाल शरण लीनी चितहारी ॥
लिखेउ गुरु - भाष्योपरि कौस्तुभ नाम सु आशय।
पट्ट शिष्य निम्बार्क गुरु श्रीनिवास गुरुवर जय ॥

※ दोहा ※

माघ शुक्ल श्रीपञ्चमी, श्रीसुदेवि - अवतार।
श्रीनिवास प्रगटेउ मही, निम्बशिष्य सुखसार ॥१॥

※ पद—बड़ा मंगल ※

जय श्रीनिवासाचार्य सुदेवी प्रिय अली।
रङ्गदेवि गुरु संग युगल - सेवा रली ॥
सुनेउ रंग - अवतार प्रिया - आदेश लही।
आपुन हू गुरु संग मही आवन चही ॥
मही आवन चही जब उर श्रीप्रिया आज्ञा दई।
रूप शंख जु धाम हरिके आपु सोऊ संग लई ॥
परगट हित मधु ईश उपासक युग गली ॥१॥

जय श्रीनिवासाचार्य भूमण्डल अवतरे।
शाक्त विप्र - गृह मध्य रूप द्विजके धरे॥
माघ शुक्ला पञ्चमी पावन दिवस।
भई गुरु के जन्म से अति ही सरस॥
अतिही सरस सो दिवस है अति निम्बरवि ढिग आयकै।
कियो अति शास्त्रार्थ मुनिवर लीन गुरु अपनाय कै॥
वैष्णव जो संस्कार पाँच तन में करे॥२॥

जय श्रीनिवासाचार्य निम्बरवि शिष्यवर।
प्रगटेउ राधाकुण्ड गुरु आदेश कर॥
अष्टसखी पुनि कुण्ड सु प्रगटेउ रसिक हित।
पोखर सखा जु अष्ट चितयेउ सुभग व्रत॥
अष्ट चितयेउ सुभग व्रत पुनि 'कुण्ड ललिता' तट बसे।
आज हू सो ठाम व्रज मधि निम्ब भक्तन उर धँसे॥
गात प्रतिक्षण गान युगल पद - मधुकर॥३॥

जय श्रीनिवासाचार्य गुरुपद अनुसचे।
निम्बरवि वेदान्त - पारिजातहि रचे॥
तिहि पै निरमेउ आपु सु कौस्तुभ मालिका।
अति लघु मधु अविरोध कीन जन-पालिका॥
कीन जन निज पालिका मुनि औरहू सुठि ग्रन्थ हैं।
आजु जो सब अलभ कलि हित निम्ब पावन पन्थ है॥
'गंगअली' अनुराग कछू गुणगण खचे॥४॥२६॥

* छोटा मंगल *

नमो पञ्चमी श्रीसुखदाई।
श्रीनिवास प्रगटे जिहि आई, रसिकजनन उर अति मन भाई॥१॥
श्रीसुदेवि अवतार महलकी, नाम नव्यवासा सुखदायी।
पाञ्चजन्य अवतार धर्महित, कूजन जाकी परम सुहाई॥२॥
हरिकर कमल परस ध्रुव जनकी, जड़ता मुनिवर तुरत मिटाई।
करहु कृपा अब 'गंगअली' उर, देहि महल की सोहनि चाई॥३॥२२७॥

* पद-राग चर्चरी *

जै जै जै श्रीनिवास वपु आचाचारी।
राजत हैं नित्यधाम, नव्यवासा सखी नाम,
सहचरि श्रीरङ्गभरी दम्पति मन भाई॥१॥
आई मिलि संग-संग, प्रेम भरे अंग-अंग,
भक्ति अनुराग रँग किये परचारी॥२॥
गायो मिलि नित विहार, रसिकन हित रस है सार,
रहसि केलि प्रगट करी निजजन सुखकारी॥३॥
प्रगटे पाँचे वसन्त, मंगल गावत अनन्त,
'रूपरसिक' चरनकमलरज हीये धारी॥४॥२२८॥

* श्रीऔदुम्बराचार्यजी की मंगल बधाई *

[तिथि—कार्तिक शुक्ला द्वादशी १२]

* श्लोक *

औदुम्बररूपा या चिन्तामणि - गुरुकृपा ।
जाता औदुम्बराचार्यः वन्दे चित्रां अलि सदा ।।१।।

* दोहा *

निम्बारक पारस कृपा, औदुम्बरफलरूप ।
प्रगटेउ औदुम्बर मुनि, वन्दहु चित्र अनूप ।।१।।

* छप्पय *

विश्व विजय निम्बार्क तीर्थ कुरुक्षेत्र सु आये ।
औदुम्बर तरु तरें अर्च सर्वेश सुहाये ।।
नास्तिक - वृन्द सु देखि दृष्टि औदुम्बर लायी ।
प्रगटेउ तत्क्षण शिष्य उदुम्बर दुष्ट नशायी ।।
पारस परस जु स्वर्ण बन, नहिं पारस अचरज परा ।
परस गुरु पारस भयउ जय औदुम्बर मुनिवरा ।।१।।

* दोहा *

कार्तिक सुदि द्वादशी तिथी, बजत बधाई आज ।
चित्राली औदुम्ब बनि, प्रगटी रसिक - जहाज ।।१।।

* बड़ा मंगल *

जय औदुम्बर आचार्य की, चित्रा युग अली ।
प्रतिक्षण मोहन महल की, सेवा - रस - रली ।।

राजभोग युग भुज सु जाकी कुञ्ज में।
चित्रानन्द सुनाय बसत सखि - पुञ्ज में॥
बसत है सखि - पुञ्ज में सो द्वितीय रूप जु धाम में।
नाम विद्याधर अली कथा पुराण ललाम में॥
तासु पंग आदेश युगल के रस रली ॥१॥

जय औदुम्बर आचार्य उदुम्बर रूप प्रभु।
कार्त सुदी द्वादशी सु प्रगटे आपु विभु॥
पारस भेंटत होइ होत सुवरन सुनत।
पै पारस नहि होत, गुरु पारस करत॥
गुरु पारस करत देखो कहानी औदुम्ब्र की।
कृष्ण नृग जस कीन पावन बात नहिं जस दम्भ की॥
कीन जन्म कविराज गायेउ गुरु प्रभु ॥२॥

जय औदुम्बर आचार्य अली भगवान की।
जीतेउ नास्तिक वृन्द कथा सुख दान की॥
निरमेउ गुरु चरित्र नाम विक्रान्ति है।
जिहि सुन गुरु अनुराग, मिटत चित-भ्रान्ति है॥
मिटत है चित-भ्रान्ति मनकी, लिखेउ ग्रन्थ सुमर्म है।
संहिता औदुम्बकी जो रसिकजन सुठि धर्म है॥
प्रथम राधिका-कृष्ण उपासन - वान की ॥३॥

जय औदुम्बर आचार्य स्वमुख किय गान है।
हम उपास्य युगलाल मधुर मुसकान है॥
सरित यथा कल्लोल सु रूप समान है।
राधा और मुकुन्द सु नाम सुहान है॥

नाम है युग के सुहाने, रसिकजन विश्राम है।
प्रिया वामा के चहुँदिश सखी वृन्द ललाम है॥
सोई उपास्य 'अलिगंग' करहु गुरु दान है ॥४॥२२९॥

* छोटा मंगल *

जय औदुम्बर युग - अभिमानी।
राधाकृष्ण त्याग जिन निज सुख,
गायेउ नहिं कोउ देव गुमानी ॥१॥
व्रजवासी सेवत सुखराशी,
युग अनुरूप परम रसखानी।
युग कल्लोल समान विहारी,
नहिं स्वामिनकों शक्तिमानी ॥२॥
भजहु कोउ काहू भावहि सों,
हमरे सरवेस्वर सुखदानी।
कोऊ कर्म भरे कोउ योगहि भये,
कोउ लहि ज्ञान सु ज्ञानी॥
'गंग अली' अनुरूप युगल दोउ,
चाहत देखन मृदु मुसकानी ॥३॥२३०॥

* श्रीगौरमुखाचार्यजी की मंगल बधाई *

[कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी]

* श्लोकः *

सहस्रनाम निम्बार्कं श्रुत्वा गौरमुखो मुनिः ।
कृतवान् रसिकक्षेमार्थं वन्दे चम्पकलतां अलिम् ॥१॥

* दोहा *

सहसनाम गुरु गौरमुख, निरमेउ जिन जन पालि ।
रसिक जनन के क्षेम हित, वन्दौं चम्पा आलि ॥१॥

* छप्पय *

दूषित निमिषारण्य शाक्तजन वास महाना ।
विद्याधर मति शाक्त सदा देवी गुण गाना ॥
सुन निम्बार्कागमन महाशास्त्रार्थ जु ठान्यो ।
जीतेउ द्विज ऋषिराज शरण सुख वचन बखान्यो ॥
निम्बस्वाद नित पान कृत स्वमुख सतत निम्बार्क रट ।
मंजुल निम्ब सुछाँह थित, जयति गौरमुख महाभट ॥१॥

* दोहा *

कार्त्ति शुक्ल तिथि त्रयोदशी, चम्पकलता सु दान ।
प्रगटी रूप सु गौरमुख, करहु बधाई गान ॥

* बड़ा मंगल *

जय गौरमुख आचार्य अली चम्पकलता ।
महल टहल रस रली सदा उर हर्षिता ॥

द्वितीय रूप वैकुण्ठ सु हरिकर ढाल है।
रण-प्रांगण हरि हाथ दुष्ट उर शाल है॥
दुष्टजन उर शाल है सो युगल आज्ञा पायकैं।
प्रगटी भारत मही में विप्रकें घर आयकैं॥
कार्त्ति शुक्ल त्रयोदशी रसिकन मता ॥१॥

जय गौरमुख आचार्य निमिषजन पावने।
चक्र कुण्ड-आवास सन्त हरषावने॥
निम्बरवि आचार्य तहाँ पधरावने।
पावन मन्त्र सु राज गहेउ सुहावने॥
सुहावने जब मन्त्रराज सु नाम धारेउ गौरमुख।
दीन्ह सेवा महल मंजुल भयउ उर में परम सुख॥
निम्बारक कुल कीर्ति स्वमुख सुठि गावने ॥२॥

जय गौरमुख आचार्य सहसनामा रची।
जिहि मधि पावन नाम निम्बगुरु उर सची॥
कवच रु मन्त्र सुहान रचेउ पञ्चांग शुचि।
अजहु पढत जनवृन्द होत गुरु चरण रुचि॥
होत है गुरु-चरण रुचि जिहि पढ़त कीरति पावनी।
युगल पद अनुराग बाढ़त, गात सन्त सुहावनी।
निम्बगुरु बिन हरिहू पद नहिं उर रुची ॥३॥

जय गौरमुख आचार्य सु रसिक सुजान है।
निम्बारक निम्बार्क करत नित गान है॥

बिन निम्बारक नाम हरि न सुहान है।
शरणागत हित देत निम्बरवि दान है॥
निम्बरविकृत दान है सो निम्बतरु विश्राम है।
निम्बक्वाथहि असन कृत नित,ध्यान निम्ब सुग्राम है॥
'गंगअलि' हू देहु मुनिवर निम्ब ऋसिवर ध्यान है ॥२२१॥

❀ छोटा मंगल ❀

जयति गौरमुख गुरु हरि गायी।
सपनेउ जिन कोउ देव न जाने, प्रतिक्षण निम्बारक गुरु ध्यायी ॥१॥
निम्बारक तरु तर विश्रासी, निम्बक्वाथ जिहि असन सुहायी।
दर्शन निम्बवृक्ष दृगधारी, सिंचत निम्बतरु सुखदायी ॥२॥
निम्ब छाल फल से जग जीवन, तनु सब रोग जु देत नसायी।
निम्ब प्रणाम सिन्धु भवपारी, अर्चत निम्बारक मुनिरायी ॥३॥
निम्ब सहसनामा मुनि पाठी, निम्ब गायत्री जपत सदायी।
निम्ब कवच से निज तनु रक्षत, निम्बपटल अनुराग बढ़ाई ॥४॥
निम्बक्वाथ नित पेय पियारा, निम्बपत्र आहार सुनायी।
'गंगअली, हू निम्ब तरुतर बैठत छाया अति सुखदायी ॥५॥२२२॥

* श्रीविश्वाचार्यजीकी मंगल बधाई *

[फाल्गुन शुक्ला चतुर्थी]

* श्लोक *

वचनेऽमृतसागरायतीं गमने मत्तसुरद्विपायतीम् ।
हसनेऽमलमौक्तिकायतीं सततं श्रीसखिविश्वभां भजे ॥१॥

* दोहा *

बजत बधाई सोहनी, भाष्यकार दरबार ।
श्रीराधाकुण्ड विराजहीं, पाञ्चजन्य अवतार ॥१॥
फाल्गुन शुक्ला चतुर्थी, विश्वाभा जु उदार ।
धरि वपु विश्वाचार्यवर, प्रगटे प्राण अधार ॥२॥

* बड़ा मंगल *

जय जय श्रीविश्वाचार्य महाप्रभु अवतरे ।
फाल्गुन शुक्ला चौथ, विश्व सह दुख हरे ॥
वैष्णवधर्म दृढ़ा शुद्ध वसुधा करी ।
भिन्नाभिन्न प्रचार प्रबल माया हरी ॥
हरो माया कालकर्म सुभाव तजि शरणे लिये ।
बास राधाकुण्ड सेवा जुगल जन हरषे हिये ॥
धन्य श्री गुरु चतुर सेवा जयति जय अस्तुति करे ।
जै जै श्रीविश्वाचार्य महाप्रभु अवतरे ॥१॥
जै जै श्रीविश्वाचार्य हंसकुल राजहीं ।
भुवन चतुर्दश नाथ दर्श दुख नाशहीं ॥

श्रीनिवास जू शिष्य जन्म दिन सुख महा।
श्री वंशीवट निकट पुलिन मंजुल तहाँ॥
तहाँ मंजुल पुलिन चहुँधा अली मौंजन लिये खरी।
चोवा चन्दन अगर कुमकुम पिचकारी रंग लागी झरी॥
मदन खेत संकेत दुहूँ दिशि जीति निज निज भावही।
जै जै श्रीविश्वाचार्य हंस कुल राजहीं॥२॥
जे जैं श्रीविश्वाभा जु सुहाने पट धरें।
रंग अली पहिराय पीत मण्डप तरें॥
आम्रमञ्जरी मौर दृगन अंजन दिये।
ललिता जोरी गाँठ सिराये सब हियें॥
हिय सिराये सबनके तब कण्ठ कोकिल गावहीं।
होरी गारि धमारि उचरें दे दे झूमक नाचहीं॥
श्रीहरिप्रिया भाँवरि फिराये आरती जन मन करें।
जै जैं श्रीविश्वाभा जु सहाने पट धरे॥३॥
जय जय श्रीविश्वाचार्य यह निधि उर बसें।
पद्मरागमणिजटित शुभ्र आसन लसे॥
तहँ बैठे दोउ मीत हितू सामा रचें।
भोगी भोगत भोग प्रीति अमृत अचें॥
अचे तृप्ति जु पान दीन्हें युगल रूप खिलावई।
हारे दूलह जीति दुलहिन विनय करि हरषित भई॥
सेज-सुख विलसाय दम्पति गाय नित जीवें जसें।
जै जैं श्रीविश्वाचार्य यह निधि उर बसें॥४॥२२३॥

★

❋ छोटा मंगल ❋

आज बधाई को दिन नीको।
विश्वाचारज प्रगट भये हैं, रसिकशिरोमणि जीवन जीको ॥१॥
शुभ नछत्र अवतार धर्म हित, फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी नीको।
'प्रियासखी' भये हंस-वंश में, तिमिर हर्यो सब त्रिभुवन हीको ॥२॥२३४॥

❋ पद ❋

बाजत आज बधाई नीकी।
फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी पावन, उर अभिलाषा फलन फलीकी ॥१॥
करुणानिधि सुकुमार रसिक प्रिय, आई सहचरि रंग अली की।
श्रीवृन्दावनधाम अधिपती, हरिहैं सब जड़ताई जगकी ॥२॥
दास अनन्य चकोर मुदित भये, कुमतिन की द्युति ह्वै गई फीकी।
'प्रियादास' वृन्दावन पावें, तबहि ग्लानि मिटै या जी की ॥२३५॥

आज बधायो रसिक नरेशके प्रगटे आनन्द कन्द।
विश्वाचार्य लीलावपु धरिके, काटे भवके फन्द ॥१॥
शास्त्र-सेतु मर्यादा थापक, मेटन विश्व-विकार।
विमुख उलूक छिपे रवि-दर्शन, बौध परि हठतार ॥२॥
संत-हिये-सर कमल प्रफुल्लित, पायो विमल प्रकाश।
हंस वंश की कीरति गावैं, जिन मेटी भव-पाश ॥३॥
अमर विमान कुसुम वरषावैं, माँगैं भक्ती दान।
झुकि झुकि परत देवतिय भूपर, बाजत भेरि निसान ॥४॥
जै जै कार भयो वसुधापर, व्रज जन भरे उमंग।
सत निम्बारक -चरण उपासी, रंगे युगल के रंग ॥५॥

नाचें गावें गोरस छिरकें, करत अनूठे ख्याल।
धेनु सिंगारे नचावें प्रमुदित, हेरी दै दै ग्वाल ॥६॥
होरि धमारिन धूम मचाई, लै लै श्री गुरु नाम।
श्रीफल मेवा पान भेंट धरि, पुनि-पुनि करत प्रणाम ॥७॥
सकल समृद्ध पूर्ण सरवेश्वर, जिनके सदा सहाय।
'हरपिप्रिया' इन पद-रज चाहैं, दोउ कर लेत बलाय ॥८॥२३६॥

❋ पद ❋

आज बधाई बजत सुहाई।
प्रगटे विश्वाचार्य महामुनि आनन्द रह्यो सकल भुव छाई ॥१॥
हँस सनक नारद निम्बारक, भाष्यकार जय अटल सदाई।
'हरपिलालप्रिये' निकट बसावें, जो इन पद सेवें चित लाई ॥२॥२३७॥

❋ पद ❋

आज बधाई बजत सुहाई, श्रीनिवास के द्वार।
विश्वाचार्य प्रगट भये सजनी, गावो मंगलचार ॥१॥
सरद दूब दधि फल अंकुर सखि, भरि-भरि कंचनथार।
अबीर गुलाल कुमकुमा केशर, छिरकत रंग अपार ॥२॥
बन्दन माल पताका केतु, छाये परम सुढार।
फाल्गुन शुक्ला चतुर्थी नीकी, शुभ नचत्र सुखसार ॥३॥
नित्य निकुंजते सखि विश्वाभा, तन धरि रस कीन्हो निरधार।
'अली गोमती' श्री हरिप्रिया सहचरि, बलि बलि बारम्बार ॥४॥२३८॥

❋ पद ❋ सांहिलो ❋

सहेली मिलि आवो सुमंगल गाइये।
आज बधायो श्रीश्रीनिवासके, और प्रगटे विश्वाचार्य ॥

दिव्य कंचन अवनि मणिमय, जटित परम सुरम्य।
दिव्य द्रुम फूल फूल भारन, झुमत अमित अगम्य ॥१॥
त्रिविध सरस समीर सौरभ, बहत परम सुहाय।
मधुर खग मृग मधुप गुंजत, सुनि मन रहत लुभाय ॥२॥
अमित कुंजन मध्य मणिमय, लसत महल निकुंज।
कनक कलश पताक ध्वज मणिमाल झूमत मंजु ॥३॥
विविध मणिमय जटित मंडप, कल्पद्रुमकी छाँह।
रतन सिंहासन सुढार झलकत, पद्मराग मणि माँह ॥४॥
तहाँ राजत मीत दोऊ, गौर श्याम उदार।
चन्द्रिका शिर मुकुट मणिमय, भूषण अंग अपार ॥५॥
रूपनिधि गुणसिन्धु सुखनिधि, दिये भुजा पिय अंस।
सौंज लै सखिवृन्द सेवत, निरखत छवि अवतंस ॥६॥
मन्द हँसि तब कह्यो दम्पति, सखी विश्वभा जान।
अवनि वपु धरि सुनहु सहचरि, प्रगट कियो रसखान ॥७॥
पाय आज्ञा प्यारिपिय पद, वन्दि पुनि शिर नाय।
सखि सहेलिन वृन्द मिलि मन, मुदित भई सुख पाय ॥८॥
स्वामिनी श्री नव्यवासा भिशाकुण्ड निवास।
तहाँ प्रगटे आचार्य-वपु है श्री निवास - आवास ॥९॥
फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी नीकी, शुभनक्षत्र सुखसार।
कदली कलश वितान छायो, गावो मंगल चार ॥१०॥
श्रीनिवास कृपाल के यह, लाल परम रसाल।
रसिक हित धन सुरस बरसत, सेवत करत निहाल ॥११॥

नाम गुन इनके जपे जिन्हे, चरित प्राण अधार।
श्रीहरिप्रिया "अलि गोमती" रस पावें नित्यविहार ॥१२॥२३६॥

* दोहा *

फागुन शुक्ला चतुर्थी, श्रीनिवास के धाम।
प्रगटे जनहित जान श्री विश्वाचारज नाम ॥१॥

* पद *

प्रगटे विश्वाचारज माई।
फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी दिनको, मंगल भयो महाई ॥१॥
देशकाल शोभित भये नीके, शुभ नचत्र सुखदाई।
जन्म होत ही सब जन मन को, सकल आस पुरवाई ॥२॥
दिशि विदिशिनमें कीरति छाई, छवि कछु वरनि-न जाई।
वरषत सुमन देव मुनि हरषत, शोभा लगत सुहाई ॥३॥
हय गय हेम जवाहर मुक्ता, देत द्विजन द्विजराई।
'श्री रूपरसिक' जन यहि अवसर में, रूपरसिकता पाई ॥४॥२४०॥

* दोहा *

गुननिधि सर्वोपरि सुखद, करन रसिक हित काज।
प्रगट भये मनहरन श्रीविश्वाचारज आज ॥१॥

* पद *

सर्वाचारज गुनगन आरज, विश्वाचारज प्रगटे आज।
सब सुख सागर प्रभा उजागर, प्रणत जनन के पुरवत काज ॥१॥
धन्य फालगुन मास धन्य तिथि, धनि नचत्र मंगल धुनि गाज।
'श्रीरूपरसिक' जन धन्य भये सब, निरखत परिकर सहित समाज॥२॥२४१॥

* पद *

सुमिरि विश्वाचार्य उदार।
नाम जपे ते सब दुख नाशैं, फँसे न यम के द्वार ॥१॥
श्रीवृन्दावन रूपमाधुरी, देत परम उदार।
संसृति-शोक मिटे भव-बाधा, मिलै युगल सरकार ॥२॥
ऐसो समय बहुरि नहि मिलिहैं, कत मन करत अबार।
चरण कमल मन मधुकर करिये, तो ह्वै हो भव पार ॥३॥
'हरषिप्रिया' प्रिय दास आस लगि, करिहैं सब संभार ॥४॥२४२॥

* सवैया *

विश्व किये उत्पन्न भले जिन विश्वके पालन हेतु विराजै।
विश्वको आनन्द देत सदा जिन, विश्वको पोसत है सुख साजै ॥
विश्वके खेल विलोकत है जिन, विश्व करै अवसान सुभ्राजै।
विश्वके पूज्य निवास कृपा, प्रगटे श्री विश्वाचारज आजै ॥२४३॥

* पद *

प्रगट भये श्री विश्वाचारज, सकल विश्वके दुःख नसे री।
फाल्गुन मास चौथि उजियारी, ता मधि हमरे भाग्य जगे री ॥१॥
धुजा पताका कदली रोपा, बाँधो बन्दनवार भली री।
कंचन कलश प्रति अम्बर धरि, गावो मंगलचार अली री ॥२॥
नाना विधि बाजन्त्र बजाओ, नाचो नाम उचार करो री।
नववासा की प्रिय विश्वाभा, दरसत ही जग दुख गयो री ॥३॥
अब सजनो चित चेत करो, ये सुहाग कमल की कली हिली री।
प्रियालाल अति ही आन दे, दयादृष्टि करि भुवि पड़ई री ॥४॥

अब न रहे जड माया जग में, नवधाकी अति लागि झरी री।
'हरषि प्रिया' चातक चित करिये, प्रेमामृत की घटा उठी री ॥५॥२४४॥

* दोहा *

कल वच अमृत सिन्धु जस, सुर-हस्ती जस चाल।
अजहुं हँसन मुख मुक्त जस, श्रीविश्वाभा बाल ॥१॥

* छप्पय *

रंग-यूथ-ईश्वरी, विश्व-आभा जु सुबाला।
जन्मी गंगा-तीर, विप्र गृह चरित रसाला॥
श्रुति स्मृती अध्ययन, कुण्ड ललिता तट आये।
श्रीनिवास आचार्य, चरण में शीश नवाये॥
विश्व धारि स्तुति कृत गायेउ गुरु श्रीवास।
जयति विश्व-आचार्य वर, युगल चरण नित आस॥१॥

* दोहा *

फाल्गुन सुदी चौथी तिथी, विश्वाभा रस दैन।
विश्वाचार्य सु रूप धरि, प्रगटो रसिकन चैन॥१॥

* बड़ा मंगल *

जयति विश्व-आचार्य विश्व-आभा अली।
रंगदेवि के यूथ मध्य युग रंग रली॥
वचन-अमृत जससिन्धु, चाल जस करी है।
मौक्तिक जस मधु हँसन, रसिक रस भरी है॥
रसिक रस जन भरी है सो,युगल-आज्ञा पाय कै।

धाम में कौमोदकी जो, संग लहि सुख चाय के।
फाल्गुन शुक्ला चौथ, सु प्रगटी महि वली ॥१॥
जयति विश्व-आचार्य पूत किय सुरसरी।
जन्मेउ पावन तीर मातु पितु दुख हरी॥
ब्रह्मचर्य व्रत धारि शास्त्र मुनिवर पढ़े।
महि आचार्यन नीति धर्मपथ अति अड़े॥
धर्मपथ अति अड़े गुरुवर धाम वनपति आय कै।
ललित कुंड सु शरण लीनी श्रीनिवास सु पाय के॥
कीन स्तुति विश्वघाटी-स्तोत्र जग पावन करी ॥२॥
जयति विश्व-आचाय भविष निज मुख कही।
पूछेउ वैशम्पान शिष्य प्रभु को मही॥
कान्य कुब्ज निर्माण भट्ट मम शिष्य है।
सुनत अति आश्चर्य मुनी वैदुष्य है॥
आश्चर्य मुनि वैदुष्य गमने जनेउ सुत निर्वाण है।
कीन स्तन पान नहि जब चरण अर्पेउ आन है।
किय जब स्तन पान मातु-पितु पद गही ॥३॥
जै जै विश्वाचार्य हंसकुल सुख भरे।
लीनेउ जे पद-शरण दुःख ते भव तरे॥
पाई जुग-पद-सेव महल की मोहनी।
निज कर कमल सु करत सुसेवा सोहनी॥
करत सेवा सोहनी सो निगम चाहत मुख भने।
श्रुति हु पायी गोपिका वन आय व्रज में रस सनें॥
'गंगअलि' हू चाह सोई, करहु किरपा गुरु ढरे ॥४॥२४५

* छोटा मंगल *

जय जय विश्वाचार्य रसिक वर ।
श्रीनिवास गुरु बिन जिन श्रीमुख, गायेउ नाम नहीं कोउ हरि हर ॥१॥
यहै टेक राखी श्रीगुरुवर, नायेउ शीष वाम श्रीपद भर ।
बाँकी चाल चली गुरु गायी, एक ही स्तुति श्रीनिवास कर ॥२॥
श्रीनिवास गुरु भुज भव सिन्धु, भये पार अनुपम करणीधर ।
जिहि अनुकरण रसिक जन अजहू, गावत गुरु महिमा जन भव तर ॥३॥
'रसिक गंग अलि' युगल महल की, चहत सोहनी दयावर ॥४॥२४६॥

* श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजीकी मंगल बधाई *

[चैत्र शुक्ला षष्ठी]

* श्लोक *

उत्तमाङ्गपरिरक्षणस्थिरामुत्तरोत्तररसप्रदायिनीम् ।
स्वामिनीप्रणयपूरनिर्भरामुत्तमां च शिरसाऽभिवादये ॥१॥

* दोहा *

बजत बधाई रसभरी, सुनि प्रमुदित नरनारि।
कदली कलश माल ध्वज, गावत मंगलचारि ॥१॥
चैत्र शुक्ला षष्ठी जु तिथि, विश्वाचारज धाम।
पुरुषोत्तम प्रभु अवतरे, जन मन पूरण काम ॥२॥

* बड़ा मंगल *

जै जै श्री पुरुषोत्तमाचार्य हंस कुल राजहीं।
निगम कंज हित भानु, उदित सुख साजहीं ॥
श्रुति पथ विमुख विलोकि सबै मत चाल हैं।
करी करुणा जु विशाल सु परम कृपाल हैं ॥
है जु परम कृपाल सब जग दीन लखि करुणा करी।
निगम आगम सूत्त श्रुति श्रीमुख वचन जु हिये धरी ॥
थाप्यो मत अविरोध हरिजन मुदित ह्वै सुख साजहीं।
जै जै श्रीपुरुषोत्तमाचार्य हंसकुल राजहीं ॥१॥

जै जै श्रीपुरुषोत्तमाचार्य सकल गुणधाम हैं।
प्रगटे अवनि पर आप करन जन काम है ॥
निगम सारद दश रत्न श्लोक दश नाम है।
श्री मन्नियमानन्द कमल मुख गान है ॥
गान है दश रत्न तिन हित रच्यो ग्रन्थ अनूप है।
राखे ता मधि रत्न नाम वेदान्तरत्न मंजूष है ॥
द्वैताद्वैत रहस्य सर्वोपरि कह्यो मत प्रधान है।
जै जै श्री पुरुषोत्तमाचार्य सकल गुण खान है ॥२॥

जै जै श्रीपुरुषोत्तमाचाय रसिक कुल मंडना।
प्रगटे महल ते आय सर्व दुख खण्डना॥
नित्य निकुंज निवास सेवत दोउ मनोरमा।
श्रीरंगदेवी अनुवर्ति नाम जेहि उत्तमा॥

उत्तमा जेहि नाम कहियत रूप गुणन प्रकाश है।
श्रीविश्वाभा सह नित्य सेवत प्यारी पिय सुखरास है॥
सौंज लिए चहुँ ओर सहचरि मध्य रास अखण्डना।
जै जै श्रीपुरुषोत्तमाचार्य रसिक कुल मण्डना॥३॥

जै जै श्रीपुरुषोत्तमाचार्य रसिक रस भूप है।
चैत्र शुक्ला तिथि षष्ठी प्रगटे अतिहि अनूप है॥
गावत मंगलचार सुवासिन ऊप है।
लै लै बधाई आई सु निरखत रूप है॥

रूप है गुन सहित सागर कौन कवि वरनन करे।
देत नित्य-निकुंज लीला, जानि जन शिर कर धरे॥
श्रीहरिप्रिया 'अली गोमती' जस कह्यो परम अनूप है।
जै जै श्रीपुरुषोत्तमाचार्य रसिक रस भूप है॥४॥२४७॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो पुरुषोत्तमाचारज।
नाम उत्तमा सखी युगल की, करत रहत निशिदिन सब कारज॥
दश श्लोकी वेदान्त निम्बारक, वेद रत्न-मंजूषा धारज।
जैन बौध पाखण्डी भूपर, फैलि रहे ज्यों बेलि विषारज॥२॥

तिनहि ज्ञान सन्मारग दै के, भव सागर ते किये निवारज।
करुणासिन्धु कृतज्ञ महामुनि, दीन हित वपु धरि कियो पारज ॥३॥
जा जन चरण शरण तुम आये, त्रिविध ताप प्रभु तिनके टारज।
'रासप्रिया' अली करत बीनती, हंसवंश में मेरे आरज ॥४॥२४८॥

* पद *

आज सखि बाजत रंग बधाई।
मधुमास में शुक्लपच्छ की, छठि सबके मन भाई ॥१॥
सखी उत्तमा पुरुषोत्तम वपु, धरि अवनी पर आई।
रसकी रीति प्रीति प्रगटावन, अखिल लोक सुखदाई ॥२॥
सुन्दर कमल वदनकी शोभा, देखत दृगन अघाई।
"कलामंजरी" आनंद में फूली, मन वाञ्छित निधि पाई ॥३॥२४६॥

* पद *

आज बधाई लगत जु प्यारी, श्रीविश्वाचारज धाम मही री।
चैत्र शुक्ल रस संगिका आई, नाम उत्तमा भुवि प्रगटी री॥
नखशिख ते अँग-अँग माधुरी, वननि न जाय रूप अगरी री।
नित नव नेह बढ़े इन आश्रय, करैं लड़ैती कृपा खरी री।
'हरषि प्रिया' जग अविचल कीरति, छाय रही नहि जात कही री ॥२५०॥

* दोहा *

मास चैत्र शुभ षष्ठी में, शुक्ला अति अभिराम।
प्रगटे विश्वाचार्य कैं, श्रीपुरुषोत्तम नाम ॥१॥

* पद चौताल *

श्री पुरुषोत्तमाचारज वर प्रगटे सुन्दर अति अभिराम।
चैत्र मास षष्ठी शुभ शुक्ला, वपु सोहै मानो घनश्याम॥१॥
उत्तम धाम नाम गुन उत्तम, गावैं सन्त सकल सब जाम।
पावन करन जु पतित जननको, 'रूपरसिक' जन को विश्राम॥२॥२५१॥

* दोहा *

युगल अँग रच्छणपरा, उत्तम रसद रसाल।
प्रिया प्रेम पूरति हृदय, नमो उत्तमा बाल॥

* छप्पय *

उत्तम अलि कन्नौज प्रगट भई द्विजके धामा।
पुरुषोत्तम लहि नाम, पढ़ेउ श्रुति-शास्त्र ललामा॥
पूछेउ वैशम्पान विश्वगुरु से को शिष्या।
भासेउ सुत निर्वाण देहि हमकों सुत भिसा॥
अर्पेउ विश्वाचार्य पद सोइ पुरुषोत्तम मही अट।
निरमेउ मंजूषा सुखद, जयति वैष्णव महाभट॥१॥

* दोहा *

चैत्र शुक्ल षष्ठी तिथि, सुन रसिकन की अर्ज
उत्तम प्रगटी आय कै, पुरुषोत्तम आचार्य॥१॥

* बड़ा मंगल *

जय पुरुषोत्तम आचार्य महल अलि उत्तमा।
करत सेवा महल की नित चहत पावत नहि रमा॥

उत्तमांग परिरच रसोत्तरदायिका ।
स्वामिन प्रेम सुपूर भरी रस भायिका ॥
भरी रसकी भायिका सो युगल आज्ञा पाय कै।
धाम में सारंग सहित प्रगटी मही में आय कैं ॥
चैत्र शुक्ल तिथि षष्ठी जनो लिखी आगमा ॥१॥

जय पुरुषोत्तम आचार्य पिताके दुख दहे ।
ललिता कुंड सु आय विश्वगुरु पद गहे ॥
कीनेउ भजन सुदान कुंड ललिता बसे ।
आये जे जन शरण दुःख भव के नसे ॥
दुःख भवके नसे सबही, जन विपच्छो खण्डना ।
कीन बहु शास्त्रार्थ मुनिवर रसिक कुलवर मण्डना ॥
लीला अमित महान् रसिक लख सुख लहे ॥२॥

जय पुरुषोत्तम आचार्य सुविवरणका हैं ।
निम्बारक आचार्य सिन्धु भव पार हैं ॥
परम दया के सिन्धु सन्त सुख सार हैं ।
इष्ट देव जिन सदा युगल सरकार हैं ॥
युगल हैं सरकार जिनके निम्बकृत दस छन्द जो ।
लिखेउ तिनपै प्रथम विवरण, जीवहित मतिमन्द जो ॥
वेदान्त नाम मंजूष विदुष सुखसार है ॥३॥

जय पुरुषोत्तम आचार्य छुपायेउ महत्त रस ।
सर्वसाधारण हेतु कहेउ ऐश्वर विवस ॥

ग्रन्थ रत्न मञ्जूष सो पावन देन है।
महल सुमोहन चढ़न प्रथम निःश्रेणि है॥
प्रथम निःश्रेणी सु राजत विदुष वृन्दन मोहनी।
जासु खोलन रची कुँचिक गुरु अमोलन सोहनी॥
'गंग अली' जिहि कृपा कहेउ युगवर सुयश ॥४॥२५२॥

* छोटा मंगल *

जय पुरुषोत्तम गुरुवर राई।
क्षर अक्षर ते श्री पुरुषोत्तम, वरणेउ जिन गीता हरि गायी॥
राधा कृष्ण परम अनुरागी, तदपि भाव उर धरेउ छिपायी।
अनुपम रसिक बाल ब्रह्मचारी, मंजूषा जस रतन रचायी॥
निरख जाहि कलिके विमुखो जन, कहत न यामें राधा गायी।
भ्रम सन्देह अज्ञता भंजन युगल उपासन परम सुहायी॥
निम्बसरोवर बसेउ महामुनि, सर्वप्रथम विवरण निरमायी।
रसिक'गंगअली' भई बलिहारी, गावत ऊँचे शब्द बधायी॥२५३॥

* श्रीविलासाचार्यजीकी मंगल बधाई *

[वैशाख शुक्ला अष्टमी [

* श्लोक *

निजदासविलास दायिनीं निजनाथैकगुणौघ गायिनीम।
वयसा नयनेन्दुहायिनी सुविलासां शिरसा नतोऽस्म्यहम् ॥१॥

* दोहा *

माधव धवला अष्टमी, श्री पुरुषोत्तम धाम।
श्रीविलास प्रभु अवतरे, जन मन पूरण काम ॥१॥
दशों दिशा मंगल भयो, प्रगटे भक्ति नरेश।
संत हिये सर कमल मुद, पाय प्रकाश दिनेश ॥२॥

* बड़ा मंगल *

जै जै जै श्री विलासाचारज अवतरे।
पूरण परमानन्द शोक संशय हरे॥
हंस वंश अवतंस दर्श दें दुख टरे।
दशो दिशि भयो मोद जनन हिय सर भरे॥
भरे सर हिय जनन के जहाँ जुगल नित क्रीड़ा करें।
होत चरित बखान जहँ तहँ अमृत की बूदें झरें॥
सकल संकट ताप नाशे जैति जै जै धुनि करे।
जै जै जै श्रीविलासाचारज अवतरे ॥१॥

जै जै जै श्री विलासाचारज दिनमनी।
विविगुन गाय रिझाय भये निधि के धनी॥
श्री वृन्दावन धाम नित्य लीला जहाँ।
सहचरि वर वपु प्रगट नित्य सेवें तहाँ॥
तहाँ सेवत सहचरि वपु कुंज केलि निहारहीं।
बसन भूषण टहल तत्पर लाड़िली मन हारहीं॥
रहत रीझि निहार मोहन देत उर माला मनी।
जै जै जै श्री विलासाचारज दिनमनी॥२॥
जै जै जै श्री विलास हंस कुल प्रान हैं।
श्री पुरुषोत्तम लाल जगत जस ज्ञान है॥
सजनी जागो भाग सो उत्सव कीजिए।
तोरन कलश वितान सौंथियो चीतिये॥
चीति स्वस्तिक रोपि कदली हर्षि दधिकाँदो कियो।
नृत्यकरि उत्साह कौतुक पुलक तन उमग्यो हियो॥
धन्य दिन कहै आजको जस दिव्य मंगल गान है।
जै जै जै श्री विलास हंसकुल प्रान हैं॥३॥
जै जै जै श्री विलासाचारज जस महा।
छिप गए मत पाखण्ड टरे खल दल तहाँ॥
किए विविध उपदेश सुरीति सिखावहीं।
सनक श्री नारद निम्बभानु गुनगावहीं॥
गावहीं गुन शुद्ध हिय भये कहा कहुँ महिमा हरी।
देव उद्धव शरण आये आशा तिन पूरी करी॥

मत यह भेदाभेद छायो एक महिमण्डल तहाँ।
जै जै जै श्री विलासाचारज जस महाँ ॥४॥२५४॥

* छोटा मंगल *

आज महा मंगल भयो माई।
प्रगटे श्री विलासाचारज, मधु ऋतु माधव मास सुहाई ॥१॥
हंस सनक नारद निम्बारक, विश्व पुरुषोत्तम लालन आई।
जै जै कार भयो वसुधामें, रसिक चकोर भयो मनगाई ॥२॥
दधि दुर्वा अक्षत रोरी धरि, आवत भेंट ले ऋषि समुदाई।
अविचल भक्ति राज होय प्रभु पद, श्रीहर्षिप्रिया आशीष सुनाई ॥३॥२५५

* पद *

श्री पुरुषोत्तम लाल जन्मदिन, चहुँदिशि होत कोलाहल माई।
हरसे देव कुसुम बरसावत, वृन्दारकन भई मनभाई ॥१॥
नाम विलासावलि गौरांगी, हमरे भाग अवनि पर आई।
रसिक आश की बेलि फली जो, मन हुतो सो दियो दिखाई ॥२॥
नित्य धाम लीला जस गावन, रस प्रगटावन नेम जनाई।
ललित केलि रस दान करेंगे, अब मिटिहैं जगकी जड़ताई ॥३॥
राधा-माधवको जस सम्पुट, भाव भरे दृग लिये अरुनाई।
मधुर बैन उपदिश कियो जब, प्रेमामृत को पान कराई ॥४॥
सुमिरत हियो उमहि भरि आवै, सुधि न रहे तन तब गहि पाई।
नित नव नेह बढ़े इन संगत, दुष्ट कर्म सब जात नसाई ॥५॥
नेम धर्म आचार करो कोउ, जप तप तीरथ में मन लाई।
हमरे बाट परी यह सम्पति, गुरु हरि चरित सरूप मिठाई ॥६॥

यह जस गावत गुरु पद ध्यावत, त्रिविध ताप सन्ताप मिटाई।
श्री निम्बारक-वश भये प्रभु, 'हर्षिप्रिया' चरणन बलि जाई ॥७॥२५६॥

※ पद ※

आज बधाई बजत भली री।
प्रगटे श्रीरसिकेश महाप्रभु, आनँद-सरिता उमड़ि चली री ॥१॥
घर-घर ते ऋषि-वधु चलि आई, शोभित करत है नगर गली री।
हरद-दूब-दधि-अच्छत-माला, थापत कनक कलश कदली री ॥२॥
नाचत गावत करत कुतूहल, झूमक दै दै नवल अली री।
हंश-वंश-आचार्य विलासको, अटल कीरति नाहि टली री ॥३॥
देत अशीष लेत न्योछावरि, 'ब्रजदूलह' भई रंग रली री ॥४॥२५७॥

※ पद ※

श्री विलास प्रगटे भूतल पै, भाग हमारे जागे री।
गौर वर्ण तन कान्ति विराजत, सुभग वेश सुख भीने री ॥१॥
नैन रूप की लोभी आली, वरन जु गुन अनुरागे री।
नासा चहत सुवास अंगकी, मुख नामामृत पीवै री ॥२॥
सेवत सदा सरस वृन्दावन, वंशीवट तट वास नये री।
छके रहे सुख रूप-माधुरी, लीला ललित निहारे री ॥३॥
जमुना पुलिन सरस द्रुम फूले, बोलत पिक मधु-बानी री।
नाना विधि के कमल-दलन पर, भ्रमर रहे मँडराई री ॥४॥
त्रिविध पवन शीतल सुखकारी, जलमें उठत हिलोरें री।
छः ऋतु सदा विराजत हैं तहँ, खगमृग करत कलोलें री ॥५॥

तहँ बैठे नित ध्यान करें गुरु, जुगल केलि मन भावै री।
देत अभय वरदान जनन को, भाव सहित जो ध्यावै री ॥६॥
या विधि को ब्यौहार करें नित, रंगधाम के वासी री।
'उद्धवदेव' शरण निम्बारक, "हरषिप्रिया" बलिहारी री ॥७॥२५८॥

* पद *

दीक्षा-जन्म विलासाचारज, सुभग बधाई लाये री।
बहुत दिनन तप साधन कीन्हे, आज भये मन भाये री ॥१॥
माधव मास शुक्ल तिथि अष्टमि, शुभ नक्षत्र भल पाये री।
मध्य दिवस शुभ पावन अवसर, ता मधि भाग्य जगाये री ॥२॥
पुरुषोत्तम दीक्षा हित बैठे, मंगल वस्तु मँगाए री।
देखि समय सुर नर मुनि हरषे, कुसुम माल बरसाये री ॥३॥
स्वस्तीवाचन करत महामुनि, वेद-भेद गरजाये री।
बैठे सन्मुख दरश करें गुरु, शरण समय जब आये री ॥४॥
ताप पुण्ड्र दे नाम विधी कर, तुलसिमाल गल धारे री।
ब्रह्म विद्या रस मन्त्र कर्ण कहि, वैष्णव धर्म बताए री ॥५॥
भेदाभेद-मताधिप स्वामी, आचारज पद पाये री।
श्री सर्वेश्वर पूज्यपाद लै, पट्टारूढ़ कहाये री ॥६॥
उत्सव भयो जात नहि वरन्यो, आश्रम भीर न माये री।
नाना विध कौतुक दुति धारी, वेश पलटि के आये री ॥७॥
भाट भाँड़ बन्दीजन चारण, जाचक नाम धराये री।
करत कुतूहल रुचि अपनी के, काहू विधि नहि काँचे री ॥८॥

हँस सनक नारद निम्बारक, जस बरनन करि नाचैं री।
श्रीनिवास विश्वाचारज पुरुषोत्तम, लालन कहि अनुरागे री ॥९॥
हँसि हँसाय सुख देत ऋषिन को, भक्ति दान के प्यासे री।
माँग निहोर अनेक ख्याल रचि, अभय पदारथ पाये री ॥१०॥
कोकिल कंठ लजावति गावत, रंगमहल अधिकारी री।
दर्शन तृसा बुझावन लागी, रहस रहस अनुरागी री ॥११॥
होत विविध उपदेश शास्त्र के, पूरब रीति जनावैं री।
जब जब धर्म छीन ह्वै महि पै, तब करि कृपा पधारे री ॥१२॥
नाम अनेक एक वपु इनको, सो गुरु शब्द कहावैं री।
आवत हृदय तिमिर नाशे जग, निज स्वरूप गुण भासैं री ॥१३॥
यह जस श्री हरिव्यास कृपा बल, गाय के जीव जिवाये री।
'हर्षिप्रिया' कलि चोर लगत डर, गुरुचरितामृत गाये री ॥१४॥२५६॥

* पद * राग-देव गंधार *

श्री पुरुषोत्तम-लाल जन्मदिन, रंगीली बधाई कैसी बाज रही है।
घुरत निशान दुन्दुभी बाजत, होत कुलाहल भीर छई है ॥१॥
नाचत गावत करत कुतूहल, भाग्य विभव सलिता उमड़ी है।
कलश केलि ध्वज वन्दनमाला, दधि दूर्वा अच्छत रोरी है ॥२॥
नाचत गावत हँसत हँसावत, बोलत जै जै नाम धुनी है।
घोरि हरिद्रा शीसन ढोरत, कोकिल कंठ लजात अली है ॥३॥
मागध सूत बन्दीजन चारण, तान तरंगन लाग भरी है।
पावत दान अशीष देत सब, अटल भक्ति रहो राज भुवि है ॥४॥

सेवें दर्श करें निशि वासर, यह उर अन्तर चाह बढ़ी है।
आशा पद-पराग 'ब्रज दूलह', हर्षिदेहु मोहि प्रेम गली है ॥५॥२६०॥

❋ पद ❋

आज बधाई पुरुषोत्तम-अंगना।
चिर जीवो ऋसिराज लाड़िलो, अँचरा पसारि माँगों तो सों विधिना ॥१॥
जौ लौं चन्दा सूरज उद है, गंग जमुन जौ लौं महि थिर रहना।
मेरो नेग चुकाओ कृपानिधि, आशा बेलको पूरी करना ॥२॥
रंग महल की सेवा दीजे, प्रिया अलिन संग सेऊँ लली-ललना।
यह वर पाऊँ विमल यश गाऊँ, कहूँ न जाऊ सेऊ तव चरना ॥३॥
'उद्धवदेव' शरण निम्बारक, "हर्षिप्रिया" कछु नहि चहना ॥४॥२६१॥

❋ दोहा ❋

मघाव शुक्ला अष्टमी, मधि दिन प्रेम प्रकाश।
श्री पुरुषोत्तम के भये, शिष्य आचार्य विलास

❋ पद ❋

प्रगटे प्रभु आचाय विलास।
श्री पुरुषोत्तमके गृह मंगल, रसिकन हिये हुलास ॥१॥
माधव शुक्ल अष्टमी मधि दिन, पूरन प्रेम प्रकाश।
विपिनविहारीजूके जस प्रगटावन वश सुखरास ॥२॥
इनकी शरण लहे जो पैहे, सुख-सम्पति अनयास।
'रूपरसिक' प्रभुके जनमत ही, पूजी मनकी आश ॥३॥२६२॥

❋ दोहा ❋

दास विलास प्रदायिनी, निज मुख प्रिय-गुण गान।
सोड़शाब्द वय विलासा, नमो शिरसि सुखदान ॥१॥

* छप्पय *

महल विलासा अली युगलवर आज्ञा पाई।
प्रगटी मधुपुर आय विप्रगृह हरिरस छायी ॥
शैशव पितुगृह त्याग कुंड ललिता सखि आये।
पुरुषोत्तम आचार्य पद्म पद शीश झुकाये ॥
अष्टयाम युग-सेव रत केलिरस दर्शन नित आस।
नौमिग्राम परिक्रमारत जय आचार्य विलास ॥१॥

* दोहा *

अष्टमि सुदि वैशाख की, सखी विलासा आज।
प्रगटी रूप आचार्य के, तारण रसिक जहाज ॥१॥

* बड़ा मंगल *

जय जय विलासाचार्य विलासा नामनी।
महल टहल नित रची सहज अभिरामनी ॥
द्वितीय रूप वैकुण्ठ धनुष कर बाण है।
राक्षस करत विनाश भक्त सुखदान है ॥
भक्तजन सुख दान नित जो सँग तिहि महली अली।
आई जु मण्डल मही अवतर, कृपा संतन उर अली ॥
अष्टमि सुदि वैशाख सु पावन यामिनी ॥१॥
जय जय विलासाचार्य विलास सु दायिका।
युग किशोर रति केलि मंजु नित गायिका ॥
लिय पुरुषोत्तम शरण, गुरु-पद शिरधरी।
भाषेउ गुरु सुख साज, महल तुम सहचरी ॥

महल की तुम सहचरी तिय सुनत अति रस वस भई।
गात प्रतिच्छण महल युग रस, कुण्ड आश्रम सुख लई॥
शिष्यगण हित सोइ रस सुख भायिका ॥२॥
जय जय श्रीविलासाचार्य कुण्ड ललिता सुथल।
प्रतिच्छण कल मुख गात केलि रति युग विमल॥
संग अनन्त महन्त सभा शुठि रस भरी।
एक च्छण हू नहि व्यर्थ गात राधा रही॥
गात राधा-हरी कल मुख, वचन मंजु सुहावने।
कबहु नर्तत चरण थेई थेई दरस दृग मन भावने॥
मंजूषा अनुसार ध्यान धारत अमल ॥३॥
जय जय श्री विलासाचार्य हंस कुल राजने।
मुनि पुरुषोत्तम-पूत जगत जस छाजने॥
दशधा भक्ति प्रचार करत चित लायकै।
परिक्रम नीम सुग्राम करत सुख छाय कै॥
करत है सुख छायकै नित युगल अर्चा रस भरी।
पंचकाल सुहावनि सुठि पराभक्ती अनुसरी॥
पद रज करो प्रदान 'गंगअली' भावने ॥४॥२६३॥

※ छोटा मंगल ※

नमो नमो गुरुदेव विलासी।
सखी विलासा नाम पियारी, कुंज महल की करत खवासी ॥१॥
प्रगटो आय मही मण्डलमें, ब्रजमंडल आई सुखरासी।
पुरुषोत्तम गुरु शरण चरण गही, चितई लीला युगल हुलासी ॥२॥

नास्तिक क्रोधी कामी नर जे, करि शास्त्रार्थ किये पद-आशी।
जेते सन्त शरण पद आये, तिन मिलये आपुन अविनाशी ॥३॥
विमुख-शून्य निरमेउ महिमण्डल, कीने सबहीं धाम-निवासी।
'गंगअली' की अब गुरु बेरी, कोजै रंगमहल की दासी ॥४॥२६४॥

★

* श्रीस्वरूपाचार्यजीकी मंगल बधाई *

[ज्येष्ठ शुक्ला सप्तमी]

* श्लोक *

रससागरपारधौरणीं रसरूपामृतचन्द्रतोरणीम्।
सरसस्मितहास्यवादिनीं सरसां रासकरीं भजामहे ॥१॥

* दोहा *

ज्येष्ठ शुक्ला सप्तमी श्री स्वरूप अवतार।
श्रीविलासगृह जगविदित, गावो मंगलचार ॥१॥
रंगदेवी कलकंठी संग, सहचरि सरसा रूप।
प्रगट भई जग आयके, हो आचारज भूप ॥२॥

* बड़ा मंगल *

जयति स्वरूपाचार्य सरस सहचारि है।
राजत नवल निकुंज निकट पिय प्यारि॥

रंगदेवी अनुवर्तिनी शोभित भारि है।
निज प्राणन सम जानहि प्रिया बिहारि॥
है बिहारी प्रिया प्राणन सम न अन्तर है कदा।
होत नहि छिन दूर रहत है टहल में तत्पर सदा॥
ऐसी प्रीति अभेद है वरणत मति मम हारि है।
जयति स्वरूपाचार्य सरस सहचारि है॥१॥

जयति स्वरूपाचार्य जू सरस सहेली है।
निज स्वरूप सम जान कहत अलबेली है॥
प्राणप्रिय कह्यो नेक कह्यो मम कीजिए।
भूतल प्रगटहु रसिक जनन सुख दीजिये॥
दीजिए सुख रसिक जनही प्राणसम जो प्यारे हैं
पतिव्रत सम एक मेरी अनन्यता उर धारे हैं॥
विधि निसेधहि छाँड़िके गति लोकवेदना पेली हैं।
जयति स्वरूपाचार्य जू सरस सहेली हैं॥२॥

जयति स्वरूपाचार्य सरस सुभगा अली।
प्रिया जाहि नि जान करी आज्ञा भली॥
और हू बात इक गौर ताहि पर दीजिये।
विमुख जीव जो भये मो सन्मुख कीजिये॥
कीजिये सन्मुख मो तिनको सकल विपदा टार कें।
दीजिए शुभ भक्ति दशधा सफल अर्थ ही जार कें॥
तम पाखण्ड नसाय देहु दम्भनि के मद दलमली।
जयति स्वरूपाचार्य सरस सुभगा अली॥३॥

जयति स्वरूपाचार्य जू सरस स्वरूप है।
पाय आज्ञा भू प्रगटे लीला अनूप है॥
हंस वंश जस जगत वितान तनाइयो।
दियो प्रिया आदेश सोइ प्रगट दिखाइयो॥

दिखाइयो सो प्रगट में मतिहीन कहा वरनन करूँ।
लीला अगम अपार वारिधि कौन विधि घट में भरूँ॥
'कलामंजरी' के प्राणधन रसिक सभा के भूप हैं।
जयति स्वरूपाचार्य जू सरस स्वरूप हैं॥४॥२६५॥

*** छोटा मंगल ***

जय जय श्री आचार्य स्वरूप।
आनन्द-कन्द सकल सुख सागर, उदय भये रसिकन के भूप॥
युगल लालके चरण कमलमें, हो अलि पीवत अमल अनूप।
'कलामंजरी' पद रज परसत, मिट गई जग की त्रिविध धूप॥२॥२६६॥

*** दोहा ***

जेठ शुक्ल सप्तमी दिन, उत्सव भयो अनूप।
गृह विलास मंगल महा, प्रगटे लाल स्वरूप॥

*** पद ***

श्री विलास गृह मंगल गावो।
प्रगटे लाल स्वरूपाचारज, सब मिलि बहु वादित्र बजाओ॥
जेठ शुक्ल सप्तमी दिन मंगल, भयो छयो सुख वेगहि धावो।
उत्सव करो भरो उर आनन्द, चरण धोय पी शीस नवायो॥

भक्ति दान दे अभय करेंगे, मात पिता धन्य धन्य कहावो।
'रूपरसिक' प्रभु के गुनगन निधि,
गाय गाय निज हियो सिरावो ॥२६७॥

※ पद ※

जेठ की शुक्ल सप्तमी नीकी।
होय स्वरूपा आई सरसा, सखी जो प्यारी-पी की ॥१॥
कियो मंगल सब जान वधाई, रसिकन मुकटमनी की।
सबके हृदय छयो अति आनंद, सुफल आस भई जी की ॥२॥
महा महोत्सव अति छवि पावत, वर्षा होत रस ही की।
कला मंजरी भज स्वामिनी राधा, ओप भई सब फीकी ॥३॥२६८॥

※ पद ※

आज हमारे मंगल घरी।
सरसा नाम सहेली प्यारी, आई आचारजवपु धरी ॥१॥
ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमि सुखकारी, ता मधि भाग्यकी बेलि फरी।
भक्ति स्वरूप शिरोमणि स्वामी, दीननके प्रतिपाल हरी ॥२॥
उत्सव करो बधाई गावो, पाई आज सजीवन मूरी।
जो जो मनकी हुती वासना, सो सब आज होयगी पूरी ॥३॥
'हर्षिप्रिया'प्रिय दास कृपाबल,शरण भई सब दुख भये दूरी॥४॥२६९॥

※ दोहा ※

रस-सागर तरि तारणी, रस-अमृत शशि सार।
रासकरी स्मित भामिणी, भजहुँ सु सरसा नारि ॥१॥

*** छप्पय ***

सरसा प्रिया आदेश पूर्व गोपीजन प्रचलित।
रासोद्धार प्रचार हेतु प्रगटी महि मधु द्रुत॥
शैशव वय ही आय, बिलासाश्रम पद नायी।
नाम स्वरूप सु पाय, धाम-निष्ठा जु दृढाई॥
प्रगटेउ प्रथम सुरास रस, रासकरी जिहि नाम पुनि।
वंशीवट नित वासरत, जय स्वरूप-आचार्य मुनि॥१॥

*** दोहा ***

शुक्ला ज्येष्ठ सु सप्तमी, सरसा अली अनूप।
प्रगटी रूप आचार्यवर, जय स्वरूप गुरु भूप॥

*** बड़ा मंगल ***

जय जय स्वरूपाचार्य सु सरसा रसभरी।
मोहन महल सु टहल करत प्रतिछन धरी॥
द्वितीय रूप हरि हाथ-पाश हरिधाम में।
कर्सत खलवर नाम महा संग्राम में॥
महा संग्रामे जु कर्सत सोह रूप जु संगमें।
युगल-आज्ञा पायकै प्रगटी जु मही उमंग में॥
ज्येष्ठ सु सप्तमी तिथि जन्म पावन करी।
जय जय स्वरूपाचार्य सु सरसा रसभरी॥१॥
जय जय स्वरूपाचार्य कृपा जन अवतरे।
श्री बिलास आचार्य गुरुपद सिर धरे॥
गुरु-आदेश सुपाय वास वनपति कियो।
तजि वृन्दावन धाम अनत नहि पग दियो॥

अनत नहिं पग दियो कबहुँ टेक जस नन्द लाल है।
वट सु छाया सघन गावत रसिक युग प्रतिपाल है॥
वन विटप ह्वै जासु संग लहि नाम प्रीति रसभरे।
जय जय स्वरूपाचार्य कृपा जन अवतरे॥२॥

जय जय स्वरूपाचार्य अचारज दिनमणी।
युगल सु गाय रिझाय भये रसके धनी॥
वंशीवट सु निवास नित्य लीला जहाँ।
प्रगटेउ रासविलास सहचरी-वपु तहाँ॥
सहचरी वपु रास प्रगटेउ, दृगक रास निहारने।
चवंर हस्त सु युगल सेवी, लाड़ली मन भायने॥
रहे रीझ निहार लालन सीथ दीनी प्रिय कणी॥३॥

जय जय स्वरूपाचार्य सिन्धुरस धोरणी।
रूप रसामृत चन्द्र सु पावन तोरणी॥
मंजु सरस मुख हास सु वदन सुहावनी।
रासकरी सुखरास सु जीवन पावनी॥
पावनी जोवन सदा सुठि देत रसिकन सुख सदा।
सखीभाव प्रदानकारी सखीरूपा मन मुदा॥
करहुँ 'गंगअली' कृपा कटाच्छ सु कोरणी॥४॥२७०॥

* छोटा मंगल *

गुरु स्वरूप युगरूप बताओ।
निगम वदत हरिरूप अचारज, पुनि क्यों नहिं उर प्रिया विताओ॥

प्रथम रासकारी रसमारी, इन नयनन रस रास दिखाओ।
वंशीवट की सघन सु छैया, निज दासन गुरुदेव बसाओ॥
चौपड़ परी सिन्धु भव पावन, फिर क्यों नहि मोय खेल जिताओ।
तुमहि पारणी कहत निगम सब, फिर क्यों नहिं भव पार कराओ॥
'गंगअली' सुन विनय सुहावन, अब गुरुवर मम दृग नित छाओ॥२७१॥

* श्रीमाधवाचार्यजीकी मंगल बधाई *

[आषाढ़ शुक्ला दशमी [

* श्लोक *

मधुरां मधुर प्रभाषिणीं हरिराधारतिरंग साक्षिणीम।
शशिकोटि विकाशसुस्मितां प्रणमामि प्रणतात्मनिस्थिताम॥

* दोहा *

श्री माधव आचार्य को, जस त्रिलोक विस्तार।
'कलामंजरि' शिरमौर मम, मधुरा सखी अवतार॥१॥
साढ़ शुक्ला दशमी तिथि, प्रगटे जगमें आय।
श्रीमाधव आचार्य जू, रसिकन करन सहाय॥२॥

दशमी शुक्ला साद की, प्रगटे माधवाचार्य ।
वृन्दावन की माधुरी, देत श्री गुरु आचार्य ॥३॥

❋ बड़ा मंगल ❋

जै जै श्री माधवाचार्य हँस कुल भूषणा ।
रसिक-राज राजेश रसिक कुल मण्डना ॥
जै जै श्री मधुरा सखी आप करुणा करी ।
प्रगटे रसिक नरेश लगी आनन्द झरी ॥

झरी आनन्दकी लगी जनु स्वाति सम रस बरसहीं ।
चातक समान आपके जन स्वाति सम रस बरसहीं ॥
साद शुक्ला दशमी शुभ तिथि ऋतु पावन सुहावना ।
जैं जै श्री माधवाचार्य हंसकुल-भूषणा ॥१॥

जै जै श्री आचार्य स्वरूप-सुवन ह्वै अवतरे ।
कीनो उत्सव महा सहज मुद सों भरे ॥
बजत बधाई सब मिल मंगल गावहीं ।
कंचन कलश सजाय सुचौक पुरावहीं ॥

पुरावहीं सु चौक मोतिन खम्भ कदली दल रचे ।
ध्वजा तोरण चित्र द्वार पै मनि माणिक के खचे ॥
बजत बाजे शब्द पंच ही, विरद बन्दी उच्चरे ।
जे जै श्रीआचार्य स्वरूप-सुवन ह्वै अवतरे ॥२॥
जै जै श्री राधिका नाम रस लीन हो ।
अगम निगम दुर्लभ रस माहीं प्रवीन हो ॥

राख्यो सर्वोपरि जानि भागवत धर्म को।
कर्म धर्म व्रत नेम दूरि किए भर्म को॥
भर्मको दूर कियो छिनमें प्रेमरस समझाइयो।
भक्ति परा अविरोध पद थाप्यो अधर्म नसाइयो॥
मद सकल दुष्टन को उतार्यो काज जन को कीन हो।
जय जय श्री राधिका नाम रस लीन हो॥३॥
जै जै श्री आचार्य आज एती ढरो।
देवो निज पद सेव कृपा मो पै करो॥
शरणागत प्रतिपाल आप जु दयाल हो।
दीजिये सखी स्वरूप जो रीति रसाल हो॥
हो रसाल रीति जो मोहि युगल छवि दरसाइयो।
मोहि अनन्यता दृढ देहु वृन्दाविपिन वेग बसाइयो॥
कलामंजरी चरण चेरी, भाव रस उरमें भरो।
जै जै श्री आचार्य आज मो पै ढरो॥४॥२७२॥

※ छोटा मंगल ※

नमो नमो श्री मधुरा सहेली।
रूप धारि माधव - आचारज
रसिकन हित आई अलबेली॥१॥
तुम्हरी कृपा बिना अति दुर्लभ,
नित्य निकुंज युगल रस केली।
कला मंजरी तुम्हरी दया से,
निरखे युगल अंस भुज मेली॥२॥२७३॥

* दोहा *

धन्य धन्य सबही भये, गए अमंगल दूरि।
श्री स्वरूप-आचार्य के, प्रगटे जीवन मूरि ॥१॥

* पद *

श्री स्वरूप-आचारज जू कैं, आज भयो कौतुक अति भारी।
प्रगट भये शुभ नाम माधवाचारज आरज सब सुखकारी ॥१॥
मास असाढ़ शुक्ल तिथि दशमी, सर्व दिशा के तिमिर नसारी।
भयो प्रकाश सबनके उरमें, अति बाढ्यो आनँद सिन्धु भारी ॥२॥
धनि धनि देस बेस मध निज निज, मंडल मंगलकारी।
'रूपरसिक' जन धन्य भये सब, निरख नैन सूरत मनहारी ॥३॥२७४॥

* पद *

श्रीस्वरूप के माधव प्रगटे, विमल बधाई गावो हो।
तोरन वन्दनवार पताका, सब ऋषि वास सजावो हो ॥१॥
दशमी शुक्ल अषाढ़ सुहाई, ता मधि आस पुजाई हो।
श्रीवनवास निवासिनि मधुरा, हमरे भागनि आई हो ॥२॥
करिके कृपा दृगनि सुख दे है, नाना विधि रस रीतो हो।
विमुख मूढ़ मन समझि बहुत गई, अब जिय करहु प्रतीती हो ॥३॥
नाम रूप रसना गुण गावो, श्रीगुरुदेव बतायो हो।
'हर्षिप्रिया' यह अवसर बीते, फेर रहे पछितायो हो ॥४॥२७५॥

* दोहा *

हरि राधा रति साचिणी, मधुर प्रभाषिणि बाल।
चन्द्र कोटि छवि सुस्मिता, मधुरा नमो रसाल ॥

* छप्पय *

मधुरा युग-आदेश विप्रगृह प्रगटी काशी।
शिव-आदेश ब्रज आय कोन गुरु आप विलासी ॥
लै माधव सुठि नाम गात मुख राधा - राधा।
महिमंडल पर्यटत काशि गत जब निर्बाधा ॥
संन्यासी गोविन्द कौं कीन शिष्य अपुन हरष।
जयति माधवाचार्य मुनी, नित्य युगल केली-दरस ॥१॥

* दोहा *

शुक्ला दशमि अषाढ़ की, पावन प्रीती भेष।
प्रगटी मधुरा महल की, नाम जु माधव देव ॥१॥

* बड़ा मंगल *

जय जय माधवाचार्य कि मधुरा नामनी।
कोटि चन्द्र परकाश मधुर मुसकावनी ॥
कोकिल निन्दित वाणि, मंजु मुख भाषिणी।
हरि-राधा रतिरंग सु केलि की साक्षिणी ॥
केलि की सो साक्षिणी अलि युगल आज्ञा पाय कै।
द्वितीय शक्ति रूप संगमें जनमी ब्रज मधि आय कै ॥
शुक्ला दशमि अषाढ़ सु तिथि किय पावनी।
जय जय माधवाचार्य कि मधुरा नामनी ॥१॥
जय जय माधवाचार्य शिशु ही गुरुपद धरे।
द्वादश तिलक लगाय गले कंठी धरे ॥

महो अटन व्रत लीन सन्त पावन मुनी।
विजय जु काशी कीन सुयश छायेउ दुनी॥
सुयश छायेउ दुनी सुनिकर यती नाम गोविन्द हे।
धारि वैष्णव रूप आयेउ कहेउ हँसि जु मुनीन्द्र हे॥
यति बन्धन तुम तजेउ धन्य मुनि रस भरे।
जय जय माधवाचार्य शिशुही गुरु पद धरे॥२॥

जय जय माधवाचार्य यती पावन किये।
एक वचन मुख भाख चरण शरणे लिए॥
सोई बलभद्राचार्य आपके शिष भये।
लीनेउ वन-सन्यास युगलके सुख छये॥
युगलके सुख छये मुनिवर-कीर्ति निर्मल जग छयी।
कोटि संन्यासी जो पंक्ति चरणके-शरणैं लयी॥
रसिक जननके हेत सदा वन सुख दिये।
जय जय माधवाचार्य यती पावन किए॥३॥

जय जय माधवाचार्य नाम रस लीन है।
ललना लाल सु गान हस्त लिए वीन है॥
राधांकित उतरीय ललाट सु नाम है।
चहुँ दिशि राधा रसिक छवी अभिराम है॥
छवी है अभिराम अद्‌भुत कथा रसिक सुभावनी।
मत जु अविरुध वापि मुनिवर जगत कीर्ति प्रसारणी॥
'गंगअली' पद्म शरण आधीन है।
जय जय माधवाचार्य नाम रस लीन है॥४॥२७६॥

* छोटा मंगल *

जय माधव आराधत राधा।
वृन्दावन वासी सुखराशी रसिकन रसदाता सुखसाधा ॥१॥
पावन करन यतो वृन्दन कर, नाशन काशीपुर की बाधा।
जासु नाम चण एकहु भाषत, नासत श्रीहरि भव ज्वर साधा ॥२॥
सुमिरण मात्र सिन्धु भव पारी, गोपद होत जु महा अगाधा।
जय जय आचार्य 'गंगाली', गावत गुण रस लहेउ अगाधा ॥३॥२७७॥

* श्रीबलभद्राचार्यजीकी मंगल बधाई *

[श्रावण शुक्ला तृतीया]

* श्लोक *

भवतापहरां भयापहां भवपाथोधितरीं दयापराम्।
दलिताम्बुजनेत्र शालिनीमतिभद्रां मनसा स्मरेन्मुदा ॥१॥

* दोहा *

भद्रा मन भावन भली, अली लडैंती लाल।
रंग देवी कलकंठिके, रहत संग सब काल ॥१॥
श्रावण शुक्ला पत्तकी, तिथि जू तीज अनूप।
प्रगट भये बलभद्र जू, श्री आचारज भूप ॥२॥

श्रावण शुक्ला तीज दिन, प्रगट भए सुख कन्द।
आचारज बलभद्र युत, रसिकन कोटिन चन्द ॥३॥

❀ बड़ा मंगल ❀

जय जय श्री बलभद्र प्रगट भये शुभ घरी।
कुंज-महल ते आय श्रीभद्रा सहचरी॥
रसमय सावन मास ऋतू पावन खरी।
हरियाली शुभ तीज लगी आनँद झरी॥
झरी आनँद की लगी सृष्टी सकल रसमय करी।
हंसवंश की आज हेलो देखो बेली सुफल फरी॥
रसिक जन-मन मोद अतिसय आशा पूजी जुग हरी।
जै जै श्रीबलभद्र प्रगट भये शुभ घरी ॥१॥

जै जै श्री बलभद्र जगतको हित कियो।
जो सर्वोपरि धर्म ताहि सबकों दियो॥
नहि देखें गुण-दोष शरण जो आइयो।
लोक वेद सु अगम सो रस समझाइयो॥
समझाइयो रस महा वैभव श्रीहंस जु सनकादिको।
दियो पथ दरसाय जग श्रीनिम्बभानु अनादि को॥
सत्य युगल स्वरूप सजनी नाहि रस या सम बियो।
जै जै श्री बलभद्र जगतको हित कियो ॥२॥

जै जै श्रीबलभद्र छके रसरास में।
श्रीमधुराकी अली युगलके पास में॥

श्रीरंगदेवी कलकंठी यूथ राजहीं।
युगल लाल मनभावनी सेवा साजहीं ॥
साजहीं सेवा सकल विधि है जु सब गुन आगरम।
लखि तुम्हारी चातुरीपर रीझहीं युग नागरम ॥
है सहायक अति ही श्रीपिय-प्यारि केलि-विलास में।
जै जै श्रीबलभद्र छके रस रास में ॥३॥
जै जै श्री बलभद्र चरण सुखराशि है।
राजत जनके हीय सकल अघनाशि है॥
होत सुविमल प्रकाश मोद मंगल करण।
कल्प वृक्ष जनकाज युगल सखी तिन शरण॥
शरण तिनके 'कलामंजरी' चारु पद नित ध्याइये।
जिनके बल हो सदा निर्भय राधिका गुन गाइये॥
मिलहि सम्पति दम्पति जो नवनिकुंज विलासि है।
जै जै श्रीबलभद्र चरण सुखराशि है ॥४॥२७८॥

* छोटा मंगल *

श्रीबलभद्र सुभद्रा रूपा।
करुणासिन्धु सकल सुखराशी, हंसवंश आचारज भूपा ॥१॥
शरणागतहि अभय पद दाता, तारण पतित परे भवकूपा।
'कलामंजरी' कहा कहि गावत, महिमा अपरम्पार अनूपा ॥२॥२७९॥

* दोहा *

सावन शुक्ल सुपच्छकी, तृतीया तिथिहि अनूप।
वपु धार्यो बलभद्र जू, महा सुमंगल रूप ॥१॥

* पद *

अखिल अभद्र मिटावन कारन, प्रगटे श्री वलभद्राचारज।
सब सुख करन हरन भय तापहिं, रूप धारयो जन सारन कारज ॥१॥
सावन शुक्ल पक्षकी तृतीया, अमित जीव उपदेशक आरज।
'रूपरसिक' जन मन की रे जन, निज की पद-रज परम उदारिज ॥२॥२८०

* पद *

प्रगटे श्रीवलभद्र महामुनि।
तृतीया श्रावण उजियारी, विप्रन कीन्हीं सामवेद-धुनि ॥१॥
भक्त-चकोर रटत नामावलि, चहुँ दिशि होत मधुर सुर गरजनि।
रूप-सुधा-रस चाहत निशिदिन, आज सुभाग्य जगे सुनि श्रवणनि ॥२॥
भद्रा जू करुणाकरि बरसी, नवनिकुंज-लीला मृदु बोलनि।
आरत मोर-चकोर जिवाए, पूरण किये स्वाति की बूंदनि ॥३॥
सन्त-हृदय-सर भरे प्रेम-जल विहरत जहाँ विहारि-विहारिनि।
'हर्षिप्रिया' के भए मनोरथ, श्रीगुरु पाय रसिक-चूडामनि ॥४॥२८१॥

* पद *

सखि मथुरा के द्वार मधुर स्वर, आज मन्दुलरा बाजै री।
मनभावन सावन सुदि तीजै, अति रंगभीनी आजै री ॥१॥
जानि जन्म दिन श्रीभद्रा को, जुरि आई सखि-समाजै री।
मनहर मंगल गावे सोहिलो, साज अनूपम साजै री ॥२॥
सजि सिंगार सिंहासन बैठे, जो रसिकन सिरताजै री।
'कलामंजरी' या छवि आगे, कोटि कामरति लाजै री ॥३॥

* दोहा *

भवसागर तारण तरी, भव संकट जम काल।
दया-परायण कमल-दृग, चिन्तहु भद्रा बाल ॥१॥

* छप्पय *

महल सु आज्ञा पाय सखी भद्रा ब्रज आयी।
प्रगटी मधुपुर नगर शिशु ही काशी जायी॥
लहि संन्यासी रूप लखत गुरु माधव नामा।
प्रगटेउ वैष्णव वेश कृपा गुरु पूरण कामा॥
दशधा-रस आस्वाद रत गहेउ चरण जिहि कृत सुभग
जय बलभद्राचार्य मुनि द्वितीय मनो बलभद्र जग॥१॥

* दोहा *

श्रावण शुक्ला तीज सुठि, सखी जु भद्रा नाम।
गुरु बलभद्र सु रूप धृत, प्रगटी जन अभिराम॥

* बड़ा मंगल *

जय बलभद्राचार्य सुभद्रा सहचरी।
मंजुल मोहन महल टहलनी रसभरी॥
भवसिन्धु कृत पार मनहु पावन तरी।
भव प्रतप्त हेत मेघ रूप सुख रस झरी॥

मेघरूपा सुखझरी सो युगलवर आदेश ते।
द्वितीय रूपा तूण संगमें प्रगटी द्विज-शिशु वेश ते॥
श्रावण शुक्ला तीज जन्म लै सुख करी।
जय बलभद्राचार्य सुभद्रा सहचरी॥१॥

जय बलभद्राचार्य कि माधव-पूत है।
रसिक देन सन्देश मनहु युग-दूत है॥

हल-मूसल उन हाथ इन माल है।
वे दीननके पाल सन्त प्रतिपाल है॥

सन्त जन पतिपाल हैं ये द्वितीय जनु बलभद्र है।
सन्तसेवी मुनि निरन्तर लखत तनक न छिद्र है॥
व्रजरज नित धृत शीप मनहु अवधूत हैं।
जय बलभद्राचार्य कि माधव-पूत हैं॥२॥

जय बलभद्राचार्य रसिक जन हित कियो।
जो सर्वोपरि धाम ताहि सबकों दियो॥
केली युगल चिताय रसिक पावन किये।
लीला दृगन दिखाय हरे सबके हिये॥

हरे सबके हिये गुरुवर कीर्ति पावन ख्यात है।
जाहि निरखत धाम तरुवर राधिका-हरि गात है॥
पाई परा सुभक्ति मुनी जो जन छियो।
जय बलभद्राचार्य रसिक जन हित कियो॥३॥

जय बलभद्राचार्य रसिक वरवण्ड है।
हलधर जस खल जनन देत मुनि दण्ड है॥
नासन जनके पाप और पाखण्ड हैं।
जगमग कीरति भानु परम प्रचण्ड है॥

परम है परचण्ड कीरति विश्वजन हरषावनी।
पावनी जग जन्तु जेते सन्त वृन्दन गावनी॥
'भंगअली' युग केलि वांछित और सब सुख छाड़ि है॥४॥२८३॥

* छोटा मंगल *

जय बलभद्र सुभद्रा आली।
करुणासिन्धु भक्त सुखरासी, रसिक जनन निज दृग प्रतिपाली ॥१॥
युगलकेलि-रस-सिन्धू मुक्ता, चूगत प्रतिच्छण सरस मराली।
शरणागतन अभय पददाता, लखन केलिरस कुंजन जाली ॥२॥
संन्यासी वृन्दन युग-प्रीती, देत सुफल वृन्दावन माली।
तुम से तुम ही निरुपम मुनिवर, जानि ढरहु अपनी 'गंगाली'॥३॥२८४॥

* श्रीपद्माचार्यजी की मंगल बधाई *

[भाद्र शुक्ला द्वादशी]

* श्लोक *

निजवर्गमधुव्रतावलीढं कमनीयांगुलिपल्लवप्ररूढम्।
स्वजनामलमानसप्रसूतं प्रियपद्मापदपंकजं स्मरामि ॥१॥

* दोहा *

राजत नवल निकुंजमें पद्मा पद्म सु नैन।
सोई अवतरी अवनि पर, रसिक जनन सुखदैन ॥१॥
भादव शुक्ला द्वादशी, शुभ तिथि अति अभिराम।
प्रगटी पद्मा सहचरी, धरि आचारज नाम ॥२॥

❋ बड़ा मंगल ❋

जै श्री पद्माचार्य पद्म सम लोचना।
आचारज शिरमौर जगत भय मोचना॥
मोचना भय जगत स्वामी अभय पद दातार हो।
आप समर्थ सकल विधि सों रसिक जन सरदार हो॥
शरण तुम्हारे पद कमल की लई तेहि कछु सोचना।
जै श्री पद्माचार्य पद्म सम लोचना॥१॥

जै श्री पद्माचार्य श्री पद्मा रूप है।
राजत नवल निकुंज जहाँ युग भूप है॥
भूप है जहाँ युगल साँवल गौर श्यामा-श्याम है।
संग रंग कलकंठी लाड लडात आठों याम है॥
सोई अवनी आय प्रगटे सुयश अमित अनूप है।
जै श्री पद्माचार्य श्री पद्मा रूप है॥२॥

जै श्री पद्माचार्य पद्म पद जिन भजे।
भए भवार्णव पार सकल संशय भजे॥
भजे संशय सकल उर बिच नित्यलीला जगमगे।
श्रीधाम वृन्दाविपिन में नित डोलहीं रस रँगमगे॥
दीखहीं तन धूर-धूसर भाव सहचरि मन सजे।
जै श्री पद्माचार्य पद्म पद जिन भजे॥३॥

जै श्री पद्माचार्य पद्म पद शिर धरो।
निज शरणागत-जान कृपा जन पर करो॥

करो जन पर कृपा ऐसी वास श्रीवनको मिले।
राधिकाके पद कमलसों ध्यान इत उत ना हिले॥
'कलामंजरी' को हितू हरिप्रिया-परिकरमें वरो।
जै श्री पद्माचार्य पद्म पद शिर धरो॥४॥२८५॥

* छोटा मंगल *

श्री पद्माचार्य पद्म पद ध्याऊँ।
नासन भय जु अभय पद दाता
निसिदिन तिनको कृपा मनाऊँ॥१॥
जिनकी कृपा अति रीझत स्वामिनी,
सहज वास वृन्दावन पाऊँ।
कलामंजरी प्राण-जीवन-धन,
गाय गाय गुण हियो सिराऊँ॥२॥२८६॥

* पद *

आज बधाई चहुँ दिशि छाई।
पद्माचारज कृपा-दृष्टि करि, निज मूरति अवनी दरसाई॥१॥
मास भाद्रपद शुक्ल द्वादशी, जागे भाग हमारे माई।
आनन्द वृष्टि होत चहुँ दिशि तें, वरनत जस नरनारि सुहाई॥२॥
आशा-वेलि भई है डहडहि, दूब-मनोरथ हरित सुहाई।
वीरबहूटी चाह सुफल भई, चातक पिक जन मत्त लखाई॥३॥
भक्त-हृदय-सर भरे प्रेम-जल, ज्ञान विराग जु कूल बहाई।
'हर्षिप्रिया'की स्वामिनी पद्मा, प्रगटि जगत की हरी जड़ताई॥४॥२८७

* दोहा *

भादव शुक्ला द्वादशी, श्रीबलभद्र सुधाम ।
पद्म सुलोचन अवतरे, पद्माचारज नाम ॥१॥

* पद *

पद्माचारज पद्म सुलोचन ।
मास भद्रपद शुक्ल द्वादशी, प्रगटे हैं दुख-मोचन ॥१॥
रस-मारगकी आज काजहि, तव वपु धरयौ मन रोचन ।
'रूपरसिक' जन तन मन फूले, अब कछु रह्यो संकोच न ॥२॥२८८॥

* पद *

मंगल गावत आज सुन्दरिया ।
प्रगटे पद्माचार्य पोत सम, तारन को जग-दरिया ॥१॥
भादो सुदी द्वादशी बरस्यो, घन आनन्द-बूँदरिया ।
"कलामंजरी" नचत मगन ह्वै,ओढ़ी प्रेम-चूँनरिया॥२॥२८६॥

* दोहा *

निज सुवर्ग मधुकर व्रत अँगुलि-पल्लव मंजु ।
स्वजनाऽमल मन जन्म जो, जय पद्मा पद कंज ॥१॥

* छप्पय *

युग-पद-पद्म आदेश सु पद्मा आई भारत ।
शैशव गुरुपद पाय कृष्ण दरसन हित आरत ॥
नन्द महल नंदलाल लखेउ स्तुति मुख कीनी ।
सो 'कृष्ण-स्तवराज' पाठरत अजहु प्रवीनी ॥
वृन्दावन-वर्णन लिखेउ, अनपम सुठि रस भ्राज ।
जय पद्माचारज मुनि, रस-लेखक रसराज ॥१॥

* दोहा *

भादव शुक्ला द्वादशी, परमा तिथी अनूप।
पद्मा पद्माचार्य बन, प्रगटी जन सुख-रूप ॥१॥

* बड़ा मंगल *

जय श्रीपद्माचार्य सु पद्मा रूपनी।
राजत मोहन महल सखीजन-भूपनी ॥
परिकर हेत मलिन्द-सार सरसावनी।
स्वजनाऽमल मन वृन्द परम हरषावनी ॥
परम जो हरसावनी अलि युगल-आज्ञा पाय के।
कवच रूपहु संग लेके जनमी ब्रजमें आय के ॥
द्वादशि भादव सुदी भई सुख सुवनी ॥१॥
जय जय पद्माचार्य पद्म-सम नैन हैं।
द्वादश तिलक सुअंग, मधुर कल वैन हैं ॥
गौर अंग द्युति चमक द्वितीय जनु मैन हैं।
उचरत राधाकृष्ण सन्त-सुख दैन हैं ॥
सन्त-सुखको दैन हैं जो वास वंशी सुवट हैं।
योग-पीठ जु धाम हरिको, विष्णुजन-पति सुभट हैं ॥
निकट सु तुलसी सुवन दरस नित धेनु हैं ॥२॥
जय जय पद्माचार्य प्रदच्छिण ब्रज सतत।
गए जु नन्दग्राम भावना उर भरत ॥
पलना लख नन्दलाल नन्दके महल में।
गान करेउ स्तवराज भरे रस चहल में ॥

भरे रसके चहल में गुरु गाय रिझये कृष्ण जू।
सोई स्तवराज पावन गात जन गण विष्णु जू॥
देखो पावन छाप पद्म बच रस सतत॥३॥
जय जय पद्माचार्य पद्म पद जिन भजे।
भये भवसिन्धू पार सकल संशय तजे॥
पद्म हस्त जिन शीष धर्यो मुनिराज ने।
पाये कुंज सुराज परम सुख साजने॥
परम सो सुख साजने मुनि पद्म सम सब अंग हैं।
लिखेउ वृन्दावन सुवर्णन ग्रन्थ रसकी गंग है॥
निरखहुँ कृपा-कटाक्ष 'गंग अलि' सुख सजे॥४॥२६०॥

❋ छोटा मंगल ❋

नमो पद्म-पद पद्माचारी।
जग-भय-नाशन अभय-प्रदाता, दुष्ट-दलन मानहुँ कंसारी॥१॥
जिनकी शरण एक क्षण लेत ही, मिलत महल की सेवाधारी।
जिहि पावन रज सिर धारत ही, युगल केलि दरसत दृग भारी॥२॥
जिनके सुमिरन मात्र करे ते, नाशत हैं अघवृन्द अपारी।
जिनकी महिमा सन्त पुराणन, वरणी अनुपम जग सुखकारी॥
'गंगअली' जिहि पदरज बलते, भई पावनी लखहु अघारी॥३॥२६१॥

* श्रीश्यामाचार्यजी की मंगल बधाई *

[आश्विन शुक्ला त्रयोदशी [

* श्लोक *

श्यामां श्यामवयोऽन्वितां परिलसन्नीलाम्बरं बिभ्रती,
माकर्णायत नेत्र पङ्कजभरैरालस्य मातन्वतीम्।
लीला लोलमनङ्ग रंगमधुर व्यापार भारावहां,
राधाकृष्ण-मुखार विन्दमतुलं सञ्चिन्तयन्तीं भजे ॥१॥

* दोहा *

श्रीश्यामाजु सहचरी, श्यामा-आज्ञा पाय।
रसिक जनन हित कारने, अवनि अवतरी आय ॥१॥
अश्विन शुक्ला त्रयोदशी, शुभ मुहूर्त शुभवार।
श्यामाचार्य स्वरूप धरि, लियो श्यामा अवतार ॥२॥

* बड़ा मंगल *

जै जै श्री श्यामाचार्य नाम जो गाइये।
इहि जगमें फल जन्म धरे को पाइये॥
दूर होय दुख-द्वन्द स्रोत सुखको बहै।
श्यामा-श्याम पद-कमल अचल प्रीति रहै॥
रहै प्रीती अचल मन ते स्वप्नहु में नाहीं टले।
संग रसिक सजाति जन अरु बास श्रीवनको मिले॥
निगम अगम महल रस दुर्लभ सुलभ सोइ पाइये।
"कलामंजरी" चित लाय श्यामाचार्य नाम जो गाइये ॥१॥

जै जै श्यामाचार्य भजहुँ मन तिन चरण।
आवागमन विनाश होय तिनकी शरण॥
कल्पवृक्ष सम चारु चरण को जानिये।
पूरहि सब अभिलाष ये निश्चय मानिये॥
मानिये निश्चै ये मेरी सकल विधि सुखदान है।
काहे भटकत ठौर बहु मन इन समान न आन है॥
रसिकन जीवन प्राण हैं प्रतिपाल निज जनके करण।
"कलामंजरी" श्रीश्यामाचार्य जू भजहु मन तिनके चरण॥
जै जै श्रीश्यामाचार्य जू है जिनके धनी।
सहज परा पद पाय बात सब विधि बनी॥
रुचत न कांजी जाह जिन्हें मिल गई अभी।
ताहि न और सुहाय न कछु तिनके कमी॥
कर्म तिनके कछु नाहि रहि महल वैभव सब लख्यो।
कृपा इनकी लेत कोउ जो वेद गुप्त सो करि रख्यो॥
मान नातो करि रखै श्रीश्यामा स्वामिनी आपनी।
कलामंजरी कहै श्री श्यामाचार्य हैं जिनके धनी॥
जै जै श्रीश्यामाचार्य नाम सुखखान है।
जप तप ज्ञान विराग न या सम आन है॥
विधि-निषेध के कर्म धर्म गज सम नशैं।
नाम केहरी सम जिनके बन उर-बसै॥
बसै उर जिनके ये तिन को लेहि प्रिया अपनाय के।
मन्द-मन्द मुख हँसत प्रीतम सुनत जिय ललके पायके॥

शशिकलाकी अली को जू सर्वोपरि नाम प्रमान है।
कलामंजरी सब विधि श्रीश्यामाचार्य नाम सुखदान है ॥४॥२६२॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो आचार्य श्रीश्याम।
शशीकला सँग सहचरि रूपा, राजत श्री वृन्दावन धाम ॥१॥
सहज ढरहि तिनपर पिय-प्यारी, जो जन लेत तुम्हारो नाम।
कलामंजरी पद कमल शरणमें, आवत सुफल भये सब काम ॥२॥२६३

* दोहा *

त्रयोदशी तिथि क्वारकी, शुक्ला परम उदार।
श्यामाचारज जू भये, श्याम सुन्दर वपु धार ॥१॥

* पद * राग विभास *

श्याम सुन्दर वर रूप धारि श्री प्रगटे श्यामाचारज सुखनिधि।
आश्विन मास त्रयोदशी शुभ तिथि, नक्षत्र संयोग सर्वसिधि ॥१॥
श्रीपद्माचारज गृह मंगल, होत बधाई परम मन्त्र विधि।
जे जन आवन आये ते सब, पाई मनवांछित फल की रिधि ॥२॥
एसो उत्सव भयो न ह्वे हैं, जित देखे तितही तित समृद्धि।
'रूपरसिक'जन नाचत गावत,मृदंग बजावत धी धी धीधि धि ॥३॥२६४

* पद * राग गौरी *

श्याम शिरोमणि लाड़िले, जनहित तनु धारी।
शुक्ल क्वारकी त्रयोदशी, करि कृपा अपारी ॥१॥
मंगल गावत जन्मके, जहँ तहँ नर-नारी।
लागत बैन सुहावने, सु समय अनुसारी ॥२॥

आदि अनादी सहचरी, श्यामा सुकुमारी।
छाया राधा - अंगको, आनन ते प्यारी ॥३॥
वीना ललित बजावही, सुर मधुर उचारी।
रतनारे दोउ नैन हैं आलस युत भारी ॥४॥
युगल लाल मुख-चन्द्रमा, दृग किये चकोरी।
पल नहि अन्तर लावहीं, मृदु वयस किशोरी ॥५॥
शरणागत को देत हैं, परा पद दातारी।
'हर्षिप्रिया' विनती करें, अब है मो वारी ॥६॥२६५॥

* दोहा *

श्याम सुवय नीलाम्बरी, आकर्णायत नैन।
युग-मुख-ध्यान-परायणी, जय श्यामा सुखदैन ॥१॥

* छप्पय *

श्यामा-श्याम आदेश श्याम-महि मधुपुर आयी।
चतुर्वेदि-कुल जन्म पद्मगुरु-शरण दृढ़ायी ॥
प्रतिच्छण श्यामा रटत भ्रमत बन धाम ललामा।
लहि श्यामा सुठि दास भये उर पूरणकामा ॥
श्यामा जमुनातट-स्थित, श्याम वेणुवट वास कर।
जय जय श्यामाचार्य मुनि, नित श्यामा पद ध्यान धर ॥१॥

* दोहा *

आश्विन शुक्ला त्रयोदशी श्यामा अलि अवतार।
प्रगटे श्यामाचार्य गुरु, परम रसिक सुखसार ॥१॥

❋ बड़ा मंगल ❋

जय जय श्यामाचार्य प्रीति श्यामा भरी।
दीनेउ आपुन नाम स्वामिनी रस - ढरी॥
नीलाम्बर लस अंग सु श्यामा वय बनी।
आकर्णायत नैन सु शोभा रस-सनी॥
सुफल शोभा रस सनी सो, महल झरोख सुहावने।
नेत्र अनिमिष केलि युगकी, लखत तिय चित भावने॥
प्रतिच्छण ततसुख - प्रीति युगल - सेवा करी॥१॥

जय जय श्यामाचार्य वेश सुखदान है।
वसत सदा हरिधाम रूप कर त्राण है॥
दोऊ युग-आदेश भारत सुभूमि है।
जन्मेउ गुरुवर रूप देव मुख चूमि है॥
देव मुख सो चूमि भूमी मंजु शुचि व्रज देश है।
ताहू में मधुपुर जु पावन तहाँ धृत द्विज वेष है।
आश्विन तेरस शुक्ल तिया गुन गान है॥२॥

जय जय श्यामाचार्य पद्म गुरु पद गहे।
मधुपुर पितुगृह त्याग आय वन मधि रहे॥
पढ़ेउ श्रुति तिन सार सारतम मुनि गह्यो।
श्रीहरिजूको हृदय नाम राधा लह्यो॥
नाम राधा लह्यो रसना, प्रतिच्छण राधा-भजन।
राधे-राधे रटत प्रतिच्छण, ध्यान राधाके चरण॥
दै राधा सुठि नाम, जनन के दुख दहे॥३॥

जय जय श्यामाचार्य शरण में लीजिये।
अपुनो जस अनुराग प्रिया पद दीजिए॥
कब ऐसो क्षण मिलै प्रिया कहि जीजिए।
केली रस सुख सिन्धु सदा उर भीजिए॥
सिन्धु सुख उर भीजिए नित, आय क्षण सब पावनो।
श्याम श्यामा श्याम श्यामा, मंजु मुख से गावनो॥
'गंगअलि' हि वनराज-वास अलि दीजिए॥४॥२८६॥

* छोटा मंगल *

जयति जयति हे अलिवर श्यामा।
देहु कृपा कर मुख भर गाऊँ, येही पावन तुम्हरो नामा॥१॥
श्यामा मंजु अली सुख रूपा देहु वास वृन्दावन धामा।
वंशीवटकी सघन सुछैया, सोहनि-सेवा देवहु वामा॥२॥
सामुहि जमुना लहरि सो निरखहु, नैनन छवि मधुरी अभिरामा।
रसिकवृन्द सँग रसकी चरचा, सुनहु सुखद सुठि चारहु यामा॥
'गंग अली' पर कृपा करहु अब, देवहु चरण सुखद विश्रामा॥३॥२८७॥

* पद * राग खम्माच *

बजत बधाई रसिक नृप अँगना।
श्यामाचार्य प्रगट भये भूदर, लाडलडेकी सखि अंगसंगना॥१॥
आश्विन मास त्रयोदशी शुक्ला, नक्षत्र वार घरी शुभ लगना।
भये निम्बारक कुलमें शोभित, शरद चन्द्र राजत ज्यों गगना॥२॥
रसिक समाज सु लेत बसैया, लखि-लखि पद्माचारज ललना।
कलामंजरी स्वामिनी श्यामा, गावत सुयश भये मन मगना॥३॥२८८॥

* श्रीगोपालाचार्यजी की मंगल बधाई *

[भाद्र शुक्ला एकादशी]

* श्लोक *

वीणावादनतारतानमधुरत्वाविष्करित्रीं मुदा,
श्रीवृन्दावनचन्द्रकृष्ण विलसत्पादाम्बुजध्यायिनीम्।
राधाहार विलासभारकुशलां कुन्देन्दुज्योत्स्नामुखीं,
इच्छाशक्तिरतां हरेः प्रियतरां श्रीशारदां सम्भजे ॥१॥

* दोहा *

दीनबन्धु अशरण-शरण, आचारज शिरमौर।
जगहित आये महल ते, भेजे युगल किशोर ॥१॥
भादो सुदि एकादशी, शुभ मुहूर्त शुभकाल।
प्रगट भई जग शारदा, हो आचार्य गुहाल ॥२॥

* बड़ा मंगल *

जै जै श्रीगोपालाचार्य करहि को तिन सरी।
जनहित जग वपु धारयो जो शारद-सहचरी ॥
मन बुधि वानी चित्तहु ते आगोचरी।
दुर्लभ जो सब भाँति सुल्लभ सोई करी ॥
करी सोई सुलभ रीति धन्य भाग ते पाइये।
करयो अति उपकार जगहित, सुयश कहाँ लौं गाइये ॥

"कलामंजरी" को लहै कृपा विन रीत रसमय अतिखरी।
ज जै श्रीगोपालाचार्य करहि को तिन सरी ॥१॥
जै जै श्रीगोपालाचार्य अवतारी है।
सखी शारदा रूप प्रियाकी प्यारी है॥
श्रीश्यामा अनुहार रूप गुन सील है।
अली कृपाला प्रान कृपाला सुशील है॥
है सुशील कृपाला सब विधि, युगल संग रहे सर्वदा।
केलि अवलोकत रहै जो, छिन एकहुं न अन्तर कदा॥
'कलामंजरी' सोई राधिका आज्ञा सों अवनी पधारी है।
जै जै श्रीगोपालाचार्य अवतारी है ॥२॥
जै जै श्रीगोपालाचार्य प्रेमरस-सागरम्।
आचारज-सिरताज सुवंश उजागरम्॥
दीन जनन प्रतिपाल हरन त्रयतापके।
निज जन सुफल सु आश करन पद आपके॥
आपके पद करन सब सुख, शरण तिनकी जो लई।
परा पद अविरोध पायो, दुसह दुर्मति सब गई॥
'कलामंजरी' अधमी कुटिल भव सिन्धु तारू नागरम्।
जै जै श्रीगोपालाचार्य प्रेमरस-सागरम् ॥३॥
जै जै श्रीगोपालाचार्य विनय सुनि लीजिये।
करहु कृपाकी कोर आपनी कीजिये॥
तुम विन अहो दयाल, कोऊ मेरो नहीं।
सबसों होय निराश शरण तुमरी लही॥

लही तुम्हरी शरण सुखनिधि, कहो अब कहँ जाउँ मैं।
जैसी-तैसी आपकी हूँ, अन्य किसको ध्याउँ मैं॥
कलामंजरी को चरण-चेरी जानि दर्शन दीजिए।
जै जै श्रीगोपालाचार्य विनय सुन लीजिये॥४॥२६६॥

छोटा मंगल

नमो नमो आचार्य गोपाल।
आचारज शिरमौर दयालू, दीन बन्धु दुख हरन दयाल॥१॥
जो जन लेत शरण चरणनकी, तिनको वेगि मिले जुग लाल।
कलामंजरी स्वामिनी राधा, गावत निशिदिन होत निहाल॥२॥२००

* दोहा *

भादो शुक्ला एकादशी, शुभ नक्षत्र गुण जाल।
श्रीश्यामा आचार्य-गृह, प्रगटे श्री गोपाल॥१॥

* पद *

रंगीली गलि घननननन।
बाजे मृदंग धे धिना धेई, नाधिग धिग धामई
बधाई परम सुहाई।
प्रगटे श्रीगोपालाचारज, रसिक मंडली चहुँ दिशि नाचत
ततन ततना॥
भाद्र शुक्ल एकादशी दिन शुभ, नक्षत्र संयोग मुहूरत
सब विधि मंगलदा
'रूपरसिक' जन वारत तन मन,
धन न्यौछावर करत निरन्तर गावत ननना॥२०१॥

❋ पद ❋

श्री श्रीव्रजराज-सुत धारि आचार्य वपु,
नाम गोपाल जग विदित जाने।
कालगुण रहित जाकी कला लोक तिहूँ
रचत सो नाथ जग धर्म थाने ॥१॥
शुक्ल पक्ष भाद्र एकादशी शुभ तिथि,
जन्म शारद निकुंज-सर्व-सेवी।
सकल अधिकार शिरमौर सर्वोपरि,
यूथपति जानिये रंगदेवी ॥२॥
आदि और अन्त परमान जिनको नहीं,
त्रिगुन परते परे केलि खानी।
हानि निज धर्म उर मानि के जगत हित,
करत हैं बोध परमार्थ दानी ॥३॥
परे इनते अधिक और समझे कोऊ,
सो न कहुँ लखि सके कृपा पावे।
'हर्षप्रिया' जोरि कर विनय इनसों करे,
बुद्धि अनुसार सब गीत गावे ॥४॥

❋

❋ दोहा ❋

वीणा वादत युगल ढिंग, इच्छाशक्ति कृपाल।
युग विलास कुशला कला, भजहुँ शारदा बाल ॥

* छप्पय *

महली शारद अली देश कन्नौज सु जायी।
शैशव ही जन अमित हृदय हरिभक्ति दृढ़ायी॥
ब्रजयात्रा ब्रज आय श्याम गुरु पद सिर नाये।
भ्रमण करत हरि आपु अमित लीला दरसाये॥
बहुरि बसे वृन्दाविपिन सतत धेनु-सेवा सुव्रत।
जय गोपालाचार्य गुरु लखत युगल-क्रीड़ा सतत॥१॥

* दोहा *

भादो सुदि एकादशी, महल शारदा वास।
प्रगट भई ब्रज आय कै, श्रीआचार्य गुपाल॥१॥

* बड़ा मंगल *

जय जय गोपालाचार्य सु शारद नामिनी।
करत महल नित टहल करी-गति-गामिनी॥
वीणा वादन तान युगल उर सुखकरी।
श्रीवृन्दावन चन्द पदाम्बुज चित धरी॥
पदाम्बुज चित धरी आली कुन्द इन्दु सु आननी।
युगल किशोर विलास मंजुल स्वमुख प्रतिक्षण गावनी॥
इच्छाशक्ति अनूप सु रमणी भामिनी॥

जय जय गोपालाचार्य द्वितीय प्रभु धाम हैं।
करत्राण धृत रूप अनूप ललाम हैं॥
युगल आज्ञा पाय सु आये धरा में।
प्रगटे द्विजके गेह भक्तिरस परा में॥

भक्तिरत जो द्विज परामें मंजु मधुपुर वास है।
रस बधाई सुठि सुहायी गात तिय जन रासि है॥
भादव एकादशी तिथी अभिराम है॥२॥

जय जय गोपालाचार्य श्याम गुरु पद गहे।
वृन्दावन सन्यास चाणहु नहिं कहुँ चहे॥
गावत श्यामा श्याम पराभक्ति बहे।
अवगुण नहि दृग देख सन्त के गुण गहे॥

सन्तके गुण गहे मुनिवर सन्त आवत नित नये।
करत सेवा वचन-मनसे कर्मसे तनु श्रम जये॥
शरण जु लीनी भक्तिरस ते बहे॥३॥

जय जय गोपालाचार्य द्वितीय गोपाल हैं।
सेवत गाय असंख्य स्वकर प्रतिपाल हैं॥
गोगृह सदाँ निवास सु गोमय थापने।
गोपय नितही पान अन्न नहिं खावने॥

अन्न नहिं कहुँ खात मुनिवर दुग्ध ही युग-भोग है।
धेनु-मूत्र सु औषधि दे हरत जनके रोग हैं॥
'गंगअली' हित देहु लाडिली-लाल है॥४॥२०३॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो हे शारद बाला।
दीन-बन्धु दीनन-दुख-नाशन, प्रगटी आचारज गोपाला॥१॥
गो-सेवा कर गो-व्रत कारी, जपत गोपाल-राधिका बाला।
जो जन लेत शरण चरणनकी, नाशत है भवरोग कराला॥२॥

वंशीवट गो-खिरक सुवामी, शोभा अनुपम सुखद रसाला।
एकबार दृग जीव जो चितवत, होत मोद जन परम निहाला॥३॥
'गंगअली' मुनि द्वारे ठाढ़ी, बरसहुँ किरपा जन प्रतिपाला॥४॥३०४॥

* श्रीकृपाचार्यजी की मंगल बधाई *

[मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा [

* श्लोक *

करेणोत्तरीयं हसन्ती दधानां,
द्वितीयेन फुल्लारविन्द वहन्तीम्।
लसत्पीनवक्षोजसत्पुष्पहारां,
सदा संस्मरेऽहं कृपालामुदाराम्॥१॥

* दोहा *

हंस-वंश के भूषणा, आचारज गोपाल।
कृपाचार्य तिनके भवन, प्रगटे होय गोपाल॥१॥
हेमन्त ऋतु सुखदा अति, पून्यौं मगसर मास।
कृपाचार्य करिके कृपा, प्रगटे सब सुखरास॥२॥

* बड़ा मंगल *

जै जै श्री कृपाचार्य कृपाला ह्वै सखी।
प्रिय प्रानन ते जान पास प्यारी रखी॥

रहत सदा उर फूली युगलकी टहलमें।
रंगअलीके यूथ विराजत महल में॥
महल मोहन में विराजत, गौर वपु चम्पकतनी।
सजे भूषण वसन तनमें, शोभा अति चारू बनी॥
युगल छवि आसक्त निशिदिन, नैन रहे इकटक लखी।
जै जै श्रीकृपाचार्य कृपाला हौं सखी॥१॥

जै जै श्री कृपाचार्य कृपा ऐसी करी।
अवनि अवतरे आप लगी आनंद भरी॥
पून्यौ मगसर मास कि समय सुहावनो।
प्रगट्यो रसिक-नरेश रसिक मन-भावनो॥
भावनो मन रसिक जनको, हंसवंश-उजागरम्।
शरणागत-प्रतिपाल नाशक तिमिर सब गुण-आगरम्॥
रीति अरुणकुमारकी सोई सकल जग विस्तरी।
जै जै श्रीकृपाचार्य कृपा ऐसी करी॥२॥

जैंजै श्रीकृपाचार्य कृपा जिनपर करी।
मिट्यो सकल अज्ञान, रीति रस उर भरी॥
मिल्यो विपिन को वास नाश दुख को कियो।
भयो सहचरी भाव, युगल दरसन दियो॥
दियो दरसन जुगल सहजहि, लेत तेहि अपनायके।
है रह्यो निरभै जगतमें, राधिका-गुन गायके॥
परा पद पायो कहो को करे तिनकी सरवरी।
जै जै श्रीकृपाचार्य कृपा जिन पर करी॥३॥

जैजै श्रीकृपाचार्य कृपा अब कीजिए।
निज शरणागत जान शरणामें लीजिए॥
छाँडि आपको द्वार और जाऊँ कहाँ।
अति दुखदायी ताप त्रिविध जो है महा॥
महा हैं प्रिय ताप तिनकी, आप सब बाधा हरो।
मया कर मोहिं मिलहिं स्वामिनी, दया तुम ऐसी करो॥
कलामंजरी संग रसिकन वास व्रज दृढ़ दीजिए।
जै जै श्रीकृपाचार्य कृपा अब कीजिए॥४॥२०५॥

* छोटा मंगल *

पूनम मगसरकी सुखखानी।
जन्म लियो श्रीकृपाचार्य जू अवधपुरी रजधानी॥१॥
सारस्वत कुल बनिता हिल-मिल मंगल गात सुबानी।
निरखि छबी बदनारविन्दकी, धन्यभाग निज मानी॥२॥
आनँद-कन्द सकल सुख-सागर, रसिकन के रसदानी।
'कला मंजरी' स्वामिनी राधा, चरण-कमल रति ठानी॥३॥२०६॥

* दोहा *

पूरनमासी अगहनी, शुभ नछत्र शुभवार।
श्री गोपाल गृह लियो प्रभु, कृपाचार्य अवतार॥१॥

* पद *

बजत बधाई आज परम सुहाई।
भये कृपाल परम सुखदाई॥ टेक॥

हंसवंश आचारज राई। मंगल गावत मोद बधाई॥
अगहन शुक्ला पूरणमासी।लियो अवतार सकल सुखराशी॥
श्रीगोपालाचारज के घर।कौतुक जुरे अजिर नारी नर॥
जनमत लाल भयो आनँद अति। राजत मनहुँ द्वितीय राकापति॥
'रूपरसिक' जन नैन चकोरा। शीतल भये निरखि मुख ओरा॥२०७॥

* दोहा *

इक कर धृत उतरीय जिहि, द्वितीय सु पद्म रसाल।
पुष्पहार जिहि उर सुभग, सुमिरहु सखी कृपाल॥१॥

* छप्पय *

सखी कृपाला कृपा हेतु लीनी युग-आज्ञा।
प्रगटी अवध सुधाम सारसुत कुल द्विज विज्ञा॥
मानसरोवर आय शरण गुरु लहि गोपाला।
तारे अमित सु जीव कृपा वश भरे कृपाला॥
कृपारूप हरि शक्ति जिन प्रगटी मही रसाल।
कृपाचार्य गुरुपद नमो प्रगटी मूर्ति कृपाल॥१॥

* दोहा *

मास मार्गशिर पूर्णिमा, कृपा अली कृपाल।
प्रगटे ब्रजमें आयके, रसिकन के प्रतिपाल॥१॥

* बड़ा मंगल *

जै जै कृपालाचार्य कृपाला नाम है।
कृपाशक्ति जनु मूर्तिमान प्रिय वाम है॥

जिहि लहि अलि वन जीव जात हरिधाम में।
गावत श्यामा-श्याम भरे सुख जाम में॥
भरे सो सुख जाममें नित, आली अनुपम अमल है।
एक कर उतरीय धारत, एक फूले कमल है॥
पीन वक्ष सुठि हार, सु कुसुम ललाम है।
जै जै कृपालाचार्य कृपाला नाम है॥१॥

जै जै कृपालाचार्य प्रभु-पद-त्राण है।
द्वितीय रूप वैकुण्ठ सु सेवा दान है॥
सोउ रूप लै संग महीतल अवतरी।
मधुपुर पावन कीन रसिक जन दुख हरी॥
रसिक जन दुख हरी मुनिवर, मार्गशिर तिथि पूर्णिमा।
भई पावन जन्म से सुठि, सन्त वृन्दन दुख-दमा॥
शरणागति गोपाल लही सुख खान है।
जै जै कृपालाचार्य प्रभु-पद-त्राण है॥२॥

जै जै कृपालाचार्य कृपा जिनपै करी।
मेटेउ सब अज्ञान युगल भक्ती भरी॥
दीन्हें विपिन निवास जन्मके दुख दहे।
पायेउ सहचरि-भाव, युगल-रस में बहे॥
युगल-रसमें बहे ते जन, श्याम-श्यामा गाय कै।
टहल पायी महलकी सुठि, सोहनी सरसाय कै॥
नाहि कोऊ कर सकत गुरु-सरवरी।
जै जै कृपालाचार्य कृपा जिन पै करी॥३॥

जै जै कृपालाचार्य कृपा मोपै ढरो।
निज शरणागत जान युगलके चित भरो॥
छोड़ कृपाको द्वार जाउँ अब किहि शरण।
काम क्रोध मदलोभ, करहु अब अलि दमन॥
करहु अब अलि दमन अरिवर, देहु वनपति सोहनी।
परम सेवा जान मेवा परम रसमय मोहनी॥
जान 'गंग' उर भाव अली निज मुख वरो॥४॥३०८॥

* छोटा मंगल *

जय जय कृपाचार्य रसदानी।
सखी कृपाला युगल लालकी, मोहन-महल वास रससानी॥
कोशल जन्म लीन सारस्वत-कुल पावन किय विप्र सुहानी।
करत कृपा जन शरण जु आवत,पावन कीरति जिहि जग जानी॥
जासु हृदय प्रविसे विन युगवर, काहु न देत धाम सुख खानी।
कृपाशक्ति श्रुति मुनि जो वर्णित, जीव कृपा धर परम सुहानी॥
'गंगअली' पर ढरहु कृपा अब, गावहि प्रतिच्छण युग गुन मानी॥३०९॥

* पद *

नाम कृपाल सत्य करिवेको, कृपा रूप धरि आये हैं।
नवधा प्रेम-लच्छणा भक्ती, निज जनके हित लाये हैं॥१॥
रहे विमुख जो मूढ़ मन्दमति, तिन जग कर्म कमाए हैं।
शरण भये निश्चल पद पाये, यों सब ग्रन्थ बताए हैं॥२॥
अगहन सुदि एकादशी पावन, शुभ नच्छत्र प्रगटाए हैं।
कुंजन माहि कृपाला देवी, जन त्रय ताप नशाये हैं॥३॥

भूरि भाग्य सोई बड़भागी, जो पद चित्त लगाए हैं।
'हरिप्रिया' जग दुख अति भारी, त्राहि जो बोल सुनाए हैं ॥४॥२१०

* जाह्नवीकार *

* श्री श्रीदेवाचार्यजी की मंगल बधाई *

[माघ शुक्ला पञ्चमी]

* श्लोक *

रणच्चारुपादाम्बुजन्यासनिर्जिद्-
गजेन्द्रामुरोमौक्तिकस्फारहाराम् ।
सुधामाधुरीहारिमन्दस्मितास्यां
भजे देव देवीं सुरप्रार्थ्यदास्याम् ॥१॥

* दोहा *

देवदेविका नाम सखी, यूथ रंगअली माहि।
देवाचारज नाम धरि, भूतल प्रगटी आय ॥१॥
ऋतु वसन्त शुभ पंचमी, खेले युगल वसन्त।
तिहि दिन प्रगटे आयके, आचारज रसवन्त ॥२॥

* बड़ा मंगल *

जै जै श्रीदेवाचार्य धुरंधर धर्मके।
भागवत-धर्म प्रकाशक, नाशक भर्म के ॥

वचन दिवाकर प्रचण्ड तिमिर जगके हरन।
अपने जनके हृदयकमल विकसित करन॥
करन विकसित कमल उर जो, इनके पद-पंकज गहै।
सहज पावै युगल पद परपंच जगके ना रहै॥
अभय जिनकी छाप जगमें पाय छकि रहे प्रेम में।
रहे जग जल कमल जिमि नहिं विधि-निषेध के नेम में॥१॥

जै जै श्रीदेवाचार्य रसिक जन मुकुट मनी।
निज जनके हित महल ते जग अवतरे धनी॥
देवदेविका नाम कृपाला संग जो।
राजति नवल निकुंज, रंगी प्रिय रंग जो॥
रंग प्रिया के रंगी सो जग आचारज वपु धर्यो।
हंस-वंश सुयश बढ़ायो, काज रसिकन को सर्यो॥
युगल छवि माधुर्य रसमें, मत्त मुदित निशिदिन रहै।
जिनकी रहनी कहनी के सम उपमा कवि को कहै॥२॥

जै जै श्रीदेवाचार्य जन्म जगमें लियो।
चहुँ दिशि में आनन्द आज अति छा रह्यो॥
पिय प्यारी मन-भावन जो रसवन्त है।
माघ शुक्ल सुखदा सोई ऋतु वसन्त है॥
है वसन्त ऋतु सुदिन सजनी, पंचमी जु सुहावनी।
श्यामा-श्याम बसन्त खेलहिं, सखि गीत गावहि भावनी॥
यही रस प्रगटावन कारन, आप यहि दिन अवतरे।
नवल मंगल रसिक गावहिं, मोद अति मनमें भरे॥३॥

ज जै श्रीदेवाचार्य दया अब कीजिए।
तुम हो कृपा निधान विनय सुन लीजिए॥
आप विना हे नाथ जाय किसको कहूँ।
तुव चरणन को छाँडि और कछु नहिं चहूँ॥

चहूँ नहिं कछु और अब मोहि दासि अपनी कीजिए।
आस है जिय एक भारी वास श्रीवन दीजिए॥
सुयश गाऊँ राधिका को हृदय दृढ़ ब्रत राखिके।
"जुगल सहचरी" चेरि मेरी कहिये श्री मुख भाखि के॥४॥२११॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो श्रीदेवाचारज।
देवदेविका कुंजमहल ते, प्रगटी प्रगटावन पथ आरज॥१॥
माया काल त्रिगुन भवनिधिते, ऊपर रहे वारि जिमि वारिज।
कलामंजरी शरणागत के, छिनमें सहज सरत सब कारज॥२॥२१२॥

* दोहा *

माघ शुक्ला पञ्चमि सुतिथि, श्रीकृपालकै धाम।
प्रगटे देवाचार्य जू, पुरवन जन - मन - काम॥१॥

* पद *

प्रगटे जन-मन पुरवन काम।
श्रीकृपाल आचारज जू कै, देवाचारज नाम॥१॥
माघ शुक्ल पंचमि तिथि शुभदा, मंगलदा अभिराम।
'रूपरसिक' उर आनंद दायक, सकल गुननके धाम॥२॥२१३॥

* पद *

माघ शुक्ल पाँच उजियारी, प्रगटे देवाचार्य अहा री।
देवदेविका रंगमहलमें, होत रंगकी अति बरषा री ॥१॥
फूली-फूली फिरत सहचरी, आज हमारे उत्सव भारी।
कदली कलशा ध्वजा पताका, द्वारन बाँध्यो वन्दनवारी ॥२॥
मंगल गावो चौक पुरावो, भीतिन पै चीतो सँथिया री।
रस सिंगार सीमा प्रगटाई 'हर्षप्रिया' युग-युग उपकारी ॥३॥
ब्रह्मसूत्र पै भाष्य कियो प्रभु, चार पदारथ के दाता री ॥४॥२१४॥

* पद *

एरी आज सहचरी सब मिलि मंगल गावौ री।
देवाचारज जन्म भयो है फूलन मण्डप छावौ री ॥१॥
ऋतु वसन्त पंचमी दिन आयो, हरष मनावौ री।
मधुर सोहिलो गाय-गाय सखि, साज सजावौ री ॥२॥
झालर शंख सहनाई, द्वार बजावौ री।
मुदित होय मन सब जन जय जय शब्द सुनावौ री ॥३॥
अली कृपालकी देवदेविका, लाड़ लडावौ री।
शोभा निरखि मुखाम्बुज की छवि, बलि बलि जावौ री ॥४॥
लेहु नैनको लाभ फेरि कब अवसर पावौ री।
"कलामंजरी" वांछित पाई, चरनन शीश नवावौ री ॥५॥२१५॥

* दोहा *

शिञ्जन्नूपुर पाद युत, गजगति मौक्तिक हास्य।
भजहु देवदेवी अली, सुर-प्रार्थित जिहि दास्य ॥१॥

* छप्पय *

देव जु देवी अली प्रगट कश्मीर सुदेसु ।
द्वादशाब्द गुरु शरण वसे ब्रज धाम सुकेसु ॥
विश्वविजय कश्मीर गणपति दिय सन्माना ।
भई वायस जस वाणि अरी जे पंडित जाना ॥
प्रगटी सरित सुहावनी जाह्नवी लिखेउ सु आर्य ।
काश्मीर केशर जनक जय जय देवाचार्य ॥१॥

* दोहा *

शुक्ला माघ सुपञ्चमी, जब ब्रज सुखद वसन्त ।
देव देवि आचार्य तनु, प्रगटी करुणावन्त ॥१॥

* बड़ा मंगल *

जय जय देवाचार्य देविका भामनी ।
सुर-प्रार्थित जिहि दास्य युगल हरषावनी ॥
द्वितीय सु क्रीड़ा-कमल नारायण-हाथ में ।
युग-आज्ञा दोउ रूप अवतरी अवतरी साथ में ॥
माघ में कश्मीर महि में, प्रगटि शिशु-लीला करी ।
सारस्वत द्विजवंशको निज जन्म धरि पावन करी ॥
माघ पंचमी सुदि सु पावन यामिनी ॥१॥
जय जय देवाचार्य सु श्रीवन आय कैं ।
कृपाचार्य गुरु वरेउ सु शीश नवाय कैं ॥
द्वादशाब्द बस धाम सुराष्ट्र सुदेश में ।
किय गिरनार सु ध्यान यती के वेश में ॥

वेश यतिके ध्यान कृत कश्मीर आये पुनि मुनी।
गणपति सन्मान कीनेउ, कल सुयश छायेउ दुनी ॥
प्रगटी कमंडल नदी सु कुकर जाय के ॥२॥
जय जय देवाचार्य नृपति सुन प्रार्थना।
कुकुंम प्रगटी कृषी कीन नृप सुख मना ॥
कीने शिष्य अनेक वृन्द सुर सत्कृता।
पायेउ देवाचार्य नाम सुर-सम्यता ॥
नाम सुर-सम्मत सुपायेउ, अमरनाथ जु आय कै।
शम्भु दरसन जब करायेउ, कीर्ति कल जग छाय कै ॥
करत यात्रा आजु लखहु जन गण घना ॥३॥
जय जय देवाचार्य विजय वैजन्ति गर।
शत्रु निरुत्तर कीन महा विज्ञान वर ॥
मुनि-पराजय हेतु क्लिष्ट संस्कृत कहत।
बदली वाणी तबै, काक जस मुख वदत ॥
काक जस मुख वदत द्विजगण गहे गुरु के पद कमल।
कृपा कर तिन अभय कीनो, सुयश छायेउ जग अमल ॥
दीनी भक्ती परा 'गंगअली' सुख अगर ॥४॥२१६॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो गुरु देवाचारी।
देववृन्द जिहि सेवा कीनी, मानेउ आचारज छविधारी ॥१॥
महीदेवहू कपट करत ही, कीने पावन दया जु भारी।
शिव गणनाथ मूर्ति उठि उठि कै,
कीनेउ जिनकर अति सत्कारी ॥२॥

देवदेविका कुंजमहलमें, बसत युगलकी सेवाकारी।
धाम विकुंठ हु हस्त-कमल हरि,
जिहि छवि निरखत रमा पियारी ॥३॥
माया काल त्रिगुण भव जल ते, रहेउ कमलवत प्रथगाचारी।
'गंगअली' पर कृपा करहु अब, देहु सोहनी सेवाधारी ॥४॥२१७॥

सेतुकार
* श्रीसुन्दरभट्टाचार्यजी की मंगल बधाई *

[मार्गशीर्ष शुक्ला द्वितीया]

* श्लोक *

स्फुरत्सुन्दरोदारमन्दारहार—
स्तनद्वन्द्वभारावसीदत्सुमध्याम्।
लसद्हस्तविन्यस्तताम्बूलपात्रां
भजे सुन्दरीं सुन्दराकारछत्राम् ॥१॥

* दोहा *

शशीकला की सहचरी, सुन्दरि सब सुखधाम।
देवदेवि संग कुंजमें, सेवहिं श्यामा श्याम ॥१॥
महिना मारगशीर्षको, शुक्ल दूज अभिराम।
प्रगटे सुन्दरभट्ट जू, देवाचारज धाम ॥२॥

* बड़ा मंगल *

जै जै सुन्दरभट्ट निकुञ्ज विराजहीं।
करत महल में टहल सौंज सब साजहीं ॥

देवदेवि अली रंग सँग नित राजहीं।
श्रीदम्पति रुख जानि करत सब काजही॥
काजही सब करत हरसत, भाव ततसुख में पगी।
दिवस निशि कबहू न जानत, सुरत रस-रंग में रंगी॥
तरण हित भवसिन्धु से जन काज बन्धन टारहीं।
जै जै सुन्दर भट्ट निकुञ्ज विराजहीं॥१॥

जै जै सुन्दरभट्ट सुन्दरी सहचरी।
भूतल प्रगटी आय प्रिया आज्ञा करी॥
प्रगटावन रस-सार सकल सर्वोपरी।
रसिक जनन मन मोद लगी आनन्द झरी॥
झरी आनँदकी लगै अरु नशै तन-मन ताप है।
विचरही मद मस्त भूपर अभय निजकी छाप है॥
प्रिया प्रीतम केलि नवरस रीति जगमें विस्तरी।
जै जै सुन्दरभट्ट सुन्दरी सहचरी॥२॥
जै जै सुन्दरभट्ट हंस कुल दिनमणी।
विमुख उलूकन के मन भई दुविधा घनी॥
नास्यो सब पाखण्ड - तिमिर जो छै रह्यो।
थाप्यो मत अविरोध भक्ति-ध्वज फै रह्यो॥
फै रह्यो ध्वज भक्ति को जग आप सेतूकार हैं।
लई जो जन शरण चरणन सहज ही भव पार है॥
तिनकी सरवर को करे जिनके हैं अस समर्थ धनी।
जै जै सुन्दरभट्ट हंसकुल दिनमणी॥३॥

जै जै सुन्दरभट्ट रसिक-सरदार हैं।
मम सरवस अरु जीवन प्राण अधार है॥
इन पद-पंकज छाँड़ि और सों कहा परी।
भूल न जाने आन युगल की सहचरी॥
"कलामंजरी" कहै किहि विधि, सुयश अगम अपार है।
वेद भेद न पात मानत शेष शारद हार है॥
चहुँ कृपाकी कोर सब विधि, आप अति दातार हैं।
जय जय सुन्दरभट्ट रसिक सरदार हैं॥४॥३१८॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो जय भट्ट श्री सुन्दर।
सुन्दरि रूप यूथ रंगदेवी, राजति सदा निकुञ्जन मन्दिर॥१॥
रसिक सभा मधि इहि विधि सोहत, अमर-सभा जिमि फबहि पुरन्दर।
'कलामंजरी' के आचारज, राजत रहें सदा उर अन्तर॥२॥३१६॥

* दोहा *

मार्गशीर्ष द्वितीया सुतिथि, देवाचारज धाम।
श्रीसुन्दरभट अवतरे, सन्तन मन विश्राम॥

* पद *

श्रीसुन्दर भट सुन्दर रूप।
प्रगटे मार्ग शुक्ल द्वितीया दिन, आचारज बड़ भूप॥१॥
जै जै कार भयो सब पुरमें, प्रगटी सभा अनूप।
'श्रीरूपरसिक' जन तन मन फूले, निरखत श्याम सरूप॥२॥३२०॥

* दोहा *

प्रगटे देवाचार्य के, सुन्दर भट्ट उदार।
सरस बधाए साजिके, गावो मंगलचार ॥

* पद *

गावौ मंगल सरस बधाए।
श्रीदेवाचारज के प्रगटे, श्रीसुन्दरभट्ट परम सुहाए ॥१॥
धनि शुभ मास मार्ग सुदि दुतिया, भए रसिक जन के मन भाए।
अब हरिभजन सुफल सब लैहैं, सदाचार गुरु धरम बढ़ाए ॥२॥
पाखण्डी सब मिटे सुनतही, अद्भुत रस वारिद बरसाए।
'श्रीरूपरसिक'जन जीवनि जनमत, तन मन के त्रयताप नसाए ॥३॥३२१॥

* पद *

मार्ग की दूज शुक्ल मन भावन।
श्रीश्रीसुन्दरभट्ट प्रगट भे, जन अघ-ओघ नशावन ॥१॥
श्रीहरि-भक्ति प्रचार करन हित, धर्यो रूप अति पावन।
'नरहरिदास' आस पूरन करि, आनन्द अतुल बढ़ावन ॥२॥३२२॥

* पद *

देवाचारज लाल कृपा निधि, करुण रूप धरि आये हैं।
आन धर्मको मारतण्ड प्रभु, भाष्यकार जस गाए हैं ॥१॥
मत पाखण्ड तिमिर करि दूरी, लाल-प्रिया दरसाये हैं।
जग विस्तारन भव-भय-टारन, भिन्नाभिन्न जताए हैं ॥२॥
मार्गशीर्ष शुक्ला द्वितीयाको, अपनो भाग सराये हैं।
सुन्दरभट्ट सुभट वसुधा पै, आचारज प्रगटाए हैं ॥३॥

श्रीवृन्दावन पुलिन रम्य थल, बसि बहुकाल बिताए हैं।
'हर्षिप्रिया' कहै सकल शास्त्र मथि, रस माखन दरसाये हैं ॥४॥३२३॥

* पद * तर्ज रसिया *

मेरी आज भई मनमानी री, सखि आज भई मनमानी री।
कुलमण्डन सुन्दर भट प्रगटे, सेतुकार सुखखानी री ॥१॥
सकल जगतमें हंस-वंशकी, कीरति-ध्वज फहरानी री।
विमुखन के मुख छई उदासी, रसिक-सभा हरसानी री ॥२॥
भवन-भवन ते आई सवासिनि, गावत गीत सुवानी री।
मधुर-मधुर स्वर साज बजावत, बन्दी बिरह बखानी री ॥३॥
अगहन सुदि दुतिया की तिथिको, कृपा करी महरानी री।
महल ते प्रगटी सखी सुन्दरी, बात नहीं जग छानी री ॥४॥
नित्य विहार करत दम्पति जहँ, वृन्दावन रजधानी री।
रसिक जनन पै होय कृपाला, भये ता रसके दानी री ॥५॥
ये मारग है अतिहि अलौकिक, बड़भागी पहिचानी री।
कलामंजरी कृपा रावरी, यह रस रीति बखानी री ॥६॥३२४॥

* दोहा *

कला पुष्प कृत हार गल, लटकत कटि कुच भार।
पीक-दान कर सुन्दरी, भजहुँ सु छत्राकार ॥१॥

* छप्पय *

सखी सुन्दरो युगल लाल लहि आज्ञा सुन्दर।
प्रगटी सुन्दर धाम पूत व्रज विप्र पुरन्दर ॥

सुन्दर गुरु श्री देव चरण लहि सुन्दर नामा।
कीनेउ सुन्दर भाष्य मन्त्र सुन्दर जु ललामा॥
सुन्दर सुन्दर कहा न किय सुन्दर नाम सु रट्ट।
निरमेउ सेतू जाह्नवी जय जय सुन्दर भट्ट॥

* दोहा *

माघ शुक्ल द्वितीया तिथि, सुन्दर परम ललाम।
प्रगटे सुन्दर भट्ट जिहि, पावन मधुपुर धाम॥

* बड़ा मंगल *

जै जै सुन्दर भट्ट प्रिया अली सुन्दरी।
गुरु देविका संग युगलके सुख भरी॥
कर ताम्बूल सु पात्र, युगल सेवा रली।
सुन्दर छत्राकार रूप-रस की गली॥
रूप रसकी गली सुन्दरि द्वितीय रूप किरीट है।
ताहि संग लै मही प्रगटो, शिशू सुन्दरि दीठ है॥
अगहन शुक्ला दूज रसिक जन सुख भरी॥१॥
जै जै सुन्दर भट्टदेव गुरु पुत्र हैं।
रची गुरु जाह्नवी वही जु पवित्र है॥
विदुपन अगम अगाध देख किरपा करी।
निरमी सेतु सुघर जु, टीका रस-भरी॥
रची टीका रसभरी सो प्रथम सेतूकार हैं।
जाहि जड जन सिन्धु भवते होत बेड़ा पार है।
विदुष जनन के हेत गुरु सु सुहित्र है॥२॥

जै ज सुन्दर भट्ट मन्त्र युग सिद्ध है।
श्रीमुकुन्द गोपाल कृपा लहि सिद्ध है॥
युगल मन्त्र पै लिखेउ मंजु गुरु भाष्य है।
रसमय सुखद सुहान विदुस जन साख्य है॥
विदुस जन सब साख्य हैं जिहि द्वितीय आप जु भ्रात हैं।
नाम ब्रजभूषण जु सुन्दर रसिक जग विख्यात है॥
परम्परा हरिदास रसिक रस विद्ध है॥३॥

जै जे सुन्दर भट्ट सो सुन्दर वचन है।
सुन्दर मुख मुसुकान सु सुन्दर रचन है॥
सबही सुन्दर कृत्य नाम सुन्दर लहेउ।
सुन्दर युगल सुकेलि लखत दृग सुख छयेउ॥
लखत दृग सुख छायेउ सुन्दर कथा भाषत सुन्दरी।
रसिक सुन्दर सुनत सुन्दर बीण सुन्दर रस भरी॥
सुन्दर युग-अनुराग 'गंगअलि' वचन है॥४॥३२५॥

* छोटा मंगल *

जय जय सुन्दरि अली सुहानी।
प्रगटी सुन्दर भट्ट नाम गहि, सुन्दर जाकी सुभग सुहानी॥१॥
सुन्दर देव-चरण-अनुरागी, शरण लीन गुरुवर अति ज्ञानी।
सुन्दर मन्त्र पाय रति सुन्दर, प्रगटी श्यामाश्याम गुमानी॥२॥
सुन्दर ग्रन्थ सेतु किय सुन्दर, लिय सेतु कर नाम सुहानी।
रचेउ मन्त्र हू भाष्य सु सुन्दर, सुन्दर कथा जासु जग जानी॥३॥
'गंगअली' हित सुन्दर गुरुवर, सुन्दर रति देहु सुखदानी॥४॥३२६

* श्रीपद्मनाभभट्टाचार्यजीकी मंगल बधाई *

[वैशाख कृष्णा तृतीया]

* श्लोक *

पादारविन्दं शिथिलं दधाना
पद्मालया पद्मपरागरंजिता।
पद्मानना पद्मकुचाभिरामा
नमामि तस्याः पदपङ्कजं सदा ॥१॥

* दोहा *

प्रिया-अली पद्मालया, करत टहल दिन-रैन।
सो प्रगटी जग आय के रसिकन को सुख दैन ॥१॥

माधव मास सुहावनो, कृष्ण तीज अभिराम।
पद्मनाभ भट अवतरे, सुन्दर भट्ट के धाम ॥२॥

* बड़ा मंगल *

जय जय भट श्री पद्मनाभ यश गाऊँ मैं।
रसिकन के सिरमौर चरण शिर नाऊँ मैं ॥
राजत नवल निकुंज रूप पद्मालया।
युगल लाल को लाड लडावहिं नित नया ॥
नया नित लाड लडावहीं भरि हृदय प्रेम उमंग में।
श्रीरंगदेवी यूथ माहीं शशिकलाके संगमें ॥
इनके जु परिकरकी हो चेरी रहूँ यह वर पाऊँ मैं।
जय जय भट श्रीपद्मनाभ यश गाऊँ मैं ॥१॥

जय जय श्रीपद्मनाभ भट्ट जग पावन कियो।
निज जन हित अवतार प्रगट अवनी लियो॥
प्रानप्रिया इनकी ये प्रिया के प्रान हैं।
प्रगट करन रस-भेद आये रसखान हैं॥
हैं खान रसके हंस ज्यों पय-नीर सम निरने कियौ।
सब शोधि मतरस-सार गहि पी आय औरन कौं दियौ॥
जो धर्म भागवत विस्तरचौ जग, तिमिर पाखण्ड नाशियौ।
जय जय भट श्री पद्मनाभ जग पावन कियौ॥२॥

जय जय भट श्री पद्मनाभ मन भावने।
श्रीसुन्दर भट सुवन स्वरूप सुहावने॥
नित्य निकुंज विहार सदा मन भावहीं।
महामत्त रस छके युगल गुन गावहीं॥
गुन गावहीं श्री युगलवरके सार सुखमें मन पग्यौ।
श्रीहंसवंशहि दिनमणी को सुयश जगमें जगमग्यौ॥
सब रसिक जनके भूप प्रगटे महल मग दरसावने।
जय जय भट्ट श्री पद्मनाभ मनभावने॥३॥

जय जय भट श्रीपद्मनाभ किरपा करो।
करुणासिन्धु कृपाल आज मो पर ढरौ॥
नाशौ कुमति अज्ञान अविद्या सब हरौ।
देहु चरणकी शरण, प्रेम हिरदय भरौ॥
भरहु हृदय मम प्रेम-सागर, गाऊँ राधा नाम कौं।
निज रसिक जनको सँग पाऊँ, वास श्रीवन धाम कौं॥

कलामंजरी आश उर यह, मोहि परिकर में बरौ।
जय जय भट श्रीपद्मनाभ किरपा करौ ॥४॥३२७॥

* छोटा मंगल *

आज भयौ सब जनमन भायौ।
पद्मनाभ भट प्रगट भये जग,रसिक जनन मन आनन्द छायौ ॥१॥
आचारज सिरमौर जगत गुरु, हंसवंशको सुयश बढ़ायौ।
कलामंजरी इन पद-पंकज, धारि हृदय न अनत भटकायौ ॥२॥३२८॥

* दोहा *

माधव तृतीया कृष्ण को, जागे भाग हमार।
पद्मनाभ श्रीभट्ट सुत, प्रगटे करुणागार ॥१॥

* पद *

आज हमारे मंगल माई।
शुभ वैशाख कृष्ण दिन तृतीया,
पद्मनाभ भट दीन्ह दिखाई ॥१॥
पावन काल बधाई गावौ, नृत्य करौ तन मन हुलसाई।
ऐसो अवसर बहुरि न मिलिहैं, सुख समूह जुरे सब आई ॥२॥
मन-आशा सब पूरण करि हैं, हरिहैं सब जगकी जड़ताई।
पद्मानन हैं नित वपु इनको, सो दे हैं कछु संशय नाई ॥३॥
हंशवंश-कुल सुयश उजागर, देत अभय वरदान सदाई।
'हर्षिप्रिया' के स्वामि रसिकवर,करहुँ कृपा जग ताप नशाई ।४॥३२९॥

* दोहा *

श्रीसुन्दर भट के भये, पद्मनाभ महाराज।
सबहीं को सुखदा सदा, अति नीको दिन आज ॥१॥

* पद *

आजु सुमंगल दिन अति नीको।
श्रीसुन्दरभट जू के प्रगटे, पद्मनाभ भट जीवन जी को ॥१॥
सब जन सरस बधाई गावत, पूर्यो सब अभिलाष सुही को।
माधव कृष्ण तीज धन उत्सव, सुगम अमित सुखकर सुधरी को ॥२॥
सदाचार मग धर्म बढावनि, दरसावन सुख प्यारी-पी को।
शरण आइहैं सोइ ह्वैहैं, 'रूपरसिक' रसिकन को टीको ॥३॥३३०॥

* पद *

श्री आचारज पद्मनाभभट, जग माहीं प्रगटाए हैं।
सुन्दरभट्ट मुदित अति मनमें, उत्सव महा मनाए हैं ॥१॥
कदली-खम्भ रूपे अति सुन्दर, मोतिन चोक पुराये हैं।
ध्वजा पताका तोरण द्वारे, कंचन कलश सजाए हैं ॥२॥
मधुर सुरन सब साज बजत हैं, लागत परम सुहाए हैं।
मंगल गावत नारिवृन्द मिलि, अंग सुधंग दिखाये हैं ॥३॥
रसिक समाज छयो अति आनंद, फूले अंग न माए हैं।
माधव मास कृष्ण तृतीयाको, कुलको मण्डन आए हैं ॥४॥
जाचक जनकी भीर द्वार पै, जय जय शब्द सुनाए हैं।
'कलामंजरी' स्वामिनी राधा, मनवांछित फल पाए हैं ॥५॥३३१॥

* दोहा *

पद्मानन शुचि पद्म कुच, पद्म-पराग सुरंज।
पद्मालय श्री सहचरी, नमो तासु पद - कुंज ॥१॥

* छप्पय *

पद्मालया जु पाय ललन - लालन आदेसु ।
प्रगटी मधुपुर आय, विप्रगृह शैशव वेसू ॥
गुरु सुन्दर सन पाय मन्त्र युग भाष्य सुहाने ।
तस शास्त्रार्थ महान चार किए ग्रन्थ महाने ॥
नाभिकमल-सुत विधि यथा पद्मनाभ सुठि नाम ।
जयति तथा पद्मनाभ भट, ब्रह्मा द्वितीय ललाम ॥१॥

* दोहा *

वैशाखी कृष्णा जु तिथि, तृतीया परम सुहान ।
पद्मनाभ भट प्रगट भये, रसिकन हित सुखदान ॥१॥

* बड़ा मंगल *

जय पद्मनाभ सुभट्ट सखी पद्मालया ।
जुगल लाल को लाड लडावत नित नया ॥
पद्मानन कुच - पद्म पद्म-रज-रञ्जिता ।
द्वितीय रूप वैकुण्ठ कलंगी सिर धृता ॥
कलंगी सिर धृता सोई युगल आज्ञा पाय कै ।
आय महिमण्डल सु प्रगटी विप्र गृह सरसाय कै ॥
माधव कृष्णा तीज जगतमें सुख छया ॥१॥
जय पद्नाभ सुभट्ट गुरु सुन्दर लहे ।
जिन चरणन परताप सिन्धु भव दुख दहे ॥
कीने अमित चरित्र गुरु जब धाम गत ।
सदा ग्रन्थ अनुराग लिखत युग - ध्यान - रत ॥

ध्यानरत युग सदा मुनिवर, जनन भक्ति सिखावहीं।
हंस सनकादिक सुनारद निम्बरवि मुख गावहीं॥
पूर्वाचारज रीति टेक सबही गहे॥२॥

जय पद्मनाभ सुभट्ट रसिक मनभावने।
सुन्दर भट्ट सपूत जु परम सुहावने॥
परम धर्म श्रुतिसार चित्त नित भावहीं।
प्रतिछ्‍ण शास्त्र विचार सन्त गुण गावहीं॥

सन्त-गुण गावहि गुरुके, रासरस सुख विलसि हैं।
करत सेवा लाल-ललना, कथा अनुपम सरस हैं॥
रसिक रसके भूप प्रगटे रसिक पथ दरसावने॥३॥

जय पद्मनाभ सुभट्ट रसिक सुख साज हैं।
परम - धर्म - अनुराग केहरी गाज है॥
वन वंशीवट-छाँह सन्त सँग भ्राग हैं।
जिहि विधि युग अनुराग करत सोइ साज हैं॥

करत है सोई साज मुनिवर, सन्त जिहि विधि सुख लहैं।
देख निशिदिन आचरण जिहि, सन्त सोइ रहनी रहैं॥
बरसहुँ रस 'गंगअलि' मेघ जस गाज है॥४॥२२॥

*** छोटा मंगल ***

जय जय पद्मालया सुहानी।
जुगलकिशोर आदेश पायकै, प्रगटी आय सन्त सुखदानी॥१॥

द्वितीय नाम पद्मनाभभट्ट गुरु, पावन कथा रसिक जग जानी।
वंशीवट शुचि वास जु मुनिवर, भाषत सन्तन युगल कहानी ॥२॥
परम धर्म-अनुराग केहरी, रसिक सिखावन रहनी महानी।
'गंगअली' पै कृपा करहुँ गुरु, जानु आपुनी अली गुमानी ॥३॥२२३॥

* श्रीउपेन्द्रभट्टाचार्यजी की मंगल बधाई *

[चैत्र कृष्णा चतुर्थी]

* श्लोक *

अनाप्नुवंस्तन्मुखचन्द्रमस्तुलां,
विधुर्गतः खं त्रपयाब्जराजः।
जलेऽपतन्नाप्तमुखम्बुजश्रीः
तामिन्दिरां चेतसि भावयामि ।१॥

* दोहा *

सखी इन्दिरा युगल की, जो पद्मालय संग।
सो प्रगटी आचार्य हो, प्रगटावन रस रंग ॥१॥
चैत्र कृष्ण चौथको, चहुँ दिशि छयौ अनन्द।
प्रगटे भट्ट उपेन्द्र जू, मेटन जन-मन-फन्द ॥२॥

*** बड़ा मंगल ***

(१)

जय जय भट श्रीउपेन्द्र प्रिया-पद रति महा।
हंसवंश - आचार्य सुयश बरनौं कहा॥
तरणि-सुतनया - तीर बृन्दावन राजहीं।
भागवत धर्म प्रवीन सिंह सम गाजहीं॥
गाजहीं सम सिंह सुनि पाखण्ड-गज जग ना रह्यो।
शरणागत जनको दियो रस, वेद दुर्लभ जिहिं कह्यो॥
महलमोहन युगल विलसहिं, ताहि रस छाकैं अहा।
जय जय भट श्रीउपेन्द्र प्रियापद रति महा॥१॥

(२)

जय जय भट श्रीउपेन्द्र सुगति अगतिन दई।
लिए सबनि अपनाय शरणपद जिन लई॥
कर्मठ कायर क्रूर कपट करनी तजी।
जग समझायो असार भक्ति तिन उर सजी॥
सजी उर तिन भक्ति रसमय, युगल दृग दरसाय के।
दियो सहचरि भाव अद्भुत लिये धाम बसाय कै॥
दया दृष्टिहिं पाइ के जन लखहि लीला नित नई।
जय जय भट श्रीउपेन्द्र सुगति अगतिन दई॥२॥

(३)

जय जय भट श्रीउपेन्द्र अमित करुणा करी।
कुंज महलतें प्रगटी इन्दिरा सहचरी॥

जो राजति हैं यूथ शशिकला रंगदेवि कें।
कहत न बनत स्वरूप युगल पद सेविकें॥
सेवी पद श्रीयुगलचन्दकी, सो आचारज वपु कियौ।
राधिका-पद-कंज - रस - अलि, होय पी औरनि दियौ॥
कृपामय विग्रह प्रगट मनौ रसिक जन जीवनि जरी।
जय जय भट श्रीउपेन्द्र अमित करुणा करी॥३॥

(४)

जय जय भट श्रीउपेन्द्र, पद्मनाभहि सुवन।
जिनकी कीरति विमल छाइ सबहि भवन॥
गूढ़ रीति आरुढ़ विकट व्रत आचर्यौ।
गरवौ महारसराज भाव निज उर धर्यौ॥
धर्यौ उर निज भाव अस जिहि, सकल सुर नर मुनि थकें।
कृपा पाय श्रीस्वामिनी की, दिवस-निशि रहैं रस-छकें॥
'कला मंजरी' हौं रहौं, विलसहिं जहां श्रीराधारवन।
जय जय भट श्रीउपेन्द्र, पद्मनाभहि सुवन॥४॥३३४॥

❋ छोटा मंगल ❋

जय जय इन्दिरा अलि अलबेली।
छाकी रहैं नित छकन-माधुरी,
लखि विहरत युगवर भुज मेली॥१॥
रस शृंगार रूप-गुन खानी,
रंग - शशिकला की जु सहेली।
'कलामंजरी' वन्दत तोहि भामिनि,
मोहि करहु अपनी मनमेली॥२॥३३५॥

* पद *

गावौ सब जन जन्म-बधाई ।
पद्मनाभ भटजू के प्रगटे, श्रीउपेन्द्र भट सब सुखदाई ।।१।।
धन्य चतुर्थी चैत्र मास वदि, धन्य धन्य दिन घरी सुहाई ।
सदाचार गुरु धरम भजनविधि, वेद रीति हरि कीर्ति बढ़ाई ।।२।।
लैं हैं शरण सो निरभै ह्वै हैं, पैहैं ज्ञान प्रेम प्रभुताई ।
उत्सव महिमा अपरम्पारा, 'रूपरसिक' उर आश पुराई ।।३।।

* पद *

शुभ मंगल दिन आज बधायो ।
नाम उपेन्द्र जगत जस पावन,पद्मनाभ के लालन आयो ।।१।।
दीक्षा दिन शुभकाल मुहूरत, कृष्णा चैत्र चतुर्थी पायो ।
संस्कार करि मन्त्र दियो गुरु,सुर नर नाग भयो मन भायो ।।२।।
मंगल गान निसान बजे शुभ,वसुधा सकल विदित जस छायो ।
सामवेद-धुनि करत महामुनि, विप्रन आशीरवाद सुनायो ।।३।।
फिरें भक्त दसहू दिसि फूले, नवधा को न्योतो पहुँचायो ।
'हर्षप्रिया'अब भयो मनोरथ,जगत बिना यह अवसर पायो।।४।।३३७

* पद *

आज सखी सर्वस हम पायो ।
श्रीउपेन्द्रभट प्रगट होयकैं, अवनि प्रेमरस स्रोत बहायो ।।१।।
चैत्रमासकी कृष्ण चतुर्थी, शुभ दिन भयो सकल मनभायो ।
रसिकन के हित'कलामजरी'इन्दिरा नित विहार दरसायो।।२।।३३८

* दोहा *

मुख-छवि लज्जित चन्द्रमा, गयउ स्वर्ग अभिराम।
प्रविशेउ पद्महु बारि मयि, जयति इन्दिरा वाम ॥१॥

* छप्पय *

अली इंदिरा पाय युगल आज्ञा सिरधारी।
जनमी भारत मही विप्रगृह पावनकारी॥
पद्मनाभ गुरु चरण शरण वृन्दावन पाई।
मानहु द्वितीय उपेन्द्र भये देवन सुखदायी॥
प्रतिच्छण रसना नाम जासुकी युग जपत।
जय उपेन्द्र आचार्य भट, कीरति व्रजनन जगमगत ॥१॥

* दोहा *

चैत्र कृष्ण तिथि चतुर्थी रसिकन उर आनन्द।
प्रगट भये महि आपकैं, भट जु देव उपेन्द्र ॥१॥

* बड़ा मंगल *

(१)

जय जय भट्ट उपेन्द्र अली वर इन्दिरा।
महल प्रीति नित रचो वदत राधा गिरा॥
आनन जासु विलोक कमल अरु चन्द्रमा।
वसे वारि नभ माहि सुलज्जित दुख भ्रमा॥
दुख भ्रमा अति लज्जिता जिन कांति मुख फीकी बड़ी।
धाम कुण्डल रूप संग में जन्म धारण महि बड़ी॥
कृष्णा चैत्र चतुर्थि अवतरी रसभरा ॥१॥

(२)

जय जय भट्ट उपेन्द्र मही पावन करी।
पद्मनाभ गुरुचरण आय निज सिर धरी॥
पराभक्ति उपदेश गुरुवर जिन दियो।
रसिकन हित सुख दैन आपु निज सिर लियो॥
लियो निज सिर आपु मुनिवर धाम श्रीवन राजहीं।
तिलक द्वादश श्यामबिन्दू-छटा मंजु सुहावहीं॥
शरण गहत जे चरण प्रेम नैनन झरी॥२॥

(३)

जय जय भट्ट उपेन्द्र सुगति अगतिन प्रदा।
लिये जु मन अपनाय भये ते उर मुदा॥
कामी क्रोधी क्रूर कपट तज पद गहे।
तज असार संसार नेह युगवर रहे॥
नेह युगवर रहे गुरुवर जन युगल दरसाय कै।
भाव दीनो सुठि अलीको हिये धाम बसाय कै॥
कृपा जासु की पाय लखत लीला सदा॥३॥

(४)

जय जय भट्ट उपेन्द्र द्वितीय उपेन्द्र है।
वे जु बसत वैकुण्ठ मही गुरु इन्द्र है॥
वे देवन के ईश ये रसिक नरेन्द्र हैं।
वे बलि छलेउ जु यज्ञ माहि ये खलेन्द्र है॥

अलेउ इन जु खलेन्द्र गुरुवर अचारज प्राचीन हैं।
धाम वनपति कुटी मध्ये जमुन-तट आसीन हैं॥
'गंग अली' हित देहु जु वास वनेन्द्र है॥४॥२३६॥

❋ छोटा मंगल ❋

जयति इन्दिरा अली सयानी।
युगलकिशोर-रसामृत प्रतिछण, पीवत तृप्ति न तनक जु मानी॥१॥
जपत रसन निज लालन ललना, छण एकहु नहि विरम मदानी।
प्रगटी भट्ट उपेन्द्र रूप धरि, जग जीवन भव पारन ज्ञानी॥२॥
पद्मनाभ गुरु वल बस वनपति, रसिकन हित सुख दीन्ह सुहानी।
'गंग अली' पर कृपा करहु अब, जानि आपुनी गुरु सुखदानी॥३॥२४०॥

* श्रीरामचन्द्रभट्टाचार्यजी *

[वैशाख कृष्ण पञ्चमी]

* श्लोक *

कामाङ्गनाकोटिमनोज्ञरूपां
मुखप्रभानिर्जितरात्रिभूपाम् ।
स्वीयप्रियास्नेहनिधानरूपां
रामां स्मरे कृष्णमनोऽनुरूपाम् ॥१॥

* दोहा *

रामा अभिरामा अली, सेवत श्यामा श्याम ।
सो प्रगटी जग आयके, भट उपेन्द्र के धाम ॥१॥
माधव मास सुहावनो, पञ्चमी कृष्णा जान ।
रामचन्द्र भट अवतरे, करो सुमंगल गान ॥२॥

* बड़ा मंगल *

(१)

जय जय भट श्रीरामचन्द्र रामा अली ।
महल ते प्रगटे आय, सदा प्रणतनि पली ॥
जुगल भजन हिय भाजन महारस सागरम् ।
सुयश सकल संसार रूप गुन आगरम् ॥
आगरं गुण रूप सब विधि महत रीति आरूढ़ हैं ।
उरवसी ज्यौं बसहिं उर निज तत्त्व जो अति गूढ़ है ॥

* दोहा *

यहि खिलावनहार इनके खिलौना ललना लली।
जय जय भट श्रीरामचन्द्र रामा अली ॥१॥

(२)

जय जय भट श्रीरामचन्द्र सम भान है।
भये प्रफुल्लित जन उर कमल समान है॥
चकाचौंध भये विमुख उलू अज्ञान है।
हरन तिमिर पाखण्ड सुवचन प्रमान है॥

वचन परम प्रमाण जिनके, लिये व्रत अति बाँकुरो।
धार्यो धर्म अनन्य महा जिहि, कबहुँ लगत न टाँकुरो॥
निरखहि नव कुंजकेलि उपेन्द्र करुणा दान हैं।
जय जय भट श्रीरामचन्द्र सम भान हैं॥२॥

(३)

जय जय भट श्रीरामचन्द्र कुलमनि उदित।
जिन गुन विमल विचार होत जन-मन मुदित॥
कोविद करहि बखान शील-मन्दिर महा।
निज जन तोषत करै सु रस-वृष्टि अहा॥

अहा रस-वृष्टि करत हैं हरन सब मन संश के।
विमल आरज पथ बतायो विविध भाँति प्रशंस के॥
सम्प्रदाय शिरोमणि सनकादि नारद निम्बदित।
जय जय भट श्रीरामचन्द्र कुलमणि उदित ॥३॥

(४)

जय जय भट श्रीरामचन्द्र करुणानिधि।
शरणागत प्रतिपाल आप हो सब विधि॥
कृपादृष्टि करि मोहि करहु निरबाधिका।
देहु वृन्दावन वास मिलावहुँ राधिका॥
राधिका जु मिलावहु करुँ दरस नैन छकाय कै।
लेहु जगमें लाभ जीवन 'कलामंजरी' गायके॥
अली श्रीरँग शशिकलाकी तुमहि मम सरबस सिधि॥४।३४१

* छोटा मंगल *

रामचन्द्र भट कृपानिधान।
सकल तिमिर या कलीकालके, मेटन प्रगटे अद्भुत भान।
जन-उर-पंकज भये प्रफुल्लित, दुखित उलूक दुष्ट अनजान।
'कलामंजरी' बन्दत पद-रेनू, तुम विन नाहिन है गति आन॥२।३४२

* दोहा *

धनि दिन वदि वैशाखकी, शुभ पंचमी समाज।
श्रीउपेन्द्र गृह अवतरे, रामचन्द्र भट आज॥

* पद *

सब जन गावो हरष समाज।
श्रीउपेन्द्र भट जूके प्रगटे, रामचन्द्र भट आज॥१॥
धनि दिन वदि वैशाख पंचमी, मुहुरत सुफल सकाज।
जामधि अद्भुत सुख बरसायो, मिट गयो तिमिर अकाज॥२॥

अमित जीव ह्वै शरण उधरि हैं, उलँघि उदधि भव पाग।
'श्रीरूपरसिक' जन गाय गाय जस, ह्वै हैं सब सिरताज ॥३॥३४३॥

* दोहा *

माधव कृष्णा पंचमी, प्रेमाभक्ति प्रकाश।
रामचन्द्र श्रीभट्टजू, प्रगट तिमिरको नाश ॥१॥

* पद *

बधाइ बाजैरी माई श्रीउपेन्द्र दरवाजे।
सुयश भाग्य सीमा प्रगटाई, वेद मधुर धुनि गाज ॥१॥
शुभ वैशाख कृष्ण पांचे दिन, रामचन्द्र भट्ट राजै।
गावो मंगल चौक पुरावो, होइहैं पूरण काजै ॥२॥
देव विमान कुसुम झरिकीनी, परे प्रेम के पाजै।
जगत सेतु बांधन हित प्रगटे, दुष्टन करहिं पराजै ॥३॥
सोधे महि भक्तन सुख देहैं, नाम सुनत भ्रम भाजै।
'हर्षिप्रिया' अब निरभय रहिये, परे धर्म को जहाजै ॥४॥३४४॥

* पद *

गावौ मिलि मंगल सोहिलौ ऐरी।
रामचन्द्र भट्ट प्रगट भये जो रामा स्वामिनी मेरी ॥१॥
महामधुर रस बरसखन को, अरु ढहान भ्रम-ढेरी।
करि अनुकम्पा भूतल आई, लाल-प्रियाकी प्रेरी ॥२॥
सुनरी सजनी बहुतक युग जो, सुकृत किये हैं घनेरी।
सो पाई वैशाख मास को, पंचमि तिथी अँधेरी ॥३॥

पुजवहिं आज सकल जन मनकी, जो अभिलास बढ़ेरी।
'कलामंजरी' रीझि स्वामिनी, करहि चरणकी चेरी ॥४॥२४५॥

* दोहा *

मुख शोभा जित चन्द्रमा, कोटि काम जस रूप।
प्रिया-स्नेह-पाली सदा, सुमिरहु रामा भूप ॥

* छप्पय *

प्रगटी युगल अदेश सखीवर नाभा रामा।
सन्तकाज द्विज-गेह सु परवन मधुपुर धामा ॥
गुरु उपेन्द्र कर सीस रहस गोष्ठी शुचि ग्रन्था।
निरमेउ आपुन मंजु निम्बजन सुखप्रद पन्था ॥
नसेउ नास्तिक मुख वचन रचेउ शास्त्र शुठि सेतु।
रामचन्द्र भट्ट पद नमो आचारज रसकेतु ॥

* दोहा *

माधव कृष्णा पंचमी, तिथि पर परम सुहान।
रामचन्द्र जू भट्ट गुरु, महि प्रगटे सुखदान ॥१॥

* बड़ा मंगल *

(१)

जय जय रामचन्द्र सुभट्ट सु रामा भामनी।
युगल महल की टहल करत दिन यामिनी ॥
कोटि रति सम रूप विजित मुख चन्द्र है।
प्रिया प्रेमरसकूप महा रसिकेन्द्र है ॥

महा रसके इन्द्र है गुरु द्वितीय रूप जो हार सँग।
प्रगटी मथुरा आयकै विप्रगृह अनुराग रग॥
पंचमी माधव कृष्ण सु कीनी परवनी ॥१॥

(२)

जय जय रामचन्द्र सुभट्ट सुहावन बात है।
राम जु कस तुम नाम कहेउ हरषात है॥
राधा अच्चर रा जु म मोहन मदन।
अच्चर राम जु अर्थ जान राधारमन॥
जान राधारमन अर्थ जु सुनत हर्षे सन्त हैं।
विमल रसिकन पथ बतायो, केलि राधाकन्त है॥
अनुपम गुरुवर कथा विपिन सरसात है॥२॥

(३)

जय जय रामचन्द्र सुभट्ट द्वितीय जनु राम हैं।
उन लिय रघुकुल जन्म सु ये द्विज धाम हैं॥
वे मारत खल-ग्राम क्रोध ये काम हैं।
वे मुनिजन सुखधाम ये रसिक विश्राम हैं॥
रसिक जन विश्राम हैं ये दीन पूरण काम हैं।
धाम वृन्दावन जु राजत चरित मंजु ललाम हैं॥
एक मुख नहि वरण सक कोउ महागुणके धाम हैं॥३॥

(४)

जय जय राम चन्द्र सुभट्ट लेखनी हाथ है।

लिखत प्रतिच्छण केलि सु रसमय गाथ है ॥
द्वादश तिलक सु अंग श्याम बिन्दु माथ है।
दुलरी कंठी कंठ रसिक जन साथ है ॥
रसिक जन संग नित्य मुनिवर लिखेउ ग्रन्थ सुहावनो।
रहस गोष्ठी नियम-नारद विश्व जीवन पावनो ॥
'गंगअली' कर विनय दरस युग नाथ है ॥४॥२४६॥

*** छोटा मंगल ***

जय जय रामा अली चितहारी।
जिहि सब अलिजन हंसि हंसि पूछत, कस तुम नामा रामाधारी ॥
रा अच्छर कर अर्थ राधिका, मा अच्छर कर मोहनधारी।
रामचन्द्र सोइ भट्ट रूप धरि, प्रगटी जन जन पावनकारी ॥२॥
आचारज निम्बार्क सुहावन, महिमण्डल विख्यात महारी।
पावन ग्रन्थ रसिक हित निरमन, लीनेउ गुरु जग में अवतारी ॥३॥
'गंगअली' पै अब ढरहु गुरु, देवहु मोहनी सेवा-धारी ॥४॥२४७॥

२१ * श्रीवामनभट्टाचार्यजी *

[ज्येष्ठ कृष्णा षष्ठी]

*

* श्लोक *

प्रावृट्प्रफुल्लनवचारुकदम्बपुष्प-
हारा मुखद्युतिविनिर्जितचन्द्रतारा ।
कान्ताङ्गसङ्गजनिताङ्कनिदर्शनाय
वामाऽकरोदभिलसन्मुकुरं स्वसख्याः ॥१॥

* दोहा *

श्रीरँगदेवी यूथ महँ, अलि श्रीश्यामा श्याम ।
जग आचारज वपु धर्यो, जहँ स्वामी भट राम ॥१॥
गावौ मंगल सोहिलौ, साजौ मंगल साज ।
ज्येठ कृष्ण छठि सुखद मिलि, बड़भागन ते आज ॥२॥

* बड़ा मंगल *

(१)

जेष्ठ कृष्ण छठि शुभ तिथि आई ।
भई सकल रसिकन मन भाई ॥
रूप धारि आचारज राई ।
श्रीवामा सहचरि प्रगटाई ॥

प्रगटाई वामा सहचरी श्रीकमला जु की जो अली ।
रँगदेवी के यूथ राजहिं नित सेवहिं लालन-लली ॥
सोइ जग अवतरी आनि वामन जु भट्ट कहायके ।
मुदित रसिक-समाज आनँद रहयौ अब जग छायकै ॥१॥

(२)

ऐरी सजनी सब मिलि आवौ ।
चारु चन्दनै चौक लिपावौ ॥
मणि - मुक्ता लैके जु पुरावौ ।
सुन्दर कदली खम्भ रुपावौ ॥

खम्भ रूपावौ कदलिदल के, हेम कलश सजाइये ।
सुभग शुभ साँथिया चीतो, भीतहि सींक लगाइये ॥
तोरण पताका और वन्दनवार द्वार बँधाइये ।
सुघर सौरभ युक्त सौंधौ लेइ भवन सिंचाइये ॥२॥

(३)

विविध भाँति बाजे बजवावौ ।
मधुर सुरन मिलि मंगल गावौ ॥
करहु नृत्य बहु भाव दिखावौ ।
दुग्ध दधि लै अंग छिरकावौ ॥

छिरकावौ अंग दुग्ध दधि हरद के सर गारिकै ।
जै जै उचारो हर्ष युत मुख, देहु सर्वस वारिकै ॥

सखी एरी आज शुभ दिन, फिरि कहो कब पाइये ।
स्वामिनी दिखरायौ यह सुख, अपनो भाग सराइये ॥३॥

(४)

रामचन्द्र भट-सुत दुलरावों ।
वामन भट्ट कहि लाड लडावों ॥
सुन्दर सुरति हिये जु बसावों ।
निरखि छवी नित बलि बलि जावों ॥
जावों बलि बलि नित दयामय रसिकराज नरेसकी ।
गाऊँ कहाँ हौं यश थकित भई रसना शारद शेषकी ॥
पर बान मोहि नित परी कीरति हँसवंशहि गानकी ।
'कलामंजरी' सुनत रीझहि कुवँरि श्रीवृषभानुकी ॥४॥३४८॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो जय भट श्रीवामन ।
वामा रूपा अमित अनूपा, रसिक जननकी अति मन भावन ॥१॥
सो आचारज वपु धरि आई, महागोप्य रस जग प्रगटावन ।
'कलामंजरी' सब सुखकारी, शरणागत त्रय ताप नसावन ॥२॥३४९

* दोहा *

श्रीरामचन्द्र भट धाममें, प्रगटे पूरण काम ।
श्रीवामन भट भासकर, भक्तन के विश्राम ॥१॥

* पद *

* राग सारंग *

सब जन जनम-वधाई गावों ।

रामचन्द्रभटजूके प्रगटे, श्रीवामनभट निरखि सिहावौ ॥१॥
धनि दिन मास जेष्ठ वदि षष्ठी,करि उत्सव अभिलाष पुरावौ।
अति फूलौ आनन्द सर फूलौ, लखि कौतुक दुख दूर बहावौ ॥२॥
शरणागत होय जनम सुधारौ, विमुखन कैं उर शूल बढ़ावौ।
भक्ति भाव गुरु धरम प्रकाशौ,'रूपरसिक'वांछित फल पावौ॥३॥३५०

* दोहा *

ज्येष्ठ कृष्ण छठि शुभ दिवस, कृष्ण तत्वको रूप।
प्रगटे वामनभट्टजू, सोधे ग्रन्थ अनूप ॥१॥

* पद *

वामनभट्ट जनम दिन आली, सुभग बधाई बाजै री।
घर-घर तोरन धुजा पताका, नौबति घन ज्यौं गाजैरी ॥१॥
ऋषि समूह जे वनके बासी, भेंट फूल-फल लायेरी।
मंगल गावत सुघर भामिनी, कोकिल कंठ सजायेरी ॥२॥
पूरण काज करें वसुधाको, भये रसिक मनभायेरी।
कृष्ण जु जेष्ठ रूप-झरि लागी,छठि तिथि प्रभु प्रगटायेरी ॥३॥
दधि-दुर्वा अच्छत रोरी लै, पावन बैन सुनाए री।
हंस सनक नारद निम्बारक, तिहि मग नाम धरायेरी ॥४॥
वामानाम कुंज-क्रीड़ा जहँ, आचारज वपु धारेरी।
'हर्षिप्रिया' वनराज वसाये, जागे भाग हमारेरी ॥५॥३५१॥

* दोहा *

कुसुमित वर्षा ऋतु कदम हार द्युति लिय चन्दन।
दर्पण कर युग दरस हित जय वामा जग वन्दन ॥

❀ छप्पय ❀

वामा युगलादेश मही मंडल प्रगटायी।
शैशव वय हो आय गुरु पद शरण सुहायी॥
वंशीवट विश्राम सघन छाया चितहारी।
सरि जमुना को स्नान जपत मुख राधा प्यारी॥
रसिक वृन्द नित संग में करत कथामृत पान।
वामनभट्टाचार्य जय तम पखण्ड नस भानु॥१॥

❀ दोहा ❀

ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी सुतिथि, साजो मंगल साज।
वामनभट्ट प्रगटे मही, भवसागरजु जहाज॥

❀ बड़ा मंगल ❀

(१)

जय जय वामनभट्ट द्वितीय जन् वामना।
वामा अलि युग सेव सोहनी महामना॥
चन्द्रमुखी गलहार कदम्ब सुहावनो।
सेवा दर्पण हस्त सु युगल दिखावनो॥
युगल कों सु दिखावनो नित द्वितीय अंगद रूप संग।
युगल आज्ञा पायकें प्रगटी मही अनुराग रंग॥
ज्येष्ठ कृष्ण सुठि छठी जयन्ती गावना॥१॥

(२)

जय जय वामन भट्ट गुरु श्रीराम है।
वंशीवट तरु छाँह सुखद विश्राम है॥
सरिता जमुना स्नान करत जलपान है।
युग-सेवा रसलीन नहीं तनु ध्यान है॥
नहीं तनु कर ध्यान मुनिवर गात श्यामा श्याम है।
संग चहुँदिस घिरे रसिकन हंस कुल अभिराम है॥
वन यश सौरभ बहत मंजु ललाम है॥२॥

(३)

जय जय वामनभट्ट हंसकुल केतु हैं।
जो जिहि भावहि आत सोई तिन देत हैं॥
भवसागर कृत पार सुमञ्जुल सेतु हैं।
तिनहू सन अति हेत अघी खल प्रेत हैं॥
अघी खल जो प्रेत जन हैं, पाय मानव देह कों।
करत हैं नहि भजन हरिकों, मरत हैं कुल नेह कों॥
देत तिन्हे करि कृपा सु वनपति खेत हैं॥३॥

(४)

जय वामन भट्ट रहस रस भावने।
नारद-नियमानन्द- गोष्ठि नित गावने॥
गुरुकृत पावन ग्रन्थ सुमिर सुख पावने।
शिष्य सुवृन्द अनेक स्वमुख सों पढावने॥

पढ़ावने निज मुख गुरुवर, पट सुढाया बैठके ।
ध्यान श्यामा प्रतिच्छण रहे रसमें पैठके ॥
'गंगअली' लहि कृपा वधाई गावने ॥४॥२५२॥

*** छोटा मंगल ***

जय जय वामा अली ललामा ।
मोहन महल टहल नितकारी, जपत प्रतिच्छण श्यामरु श्यामा ॥१॥
वामनभट्ट रूप अवतारी, करन हेत रसिकनके कामा ।
रसिक चातकन स्वाती रूपा, रसिक भीमहित जल सुखधामा ॥२॥
हंसवंश अवतंस-शिरोमणि, केली कथा ध्यान निशि यामा ।
रससागर की मंजु मराली, रस-मुक्ता भच्छत गुण ग्रामा ॥३॥
'गंगअली' पर करहु कृपा अलि गावहुँ प्रतिच्छण युगल-सुनामा ॥४॥२५३

२२ * श्रीकृष्णभट्टाचार्यजी *

[आषाढ़ कृष्णा नवमी]

* श्लोक *

कृष्णामहमभिवन्दे युगलपदाम्भोजभावनामुदिताम् ।
कृष्णरसायनतृप्तां साक्षादिव सिन्धुजां क्लृप्ताम् ॥१॥

* दोहा *

कृष्णा राधाकृष्णकी, अली प्रिये अभिराम ।
रसिकन मन आकर्षनी, धरयो कृष्णभट नाम ॥१॥
वदी सुनौमि आषाढ़की, बाढ़ी ओप अपार ।
लीन्हों वामन भवनमें, कृष्णभट्ट अवतार ॥२॥

* बड़ा मंगल *

(१)

जय जय भट श्रीकृष्ण हैं बलि या नामकी ।
जाहि जपत दरसाहि लीला निज धामकी ॥
जो धामनि शिरमौर यमुनातीर में ।
जहां क्रीडत पियप्यारी कुञ्जकुटीर में ॥
नव कुटिर कुंजन विलसहीं, पियवर छके रस रंगमें ।
रंगदेव्यादि सखि अष्ट परिकर सहित रहै नित संगमें ॥

श्रीकमलाजु की अली कृष्णा प्रिया श्यामा श्यामकी।
जय जय भट श्रीकृष्ण हौं बलि या नामकी ॥१॥

(२)

जय जय श्रीकृष्णभट नाम सुखसार है।
परम अनूपम कुंज केलि दातार हैं॥
अतिहि अलौकिक महा मधुर रस खान है।
सकल सारको सार न या सम आन है॥
है न या सम आन जिनके याहि को जु अधार है।
सोई धन्य हैं या जगतमें नर, निरखैं नित्यविहार है॥
ये नाम प्रिय नहिं लगहिं जिनको बार-बार धिकार है।
जय जय श्रीकृष्णभट्ट नाम सुखसार है॥२॥

(३)

जय जय श्रीकृष्ण भट नाम गुन गाइये।
कृष्णा अलीकी कृपा जु नित्य मनाइये॥
हियरस अनुभव होय मिटहिं भव-बाधिका।
मिलत वृन्दावन बास दरस दै राधिका॥
राधिका दैं दरस पावहिं सहज सहचरि भेषकों।
अधिकार तिनको मिलहि श्रीरंगदेवि यूथ प्रवेशकों॥
अस नाम तजि कहौ क्यों विविध साधननमें भटकाइये।
जय जय श्रीकृष्णभट नाम गुन गाइये॥३॥

(४)

जय जय श्रीकृष्ण भट नाम सर्वोपरी।
हम पायो ये कृपा दत्त रासेश्वरी॥
मो निरधनको सर्वस धन सुखदान है।
याहि छाँड़िके मोहि अवलम्ब न आन है॥
है आन नहि अवलम्ब अब चातक ज्यों स्वाती नीर है।
इनकी कृपा सों मिलहि जो धरैं नीलाम्बर चीर है॥
'कलामंजरी' हंसवंश प्रशंसि हैं सब परिहरी।
जय जय श्रीकृष्णभट्ट नाम सर्वोपरि॥४॥३५४॥

❋ छोटा मंगल ❋

नमो नमो भट कृष्ण पियारे।
छकै रहैं छवि श्याम प्रियाकी, ध्यान सदा उर अन्दर धारें॥१॥
मायाकाल कर्म तजि त्रिगुनहि, आप सबन सों रहत जु न्यारे।
'कलामंजरी' कृष्णारूपा, कुंजमहल-रसमें मतवारे॥२॥

❋ दोहा ❋

शुभ दिन मास अषाढ़ वदि, सुठि नौमी सुखदाय।
प्रगटे श्रीयुत कृष्णभट, श्रीवामन गृह आय॥१॥

❋ पद ❋

वामनभट पट मंडन प्रगटे।
कृष्ण नाम अभिराम रसिकवर।
शुभ दिन मास अषाढ़ अमित परब,

सुठि नौमी मधि अमित मोद घर ॥१॥
लोक-लोक सब ओक ओक में,
हरषित भये देवनारी नर।
'रूपरसिक' रसिकनिकी जीवन,
युग-युग कृपा करत जन ऊपर ॥२॥३५६॥

* पद *

कृष्णकृपाकी दृष्टि भई है।
आज महा मंगलमें मंगल, वसुधा मोद विनोद भई है ॥१॥
नौमी कृष्ण अषाढ़ भाग्यबल, आनन्दकी सरिता उमई है।
गावो मंगल नवनिधि पावो, प्रेमामृत झरि लागि रई है ॥२॥
फूले सन्त-सरोरुह कानन, वंशीवट तट भीर भई है।
गरजे वेद भेद सब नास्यौ, नाम-धुनी जहँ-तहाँ छई है ॥३॥
कोलाहल रह्यौ छाय विपिन में, हंसवंश कल कीर्ति नई है।
'श्रीहर्षप्रिया'कह्यु करत वीनती, कृष्णा स्वामिनि शरण लई है ॥४॥

* पद * ३५७॥

रसिक चकोर मन मोद भयो।
श्रीआचार्य शिरोमणि भट युत, कृष्णचन्द सम उदयो ॥१॥
खलदल निशि अघ तम सम नाश्यौ, विमल प्रकाश छयो।
प्रेम-सुधा सींचे निज जनको, तन मन ताप गयो ॥२॥
मास अषाढ़ असित नौमी को, जीवन लाभ लयो।
'कलामंजरी' पूर्ण इन्दु ज्यौं, नित आनन्द दयो ॥३॥३५८॥

*** दोहा ***

युग-पद-ध्यान परायणी, कृष्ण-रसायन तृप्त ।
वन्दहु कृष्णा सहचरी, द्वितीया जनु दृप्त ॥१॥

*** छप्पय**

कृष्णा गुरु आदेश मही ब्रजकी प्रगटायो ।
यौवन पितु आदेश जबै वैराग्य दृढ़ायो ॥
वामन गुरुपद शरण बसे वृन्दावन धामा ।
कर मंजीर सुहान कीरतत श्यामा-श्यामा ॥
कृष्ण पुत्र गुरु लाय मृत, जस दीनेउ गुरु आय ।
तस दासन रच्छत जयति, कृष्णभट्ट गुरुराय ॥१॥

*** दोहा ***

नौमी कृष्ण अषाढ़ शुचि, शुभ नखत्र शुभ वार ।
कृष्ण भट्ट प्रगटे मही, कृष्णा अली अवतार ॥१॥

*** बड़ा मंगल ***

(१)

जय जय कृष्ण सुभट्ट सु कृष्णा भामनी ।
करत महल की टहल सु परम सुहावनी ॥
कृष्ण-रसायन तृप्त कृष्ण मुख भासनी ।
वामा गुरु के संग, युगल रस रासनी ॥
युगलरसकी रासनी सो, धाम कंकण रूपनी ।

युगल आज्ञा मही प्रगटी, रसिक जनकी भूपनी ॥
नवमी कृष्ण अषाढ़ सु कीनी पावनी ॥१॥

(२)

जय जय कृष्ण सुभट्ट सुखद जिन वान है।
राधा राधा नाम रटत सुख खान है॥
कोउ विद्या मान भरे कुल मान है।
कोउ रूप सुहान भरे इतरान है॥
भरे इतराने जु कोउ भट्ट जु अभिमान है।
राधिकाकी हमजु दासी नाहि हरि-हर जान है॥
सोई रसिकन हेत करत नित दान है॥२॥

(३)

जय जय कृष्ण सुभट्ट नाम सरसावनो।
रसमय कुंज सुकेलि देत हरषावनो॥
अतिही अलौकिक मधुर वेद गुण गावनो।
विधि रुद्रादिक जपत हृदय सुख भावनो॥
हृदय सुखकर भावनो सो जीव वृन्दन पावनो।
जाय प्रेम न नाम से जग नरक सोई जावनो॥
रसिकन जीवन धार प्रिया संग गावनो॥३॥

(४)

जय जय कृष्ण सुभट्ट नाम गुण गाइये।
जा बल राधाकृष्ण प्रेम-रस पाइये॥

तरसत है जिहि हेतु नन्दको पूत है।
सो रसकेली दान करत सु अकूत है॥
देत है सु अकूत केली, विरिञ्चादिक याचनी।
रसिक जाकों परा भाषत रही निगम छुपावनी॥
'गंगअली' उर नाम सोई बसाइये॥४॥

*** छोटा मंगल ***

जय जय कृष्णा अली पियारी।
महल टहल में छकी प्रतिच्छण, सेवा निज हथ सबही सँवारी॥१॥
प्रगटी कृष्णभट्ट लैं नामू, महिमण्डल शोभा सुखसारी।
वंशीवट सुठि छाँह वास किय, वामनभट्ट कृपा उरधारी॥२॥
राधा राधा जपत सदा सुख सेवत अष्टयाम पिय प्यारी।
रसिक वृन्द मधि सोहत ऐसे, जिमि तारन में चन्द्र उजारी॥३॥
'गंगअली' पर करहुँ कृपा गुरु, मिलै दरस लीला चितहारी॥४॥२६०

२३ * श्रीपद्माकरभट्टाचार्यजी *

[पौष कृष्णा अष्टमी]

* श्लोक *

यमुनातीरनिकुंजे मधुकरपुंजे विनिद्रतरुवृन्दे ।
पद्मामहमभिवन्दे रटन्तीं कृष्णेति कृष्णेति ॥१॥

* दोहा *

श्रीपद्माभा सहचरी, रसदाता गुन खान ।
सो प्रगटी रंगमहल तें, रसिकन जीवन प्राण ॥१॥
तिथी पौष बदि अष्टमी, धरो नखत शुभवार ।
प्रगटे पद्माकर सुभट, गावौ मंगलचार ॥२॥

* बड़ा मंगल *

(१)

श्रीपद्माकरभट्ट जगत में अवतरे ।
सखी पद्माभा श्रीआचारज वपु धरे ॥
महा दुर्लभ रससार प्रचुर सोई कर्यौ ।
छायौ जग पाखण्ड प्रगट हो सब हर्यौ ॥
हर्यौ सब पाखण्ड जग ज्यों भान तिमिर नशात है ।
रसिक जन मन मोद अरु इन विमुख खल पछितात है ॥

कृपा करि दई श्रीचरणकी शरण सो भव निस्तरै ।
श्रीपद्माकर भट्ट जगतमें अवतरे ॥१॥

(२)

श्रीपद्माकर भट्ट रसिक सिरमौर है ।
जासु कृपा आधीन सु युगलकिशोर हैं ॥
तव चरणन तज टहल महलकी को लई ।
सेवत सर्वस जान सुलभ तिनको भई ॥
भई तिनको सुलभ अतिशय सेव श्यामा-श्यामकी ।
निरखहीं निज नैन शोभा, वृन्दावन निज धामकी ॥
सहज मिलहि निवास कुंजन अस कृपाकी कोर है ।
श्रीपद्माकरभट्ट रसिक शिरमौर है ॥२॥

(३)

श्रीपद्माकरभट्ट को जगत प्रताप है ।
शरणागत प्रतिपाल कृपानिधि आप है ॥
नहि देखत जन दोष दया कर ढरत है ।
अपनावत लखि दीन ताप त्रय हरत है ॥
हरत हैं त्रयताप जनके, भूलि कबहुं न परि हरैं ।
ऐसो अकथ सुभाव तिनको, कवन विधि बरनन करैं ॥
धन्य आये शरणमें, अभय जिनकी छाप है ।
श्रीपद्माकरभट्ट को जगत प्रताप है ॥३॥

(४)

श्रीपद्माकर भट्ट मो जीवन प्राण हैं।
हौं सर्वस धन आप नहीं कोई आन है॥
सब विधि से अति अधम सकल गुनहीन हूं।
करौ कृपाकौ दान शरण मैं दीन हूं॥
दीन हूं मैं शरण तुम्हरी आप एक आधार हैं।
मरजी है जिहि विधि करहु अब सकल तुम पर भार है॥
'कलामंजरी' स्वामिनी जू, तुम्हरो नातो मान है॥
श्रीपद्माकरभट्ट मो जीवन-प्राण हैं॥४॥३६१॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो भट श्रीपद्माकर।
प्रगटे हंसवंश कुल-मण्डन, खण्डन अखिल ताप भवभय हर॥१॥
पद्माभा सखि कुंज सदनमें, नव नव लाड लडात युगलवर।
'कलामंजरी' गुणगण गावत, छवि लखि धरि राखत अपने उर॥
॥२॥३६२॥

* दोहा *

असित पौष आठै सुदिन, धनि धनि दिश विदिशानि।
प्रगटे पद्माकर प्रभो, कृष्णभट्ट गृह आनि॥१॥

* पद *

त्रिभुवन पावन करन हरन दुख, सब सुख रस बरषावन जनमे।
उमगे कृष्णभट्ट नहि मावत, बैठे सकल मुनीश्वरगनमें॥

असित पौष आठै दिन धनि धनि, दश दिशि होय रही रसिकन में ॥१
घर घर मोतिन चौक पुरत शुभ, कलश विविध रंग धुज फहरन में ॥
जुगल प्रेम आकर पद्माकर, कीने 'रूपरसिक' दरसन में ॥२॥३६३॥

* पद *

प्रगट भये पद्माकर स्वामी ।
पौष कृष्ण की सुभग अष्टमी, पावन जोग वेद में नामी ॥१॥
श्रीऋषि भक्तिके राजा, नहि राजें तिनकी मति भ्रामी ।
प्रगट प्रताप दिनेश उदै जस, विश्व भक्ति तिन करि फिर जामी ॥२॥
आन धर्म तिन हित प्रभु मृगपति, आय नमें सिर करत गुलामी ।
एक छत्र महिमंडल कीनो, वार-वार गुरु चरण नमामी ॥३॥
विकसे सन्त कंज हरषाने, सकुचे मूढ़ कुमुद खल कामी ।
अब कहँ शोच 'हर्षिप्रिया' फूली, निश्चय मन औंडी जड़ जामी॥४॥३६४

* पद *

चलोरी हेली कृष्णभट्ट दरबार ।
श्रीपद्माकरभट्ट आचारज, आज लियो अवतार ॥१॥
गान निशान मंगल धुनि छाई शोभा अपरम्पार ।
आनन्द मगन भये नर-नारी, भूले सकल सँभार ॥२॥
खल मद वाद नाश करि कीन्हो, भिन्नाभिन्न प्रचार ।
'कलामंजरी' पद्माभा आई, प्रगटावन रस सार ॥३॥३६५॥

* दोहा *

यमुना तट कुसुमित तरु, मधुकर गुञ्जित कुंज ।
कृष्ण-कृष्ण निज मुख रटत, वन्दहु कृष्णा मंजु ॥१॥

*** छप्पय ***

पद्माभा प्रिय अली अदेसु महल सुचन्दा।
प्रगटी मधुपुर गात नित श्रीनँदनन्दा॥
श्रीकृष्ण गुरु कृपा बसेउ वृन्दावन धामू।
प्रतिच्छण रसिकन संग गात श्रीश्यामा श्यामू॥
पद्म समान सु अंग जिहि पद्मनयन कृत ध्यान।
जय पद्माकरभट्ट गुरु, रसिकन हित सुखदान॥२॥

*** दोहा ***

पौष कृष्ण तिथि अष्टमी, रसिकन प्राणाधार।
पद्माकर भट प्रगट भये, गावहु मंगलचार॥१॥

*** बड़ा मंगल ***

(१)

जय पद्माकर भट्ट तृतीय सुठि नाम है।
पद्माभा जिहि नाम अंग अभिराम है॥
श्रीवैकुण्ठ सुधाम कांची रूप सह।
लै जु जुगल आदेश सु आई पूत मह॥
पूत सो महि करन आई, गेह द्विज पावन कियो।
पौष कृष्णा अष्टमी तिथि, आय द्विज-शिशु तन लियो॥
कृष्णभट्ट पद शरण जु लीन ललाम है॥१॥

(२)

जय पद्माकरभट्ट पद्म जस अंग है।
पद्म-से दृग परम मोहन देत जन रस रंग है ॥
पद्मसे पद मृदुल अतिही पद्म जैसे कर-कमल।
पद्म जैसे वचन मुख में मधुर मृदु अति ही अमल ॥
मधुर मृदु अति ही अमल वच, पद्म जस जल में बसे।
सुन श्रवण जन सिन्धु भवसे होत पार जु सुख लसे ॥
पद्म जस रहनी अमल जस संग है ॥२॥

(३)

जय पद्माकरभट्ट रसिक रस साज है।
नास्तिक जन-मृग हेतु गाज मृगराज है॥
रसिक सदा जिन संग युगल गुण गाज है।
वीणा वेणु मृदंग सुमञ्जु समाज है॥
मञ्जु है जु समाज सुन्दर, मध्य तिन गुरु भ्राज हैं।
सिन्धु भवके पार हेतु सजी मंजु जहाज है॥
जिन हेतु रस-रसिक करत अति नाज हैं ॥३॥

(४)

जय पद्माकरभट्ट रसिक सिरमौर है।
जासु कृपा आधीन युगल चितचोर है॥
इन चरणन तन टहल महल की को लई।
सेवत अति अनुराग सुलभ तिनकों भई ॥

सुलभ तिनकों भई सेवा, युगल के अठयाम की।
हस्त निज माला रचावत, धन्य श्यामा श्याम की॥
'गंगअली' पर ढरहु कृपाकी कोर है ॥४॥३६६॥

✻ छोटा मंगल ✻

नमो नमो पद्माभा सहचरि।
मोहन महल लडात लाडले, युगलकिशोर रसिकजन सुखकर ॥१॥
प्रगटी महि पद्माकर गुरुवन, अखिल जनन को महा ताप हर।
नयन पद्म मुख पद्म सुहावन, चरण पद्मसे पद्म सु कर वर ॥२॥
पद्म तथा जमुनातट वासी वंशोवट छाया कुटि चितहर।
पगटी पद्म जमुन जल राधा, देखेउ ध्यान भरे जय मुनिवर ॥३॥
सोई कृपा ढरहुँ 'गंगाली', वरहु युगल सेवा जू रसभर ॥४॥३६७॥

२४—श्रीश्रवणभट्टाचार्यजी महाराज

[कातिक शुक्ला नवमी]

* श्लोक *

अयुतायुतेन्दुरूपां सकलसखिमालिकानुगाम् ।
वन्देऽहं श्रुतिरूपां कोटिस्मरकान्तिसारूप्याम् ॥

* दोहा *

श्रीरंगदेवी कमल सँग, सहचरि श्रीश्रुति रूप ।
प्रगट भई जग आयके, हो आचारज भूप ॥१॥
शुक्लपच्छ नौमी तिथि, कातिक मास अनूप ।
श्रवणभट्ट जग प्रगट भये, जो सहचरि श्रुतिरूप ॥२॥

* बड़ा मंगल *

(१)

जय जय भट्ट श्रीश्रवण पद्माकर-लालकी ।
आचारज सिरमौर रसिक प्रतिपाल की ॥
हृदय शील सों नमित सकल अंग सोहने ।
परम धर्म आरूढ़ रसिक मन मोहने ॥
मोहने मन रसिक जन जो, हंसकुलके मंडना ।
थापि भक्ति अनन्य जग पाखण्ड को कियो खण्डना ॥

करहुँ नित गुनगान रसना, ऐसे रसिक रसाल को।
जय जय भट्ट श्रीश्रवण पद्माकर लालकी ॥१॥

(२)

जय जय भट्ट श्रीश्रवण सखी श्रुतिरूप जो।
सेवति श्रीयुगलाल रसिकवर भूप जो ॥
रंग-यूथ कमला सहचरि की भली अली।
भागवति आदि सहेलिन मन भावन अली ॥
भली मनभावन सहेली नवल लाडिली लालकी।
नित्य नव विलसखहीं जो विद्या कोक रसालको॥
सोइ प्रगटी आन जग तारन परे भवकूप जो।
जय जय भट्ट श्रीश्रवण सखी श्रुतिरूप जो ॥२॥

(३)

जय जय भट श्रीश्रवण सुखी सबको किए।
जिन लीनी तब शरण अभय पद तिन दिये ॥
नेम प्रेम ते परे परा को पन्थ जो।
दुर्लभ तासु कहैं निगमादि ग्रन्थ जो ॥
निगम आदिन ते अगम्य जो सुगम सोइ तिनकों भयौ।
भाव सखि पायौ अलौकिक, वास श्रीवनको लयौ॥
चरण रजहि प्रताप ऐसो जगन कहुँ इनसें बियें।
जय जय भट श्रीश्रवण सुखित सबको किये ॥३॥

(४)

जय जय भट श्रीश्रवण शरण तुम्हरी लई ।
करो कृपा हे नाथ आप करुणामयी ॥
तुम बिन स्वामी गति न हमारी और है ।
देहु वास जो सब धामनि सिरमौर है ॥
है सकल शिरमौर धाम जो, तरणि-तनया तीर है ।
दरस दै मोहि राधिका जिन संग सखियन भीर है ॥
'कलामंजरि' रहूँ सँग नित, आश अस जियमें छई ।
जय जय भट श्रीश्रवण शरण तुम्हरी लई ॥४॥३६८॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो सहचरि श्रुतिरूपा ।
रंगदेवी कमला सखि सँग में, राजति नित अति रूप अनूपा ॥१॥
भई प्रगट पद्माकर भट के, हो आचारज रसिकन भूपा ।
सुनहु श्रवणभट 'कलामंजरि' के, हृदय बसावो युगल स्वरूपा ॥२।३६९

* दोहा *

कार्तिक सुदि नौमी सुदिन, धनि जा मधि अवतार ।
प्रगट भये श्रीश्रवणभट, पद्माकर आगार ॥१॥

* पद *

श्रीपद्माकर भट पट मण्डन, प्रगट भये सुखनिधि श्रवणेश ।
कार्तिक मास आस जन पुरवन,
जुगल सहेली भई नरवेश ॥१॥

शुक्लपच्छ नौमी धनिवासर,
जा मधि दरस दियो रसिकेश।
सुरगण पुष्पवृष्टि बरसावत,
गावत पुरजन शब्द सुदेश ॥२॥
अति अभिराम धाम-छवि निरखत।
उपमा कहत थकित है शेष।
'रूपरसिक' जन मन वच क्रम करि।
रहि न सक्यो उर तम भ्रम लेश ॥३।३७०

※ पद ※

आज बधायो भयो मन भायो।
पद्माकर के लाल प्रगट भये, ऋषि समूह को शोक मिटायो ॥१॥
हरि जस रसके अति अनुरागी, नाम धाम लीला जस गायो।
श्रवणभट्ट परवन प्रताप जग, सुयश वितान तिहूं पुर छायो ॥२॥
कातिक शुक्ला नौमी शुभ दिन, दीक्षाकाल जु सुभग सुहायो।
व्योम विमान कुसुम झरि कीनी, निरखि जगतगुरु हियो सिरायो ॥३॥
श्रीवनराज सेव सर्वेश्वर, भाव निकुंज दृगन दरसायो।
'श्रीहर्षिप्रिया' के भये मनोरथ, बूड़त भवनिधि केवट पायो ॥४॥३७१

※ पद ※

आज बधाई बजत अनूपा।
कार्तिक सुदि नौमी को प्रगटे, रसिक-सभा के भूपा ॥१॥
श्रवणभट्ट आचारज वपु धरि, जम आई श्रुतिरूपा।
'कृपामंजरी' पतित जननको, रखे परत भवकूपा ॥२॥३७२॥

* दोहा *

अयुतायुत शशिरूपिणी, कोटि कान्ति तनु काम।
बन्दहु श्रुतिरूपा अली, युगल प्रेमनी वाम॥

* छप्पय *

श्रुतिरूपा शुचि नाम अली युग-आज्ञा सिर धृत।
प्रगटी मथुरा धाम, शिशुहि लिय सुमिरण हरिव्रत॥
पद्माकर गुरुकृपा कथा नित श्रवण परायण।
संग श्यामहू सुनत चोर मूरति सरसावन॥
सो गोपाल पधरेउ मुनि साच्छि चोर गोपाल।
श्रवणभट्ट आचार्य जय, कथा श्रवण रस पाल॥१॥

* दोहा *

कातिक नवमी पच्छ सुदि, पावन दिवस सरूप।
श्रवणभट्ट महि प्रगट भये, सहचरि श्रीश्रुतिरूप॥१॥

* बड़ा मंगल *

(१)

जय जय श्रवण सुभट्ट सखी श्रुतिरूप है।
करत महलकी टहल, सदा अनुरूप है॥
अयुतायुत शशि रूप कोटि द्युति काम है।
गावत युग कलकेलि, जु परम ललाम है॥
ललामा जो परम गावत, धाम सँग नित नूपुरे।

आय प्रगटी मही मण्डल,रसिक जन सुनि सुख भरे ॥
कार्त्तिक शुक्ला नवमि कीन तिथि-भूप है ॥१॥

(२)

जय जय श्रवण सुभट्ट पद्म सपूत हैं।
आचारज सिरमौर महलके दूत हैं॥
हृदय शुद्ध मृदु वचन अंग सुठि सोहने।
परम धर्म आरूढ़ रसिक मन मोहने॥
मोहने मन रसिक जनके, हंसकुलके मंडना।
शरणदाता सन्त वृन्दन कलि पखण्डी खण्डना॥
राधा राधा वदत धाम सुख सूत है॥२॥

(३)

जय जय श्रवण सुभट्ट सुनत भागौत जब।
तस्कर धन हरि सुनत गहेउ निज हस्त तब॥
पधरेउ सो वनधाम बहुरि साखी बने।
पहुँचे दच्छिण देश कथा हरिजन भने॥
कथा हरिजन भनी जिनकी उड़ीसा पुनि जायकैं।
बसेउ नाम गुपाल साखी, कीर्ति रहि कल छायकैं॥
पुरी मारग वृन्द जन करत है दर्शन हु अब॥३॥

(४)

जय जय श्रवण सुभट्ट द्वितीय जनु भानु हैं।

रसिक प्रफुल्लित लखत सुपद्म समान हैं ॥
चौंधत विमुख उलूक भरे अज्ञान हैं ।
हरण तिमिर जिन वचन सु किरण समान है ॥
किरण सम हैं वचन जिनके, श्रुति सुपथ उजियार है ।
नाम सुनतहि पूत गुरुवर, होत बेड़ा पार है ॥
'गंगअली' मुख याच सोहनी दान है ॥४॥२७३॥

※ छोटा मंगल ※

नमो नमो अलिवर श्रुतिरूपा ।
मोहन महल टहल सुखदानी,
प्रतिछण करत रहत अलि-भूपा ॥१॥
श्रवणभट्ट रूपा महि प्रगटी,
करन चहत सुख चरित अनूपा ।
शरणलीन पद्माकर गुरुवर,
बसे धाम वनपति रसरूपा ॥२॥
अष्टयाम -- सेवा सुखकारी,
देत दान सोई अनुरूपा ।
'गंगअली' पर कृपा करहुँ गुरु,
हृदय बसावहु युगल सरूपा ॥३॥२७४॥

२५—श्रीभूरिभट्टाचार्यजी महाराज

[आश्विन कृष्णा दशमी]

※ श्लोक ※

मदनमोहनमोहनसुन्दर--
स्मितविलासकलासुकुतूहलाम् ।
प्रमुदितेन हृदा त्वभिवादये
मनसि भागवतीं भगवत्प्रियाम् ॥१॥

※ दोहा ※

सेवति रँग कमला जु सँग, अपनी जीवन मूरि ।
भागवती भव भय हरन, भई रूप भटभूरि ॥१॥
जाको सब जग सेवही लेत पदाम्बुज धूरि ।
दशमी कृष्णा क्वारकी, सो प्रगटे भटभूरि ॥२॥

※ बड़ा मंगल ※

(१)

जय जय भूरीभट्ट भरम भय खण्डना ।
आचारज सिरमौर हंसकुल -- मण्डना ॥
मण्डना कुल हंसके हो, वास श्रीवनराजको ।

कुंजरस प्रगटाय जगमें, कियो रसिकन काजको ॥
पदाश्रित प्रतिपाल हो कलिकाल कलुष विहण्डना ।
जय जय भूरीभट्ट भरम भय खण्डना ॥१॥

(२)

जय जय भूरीभट्ट भक्त मन भावने ।
सुन्दर गौर स्वरूप पो परम सुहावने ॥
सुहावने हो परम प्यारे प्रान सम दामादि के ।
श्रवणभट्ट लै शरण गादी राजहीं सनकादिके ॥
वचन स्वाती बूँद चातक जनन मोद बढ़ावने ।
जय जय भूरीभट्ट भक्त मन भावने ॥२॥

(३)

जय जय भूरीभट्ट भरी हिरदय दया ।
रंगमहलतें प्रगट भये करिके मया ॥
मया करिकें भये श्रीआचार्य अली जो भगवती ।
रंगदेवी--कमला जू के यूथमें नित राजती ॥
सुयश जिनको है अखण्ड वितान ज्यों जगमें छया ।
जय जय भूरीभट्ट भरी हिरदय दया ॥३॥

(४)

जय जय भूरिभट्ट धूरि पद सिर धरौ ।
हरौ भरम अज्ञान महल रस उर भरौ ॥

भरौ उर रस महलको मेरे न आशा आन की।
मिलैं स्वामिनी राधिका मोहि कुवँरि श्रीवृषभानुकी ॥
'कलामंजरी' भाव दै निज दासि को दासी करौ।
जय जय भूरीभट्ट धूरि पद सिर धरौं ॥४॥३७५॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो जय भट्ट श्रीभूरि।
नित नव कुंजमहलमें राजत, सेवत दम्पति जीवन मूरि ॥१॥
तुम्हरी कृपा विना रस वैभव, सब साधन करिहै पै दूरि।
'कलामंजरी' निशिदिन याचत, तुम्हरे पद-पंकजकी धूरि ॥२॥३७६॥

* दोहा *

क्वार कृष्ण दशमी दिना, श्रवणभट्ट शुभधाम।
जनम लियो श्रीभूरिभट, अति अनूप अभिराम ॥१॥

* पद *

सब मिलि साज समाज चलौ।
जनम लियौ श्रीभूरिभट्ट वलि, परिकर माहि रलौ ॥१॥
आज सदन श्रीश्रवणभट्टके, सुरतरु आनि फलौ।
क्वार कृष्ण दशमी दिन आवत, त्रिभुवन ताप दलौ ॥२॥
गाय जन्म-उत्सव त्रिविधातप, सो सब पाप मलौ।
जाचक होय 'रूपरसिकन' को, सब परिवार पलौ ॥३॥३७७॥

* पद *

मदुलय बाजैरी माई ॥टेक॥

भूरिभट्ट भूतल पर प्रगटे, कहा कहूं भाग्य बड़ाई॥
दशमी क्वार कृष्ण दिन पावन, मनचीते भये हियो सिराई ॥१॥
मंगल गावो चौक पुरावो, नाचो सब मिलि घर निधि आई।
श्याम कुवँर नैनन के तारे, जुग जुग करत हमार सहाई ॥२॥
दुष्टन दुखदा भक्त भूरिदा, रसिक शिरोमनि जन सुखदाई।
इनको नाम जपत नहीं संसृति, महिमा वेद-पुरानन गाई ॥३॥
भिन्नाभिन्न प्रचारक स्वामी, सुमिरत हरें हिये जड़ताई।
'हर्षिप्रिया' जग बहु दुख पायो, राखो चरण कमल की छांई ॥४॥३७८

* पद *

प्रगटे आचारज भटभूरि।
आश्विन कृष्णा दशमी को जो रसिकन जीवन मूरि ॥१॥
नित्य विहार सार रस गायो, करि पाखण्ड तम दूरि।
'कलामंजरी' भागवतीकी, चहत पदाम्बुज-धूरि ॥२॥३७९॥

* दोहा *

मदनमोहन मोहन हँसन, युग-विलास सुखखान।
प्रमुदित उर प्रणमहु मनसि, भागवती हरि-प्रान ॥१॥

* छप्पय *

अली भगवती भूमि जुगल आज्ञा लहि जन्मा।
प्रगट सु मथुरा देश, शिशू किय अनुपम कर्मा॥
दीन पिता हित ज्ञान मातु संग वनपति आये।
श्रवण गुरु लहि कृपा, बहुरि मथुरा पुर छाये॥

पावन ग्रन्थ सु देखकै, मूर्ति वराह ललाम।
प्रगटी जय जय भूरिभट, आचारज सुखधाम ॥२॥

* दोहा *

आशिवन कृष्णा तिथि दशमी,
प्रगटे गुरु भट भूरि।
महल टहल पाई जु जन,
धारी सिर पद धूरि ॥१॥

* बड़ा मंगल *

(१)

जय जय भूरीभट्ट अली श्रीभगवती।
करत महलकी टहल, पगी युग-पद रती॥
मदनमोहन मुसकान, देख भगवत-प्रिया।
पायजेब सुठि धाम, रूप द्वितीया लिया॥
रूप द्वितिया संग अलिवर, मही-मण्डल अवतरी।
कृष्ण आश्विन सुखद नवमी, मंजु तिथि पावनकरी॥
पावन किय द्विजधाम, सुभी अगतिन गती ॥१॥

(२)

जय जय भूरीभट्ट कृपाके जाल हैं।
काहू विधि ढिंग आत, करत जु निहाल हैं॥
विमुखन के उर साल, रसिक प्रतिपाल हैं।
सन्तनके उरमाल, खलनके काल हैं॥

खलनके जो काल मुनिवर, महलतिय शुचि वाल हैं।
अभय कर जिहि शीश धारत, लहत लाडली लाल है॥
सोहत बिन्दू श्याम जासुके भाल है॥२॥

(३)

जय जय भूरीभट्ट कृपा भूरी करी।
दुष्टन मथुरा आय बुरी स्थिति बरी॥
मूरति आदि वराह जबै जमुना धरी।
सो जमुनातट आय हाथ निज उद्धरी॥
हाथ निज उद्धरी मुनिवर, मधुपुरी पावन कियो।
गात कल यश सन्त मुनिवर, देव वृन्दन सुख दियो॥
अजहू नहि कोउ जान कथा सो सुख ररी॥३॥

(४)

जय जय भूरीभट्ट, कृपा उर भूरि है।
जो जिहि इच्छा आन सु इच्छा पूरि है॥
प्रतिक्षण केली गात जु रसिकन मूरि हैं।
सुन जिहि विमुख घिनात रहत नित दूरि है॥
रहत हैं नित दूरि पापी, पखण्डी वखण्ड है।
दृष्टिपथ जो आत तनकहु, होत ते रसमण्ड हैं॥
'गंगअली' पर करहु दृष्टि सुख पूर है॥४॥३८०॥

❋ छोटा मंगल ❋

नमो भागवति राधा--आली ।
सेवति कुंजमहल युग लालन, रसिक जनन हित तिय प्रतिपाली ॥
प्रगटी भूरिभट्ट गुरुरूपा, नाशन हित कलि जीव कुचाली ॥१॥
विन गुरुकृपा कोउ नहि पायेउ, युगलकिशोर सुरस रसजाली ।
हंसवंश अवतंस महामुनि, भोजन रस-मुक्ता जु मराली ॥२॥
जिहि पर ढरेउ आपुनो जानी,
नसेउ दैव ता जनकर भाली ।
'गंगअली' पर करहु कृपा अब,
सेवा देहु महल रसनाली ॥३॥३८१॥

२६—श्रीमाधवभट्टाचार्यजी महाराज

[कार्तिक शुक्ला एकादशी]

* श्लोक *

वसन्तकालोदयपुष्पितानि,
द्विसन्ध्यरागायितपङ्कजानि ।
प्रियप्रियाचारुपदाम्बुजेषु,
प्रीत्यार्पयन्तीं प्रणमामि माधवीम् ॥१॥

* दोहा *

कमला-यूथ विराजहीं, सेवति राधा-लाल ।
सो प्रगटी जग आयके, अली माधवी बाल ॥१॥
कार्तिक शुक्ल प्रबोधिनी, एकादशी रसाल ।
श्रीमाधवभट प्रगट भये, भूरिभट्टके लाल ॥२॥

* बड़ा मंगल *

(१)

आज बधावोरी हेली रसिक सिरताजको ।
मंगल गावोरी हेली, आचारज राजको ॥
श्रीराजराजेश्वर आचारज, भट्ट श्रीभूरीलालको ।
करुणा-सिन्धु भट्ट माधव, रसिकजन प्रतिपालको ॥

प्रगटे जु हँस सुवंश मण्डन, हरण सब अघ जालको ।
है करन दान ये पद पदा, दरसावने युग लालको ॥१॥

(२)

आज ये आयोरी हेली दिवस बड़भाग से ।
भयो मनभायोरी हेली, हियकी लाग सो ॥
जो लाग हियकी करी पूरण, स्वामिनी श्रीराधिका ।
जग भेजी अपनी सखि माधवी, हरन जन जिय बाधिका ॥
रँगदेविकी कमला अली जो, रहति तिनके संगमें ।
बिलसावहीं नित जुगल लालन, भीजी रतिरस रंगमें ॥२॥

(३)

आज आनन्दरी हेली, सुवंश श्रीहंसके ।
गावो छन्दरी हेली, सुकुलहिं प्रशंसके ॥
परशंसिये कुल हंस सनक जु नारद नियमानन्दको ।
आचार्य-द्वादश, भट्ट नव, जो हरन जन मन फन्दको ॥
नित गाय इनकी विमल कीरति, लाभ जीवन लीजिये ।
प्रशंस माधवभट चरनकी, करत निशिदिन जीजिये ॥३॥

(४)

आज भयो है री हेली, आनन्द कुंजमें ।
हर्ष छयो हैरी हेली सहेलिन पुंजमें ॥
है पुंज सहेलिन के जहाँ श्रीरंग अलीकी सहचरी ।
असिता गुणाकरि वल्लभा, गोरांगि केशी रसभरी ॥

श्रीपवित्रा कुंकुमांगी, हित हरिप्रिया नामिनो।
'कलामंजरी' कियो उत्सव, हर्षि राधा स्वामिनी।४।३८२॥

✻ छोटा मंगल ✻

श्रीमाधवभट निशिदिन गावों।
जिनकी कृपा राधिका रीझहि,
निशिदिन टहल महलकी पावों॥१॥
यह अवसर फिर नाहिन पैहों,
विरथा काहे याहि नसावों।
'कलामंजरी' भूरीभटके,
सुवन-चरण-पंकज चित लावों॥२॥३८३॥

✻ दोहा ✻

कार्तिक सुदि एकादशी, मंगल समय उदार।
भूरिभट्टके सदन में, भे माधव अवतार॥

✻ पद ✻

चल्हु सदन श्रीभूरिभट्टके, जनमन रंजन लाल भयोरी।
डगर डगर सब नगर सुधा अति, अद्भुत अनहद मोद छयोरी॥१
कौतुक देखि अलेख मदन को,
मन ते सर्वस गर्व गयोरी।
धनि-धनि कातिक मास मंगलनिधि,
जा मधि जन गुरु जन्म लयोरी॥२॥

होय कल्पतरु रूप अनूपम,
त्रिभुवन को अयताप दह्यौरी।
शुक्लपच्छ जब होय हमारे,
सुख बरसावत नयौ नयौरी ॥३॥
'रूपरसिक' के भूरिभाग सों,
दिन एकादशि अवनि अयौ री ॥४।३८४

* पद *

माधव प्रगटे कातिक मास।
शुक्लपच्छ एकादशि वासर, भयो तिमिर को नाश ॥१॥
मध्य दिवस दीक्षा दृढ़ भरी, छायौ विमल प्रकाश।
मंगलचार भयो दसहु दिशि, शोभित किए अवास ॥२॥
बन्दनवार पताका कदली, कलश मनोहर भास।
विमल बधाई श्रीवृन्दावन, माधवि-कुंज निवास ॥३॥
जय जयकार भयौ वसुधा पैं, जसकी उठी सुवास।
प्रियालाल अतिशय आनन्दैं, मिटी जननकी भास ॥४॥
यूथेश्वरी रंगदेवी सुनि, बाढ्यो हिये हुलास।
दोउ कर जोरि 'हर्षिप्रिया' ठाढ़ी, चरणकमलकी आश ॥५।३८५

* पद *

सहेली रसिक नरेशके आज बधाई बाजी।
श्रीमाधवभट प्रगट भये हैं, रसिक सभा भई राजी ॥१॥
कातिक सुदि एकादशि शुभदिन, साज मंगल सब साजी।

द्वार बजत नाना विधि बाजैं, गावत गान समाजी ॥२॥
श्रीआचारज रूप अनूपम, देखि काम छवि लाजी ।
'कलामंजरी' भये मनोरथ, सकल वासना भाजी ॥३॥

❈ दोहा ❈

ऋतु वसन्त मधि अधखिले, कमल सु निज कर धारि ।
युगल-पद्माम्बुज अर्चती, बन्दहु माधवि नारि ॥१॥

❈ छप्पय ❈

अली माधवी नाम युगलवर लहि आदेशा ।
प्रगटी मथुरा आय विप्रगृह द्विज-सुत वेशा ॥
भूरिभट्ट गुरु कृपा, प्रतिच्छण जपत सु माधव ।
प्रगटेउ माधव संग, राधिका मूरति साधव ॥
रचेउ ग्रन्थ पावन सुखद, सन्तन चित हरषाय ।
माधवभट्टाचार्य जय, रसना माधव गाय ॥१॥

❈ दोहा ❈

कार्तिक सुदि एकादशी, पावन परम महिष्ठ ।
प्रगटी महिमें माधुरी, नाम जु माधव भट्ट ॥१॥

❈ बड़ा मंगल ❈

(१)

जय जय माधव भट्ट माधवी नाम है ।
करत महल की टहल, सु आठों याम है ॥

हस्त वसन्ती कुसुम प्रिया-प्रिय-चरणमें ।
अर्पण करत सुसेव सदा युग-शरणमें ॥
सदा युग की शरण में सो, युगलके आदेश ते ।
धाम अँगुलि रूप संगमें प्रगटी महि अति हेत ते ॥
एकादशि सुदि कार्ति जयन्ति ललाम है ॥१॥

(२)

जय जय माधवभट्ट सु राधा-माधवा ।
प्रगटेउ केली गाय करत सुर बाहवा ॥
अनुपम बाँकी छवी दुःख गण दाहवा ।
रसिक जनन आधार, भक्तजन साहवा ॥
भक्तजन के साहिवा सो, वहुरि जयदेवहिं मिले ।
गात जब गोविन्दगीतं, हृदय रस-सागर झिले ॥
सोई जांगलदेश वसत सुख राहवा ॥२॥

(३)

जय जय माधवभट्ट भूरि गुरु रंजना ।
जो कोउ आवत शरण भरम भय भंजना ॥
नास्तिक खल जन वृन्द करत नित गंजना ।
रसिक जनन अनवरत स्वमुख सुख संजना ॥
अनवरत सुख संजना गुरु कलुष कलिके खण्डना ।
युगल-सेवा अष्टयामी, सन्त जन उर मण्डना ॥
नित्यहि यमुना नीर गुरुवर मज्जना ॥३॥

(४)

जय जय माधवभट्ट नाथ मम पद धरो ।
नासहु उर अज्ञान महल-सुख उर भरो ॥
चहत कृपा गुरुदेव ढरनि ऐसी ढरो ।
प्रतिछण श्यामा-श्याम नाम मुख उच्चरों ॥
नाम मुख उच्चरों निशिदिन, उर न आशा आनकी ।
मिले स्वामिनि राधिका मोहि, श्रीलली वृषभानु की ॥
'गंगाअलि' पर ढरहु, चरण-रज कछु भरो ॥४॥३८७॥

* छोटा मंगल *

जय जय अलीमाधवी नामा ।
माधवभट्ट नाम लै प्रगटी, कीन रसिक जन पूरण कामा ॥
जपत प्रतिछण राधा-माधव, सुनत श्रवण माधव गुण-ग्रामा ।
प्रगटी राधा-माधव मूरति, रसिक वृन्द नयनन सुखधामा ॥
वंशीवट सुठि पर्णकुटी जिहि, छाया सन्तन जन विश्रामा ।
राधामाधव अर्चनकारी, सन्तातिथ्य करत निशियामा ॥
'गंगाअलि' पर कृपा करहु गुरु, सेवहि युगल रूप धृत वामा ॥३८८

२७—श्रीश्यामभट्टाचार्यजी महाराज

[चैत्र कृष्णा द्वादशी]

❋ श्लोक ❋

यच्छोभाभरजलधौ विधिमुख-विबुधालयं ययुः सुचिरम् ।
असितायाश्च तदास्यं शारदविधुमण्डलाकृति ध्याये ॥१॥

❋ दोहा ❋

अलबेली असिता अली, अवनि अवतरी आय ।
सो दिन आयो भावतो, रसिकन को सुखदाय ॥१॥
चैत्र कृष्णकी द्वादशी, शुभ तिथि अति अभिराम ।
असिता आई अवनि पै, रूप धारि भट श्याम ॥२॥

❋ बड़ा मंगल ❋

(१)

मंगल मुदमय बन्दौ भट श्रीश्याम को ।
अवनी विमल प्रताप या मंगल नाम को ॥
मंगल श्रीवन धाम मंगल सम्पत्ति भरी ।
मंगल श्यामा-श्याम मंगल सब सहचरी ॥
सहचरी श्रीरंगदेवी यूथ मंगल मन हरन ।
मंगल कमला जु की अलि श्री असिता सब मंगल करन ।

धर्यो वपु मंगल आचारज करन मंगल काम को।
मंगल मुदमय वन्दौं भट श्रीश्याम को ॥१॥

(२)

हंसवंश आचारज माधवभट-सुवन।
छकैं सु कौतुक कुंज अटल किय वास वन ॥
मन वच क्रम करि सेवहि रसिक रसालको।
मगन मानसी ध्यान युगलवर लालको ॥
लाल युगल लडायके सुख लह्यो आठो याम को।
निम्बरवि-पथ चलि दिखायो पद परा अभिरामको ॥
तरसहीं लोकेश जिहि हित, अस अलौकिक लह्यो भवन।
हंसवंश आचारज माधवभट-सुवन ॥२॥

(३)

काहि कहौं समतूल न अस कोइ और है।
यशवर्द्धन कुल हंस रसिक-शिरमौर है ॥
रसिकन मध्य विराजत यमुना तट जहाँ।
पाखण्ड-तिमिर अज्ञान हरन सुभट महा ॥
महा सुभट रस रीतिमें समझानही निज मर्मको।
सकल धर्मन खण्ड, मण्डन कर्यौ भागवत धर्मको ॥
चरण शरण जो आय लइ सो निरखै युगलकिशोर है।
काहि कहौं समतूल न अस कोइ और है ॥३॥

(४)

कलामंजरी की विनय अब सुन लीजिए।
फँस्यो जगत के जाल बाहर मोहि कीजिए॥
दीजिए रसिकन संग वास वनराजको।
आप बिना हे नाथ राखही लाजको॥
लाजको रखिये दयामय शरण जन अज्ञानि को।
एक भक्ति अनन्य दृढ़ मोहि देहु राधारानिको॥
हंसवंश प्रशंसिहौं नित यही वर मोहि दीजिये।
'कलामंजरी' की विनय अब सुन लीजिये॥४॥३८६॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो जय भट श्रीश्याम।
श्रीमाधवभट पाय पदाश्रय, राजत नित वृन्दावन धाम॥१॥
रूपरसिक सब सुखकी सींवा, हो गुनखान अतिहि अभिराम।
'कलामंजरी' करहु आपनी, रसना रटत तुम्हारो नाम॥२॥३९०

* दोहा *

चैत्रमासकी द्वादशी, श्रीमाधवके धाम।
प्रगटे भट श्रीश्यामजू, जन मन पुरवन काम॥१॥

* पद *

प्रगटे श्याम सुभट भक्तेश।
भूरिभट्ट पटमंडन के गृह, मंगल बढ़्यौ विशेष॥१॥
चैत्र मास शुभ कृष्ण द्वादशी, लगन मुहूरत वेश।

जा मधि कौतुक भयौ अपरिमित, रह्यौ न दुखको लेश ॥२॥
सुर परिवार सहित गुण गरवत, उमगे उरन अशेष ।
'रूपरसिक' जन जीवन जनमत, मिटि गयौ सर्व कलेश ॥३॥३८१

* पद *

प्रगटे श्यामभट्ट गुरुदेव ।
मंगल गावौ चौक पुरावौ, जानि समयको भेद ॥१॥
द्वादशि चैत्र कृष्ण सुखकारी, आये सबके खेव ।
निशिदिन जाकी आश करत हैं, आज नैन फल लेव ॥२॥
अब वसुधा रससिन्धु बढ़ैगो, हंसवंशकी टेव ।
असिता कुंज स्वामिनी आई, दराधा परा सुसेव ॥३॥
हंस सनक नारद निम्बारक, श्रीनिवास गुरुदेव ।
'हर्षप्रिया' आलसको तजिके, चरनन टहल करेव ॥४॥३८२

* पद *

बजत बधाई सब सुखदाई, रसिक-नरेशकें धामरी ।
महल ते असिता प्रगट भई वपु धरि भट युत श्रीश्यामरी ॥१॥
प्रेमाभक्ति सकल जग प्रगटी, नाश्यौ तिमिर तमाम री ।
यह फल श्रीराधा प्रसादको, जन-मन पूजैं काम री ॥२॥
चैत्र मास शुभ दिन तिथी द्वादशी, कृष्णा अति अभिराम री ।
'कलामंजरी' पद-रति नाहीं, जाके विधना वाम री ॥३॥३८३॥

* दोहा *

जिहि शोभा-भर-सिन्धु लख, गयउ चन्द्र सुरधाम ।
असिता शारद चन्द्र मुख, दास्य चहत अभिराम ॥१॥

❀ छप्पय ❀

असित नामिनी अली युगल-आज्ञा शुचि पायी।
प्रगटि सु मथुरा नगर बसी गुरु चरण सुहायी॥
गुरु अदेश गिरिराज प्रदच्छिण श्रीहरिदेवा।
प्रगट सु कीनी अष्टयाम मुनिवर रस-सेवा॥
बसे सन्तवर आय पुनि श्रीवृन्दावन धाम।
श्याम सु भट्टाचार्य मुनि, जय पावन गुण ग्राम॥१॥

❀ दोहा ❀

चैत्र शुक्ल सुदि द्वादशी, जुरे रसिक रस हट्ट।
प्रगटी असिता अलिवर, नाम सु श्याम सुभट्ट॥१॥

❀ बड़ा मंगल ❀

(१)

जय जय श्याम सुभट्ट सु असिता नामनी।
महल टहल रस भरी दिवस पल यामनी॥
जिहि आनन छवि देख गयउ शशि स्वर्ग में।
गावत श्यामा-श्याम भरी अलिवर्ग में॥
भरी है अलि वर्गमें सो छला धाम जु संग में।
प्रगटी भारत शुचि महीमें, भरी युग रस-रंग में॥
चैत्र शुक्ल द्वादशी जयन्ती भामनी॥१॥

(२)

जय जय श्याम सुभट्ट, सु वक्ता भागवत।

प्रतिक्षण ग्रन्थ सुप्रेम, रसिक रस मधुव्रत ॥
वंशीवट नित वास कथा मुख गावनी ।
सुनत अनन्त सुसन्त परम जु सुहावनी ॥
सुहावनी सो तरण तारण, शुक मुनि मुख गान है ।
तर्क नास्तिक जन विनाशन, मुनी-वचन प्रमाण है ॥
ललना-लालन लक्ष भये जगसे विरत ॥२॥

(३)

जय जय श्याम सुभट्ट भागवत गायकै ।
प्रगटी सुन्दर गिरी मूर्ति सुख छाय कै ॥
नाम सु श्रीहरिदेव चित्तहर आपुके ।
गावत नित अनुराग युगल मुख जापुके ॥
युगल मुख जापक मुनी नित सुयश पावन जग छयो ।
क्रूर क्रोधी आधि-पीड़ित आय शरणागति लयो ॥
तिनहू दिये हरिधाम गुरु सु पठाय कैं ॥३॥

(४)

जय जय श्याम सुभट्ट दास युग श्यामको ।
महिमें विमल प्रताप सु जाके नामको ॥
जिहि कटाक्ष की कोर वास मिल धामको ।
सेवक बनें सु आय लाल नन्दग्राम को ॥
लाल जो नन्दग्रामको सो करें सेवा जासुकी ।

ताहि पुनि सेवा मिलै शुचि लाडली रस-रामकी ॥
'गंगअली' मुख गात सोइ गुणग्रामको ॥४॥३६४॥

* छोटा मंगल *

जय जय असिता अली पियारी ।
प्रगटी श्याम सुभट्ट नाम से, निरखेउ कलिजन जबै दुखारी ॥१॥
माधवभट्ट पदाश्रय लीनो, जो सन्तन के पावनकारी ।
प्रगटेउ श्रीहरिदेव युगल हरि, श्रीगिरिराज धाम सुख सारी ॥२॥
बसे बहुरि वनराज सु गुरुवर, वंशीवट छाया चितहारी ।
यमुना लहर दरस नित कारी, गाथा जाकी परम पियारी ॥३॥
'गंगअली' हित देहु युगलकी, सेवा ठाडेउ द्वार भिखारी ॥४॥३६५॥

२८—श्रीगोपालभट्टाचार्यजी महाराज

[पौष कृष्णा एकादशी]

* श्लोक *

श्रृंगारभारं विविधं विधाय, प्रातः स्थिताया निज देवतायाः।
मुखारविन्दैकनिरीक्षणाय, गुणाकरी दर्पणमाचकार ॥१॥

* दोहा *

गुणाकरी सँग सहचरी, सेवहिं लाडिली लाल।
रसिकन हित प्रगटो जगत, धरि वपु भट गोपाल ॥१॥
पौष कृष्ण एकादशी, आई अतिहि रसाल।
गोप्य रीति प्रगटान हित, प्रगटे भट गोपाल ॥२॥

* बड़ा मंगल *

(१)

जय जय भट गोपाल जु रीति रसाल है।
सदा सेवती गुणाकरी युग-लाल है॥
श्रीयमुना तट अवनि महल कमनी जहां।
लै अमिता रुख सुख शय्या रचती तहां॥
तहाँ रचती सुदख शय्या, प्रिया-पिय विलसावती।
लखि अलौकिक युगल-माधुरि, छवि सुहिये हुलसावती॥

रंग कमला जु के संगमें, रहत आठों काल है।
जय जय भट गोपाल जु रीति रसाल है ॥१॥

(२)

जय जय भट गोपाल प्रिया आराधने।
नियमानन्द की रीति प्रीति सू साधने॥
सुन्दर सुखद स्वरूप चित्त आकर्षने।
रसिक जननके हेत मधुर रस बरसने॥
बरसने रस मधुर भट श्रीश्यामजू के अति लड़े।
दृढ़ निभायो भाव आरज कुंज महा कौतिक अड़े॥
मानसिक मन ध्यानमें गलतान प्रेम अगाधने।
जय जय भट गोपाल प्रिया आराधने ॥२॥

(३)

जय जय भट गोपाल रसिक जन प्रान हैं।
शरणागत को करत अभय पद दान है॥
पापी श्रापी क्रूर कुटिल अज्ञानि जो।
सुनत भये सब शरण सरस मुख-बानि जो॥
बानि जो मुख सरस उचरें, रीति बरनत अति खरी।
सकल ताप नसाय तन मन, भाव दीन्हों सहचरी॥
हंस कुल आचार्य भूषण, सरस रसकी खान है।
जय जय भट गोपाल रसिक जन प्रान है ॥३॥

(४)

जय जय भट गोपाल हमारे सिर धनी ।
जिनकी कीरति विमल कवी कोविद भनी ॥
बड़े भाग हम चरण शरण इनकी लई ।
नासैं विषय विकार सकल दुरमति भई ॥
गई दुरमति सकल जियकी मेटि सहजहि बाधिका ।
भाव पायो 'कलामंजरी' इष्ट स्वामिनि राधिका ॥
पाय इनकी कृपादृष्टी बात बिगरी सब बनी ।
जय जय भट गोपाल हमारे सिर धनी ॥४॥३६६॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो जय भट गोपाल ।
रँगदेवी सँग रूप गुनाकरि, निशिदिन सेव लाडिलीलाल ॥१॥
रसिकन हित प्रगटे अवनी पर, प्रगट करन रस रीति रसाल
'कलामंजरी' शरणागत को, पराभक्ति दे करत निहाल ॥२॥३६७

* दोहा *

पौष कृष्ण एकादशी, प्रगटे लाल गोपाल ।
सकल दिशा प्रमुदित भई पूरयौ शब्द रसाल ॥१॥

* पद *

प्रगटे मोहन लाल गोपाल ।
पौष मास एकादशि भोरहिं, अति सुन्दर शुभकाल ॥१॥

ध्वज द्विज-महलन फहरन छहरन, अति छवि वन्दनमाल।
तिय पिय सहित नचत अगणित मिलि, गावत मंगल बाल ॥२
करत वारनं मुनिवर बहुविधि, भरि-भरि मोतिन थाल।
'रूपरसिक' निज नैन निहारत, तन मन भये निहाल ॥३॥३६८

* दोहा *

पौष कृष्ण एकादशी, प्रगटे भट्ट गोपाल।
यमुना पुलिन पवित्र थल, निज जनके प्रतिपाल ॥१॥

* पद *

श्रीगोपालभट्ट गुन सागर, दीक्षा जन्म समय सुखभारी ॥टेक॥
पौष कृष्ण एकादशी प्रगटे, मध्य दिवस पूरण बपु धारी ॥
सामवेद धुनि करत महामुनि, मंगल गावत है नरनारी ॥१॥
मागध सूत बन्दिजन आये, रंगधाम के सब अधिकारी ॥
हंस सनक नारद निम्बारक, गावत कीरति दै दै तारी ॥२॥
कोकिल कंठ लजात ऋषिवधू, भाग्य बलो जस करहि उचारी।
नाम वल्लभा कुंज-निवासिनि, असन करावत रुचि अनुसारी ॥३॥
सोइ दिखाय दृगनि सुख देहैं, पावत जिनके सुकृत भलारी।
महि अविरोध प्रकाशि हंस-मत, कुबुधि कुतर्किन को भयटारी ॥४॥
इनको नाम तापत्रय नाशन, जपे होहि भवसागर पारी।
'हर्षप्रिया' श्रीविपिन वास करि, सेवहुँ पद लीजे बलिहारी ॥५॥३६६।

* पद *

बधाई बाजत रंगभरी।

पावन परम कृष्ण एकादशो, आई सुभग घरी ॥१॥
श्रीगोपालभट्ट वपु धरिके, प्रगटी गुणाकरी ।
हंसवंश की विमल कीरति, वेली सुफल करी ॥२॥
भेजी परम सहेली स्वामिनि, कृपा सुदृष्टि करी ।
हरस्यो रसिक समाज अनूपम, ये निधि हाथ परी ॥३॥
द्वार भीर भई गुनिजन गावत, विरदन मुख उचरी ।
मंगल सोहिल गावें नारी, सँथिये कलस धरी ॥४॥
नाना विधिके बाजे बजत हैं, सुर करैं सुमनझरी ।
तन मन फूले फिरत सकल जन, सबै शूल बिसरी ॥५॥
श्यामभट्ट-आचार्य-सुवनको, सेवत बिपति टरी ।
'कलामंजरी' कृपा रावरी, पाई प्रीति खरी ॥६॥४००॥

* दोहा *

धार भार शृङ्गार सब, महल स्थित लख प्रान ।
वन्दहु देवी गुणाकरी, दर्पण युगल दिखात ॥१॥

* छप्पय *

गुणाकरी प्रिय अली, ललन आदेश सुहायी ।
प्रगटी व्रजमें आय, धेनु पालत हरषायी ॥
गुरु श्याम पद कृपा, गुवर्धन वास सुकीनो ।
प्रगटेउ प्रभु गोपाल, दुग्ध गुरु हित मधु दीनो ॥
गोवन प्रीती कर सदा, कीने सन्त निहाल ।
प्रथम गुपाल जु प्रगट कर, जय जय भट्ट गुपाल ॥१॥

* दोहा *

पौष कृष्ण एकादशी, कीने रसिक निहाल ।
सन्तन को सुख देन हित, प्रगटे रसिक गुपाल ॥१॥

* बड़ा मंगल *

(१)

जय जय भट्ट गुपाल द्वितीय गोपाल हैं ।
गुणाकरी प्रिय अली महल में बाल है ॥
कर श्रृङ्गार सुहान दिखावन युगल मुख ।
दर्पण हस्त सु खरी सामने पाय रुख ॥
पाय रुख सो सामने द्वितीय धाम सिंहासना ।
युगल आज्ञा पायके सो प्रगटी भारत महाथमा ॥
एकादशी सु पौष कृष्ण रस जाल है ॥१॥

(२)

जय जय भट्ट गुपाल श्याम गुरु नन्द हैं ।
शरणागत जो आत तिनन सुखकन्द हैं ॥
मजुल वनपति धाम चमक जस चन्द हैं ।
चहुँ दिशि घेरे रहत रसिक अलिवृन्द हैं ॥
रसिक वृन्द मलिन्द घेरे रहत जस सुठि पद्म हैं ।
गन्ध कीरति रस सुहावन वहत सन्तन सद्म हैं ॥
जिनके वस चित हरण प्रिया-व्रजचन्द हैं ॥२॥

(३)

जय जय भट्ट गोपाल गोवर्धन आय कै।
प्रगटी मूर्ति गुपाल स्वपन गिरि आय कै॥
द्वितीय बार सोई लाल पुरी दर्शन लये।
तृतीय बार पुनि दरस सु बल्लभ सुख भये॥
दरस बल्लभ भये सुख सोई आज जांगल देश जन।
करत दरसन हरष उर भर नाम श्रीश्रीनाथ गुन॥
मारवाड़ किये पूत प्रभु सुख छाय कै॥३॥

(४)

जय जय भट्ट गोपाल युगल आराधने।
श्रीनिम्बारक रीति प्रीति उर साधने॥
सुन्दर मधुर स्वरूप चित्त आकर्षने।
रसिक भक्त सुख देत मधुर वच वर्षने॥
वर्षने अति मधुर वच मुनि प्रियाजू के लाडले।
दृढ़ निभायो भाव रसमय कुंजकेली रस रले॥
'गंगअली' पद शरण देहु गुण गावने॥४॥४०१॥

※ छोटा मंगल ※

नमो नमो जय भट्ट गुपालू।
जय जय अली गुणाकरि प्यारी, महल टहल रसभरी कृपालू॥
रंगदेविपद नित अनुगामिन, सेवत सदा लाडली लालू।

प्रगटेउ जिन गोपाल पियारे, पावन गिरिवर धाम रसालू ॥
बसत आज श्रीनाथ नाम धरि, जो मरुभूमि रसके जालू ।
दरसन दै अघवृन्द जो नासत, दीन जननके प्रभु प्रतिपालू ॥
'गंगअली' शरणागत राखहु, पराभक्ति दै करहु निहालू ॥४०२

२६—श्रीबलभद्रभट्टाचार्यजी महाराज

[माघ कृष्णा चतुर्दशी]

* श्लोक *

द्विजराजकलाविराजमानां
मुखशोभाजितफुल्लकञ्जलक्ष्मीम् ।
मृगराजकटिं मृगायताक्षि-
महमीडे सततं सुवल्लभाख्याम् ॥ १ ॥

* दोहा *

राखन धर्म अनन्यता, नासन तिमिर अज्ञान ।
रूप धारि बलभद्र भट, प्रगटि वल्लभा आन ॥१॥
माघ चतुरदशि मास शुभ, कृष्णपक्ष की जान ।
आचारज बलभद्रजू, प्रगटे ज्यों जग भान ॥२॥

❋ बड़ा मंगल ❋

(१)

जय जय भट वलभद्र चित्त करुणामई ।
कठिन जानि कलिकाल, अवतरे मुदमई ॥
आचारज वपु धारि जीव शरणे लिये ।
भव डूबतहि बचाय सबनको सुख दिये ॥
दिये सुख सबहिनको अतिशय, आप जगको हित कियो ।
कहन में नहि आवहीं कछु अति सरस कोमल हियो ॥
सुयश पायो जगतमें अरु दशों दिशि जय जय भई ।
जय जय भट वलभद्र चित्त करुणामई ॥१॥

(२)

जय जय भट वलभद्र स्वरूप अनूप है ।
हंसवंश अवतंस रसिक जन भूप हैं ॥
मेट्यो जगको पातक तिमिर अधर्म जो ।
कह्यो सबन सों पराभक्तिको मर्म जो ॥
मर्म भक्ती पराको छिपि रह्यो प्रगट सोई भयो ।
ज्ञानी ध्यानी योगीजन बहु आय इन शरणैं लयो ॥
सबनि पाई एक भक्ती विशुद्ध विमल जो रूप है ।
जय जय भट वलभद्र स्वरूप अनूप है ॥२॥

(३)

जय जय भट बलभद्र मनोरथ सुफल किए।
पाय कृपा तव बहुत धाम निजको दिए॥
दिव्य रसमय महा अति अभिराम है।
राजत जहाँ सदैव राधिका-श्याम है॥
श्यामसुन्दर राधिका जो, नित्य नवलकिशोर है।
तिनके पदकी टहल पाई, अस कृपाकी कोर है॥
जानिके आश्रित तुम्हारे, प्रिया भट शरणे लिये।
जय जय भट बलभद्र, मनोरथ सुफल किए॥३॥

(४)

जय जय भट बलभद्र रसिक चिन्तामनी।
जगमें अतुल प्रताप भई महिमा घनी॥
शरणागत प्रतिपाल न यश कहते बनें।
अपनो कर धर शीश हरहिं जो दुख घने॥
घने दुख अघ हरहि जनके, देत चरण खवास है।
महा मृदुल कृपाल निज जन, करन पूरन आस है॥
'कलामंजरि' मान है यहि, मिर हमारे अस धनी।
जय जय भट बलभद्र रसिक चिन्तामनी॥४॥४०३॥

* छोटा मंगल *

भट बलभद्रजु प्रान हमारे।
श्रीगोपालभट्टके लालन, आचारज सिरताज पियारे॥१॥

हंसवंश की ओप बढ़ावन, आई बल्लभा जगत मझारे।
'कलामंजरी' कह कर जोरे, जय जय मो नैनन के तारे ॥२॥४०४

* दोहा *

माघ मास में कृष्णकी, चतुर्दशी शुभ वार।
श्रीगुपालभट गेहमें, भए बलभद्र उदार ॥१॥

* पद *

धन्य धन्य है माह उमावन।
कृष्ण पाख दिन सुभग चतुर्दशी, त्रिभुवन सुख सरसावन ॥१॥
प्रगटे श्रीगोपालभट्ट के, श्रीबलभद्र सुहावन।
पावन करन त्रिलोक शोकहर, श्रीहरि भक्ति दृढ़ावन ॥२॥
करुणा उदधि अपरिमित जनमन, वांछित आस पुरावन।
अनन्य चकोर 'रूपरसिकन' को, जुगल सुचन्द मिलावन॥३॥४०५

* पद *

श्रीबलभद्र अवनि पै प्रगटे, ह्वै रही रंगरली ॥टेर॥
मंगल गावो चौक पुरावो, धरो कलश कदली।
दीक्षा दिन अति सुभग सुहायो, महिमा जग उभली ॥१॥
मत अविरोध प्रकाश सूर्य लखि, दुरमति गई गली।
हंस बंश जस चहुँ दिसि छायो, गरजत नाम बली ॥२॥
कुमति-कुमुदिनी सकुचि मलिन भइ विकसित भक्त-कली।
'हर्षिप्रिया' की सुनहुँ बीनती, जग त्रय ताप जली ॥३॥४०६॥

* पद *

सखि आज निकुञ्जन रंगरली।
जन्म दिवस बलभद्र भट्ट को, जो हैं श्रीवल्लभा अली ॥१॥
रँगदेवी के द्वार बधाई देन सहचरी सकल चली।
गावत कोकिल सुरन सोहिलो, सुरनारिन को मान दली ॥२॥
भये मुदित मन अति पिय प्यारो, मनहुँ सुमनकी खिली कली।
निरखत कमल वदनकी शोभा, नवल छटा पद जात बली॥३॥
माघ मास की कृष्ण चतुर्दशि, आई अति बड़ भाग भली।
'कलामंजरी' प्रिया-कृपातें, आस बेलि मम सुफल फली ॥३।४०७

* दोहा *

मृगनैनी मृगराज कटि, मुख शोभा जित कंज।
करहुँ सु अस्तुति वल्लभहि, युग सेवा सुख मंजु ॥

* छप्पय *

सखी वल्लभा लहेउ जबै आदेश सुवल्लभ।
प्रगटी पावन देश मधुपुरी खलजन दुर्लभ ॥
गुरु गुपाल वन पाय भजन बल दुष्ट नसाये।
श्रीबलभद्र स्वरूप आपु व्रज प्रभु प्रगटाए ॥
छमा दया वैराग्य गृह, पावन व्रज मण्डल सुयश।
जय बलभद्र सुभट्ट गुरु, युगल लाल जिनके स्ववश ॥१

* दोहा *

माघ कृष्ण तिथि चतुर्दशि, नाशन कलिजन छुद्र।
प्रगटेउ बल हरि दूसरे, आचारज बलभद्र ॥१॥

* बड़ा मंगल *

(१)

जय बलभद्र सुभट्ट द्वितीय सुहावने।
सखी वल्लभा नाम महल मन भावने ॥
शशि मुख शोभा मंजु कटी मृगराज सी।
मृगनैनी पिक बैन युगल सुख साज सी ॥
युगल सुख नित साजसी सो, धामवासी कटक सँग।
प्रगटी भारत आयकै, युगलके अनुराग रँग ॥१॥

(२)

जय बलभद्र सुभट्ट स्वरूप सुहावना।
लीनेउ शरण गुपाल रसिक सुख गावना ॥
बसि वृन्दावन धाम कुटी सुठि आवना।
अष्टयाम सुठि सेव करत नित भावना ॥
करत है नित भावना गुरु, रसिक जन हित सुख दयो।
सन्त सेवी भक्त बन्धू, शिष्य जन हित रस दयो ॥
व्रज बृन्दावन त्याग कहूं नहि जावना ॥२॥

(३)

जय बलभद्र सुभट्ट मूर्त्ति बलराम की।
प्रगटी श्रीब्रजदेश जान सुखधाम की॥
जे मूरति वज्रनाभ नृपति ने निरमयी।
तेई जैंन सुबुद्ध देखि जब महि गयी॥
देखि जब महि धरी भीतर, निम्ब सो आचार्य मुनि।
बहुरि प्रगटी देश व्रज निज भजनके बल आपु गुनि॥
मूरति सो छबि छाज लखहु बलश्राम की॥३॥

(४)

जय बलभद्र सुभट्ट द्वितीय जनु राम हैं।
वे बस गोपुर धाम ये जु व्रज ग्राम है॥
उन हल-मूसल हाथ, हाथ इन माल है।
उन गुण वेद सु गात, सन्त रस जाल हैं॥
सन्त जन रस जाल हैं ये, भक्त जन चिन्तामणी।
पावन कीर्ति महान रसिक मन भावनी॥
'गंगअली' सुख गात सुयश अठयाम है॥४॥४०८॥

* छोटा मंगल *

जय सुभट्ट बलभद्र पियारे।
सखी वल्लभा महि अवतारी, रसिकन रस मुख उर चित धारे॥

हंसवंश सनकादिक नारद श्रीनिम्बारक वंश उज्यारे।
श्रीबलभद्र-मूर्ति प्रगटायी, वौद्धन महि जो धरी अखारे॥
श्रीवंशीवट वन तिवासी, रसिकनके नित काज सुमारे।
श्यामा-श्याम सदा मुख गायी, सन्तभक्त जन नित सत्कारे॥
'गंगअली' पर कृपा करहु अब, गुरुवर जीवन प्राण हमारे॥

★

३०—श्रीगोपीनाथभट्टाचार्यजी महाराज

[श्रावण कृष्णा सप्तमी]

❋ श्लोक ❋

शारदीयविधुबिम्बमुखाभां,
कुन्दपंक्तिरदनश्रियमेकाम्।
तुङ्गपीनकुचभारविनम्रा--
मानतोऽस्मि शशिगौरतराङ्गीम्॥१॥

❋ दोहा ❋

सखि कन्दर्पा संगमें, श्रीगौराङ्गी नाम।
'कलामंजरी' जगत हित, सोइ प्रगटी सुखधाम॥१॥

श्रावण कृष्णा सप्तमी, प्रगटे गोपीनाथ ॥
'कलामंजरी' गौराङ्गी, रसिकन किये सनाथ ॥२॥

❋ बड़ा मंगल ❋

(१)

जय जय श्रीगौराङ्गी संग रासेश्वरी।
श्यामा अंग सवास में अति चातुरी ॥
उचरत अमृत समान वचन उपमा नहीं।
हँसन दशन की छवि सो नहि आवत कही ॥
कही आवत नहीं सो छवि, अंग अंग है मोहनी।
गौर वर्ण सुकान्ति तनकी, अति ही अद्भुत सोहनी ॥
लोक का सौन्दर्य सब तव रूप के आगे दुरी।
जय जय श्रीगौराङ्गी संग रासेश्वरी ॥१॥

(२)

जय जय श्रीगौराङ्गी आनंदकन्दनी।
राजति नवल निकुंज सकल जग वन्दनी ॥
प्रगटावन रससार, जगतमें आइ है।
वेद-अगम रस-रीति, सुगम सब पाइ है ॥
पाइ हैं सब सुगम अद्भुत रहस रसकेली महा।
परम मंगल सकल अवनी एक मुख गाऊं कहाँ ॥

वल्लभा की परम प्यारी, केशी परमानन्दनी।
जय जय श्री गौराङ्गी आनँदकन्दनी ॥२॥

(३)

जय जय श्रीगौराङ्गि महल-रस वरसनी।
रँग कन्दर्पा अली चित्त आकर्षनी ॥
तरणि तनूजा-तीर अवनि कमनी जहाँ।
पिय प्यारीके संग नित्य विलसत तहाँ ॥
तहाँ विलसत विविध सों, विधि युगल लाड़ लड़ावहीं।
जानिके रुख अति लड़ीको, परम रस जु बढ़ावहीं ॥
निज अलिन सुखदानि कौतुक, लीला करि अति हर्षनी।
जय जय श्रीगौराङ्गि महल रस वरसनी ॥३॥

(४)

जय जय श्रीगौरांगि सखी मन भावनी।
श्यामा श्याम हृदय नित मोद बढ़ावनी ॥
इनके ये ही समान न उपमा और है।
रसिकनी रसकी राशि रसिक सिरमौर है ॥
मौर सिर रसिकन की जू सोइ, रसिक जनहित वपु धरचौ।
भट्ट गोपीनाथ धरि यह नाम सब जग भ्रम हरचौ ॥
'कलामजरि' कहे कहँ लगि लीला रस सरसावनी।
जय जय श्रीगौरांगी सखी मन भावनी ॥४॥४१०॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो भट गोपीनाथ।
हंसवंशके भूषण प्यारे, प्रगटे जिन जन करन सनाथ ॥१॥
सबते अगम सुगम जो नाहीं, सो दम्पति सम्पति तुम हाथ।
'कलामंजरी'करुणा करिके,निशिदिन राखहु अपने साथ ॥२॥४११

* दोहा *

श्रावण असिता सप्तमी, शुभ नक्षत्र सुखदाय।
प्रगटे गोपीनाथजू, सब जन करन सहाय ॥१।

* पद *

पुरजन कहत आज अब हम सब अभय सनाथ भये।
जिन हित गोपीनाथ सु वर द्विज, वर ह्वै दरस दये ॥१॥
सावन मास असित तिथि सातें, जै-जैकार छये।
निखिल मही मण्डन के जाचिक 'रूपजुरसिक' अये ॥२॥४१२॥

* पद *

प्रगट भये श्रीगोपीनाथ भट, सकल कला पूरित बनवारी ॥टेक॥
सप्तमि सावन असित मनोहर, घटा झुकी चहुँदिशि ते कारी।
हम पर कृपा करी अनुरागी, रूप-सुधा भरि गरजन प्यारी ॥१॥
धुर्वा रस शृंगार परन लगे, आशा-बेलि हरित झुकि डारी।
नन्ही बूँदन नेह जनावत, मेघ मृदंग देत करतारी ॥२॥

नचत मयूर रटत चातक पिक, रसिक भक्त यों सज्ञाधारी।
शीतल भये पाय स्वाती जल, आनन्दित उत्सव कियो भारी ॥३॥
नित्य विहारी भूला भूलत, भोटा देत रंग सुकुमारी।
गौरांगी को जन्म-मुहूरत, कहत परस्पर बैन उचारी ॥४॥
रोरी तिलक युगल मस्तक रचि, श्रीफल भेंट बधाई सारी।
नाना विधि पकवान मिठाई, आरोगत है प्रीतम प्यारी ॥५॥
हास्य - विनोद विपिनमें आयो, पान खाय खेलत पासारी।
कृपादृष्टि करि चहुँदिशि चितवत, देत अभय वरदान महा री ॥६॥
तान-तरंगन रंग बढ्यौ अति, राग मलार जम्यौ सुखकारी।
उद्धवदेव 'हरिप्रिया' स्वामी, देखि चरित्र थके नैना री ॥७॥४१३॥

* पद *

प्रगट भये भट गोपीनाथ।
अवनि अवतरी श्रीगौरांगी, निजजन करन सनाथ ॥१॥
श्रीफल रोरी अछत बीरा, सज्यौ थाल धरि हाथ।
करि सिंगार चलीं सब वनिता मुख गावत गुण गाथ ॥२॥
सावन कृष्ण सप्तमी को सब, मिलि रहे भरि-भरि बाथ।
'कलामंजरी' स्वामिनिके पद, सबही नावत माथ ॥३॥४१४॥

* दोहा *

कुन्द दशन शरदेन्दु मुख, तुंग पीन कुच भार।
नमत नमो गौरांगि सखी, सब सुषमा को सार ॥१॥

*** छप्पय ***

सखि गौरांगी युगादेश ब्रजमंडल आई ।
शैशव गुरु वलभद्र चरण लिय शरण सुहाई ॥
गोपीनाथ उचार नाम वंशीवट वासी ।
रास समयकी मूर्त्ति दगन पगटी सुखराशी ॥
वेद-विरोधी नाश सुनी, कीने रसिक सनाथ ।
गोपीनाथ सु प्रगट कर, जय भट गोपीनाथ ॥

*** दोहा ***

श्रावण कृष्णा सप्तमी, रसिकन करन सनाथ ।
गौरांगी सखि रूप जो, प्रगटी गोपीनाथ ॥२॥

*** बड़ा मंगल ***

(१)

जय जय गोपीनाथ भट्ट गौरंगनी ।
प्रतिच्छण युग-अनुराग केलि रस रंगनी ॥
शरदचन्द्र मुखचन्द्र कुन्द जस दशन है ।
तुंग पीन कुचभार शशी जस हँसन है ॥
शशी जस है हँसन मुसकन, चिन्ह श्रीवत्स रूप संग ।
प्रगटी पावन ब्रज मही में, युगलके अनुराग रँग ॥
श्रावण सप्तमि कृष्ण प्रगट तिय संगनी ॥१॥

(२)

जय जय गोपीनाथ भट्ट गुरु अवतरे।
गुरु बलभद्र सुचरण जाय निज सिर धरे ॥
गोपीनाथ सु नाम उच्चरत प्रतिच्छण।
वंशीवट सुनिवास बसत सँग रसिक जन ॥
रसिक जन नित संग गुरुवर, नाम गोपीनाथ प्रभु।
उच्चरे जब आह भर प्रगटी सु मूरति छवि विभु ॥
सोई गोपीनाथ बहुरि मधु सुख भरे ॥२॥

(३)

जय जय गोपीनाथ भट्ट चित मोहने।
श्याम विन्दु जिहि शीश सु मूरति सोहने ॥
दुलरी तुलसीमाल कंठ छवि छावनी।
मानहु जोरी युगल बसत श्रुति गावनी ॥
श्रुती गावन तुलसि कंठी, तिलक द्वादश अंगमें।
ध्यान गोपीनाथ प्रतिच्छण, सदा राधा संग में ॥
सोई मूरति सदा बसत उर सोहने ॥३॥

(४)

जय जय गोपीनाथ जगत पावन कियो।
मंजुल मूरति पगटि विश्वजन सुख दियो ॥

अजहूं सो गोपीनाथ बसत जय नगर है।
दर्शन अमित मनुष्य करत रस डगर हैं ॥
करत रसके ठगर है सो कीर्त्ति कमनी जग छयी।
गुरु गोपीनाथ महिमा शेषहू नहिं बरणयी ॥
जयपुर नगर सुवास 'गंगअलि' हित दियो ॥४॥४१५॥

* छोटा मंगल *

जय गौरंगिन जुगल अराधी।
गोपीनाथ भट्ट अवतारी, रसिकन हित रस दीन अबाधी ॥१॥
गोपीनाथ मूर्त्ति प्रगटायी, धर्म सनातन जग जन साधी।
प्रतिक्षण राधा-माधव जापी, तनक न कलियुग गुरु-उर बाधी ॥२॥
गुरु बलभद्र के रसिक सपूता, आचारज वृन्दावन गादी।
'गंगअली' पर अबैं द्रवहु गुरु, देहु महलकी टहल अगाधी ॥३॥४१६

३१—श्रीकेशवभट्टाचार्यजी महाराज

[चैत्र शुक्ला प्रतिपदा]

※ श्लोक ※

मयूरपिच्छद्युतिहारिचामर--
प्रभातिरस्कारि निजप्रियायाः ।
संगुम्फयन्तीं विलसत्कराभ्यां
धम्मिल्लभारं प्रणमामि केशीम् ॥१॥

※ दोहा ※

केशी कुवँरी कुवँरकी, प्यारी प्राण समान ।
रहे रंग कन्दर्प सँग, सकल भाँति सुखखान ॥१॥
प्रगट भई सोई आयकैं, धरि केशवभट नाम ।
चैत्र शुक्लकी प्रतिपदा, संवत्सर सुखधाम ॥२॥

※ बड़ा मंगल ※

(१)

जय जय केशवभट केशी अलि नामिनी ।
मोहन-महल विराजत अति अभिरामिनी ॥

रंग अली कन्दर्प गौरांगी संग में।
राजति सहित समाज रँगी रस रंग में॥
रंग रसमें रँगी निशिदिन, युगल विलसत छवि लखी।
विविध भाँति विनोद करि विवि, सेवती सँग ले सखी॥
रहत तिन पर ढरी नित प्रति, हरिप्रिया गज गामिनी।
जय जय केशवभट, केशी अलि नामिनी॥१॥

(२)

जय जय केशवभट केशी अलि नागरी।
रूप शील गुणवन्ति सकल सुख-सागरी॥
हैं ये प्रियाकी प्रान प्रिया इन प्राण हैं।
कहत परस्पर प्रिय न तुम सम आन हैं॥
आन नहि तुम सम अली प्रिय, कहति पुनि पुनि भामिनी।
यह कहत मम प्राण जीवनि, तुमहि श्यामा स्वामिनी॥
वारहीं प्रिय प्राण सुनि वचनावली रस-आगरी।
जय जय केशवभट केशी अलि नागरी॥२॥

(३)

जय जय केशवभट केशी अलि रसमयी।
प्रिया आपनी जानि इनसों यों कयी॥
अहो प्राणप्रिय अलबेली मेरी अली।
तुम आवो मो निकट बात इक कहूं भली॥

भली कहूं इक बात सजनी सुनहु री चित लायकें।
रसिक जनके हेत अवनी अवतरो तुम जायकें॥
राखि धर्म अनन्यता नाशो कुमति जग जो छई।
जय जय केशवभट केशी अलि रसमई॥३॥

(४)

जय जय केशवभट केशी अलि धामकी।
जो सब भाँति सहायक श्यामा-श्यामकी॥
कहचौ प्रियाको मान अचारज वपु धरचौ।
कीनी कृपा अपार सार रस विस्तरचौ॥
विस्तरचौ रस-सार अद्‌भुत, महा मधुर रस-रीति कौ।
रसिक जनको तोषें अतिप्रिय, शरण भव-भय भीतिकौ॥
'कलामंजरि' रटन लगि रहे, वा छबीले नामकी।
जय जय केशवभट केशी अलि धामकी॥४॥४१७॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो केशवभट देव।
केशी नामिनि अति अभिरामिनि, प्रगटी प्रगटावन रस-भेव॥१॥
सम्प्रदाय सनकादि शिरोमणि, करत सकल जन जाकी सेव।
'कलामंजरी' हो सब विधि से, या अनन्य ब्रत-पोतहि खेव॥२॥४१८॥

* दोहा *

चैत्र शुक्लकी प्रतिपदा, गोपीनाथ सुधाम।
प्रगट भये हैं आपके, श्रीकेशवभट नाम॥१॥

*** पद ***

चैत्र शुक्ल परिवा गुरु धर्मा केशव जनमें ।
सुखराशी पुरवासी मोद न मावत मनमें ॥१॥
हरषत बरषत सुमन देव-तिय मंगल गावें ।
मागध चारण सूत अमित मंगन विरदावें ॥२॥
घर-घर तें वर वरन करन आनंद तिय आवत ।
धनि-धनि गोपीनाथ, सुभट कहि लाल लडावत ॥३॥
भरि-भरि मोतिन थाल, न्यौछावरि करत उछारत ।
तन मन भरी उमाँह सु "रूपरसिक" निर्धारत ॥४॥४१६॥

*** पद ***

आज हरि प्रगट कियो सुखसार ॥टेर॥
चैत्र शुक्ल प्रतिपद जब आई, मध्य दिवस शुभ वार ।
नैननको गहनो भयो उत्सव, भाग्य बली के द्वार ॥१॥
लै लै भेंट ऋषी-मुनि आये, दीक्षा-समय निहार ।
मनसा सफल होयगी पूरी, कहत समय अनुहार ॥२॥
केशवभट्ट जन्म सुखदाई, भाई भई हमार ।
नाचत गावत मोद बढ़ावत, प्रमुदित गोप कुमार ॥३॥
गोवर्धन की सुभग तलैटी, भई जु भीर अपार ।
दधिकांदौ करि लई बधाई, बढ़्यो हंस-परिवार ॥४॥
भक्तशिरोमणि जुग-जुग जीवो, हमरे प्राण अधार ।
कुंज सुकेशी सुरनर सेवी, देहु "हर्षि" दातार ॥५॥४२०॥

✻ पद ✻

आज सखी आनँद अति छायौ, बाजत रंग बधाई ।
केशवभट्ट रूप धरि केशी, महल ते प्रगटीं आई ॥१॥
चैत्र मास सुदि सुखमय प्रतिपद, ऋतु वसन्त सुखदाई ।
करी कृपा गौरांगी प्यारी, रसिकन हेत पठाई ॥२॥
नित्य विहार सार रस दुर्लभ, सुलभ करयौ प्रगटाई ।
'कलामंजरी' जन बड़भागी, जो इन पद शरणाई ॥३॥

✻ दोहा ✻

मोरपिच्छ चामर द्युति, हारिण प्रिया सुकेश ।
गुम्फित करनी तिनहि नित, प्रणमत केशि सुवेश ॥१॥

✻ छप्पय ✻

केशी युग-आदेश भूमि मण्डल प्रगटायी ।
शैशव केशीघाट नाथ गोपी गुरु पायी ॥
मन्त्र गुपाल सुपाय, ध्यानस्थित केशीघाटू ।
अमित अपार सुसिद्धि बसत ऋद्धिन के ठाठू ॥
कीनेउ सन्त सुहावने, ब्रजके गूजर जट्ट ।
केशवदेव सु प्रगट कर, जय जय केशवभट्ट ॥१॥

✻ दोहा ✻

चैत्र शुक्ल प्रतिपद तिथि, संवत्सर आरम्भ ।
प्रगटेउ केशव रस सुभट, रसिक महल सुस्तम्भ ॥१॥

* बड़ा मंगल *

(१)

जय जय केशव भट्ट केशी अलि नामनी।
मोहन महल सुटहल करत दिन यामनी ॥
गुम्फत स्वामिन-केश सु मृदु मुसकावनी।
कोमल कर सरसाय अलिन हरषावनी ॥
अलिन नित हरसावनी सो, माल कौस्तुभ संगमें।
जन्म लीनेउ आय व्रजमें, प्रिया देश उमंग में ॥
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथी सरसावनी ॥१॥

(२)

जय जय केशवभट्ट महारस रास हैं।
गुरु श्रीगोपीनाथ भये तिन दास हैं ॥
केशी मारन घाट करत गुरु वास हैं।
सामुहि जमुना सरित बहत रस रास हैं ॥
बहत सामुहि सरित जमुना, रेत चपकत रस रली।
ताहि जो निज शीष धारत, मिलत तिहि ललना-लली ॥
युगल-केलि रस-रास, सु भरे पियास हैं ॥२॥

(३)

जय जय केशवभट्ट प्रगट केशव किए।
राधा गुँथे जु केश प्रगट तिन सुद दिये ॥

केशव केशव रटत सदा गुरुदेव हैं।
लीला कुंज विलास भरे रसभेव हैं॥
भरे हैं रसभेव गुरुवर, केलि जो भागौत कही।
गात गाथा स्वमुख पावन, वृन्द मुनि जो उर चही॥
जिहि सुनि रसिक सुवृन्द श्रवण रस पिय जिये॥३॥

(४)

जय जय केशवभट्ट कृपाकी कोर कर।
दान करो सोइ केलि जो केशव नाम भर॥
केशव केशव रटौं प्रतिच्छण रसन कर।
निरखौं केशव केलि गुथत तिय केश वर॥
गुथत राधा-केशवर हरि, दृगन में छवि छावनी।
रहस केली शुक जो वरनी, भागवत सरसावनी॥
'गंगअली' प्राञ्जलि सो चाहत गुरुवर॥४॥४२२॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो केशी अलि भामिनी॥टेक॥
केशवभट्ट सुनाम रँगीले, आचारज रसिकन सुखदायन।
प्रतिच्छण युगल नाम-अनुरागी, गावत केली गीत सुभायन॥१॥
रहस कुंज-लीला के दरसी, राधा-केश गुँथत मन भावन।
श्रीभागवत गात जिहि निजमुख, रसिक जननकर रसद रसायन॥२॥
केशीघाट वास हरषाये, गावत केशव नाम सुहायन।
'गंगअली' के प्राण पियारे, दृगन चिताओ सो छवि पावन॥३॥४२३

३२—श्रीश्रीगांगलभट्टाचार्यजी महाराज

[चैत्र कृष्णा द्वितीया]

❋ श्लोक ❋

जगत् पवित्रं कुरुते हि यस्या
दृगन्तपातो वितनोति सौख्यम् ।
श्रीस्वामिनी-स्नेहनिधानभूतां
श्रीकृष्णमिश्रं प्रभजे पवित्राम् ॥१॥

❋ दोहा ❋

शीतल सरल स्वभाव अति, काहि कहूं समतूल ।
सर्व रसिक-सिरमौर है, गांगल मंगल-मूल ॥१॥
चैत्र मास वदि दूज दिन, रसिकन मन अति फूल ।
'कलामंजरी' प्रगट भये, गांगल मंगल मूल ॥२॥

❋ बड़ा मंगल ❋

(१)

जय जय गांगलभट्ट रसिक कुल मण्डना ।
प्रेम भक्ति दातार भरम भय खण्डना ॥

हंस वंशके मध्य प्रगट रवि ज्यों भये ।
रसिक कमल उर खिले, दोष दुख सब गए ॥
गये सब दुख दोष जनके, मुदित चकवा सम हुए ।
नश्यौ तम-पाखण्ड, दुष्ट-उलूक थे जो छिप गए ॥
कृपा जिनकी लखहि जन दिये अंस विविभुज दण्डना ।
जै जै गांगल भट्ट रसिक कुल मण्डना ॥१॥

(२)

जै जै गांगल भट्ट रसिक हित वपु धर्यौ ।
शरणागत प्रतिपाल सबहि विधि दुख हर्यौ ॥
कीनी कृपा अपार काज जनको सर्यौ ।
परसत पदरज कल्मष श्रम तम परिहर्यौ ॥
परिहर्यौ तम श्रम जु सकलहि, सहज सुख निर्णय कियो ।
महा दुर्लभ मधुर रस सोई, सुलभ करि रसिकन दियो ॥
सनक नारद निम्बरविको, सार सुख रस विस्तर्यौ ॥२॥

(३)

जै जै गांगल भट्ट रसिक सुख दानि हैं ।
महा सुमंगल मूल सकल गुणखानि हैं ॥
अतिशय शील स्वभाव परम कोमल हियो ।
जिन लीनी पद-शरण सुवैभव निज दियो ॥
दियो निज वैभव दृगन दरसाय मोहन महल को ।
रखत नाहि दुराव जिनसों दास जानहि अहल को ॥

जिनकी लीला अस अलौकिक, रसिक बहुत बखानि हैं।
जै जै गांगलभट्ट रसिक सुखदानि हैं ॥३॥

(४)

जै जै गांगल भट्ट रसिक रस रंगिनी।
सखी पवित्रा रूप कन्दर्पा संगिनी ॥
अतिशय प्यारी परम प्रियाकी प्रान है।
अंग सँगनि दिन रैन करत रसपान है ॥
पान रसको करत नित नव, सहायक रतिकेलि है।
कुंकुमांगी आदि सखियन, स्वामिनी अलबेलि है ॥
'कलामंजरि' प्रगटि सो प्रिया-प्रेम-सिन्धु-तरंगिनी।
जै जै गांगल भट्ट रसिक रस-रंगिनी ॥४॥४२४॥

* छोटा मंगल *

जै जै गांगल मंगल मूल।
सखी पवित्रा रूप अनूपम, काहि कहौं तिनके समतूल ॥१॥
हंस वंश के भूषण प्यारे, जनकी मेटत सब विधि शूल।
जिन पर-शरण होत भये निर्भय, 'कलामंजरी' गावत फूल॥२॥४२५

* दोहा *

द्वितीया वदि मधुमास की, प्रगट भये गुन धाम।
श्रीकेशवभट गेहमें, गांगल मंगल नाम ॥

* पद *

प्रगटे गांगल मंगल मूल ।
केशवभट परमण्डन खण्डन सब अघ-ओघ समूल ॥१॥
चैत मास की कृष्ण द्वितीया, त्रिभुवन मेटन शूल ।
निज जन जनम महोत्सव गावत, 'रूपरसिक' उर फूल॥२॥४२६

* पद *

गांगल भट्ट जनम दिन आयो ।
चैत्र मास दिन कृष्ण द्वितीया, भयो सकल मन भायो ॥१॥
धीर समीर तीर जमुना तट, पुलिन पवित्र सुहायो ।
नाना विधि जलजन्तु किलोलत, विटप वितान तनायो ॥२॥
अरुण नील सित कमल भेंट जनु, मधुप भेरि धुनि आयो ।
कोकिल मत्त रटत शुक सारी, राग केदारो गायो ॥३॥
केशव-सुत की भई बधाई, मेघ मृदंग बजायो ।
सरस वसन्त अम्ब-पल्लवयुत, नित नव नेह जतायो ॥४॥
श्रीवृन्दावन नव निकुंजमें, नाम पवित्रा पायो ।
'हर्षिप्रिया' गुरुशरण लहे बिन, जन्म-समूह नशायो ॥५॥४२७

* पद *

प्रगटे गांगल भट गुन सागर ।
रंगमहल में नाम पवित्रा, सेवत निशिदिन नागरि-नागर ॥१॥
चैत्र कृष्ण द्वितीया दिन आयो, श्रीनिम्बारक वंश-उजागर ।
'कलामंजरी' प्रान जीवन धन, जन प्रतिपाल दयाके सागर ॥२॥४२८

* दोहा *

जासु पात दृग जग सुखद, करत पवित्र महित्र ।
प्रिया-सनेह निधान मय, भजहु सु आलि पवित्र ॥१॥

* छप्पय *

युगलादेश सुपाय पवित्रा नामक दासी ।
आई भारत मही, नाम गांगल सुखराशी ॥
गंगा सम जन वृन्द सिन्धु हरिपद पहुँचावत ।
निज वाणी कृत पूत अघी अघवृन्द नसावत ॥
केशव-जैसे शिष्य भट, प्रगट गोविन्द मोहन मदन ।
जय जय गांगल भट्ट मुनि, ख्यात सुकीरति त्रिभुवन ॥१॥

* दोहा *

चैत्र कृष्ण तिथि द्वितीया, भयउ सुहावन आज ।
गांगल भट प्रगटे सुभट, रसिकन के सिरताज ॥१॥

* बड़ा मंगल *

(१)

जय जय गांगल भट्ट पवित्रा नाम है ।
स्वामिन नेह निधान मित्र हरि नाम है ॥
युगल पवित्र चरित्र गात मुख सुठि भयो ।
इह हेतु अलिनाम पवित्रा सखि कह्यो ॥
पवित्रा सखि कह्यो युगवर कीर्ति गावत धाम में ।

बसत हरि वनमाल रूपा, प्रभु बिकुंठ ससाम में ।।
जन्मी युग-आदेश सु गंगपुर ग्राम है ।।१।।

(२)

जय जय गांगल भट्ट गंग तट पावने ।
चैत्र कृष्ण तिथि द्वितीय रसिक हरसावने ।।
पहुँच सु केशव गुरु नाम गांगल धरचो ।
भाषेउ तव गृह शिष्य मोर यह अवतरचो ।।
अवतरचो यह शिष्य मेरो, कहि जु लाये महि ब्रज ।
पञ्च मुठि संस्कार कीने, मन्त्र दीनेउ तिलक रज ।।
दीने मदन गुपाल मूर्त्ति अरचावने ।।२।।

(३)

जय जय गांगलभट्ट प्रतिच्छण भजन-रत ।
एक टेक अनुराग युगल पद मधुव्रत ।।
अति ही शील स्वभाव करुण अति ही हियो ।
जिन लीनी पद-शरण सु वैभव निज दियो ।।
दियो निज वैभव दृगन सो दरस वनपति धाम को ।
दमन दुष्टन शिष्य कीनो एक केशव नाम को ।।
प्रतिच्छण मदन गुपाल रटन मुख प्रेम व्रत ।।३।।

(४)

जय जय गांगल भट्ट, भ्रात वर्धमान संग ।
भजन यशोदानन्द, भरे अनुराग रंग ।।

श्रीभागवत बखान अमृतमय सरि बही।
अमल करि सब अवनि सन्त नाभा कही॥
सन्त नाभा भनी मुख से, ग्रन्थ सुठि भक्तमाल में।
थम्भ दोउ हरिभक्त के कहे भरे रसके जाल में॥
'गंगअली' कर जोर सु जांचत परा रंग॥४॥४२९॥

* छोटा मंगल *

जय जय गांगल भट्ट रसीले।
सखी पविता मंजु महल की, गावत केली गीत रंगीले॥१॥
हंस वंश भूषण अभिरामू, वन-अनुरागी परम छबीले।
कहत भागवत पावन गाथा, बस वंशीवट गुण गरबीले॥२॥
मदन गुपाल मूर्त्तिके अर्चक, दरसत दृगन छटा चटकीले।
'गंग अली' पर कृपा सुकारी, महल टहल रस भरे नुकीले॥३॥४३०

३३—श्रीकेशव काश्मीरि भट्टाचार्य जी महाराज

[ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्थी]

❋ श्लोक ❋

कश्मीरपंकांकितहस्तसरोजां,
संभावित श्रीपतिपत्सरोजाम् ।
विनिद्ररक्तोत्पललोचनाभां,
मुदा स्मेर चेतसि कुंकुमाभाम् ॥१॥

❋ दोहा ❋

ज्येष्ठ शुक्ल शुभ चतुर्थी, श्रीकेशव अवतार ।
काश्मीरी प्रभु जग विदित, गावो मंगलचार ॥१॥
दसहु दिशा जीती प्रबल, मार्यो दुष्टन मान ।
केशव भट्ट शिरोमणि, भाषत वेद प्रमाण ॥२॥

❋ बड़ा मंगल ❋

(१)

जय जय केशव भट्ट सर्वोपरि राज है ।
श्रीगांगल के लाल सकल सिरताज है ॥
जानि धर्म की हानि प्रभू कीन्ही दया ।
सर्वोपरि कह्यो तत्त्व बिना हेतुक मया ॥

मया कीन्ही शुद्ध, हिय भये, जयति वचन सुनावही ।
भाग्य बिरवा उदै सजनी, कंठ कोकिल गावहीं ॥
हंस वंश प्रकाश कारक, सकल गुन की खान हैं ।
नाम सुनी अघ दूर भागे, देत अभिमत दान हैं ॥१॥

(२)

जय जय केशव भट्ट विश्व विजयी हरे ।
अटन किए सब देश शुद्ध वसुधा करे ॥
चक्रवर्ति भयो धर्म, अधर्मी छिपि गए ।
शीतल हिय भये सन्त कुतर्की पद नए ॥
नए पद-पंकज कुतर्की, विनय बहु भांतिन करी ।
जैमिनी विज्ञानवादी शून्यादि करुणा हरी ॥
शाक्त शैव चार्वाक बौद्ध औ तर्क द्वैतादिक उरे ।
गौतमानुयायी सांख्य अरु, अद्वैतवादी खरबरे ॥२॥

(३)

जय जय केशव भट्ट सुनी मथुरा दुखी ।
बन्धौ यन्त्र विश्रान्त मलेछन चिह्न लखी ॥
आये दीन दयाल पुरी पायन परी ।
कियो सूर्य आवेश प्रबल माया हरी ॥
हरी सब कलिकाल के भय करी रच्छा जनन की ।
यवन नृप कर जोरि ठाढ़ो, शरण मै तुव चरन की ॥
शिष्य होय मो उर निहोरत, लाज श्रीगुरु ने रखी ।
पञ्च रस उपदेश कीन्हौं, भाव दीन्हौ शुभ सखी ॥३॥

(४)

जय जय केशव भट्ट तीर्थ शोधन कियो ।
कीन्ही प्रतिमा प्रकट सिरायो सब हियो ॥
कश्मीर की आर तापत्रय हार है ।
धरे विविध अवतार अधम उद्धार है ॥
उद्धार अधमन पतित पावन, कौन कवि यश विस्तरै ।
जन्म दिन मंगल महोत्सव देव मुनि अस्तुति करै ॥
हरद अचत दूध दधि फल, फूल दुर्वांकुर लियौ ।
करे सिंचत गात कीर्ति "हर्षिप्रिया" जग जस अयौ ॥४॥४३१॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो केशवभट देव ।
पतितन पावन अधम उधारन,
विश्व शिरोमणि सुरनर सेव ॥१॥
नव निकुंज कुमकुमा भामिनी,
दशधा छाक छकावत देव ।
"हर्षिप्रिया" बड़ भाग मनावत,
कौन सुकृत पद पाये भेव ॥२॥४३२॥

* दोहा *

जिते अमंगल जगत के, सुनतहि सरके सट्ट ।
मंगल सबठौं जगमगौ, जनमत केशव भट्ट ॥

* पद *

काश्मीर केशव जनमत या विधि सों छवि छाई ।
जा विधि श्रीव्रजराज सुवन की नाना ग्रन्थन गाई ॥१॥
रहित रंकता नाम मात्र त्रिभुवन में सजनी ।
धन्य धन्य सुदि जेष्ठ चतुर्थी दिन अरु रजनी ॥२॥
ठौर ठौर मुदि गए मलिन मारग कहि जेते ।
जगमगात भये अभय सनातन धर्म जु तेते ॥३॥
बही सुमति की सरित ललित भई गलित कुटिलता ।
छाय रही कहि नहीं परै जन मन हिलमिलता ॥४॥
कल कंठन सौं गावत आवत चहूँदिशि बाला ।
देखन श्रीगांगल सुभट जूके नव लाला ॥५॥
भरि भरि मोतिन थाल वारि नौछावरि कीनी ।
मृगमद मलय कपूर भूमि लीपत रंग भीनी ॥६॥
कोउ मनि मंजुल माल दोरि द्वारन लटकावत ।
कोउ तिय भवन अटान छटा सम ध्वज फहरावत ॥७॥
कौतुक बढ्यो अपार आज मुख नहि कहि आवत ।
"रूपरसिक" आनन्द उदधि हियमें न समावत ॥८॥४३३॥

* पद *

हमारे सब विधि भाग बड़े ।
महिमा अमित अपार सार सुख, प्रगटे लाड लडे । १॥
केशव देव देवनके, गावत जाहि खड़े ।
सगुन रूप "गोपाल" भावतो, राजत पल न चड़े ॥२॥४३४

* पद *

बाजरे आज मंदुलरा गाज ।
प्रगटे केशव देव सनातन रही जगत की लाज ॥१॥
गुण गावत गन्धर्व गुणीजन, सरस बजावत साज ।
प्रेम मुदित "गोपाल" बालनित, नृत्यन नृत्य समाज ॥२॥४३५॥

* पद *

मंगल नाम श्रीकेशव देव ।
लेन सदा छूटत भ्रम भेव ॥१॥
मंगल रूप मनोहर वेश ।
मंगल रसिक राज राजेश ॥२॥
मंगल चरण कमल शुभ रैन ।
निरखत मिटत सकल मद मैन ॥३॥
युगल कृपा अति होय अनूप ।
सर्व शिरोमणि सब जग भूप ॥४॥
लाला "गोपाल" आचारज रूप ।
प्रगट भये नव सुखमय जूप ॥५॥४३६॥

* पद *

गावो री सब मिलि सरस बधाई ॥
शुक्ला जेष्ठ चतुर्थी नीकी, प्रगट्यो कुँवर कन्हाई ।
शुभ नक्षत्र शुभवार मुहूरत भई रली मन भाई ॥१॥

जातकर्म जो कह्यौ वेदविधि, कियो सो ज्ञानि बुलाई ।
नाम करण शुभ कियौ विप्रवर, केशव प्रभु सुखदाई ॥२॥
समय उचित मंगल पिकवैनी, वोलत लगत सुहाई ।
यजुर्वेद-ध्वनि करत गौड़ द्विज, स्वरवर राग मिलाई ॥३॥
जायो आज जात कुलभूषण, घर घर भाग बढ़ाई ।
दान मान सनमाने सबको, जो या योग्य दिखाई ॥४॥
देत अशीष चिरजीवो तव सुत, कहत सु विधी मनाई ।
'श्रीगोपाल' प्रभु राज करौ नित, अचल भक्ति जग छाई ॥५॥

* पद *

आस इत बाजे सरस बजे ।
फूले फिरत सकल पुरवासी, देखत काम लजे ॥१॥
भये गोड़ द्विज सर्व एक युत, शोभा इन्द्र लजे ।
'लाल गोपाल' को प्रगट्यो जीवन, निरखत दोष भजे ॥२॥४२८

* पद *

केशव काश्मीरी गुण धाम ।
जन्म समय के मंगल गावो, पावो सुन्दर श्याम ॥१॥
श्रीहरिगुरू सलोने लागत, जुगल केलि विश्राम ।
धरि नाना विधि रूप दयानिधि, देत जनत आराम ॥२॥
नाम रूप लीला सेवा सुख, वर्ण किये घनश्याम ।
"हर्षिप्रिया" बहु ग्रन्थन करता, विवि सेवन निशियाम ॥३॥४२९

* पद *

प्रगटे काश्मीरी गुण धाम ।
गांगल भट्ट राज पटमण्डन, जन मन पूरण काम ॥१॥

नाश्यो तिमिर प्रकाश भयो जग, हरिजन मन आराम।
प्रफुलित सन्त परम अनुरागी रटे निरन्तर नाम ॥२॥
निम्ब दिनेश आश पूरन करि, प्रगटाये गुण ग्राम।
खल मत वादिन के हिय कांपै, तुरकन करी सलाम ॥३॥
गर्जें वेद पुराण शास्त्र सब, कोउ न दीखत वाम।
भिन्ना भिन्न प्रचारि हर्षिप्रिया, सेव्य परा निशियाम ॥४॥४४०

* पद *

प्रगटे री हरि मंगलकारी।
भई हानि सब शास्त्र लुप्त भये,
कुमति फिरे घर-घर के द्वारी ॥१॥
धर्म भेद तजि पाप हिये धरि,
पन्थ अनेक करें अंधियारी।
बढ़ै मलेच्छ साधु भये विस्मय,
सर्वेश्वर प्रति विनय उचारी ॥२॥
हा हा नाथ प्रणत भयहारी,
सुनि लीजै प्रभु विनय हमारी।
जब जब भीर परी भक्तन पै,
करै अकारण हेतु मुरारी ॥३॥
आरत वचन सुनत अनुरागे,
प्रगटे आचारज वपु धारी।
केशव दरस कलेश नशे सब,
मूरति मन हरनी सुखकारी ॥४॥

मारतगड सम तेज विराजत,
विश्व विजय हित नर तन धारी।
नाम सुनत सुर नर मुनि हरषैं,
हंस वंश जय जयति उचारी ।।५।।
पुर नर नारि लख्यौ शोभा सुख,
समय सुहावन भोर महारी।
घर वन वास विचित्र सँभारें,
ऋषि समूह शुभ ऋचा उचारी ।।६।।
कनक कलश कदली के खम्भा,
ध्वज पताक तोरन रुचिकारी।
दधि नवनीत हरिद्रा रोरी,
दुर्वा अच्छत फूल धरा री ।।७।।
चौक चारु मधि वेदी अनुपम,
ऊपर पीत वितान तना री।
हरि अवशेष वेद धुनि कीनी,
सन्त सुखी खल भये दुखारी ।।८।।
कोकिल कंठ लगावत ऋषिवधु।
गावत गुनन नचत दै तारी।
दधि-काँदौ कीन्हो मन भायौ,
नाय शीस मुख कहत अहारी ।।६।।
दान मान सनमान कियौ अति,
देत अशीष लेत बलिहारी।

अटल राज भक्तेश महाप्रभु,
होय कोटि युग हमही अगारी ॥१०॥
पावन पतित नाम गुरु तुम्हरो,
मो अघ समुझि लगत डर भारी।
"हरिप्रिया" कर जोरि निहोरत,
सुनिए स्वामि प्रणत भय हारी ॥११॥४४१॥

* ढाढिन का पद *

ढाढिन नाचै ऋषिराज के अङ्गना।
माँगत नेग भाग्य बड़ भूरी।
मनसा सुफल आज होय पूरी॥
मन सुजस सुकृत भये तेरे ललना ॥१॥
पायो सुअवसर विनय सुनाऊँ।
जो जिय भात बधाई पाऊँ॥
चाहे सर्वेश्वर पद रति रचना ॥२॥
भाव भक्ति के भूषण दीजै।
अंगिया शील सन्तोष की कीजै॥
नथ रसिकन संग प्रेम सारी देना ॥३॥
तट वंशीवट वास लेऊँगी।
रंग अली की टहल करूंगी॥
जहाँ आनन्द घन बहै रस भरना ॥४॥
तुम तजि और न काहू जाँचूँ

हंस वंस-यश कहि नित नाचूँ ॥
करो अटल राज, जग थिर रहना ॥५॥४४२॥

* पद *

जयति श्रीकेशवभट्ट मुकुटमणि जगतके
भक्ति विस्तार प्रभुता अपारी।
आप कश्मीर जन पापके खण्डने,
मण्डने विदुषगन सभा भारी ॥१॥
सर्व धर्मान् परित्यज्य या वाक्यपर
रहत आरुढ मति मूढ़ नासे।
गूढ़ किये चरित मधुपुरी म्लेच्छ हने,
विदित संसार सन्तन प्रकाशे ॥२॥
कहाँ लौं कहौं निम्बार्क कुल सोहने,
मोहने श्याम मन प्राण जाने।
धन्य ते "जीवना" भाग्य की सीवना,
आय पन कमल पद सरन ठाने ॥३॥४४३॥

* पद *

ज्येष्ठ शुक्ल दिन चौथको नीको,
आनन्द हरष मनावो आज।
केशव काश्मीरी भट्ट प्रगटे,
सन्त रसिक जनके सिरताज ॥१॥
सकल मही मण्डल में छायो,
हंस वंश को अविचल राज।

व्याकुल भये दुष्ट जन मन में,
ज्यों गज सुन के हरि की गाज ।।२।।
पाखण्ड-तिमिर मिट्यौ सब जगको,
दृढ़ करि बाँधी भक्ती पाज ।
"कलामंजरी" कुंकुमांगी के,
चरनन सेय करों निज काज ।।३।।४४

* दोहा *

कुंकुम-पंकाङ्कित हृदय, श्रीपतिध्यान अभंग ।
रक्त कमल दृग सोहनी, सुमिरहु कुंकुम अङ्ग ।।१।।

* छप्पय *

लै प्रीतम आदेश कुंकुमा दक्षिण आयी ।
गांगल गुरु प्रताप शास्त्र अध्ययन सुहायी ।।
चौदह सहस सुशिष्य मही अट ग्रन्थ रचाये ।
यन्त्र बाँधि विश्रान्त यवन किए नारि सुहाये ।।
सुरगण कृत जिहि दासता, मन्त्र सु महिमा जिहि अघट ।
द्वितीय प्रगट निम्बार्क जनु, जय केशव काश्मीर भट ।।१।।

* दोहा *

ज्येष्ठ शुक्ल तिथि चतुर्थी, प्रगटे मुनि कश्मीर ।
दसहु दिसा जीती प्रबल, जम सन्तन की पीर ।।१।।

※ बड़ा मंगल ※

(१)

जय केशव काश्मीरि कुंकुमांगी अली ।
कुंकुम-सेवा रचत युगल तन रस रली ॥
केसर-रंजित हृदय कमल जस लोचना ।
द्वितीय रूप वैजन्ति माल दुख मोचना ॥
दुख मोचना लख लाल युग तव अवतरण आज्ञा दयी ।
देश दक्षिण कीन पावन विप्र गृह अवतरित भई ॥
ज्येष्ठ शुक्ल तिथि चौथ पावन कीन बली ॥१॥

(२)

जय केशव काश्मीरि गांगल गुरुवर ।
काश्मीर खल डाँट लही प्रभु छाप घर ॥
चौदह सहस्र सुशिष्य संग दिग्विजय कर ।
कीने खण्ड पाखण्ड वैष्णव सुभट वर ॥
सुभट मुनिवर वैष्णवन के आय के उज्जैनपुर ।
लिखी टीका तत्त्व प्रकाशिका भागवत गीता जु वर ॥
आये पुनि व्रजभूमि गुरु आदेश धर ॥२॥

(३)

जय केशव काश्मीरि गुफा मथुरा बसे ।
ब्रह्म सूत्र उपनिषद् भाष्य मुनिवर कसे ॥
रचेउ भाष्य गोपाल सहस्रनामा प्रभु ।
शरणापत्ति गाय प्रगट गोविन्द विभु ॥

विभु गोविन्द प्रगट गिरिवर कवैं स्वत्तट सरि लता।
कुटी आया रसिक सँग में, सुनहु केली युग कथा॥
सुन यमुना स्तोत्र लाल ललना हँसे ॥३॥

(४)

जय केशव काश्मीरि दुखी मथुरा सुनी।
बाँधि यन्त्र विश्राम यवन किये त्रिय गुणी॥
गिरे चरण सब आय दयालु महामुनी।
मंजुल दिय उपदेश भाव दिय अली जनी॥
भाव दिय अलि जनी श्रीगुरु वंश प्रगटे रसिक जन।
रहीमा रसखान जैसे, आज हूं जग कीर्त्ति गुण॥
पावन महि कल कीर्ति 'गंग' नहिं सब भनी॥४॥

* छोटा मंगल *

जो कहुँ केशव कृपा न करते।
तो ये वैष्णव मथुरावासी, म्लेच्छ रूप धरि मरते॥
ये विशान्त घाट मथुराकों कौन जु पावन करते।
यन्त्र लगाय म्लेच्छ वृन्दन को को हरि भक्ती भरते॥
जन रसखान और रहिमन से इन गृह जन्मन धरते।
भव सागर डूबत लोगन को भक्ति जहाज को रचते॥
जो काश्मीर न पावन करते काश्मीरी को कहते।
जिनको समय शताब्द द्वादशी अजहु सुनत अरि जरते।
'गंगजली' पावन पद रज विन, रसिक काज कस सरते॥४६

* बधाई *

गावहु केशव गुरु बधाई ।
दक्षिण मूँगीपट्टन पुर में, द्विजवर गेह सुहाई ॥
प्रांगण बैठी तिया सुहावनी, शोभा की छवि छाई ।
प्रगटेउ द्वितीय गुरु निम्बारक, भाषत जन समुदाई ॥
बाजत ढोल मृदंग नगारे, मंजल रव सहनायी ।
कल मुख गीत गात मुरि नाचत नारिवृन्द सुखदायी ॥
प्रांगण गो पुर द्वार-द्वार पै बन्दनवार बँधाई ।
मोतिन चौक पुरे आवत शोभा सरस महाई ॥
मागध सूत और बन्दी जन कल कीरति मुख गायी ।
सन्त भक्त रसिकन की आशा श्रीहरि आज पुराई ॥
केशव-केशव रूप प्रगट भये, म्लेच्छ विनासन ताईं ।
'गंगअली' गावत गुरुवर यश बहुत पवित्र सुहाई ॥४४७॥

३४—श्रीश्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज

[आश्विन शुक्ला द्वितीया]

* श्लोक *

समस्तनानाविधदेवतागणै-
विरिञ्चिजगंगाधरशारदादिभिः ।
मूर्द्धाभिवन्द्यारुणपादपंकजां
श्रीश्रीहितां सन्ततमानतोऽस्मि ॥१॥

* दोहा *

श्रीवंशीवट तट निकट, श्रीभट कुटी विराज ।
युगल शतक पुस्तक रची, मची धूम रस राज ॥१॥
गोप मास द्वितीया सु तिथी, ग्रह नक्षत्र शुभ साज ।
प्रगटे श्रीश्रीभट्टजू, सब रसिकन सिरताज ॥२॥
श्रीकाश्मीर प्रसाद ते, पायो तत्व अगाध ।
युगल रहस्य बरनन करी, श्रुति पुराण सब साध ॥३॥

* बड़ा मंगल *

(१)

जय जय श्रीभटदेव रसिक रस भूषणा ।
प्रगटे आनन्द कन्द मधुर रस पूषणा ॥

लीला सरस निकुंज-रहस्य-रस गाय के।
किए सनाथ अनाथन नाम सुनाय के॥
सुनाय के जस जुगल रस माधुर्य लीला विस्तरी।
रसिकजन हिय बढ्यो अति उत्साह सुख निधिकी घरी॥
गावो मंगल चार प्राण पीयूषणा।
जय जय श्रीभटदेव रसिक रस भूषणा॥१॥

(२)

जय जय श्रीभटदेव जुगल हितु सहचरी।
प्रगट होय कलि जीव परम करुणा करी॥
श्रीवृन्दावन वास प्रीत सोई दृढ़ धरी।
श्यामा-श्याम पदकंज लुब्ध संग्रह करी॥
करी संग्रह उत्साह कौतिक परम चित के चख सों।
आज को सो दिवस सजनी मिले जिय के भाव सों॥
विधना आज घरी आनन्दित करी।
जय जय श्रीभटदेव जुगल हितु सहचरी॥२॥

(३)

जय जय श्रीभटदेव जुगल जस विस्तरी।
रसिक जनन आनन्द सिन्धु रस मन भरी॥
नर नारी उत्साह कौतिक करैं धाय कैं।
लै दही हरद मिलाय छिरकत आय कैं॥
आपकैं अति भाव तिनकों प्रेम नहि वरनों रैंप।
करैं नृत्य गीत उमाह तन मन वारि सुख छवि हिय धरैं॥

कहि सकै को अनन्द जेतो सबनि के जिय नित भरी।
जय जय श्रीभटदेव जुगल जस विस्तरी ॥३॥

(४)

जय जय श्रीभट देव रसिक चूड़ामनी।
विवि गुन गाय रिझाय भये निधि के धनी ॥
किए अपनाय दृढ़ाय प्रेम सरसाय कैं।
जीव अमित्त भये पार चरन रज पाय कैं
पाय कैं सुख सिन्धु बाढ्यो प्रताप जग जस छै रह्यो।
प्रेम भक्ति प्रवाह उमग्यो भाग जाके तिन लह्यो ॥
ऐसे रसिक अनन्य कृष्ण अली के धनी।
जय जय श्रीभटदेव रसिक चूड़ामनी ॥४॥४४८॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो जय श्रीभटदेव।
रसिक अनन्य जुगलपद सेवी, जानत श्रीवृन्दावन भेय ॥
राधावर बिन आन न जानत, नाम रटत निशदिन यह टेव ॥
प्रेम रंग नागर सुख सागर, श्रीगुरुभक्ति शिरोमणि सेव ॥२॥४४६

* पद *

प्रगटे आज रसिक सिरताज।
श्रीकाश्मीर भट्ट पटमण्डन, करन सकल जन काज ॥१॥
आश्विन शुक्ल दोज तिथि शुभदिन, हरषत निरख समाज।
सुनत जनम मंगल त्रिभुवन में, गयो अमंगल आज ॥२॥

लखि कौतुक सुर नर मुनि उचरत, धन्य-धन्य द्विजराज ।
अभिमत वर दायक दरसायो, 'रसिक-स्वरूप' निवाज ॥३॥४५०॥

* पद *

आज बधाई चहुँदिसि छाई ।
प्रगटे श्रीभटदेव प्रतापी, मन अभिलाष पुराई ॥१॥
जुगल केलि माधुर्य परम हित, गाई सरस सुहाई ।
दम्पति पद रति दायक भावक, प्रेम-भक्ति दरसाई ॥२॥
आश्विन मास उज्यारी द्वितीया, सुख शोभा सरसाई ।
फूली फिरत 'कृष्णअली' तन मन, नैनन हियो सिराई ॥३॥४५१॥

* पद *

आज नव मंगल मोद बधायो ।
प्रगटे श्रीभटदेव रसिकवर, हितू सबन मन भायो ॥१॥
आश्विन शुक्ल दितिया तिथि नीकी आनन्द सब जग छायो ।
'कृष्णअली' के भये मनोरथ, कुंज केलि दरसायो ॥२॥४५२॥

* पद *

प्रगटे श्रीभटदेव आज सखी, चहुँदिसि मंगल मोद मई ।
भयो आनन्द सकल पुरजन में, होत कुतहल धूम नई ॥१॥
फूले फिरत सकल नर-नारी, अद्भुत सुख की छकन छई ।
बँटत बधाई मन भाई तहँ, 'कृष्णअली' की आशा पुजई ॥२॥४५३

* पद *

मधुर धुनि बजत बधाई आज ।
शुभ दिन वरषगांठ प्यारो मुख, निरखो सब सखिसाज ॥१॥

करो अलंकृत महल सहचरी, मंगल सरस समाज।
माथे तिलक रुचिर रुचि रोरी, मोतिन अच्छत करो विराज ॥२॥
इक नाचत इक करत कुलाहल, रह्यो मंदुलरा बाज।
'कृष्णअली' मिली रंग बधाई, पुरये सब मन काज ॥३॥४५४॥

* पद *

बाजे बाजे मँदिलरा आज रे।
प्रगटे श्रीभटदेव लाड़िलो, रसिकन को सिरताज रे ॥१॥
नर नारी सब नाचत गावत, सरस मधुर धुनि गाज रे।
फूले फिरत परम आनन्दे, पूजी सब मन काज रे ॥२॥
ईश निहोरत अशीष देत हैं, करहु सो अविचल राज रे।
'कृष्णअली' के भये मनोरथ, दिन दिन सब सुख साजरे ॥३॥४५५॥

* पद *

जय जय श्रीभटदेव रसिकवर।
हित सों हितू लडावत अनुदिन, मोद भरी गुन गाय निरन्तर ॥१॥
प्रेम-पीयूष माधुरी सम्पति, दम्पति पद निधि उर धर।
टहल महल दासी मन मानी, कृष्ण अलीके परम कृपाकर ॥२॥४५६॥

* पद *

जिनके श्रीभट पद प्रेम।
तिनहि न कछु तीर्थ व्रत संयम, बिन साधन आराधन नेम ॥१॥
कृपा दृष्टि करि किए अनाथन, अनायास जो भये सुछेम।
राधा मदन गोपाल मनोहर, हरत सकल दुख नेम ॥२॥४५७॥

आज सखी श्रीभट्ट जन्म लयो ।
रसिक अनन्यन को सुख दायक दुख सन्ताप गयो ॥१॥
प्रमुदित गुण सब भरे परस्पर, पायो दिवस नयो ।
हरष सहित गावत नर-नारी पूरब पुण्य गह्यो ॥२॥
प्रेम लच्छणा भक्ति प्रगट करि भक्ति सुप्रेम दयो ।
मिटे सकल पाखण्ड अवनिके, सुन्दर सुख निबह्यो ॥३॥
सबने परम रमन बृन्दावन जीवन बोलि कह्यो ।
जामें मदन गोपाल किशोरी, नित्य-विहार ठह्यो ॥४॥४५८

* पद *

जय जय श्रीहित् स्वरूप श्रीभट रस-राई ।
राजत रस प्रेम रूप, नित्य धाम छवि अनूप,
निसदिन रहे अङ्ग-सङ्ग दम्पति मन भाई ॥१॥
कुञ्ज-केलि अष्टयाम, सेवत श्रीगौर-श्याम,
रुचि लै अनुराग रंग अंग अंग छाई ॥२॥
रसिकन हित प्रगट भये, उज्ज्वल रस प्रेम दिये,
लीलारस वलित ललित रहसि केलि गाई ॥३॥
बृन्दावन रूप सार, बरनी महिमा अपार,
'रूपरसिक' बार-बार चरनन सिर नाई ॥४॥४५९॥

* पद *

नमो जयति श्रीभट ऋषिराज ।
भक्तराज अरु रसिकराज शुभ, श्रीबृन्दावन रसकी पाज ॥१॥१॥

श्यामा-श्याम निकुंज केलि गुन, मत्त रहत मिलि रसिक समाज।
रंगादिक संग हितू सहेली, कलि प्रगटे परिकर जुत साज ॥२॥
"श्रीगोविन्दशरण" दृढ़ि हिये धरि, ये ही सबके सारन काज।
धीरज धारि चरन-रज सिर परि, भव सागरकों तिरन जहाज ॥३॥४६०

* पद *

श्रीभट जनम लियौं भुव माहीं।
नवल नवेली हितू सहेली जग हित आदि गिरा प्रगटाही ॥१॥
रसिक जनन को रस अँचवायो, लीला विविध भाँति परकासी।
साधन सिद्धि वस्तु दरसाई, तिहि लखि रंग महल ह्वै बासी ॥२॥
हंसवंस निज सुयश बढ़ायो, आप रूप भये श्रीहरिव्यास।
दम्पति केलि कुञ्ज सुख गायौ, "गोविन्दशरण" प्रभु-पद-पराग-रस

* पद *

प्रात समय उठि श्रीभट प्रभुके, चरण-कमलकों कीजै ध्यान।
आनन्द कारी मंगलचारी, अशुभहरण अरु करन कल्यान ॥१॥
अवनि कल्पतरु निज दासन को, मारतण्ड टारन अज्ञान।
चिन्ताहरण प्रगट चिन्तामणि, कामधेनु जानत सब जान ॥२॥
मन मधु करहि बसावहु निसिदिन, जो चाहत वृन्दावन ऐन।
"गोविन्द शरण" प्रभु-पद-पराग-रस, तन-मनको अति आनन्द दैन ३

* पद आशीष *

लाल तेरो चिरजीवो महारानी।
बाँको बार होय न जो लौं गंग-यमुन में पानी ॥१॥
जुग-जुग राज करो सुख बिलसो, पुरो हमारी बानी।
नित नव मंगल मोद बधायो, सुख-सम्पति मन-मानी ॥२॥

देत अशीष निहोर ईश सों, विवस प्रेम सरसानी ।
'कृष्ण अली' वलिहार निरखि छवि, तन-मन नैनसिरानी ॥३॥४६३॥

* पद *

ऊनयौ भक्तिवर दैन श्रीभट्ट घन
सर-सरित भरे, जन अमित शीतल करे,
नन्दनन्दन कुवँरि भानुजा रस भजन ॥१॥
हरित सुख भरित अनुराग कल फलित भये,
त्रिविध गए ताप जब चरन कीनों नमन ।
प्रणत चातक मोर हरखि हरिगुण रटत,
सुविधि आरति हरण देख तिन सुद्दपन ॥२॥
कृपा घुमड़नि चहुं ओर मारुत वहै.
युगल यश गान गंभीर गरजनि वदन ।
पाय आनन्द सब भृत्य प्रफुल्लित हिये,
'वृन्दावनहित' सुभग दृष्टि भई जासु तन ॥३॥४६४॥

* पद *

आज बधाई बजत सुहाई ।
प्रगटे श्रीभटदेव आचारज, आनन्द कह्यो न जाई ॥१॥
गोप मास शुक्ला शुभ द्वितिया, भई रसिकन मन भाई ।
'प्रियासखी' श्रीहंसवंशकी, कीरति धुज फहराई ॥२॥४६५॥

* पद *

आज जग प्रगटे शोभाधाम ।
आचारज वपु धर कर आये, श्रीभटदेव सुनाम ॥१॥

आश्विन सुदि द्वितिया दिन प्रगटे, शुभ लच्छण अभिराम।
जिनके अङ्क विराजत निशिदिन, सुन्दर स्यामा-श्याम ॥२॥
ग्रन्थ अनेकन रचे सुमति शुभ, वाणी दिव्य ललाम।
पतितन पावन करन जगत के, धाए तजि प्रिय ठाम ॥३॥
रसना रस बरसत सुख सरसत, निज जन पूरण काम।
लाड़िली लाल 'गोपाल' सुयश मुख, उचरत आठौं याम ॥४॥४६६॥

* पद *

बजत बधाई सुहाई री माई।
प्रगट भये आचार्य रूप धरि, श्रीभट रसिक महाई री माई ॥१॥
अति पवित्र ब्रजभूमि अलौकिक, तहाँ की कहाँ बड़ाई री माई।
त्यागमूर्ति अनुराग अनूपम, नाम जगत लौ लाई री माई ॥२॥
सुखन पुञ्ज बन केलि कुंज रस, सरसत उर अधिकाई री माई।
नित्य विलास रास-रसके रंग, रंगे रहत रस-राई री माई ॥३॥
जीवन धन राधे स्वामिनि-की, कीरति कहत बनाई री माई।
विमुख इन्दु चकोर नेह-निधि, 'श्रीगोपाल' कन्हाई री माई ॥४॥४६७

* पद *

श्रीभट्टदेवाचार्य प्रगट भये, सब जग मंगल आज री सजनी।
हंस-वंस अवतंस प्रशंसित, रसिक जनन सिरताज री सजनी ॥१॥
वेद शास्त्र अष्टादश ज्ञाता, राख्यौ धर्म-जहाज री सजनी।
कलिमल ग्रसित पतित पाखण्डी, गर्व दरसतें भाज री सजनी ॥२॥
यवन काल लखि दुष्ट हाल दई, बाँधो भक्ति सुपाज री सजनी।
अति कृपाल दुख द्वन्द टाल सब, राखे भक्त-समाज री सजनी ॥३॥

युगल-केलि-रस-मत्त दिवस निशि, भूतल रहे विराज री सजनी ॥
वृन्दावन ब्रजभूमि अलौकिक, विचरत सन्तन काज री सजनी ॥४॥
कुंज महलते आये अवनिपर राखी ब्रजकी लाज री सजनी ।
सेवत हित चित लाल लाड़िली, 'श्रीगोपाल' अधिराज री सजनी ५॥

* पद *

आज सखि गावौ मंगलचार ।
रसिक अनन्यन के रस दायक, श्रीभटदेव लियौ अवतार ॥१॥
आश्विन सुदि दूज तिथि नीकी, जगहित प्रगटी हितू उदार ।
'चन्द्रप्रभा' दम्पति की प्यारी, वरन्यौ उज्ज्वल रस अति सार ॥२॥

* पद *

आज सखि प्रगटे श्रीभटदेव ।
आश्विन शुक्ला शुभ दिन द्वितिया, कृपा करी जग प्रगटे एव ॥१॥
वरन्यौ ग्रन्थ 'युगलशत' अद्भुत, जानत कुञ्ज-महल रसभेव ।
'अलीगोमती' हितू सहचरी, दम्पति चरण करत नित सेव ॥२॥४७०॥

* पद *

ढाढी फूल्यौ अंग न मावै ।
सकल सभा ऋषिजनकी बैठी, ता मधि भाव बतावै ।
दधि दूर्वा अच्छत रोरी लै, सबके शीष बँधावै ॥१॥
ऊँचो कर करि टेर सुनावै, हंस-वंश यश गावै ।
श्रीकेशव भट निकट जायके, हरिके वचन सुनावै ॥२॥
तारन तरन भयो सुत तुम्हरै, भरि दृग दरसन पावै ।
आशा सुफल फली मोमनकी, 'हर्षप्रिया' बलि जावै ॥३॥४७१॥

* पद *

सजनी आनन्द को दिन आज,
सकल मिलि मंगल गावोरी ।।टेर।।
केशव काश्मीर सुत प्यारे, नियमानन्द वंस उजियारे ।
इनको लाड़ लड़ावोरी ।।१।।
निज जन हेत हितू अलि आई, श्रीस्वामिनी कर कृपा पठाई ।
तिन छवि हृदय बसावो री ।।२।।
आश्विन शुक्ल दूज दिन प्यारो प्रगट्यो रसिकन को दृग-तारो ।
श्रीभटकी बलि जाओरी ।।३।।
केशव चन्दन अजिर लिपाके, सौरभ सकल भवन सिचवा के ।
अगर धूप करवावो री ।।४।।
ले मणि मुक्ता चौक पुरा के, अद्भुत कदली खम्भ रूपा के ।
शुभग वितान तनावो री ।।५।।
सींक सांथिया द्वार चितावो, तोरण कंचन कलश सजाओ ।
वन्दनवार बंधाओ री ।।६।।
मधुर स्वर बाजन्त्र बजाओ, दै दै तारी नृत्य दिखाओ ।
धन-धन भाग मनावोरी ।।७।।
इहि विधि सो सब साज सजाके, दूध-दही में हरद मिलाके ।
आपस में छिरकाओ री ।।८।।
सुन याचक फूले न समाने, वन्दी ठाढ़े विरद बखाने ।
सब की आश पुरावो री ।।९।।

मान सहित मन वांछित पावत, हरस सकल आशीष सुनावत।
इनको जस जग छावो री ॥१०॥
'कलामंजरी' जाचन आई, जन्मोत्सव की लेन बधाई।
श्रीवन वास दिखाओ री ॥११॥४७२॥

* पद *

चिरजीवो रसिक जनन को प्यारी।
जब लौं रवि शशि नभ थल थिर रहे,
तब लौं जग रहो राज दुलारी ॥१॥
युगल-केलि-रस-नदी बहावो,
पराभक्ति भूतल विस्तारो।
'कलामंजरी' नित राजत रहो,
श्रीभट हंस वंश उजियारो ॥२॥४७३॥

* पद *

वन्दौं श्रीभट-पद सुख सारे।
जमुना पुलिन निकट वंशीवट, सुजय रास नृत्यत सुकुमारे ॥१॥
ऋषभ षडज पंचम सुर उघटत, जुगल नवल सखियन संग न्यारे।
चितै प्रिया तन उलटी नागर, कलित ललित मृदु पद त्यों धारे ॥२॥
रहसि कुंजनि गवनी नागरि, चतुर सहचरिन मन प्रान वारे।
निरखि पद 'श्यामसुन्दर' श्रीभट सो घट नयन तारे ॥३॥४७४॥

* पद *

जय जय श्रीहित अति अलबेली।

लाड़िली लाल लड़ावत छिन-छिन,
सखी कुमकुमा की मन-मेली ॥१॥
पराभक्ति जन हित विस्तारन,
प्रगट करन विधिवर रसकेली।
श्री भट आचारज स्वरूप धर,
अवनि अवतरी युगल सहेली ॥२॥
जे जन भये शरण चरणन की,
देत अभय पद करत महेली।
श्रीहरिप्रिया संग नित निरखत,
नव-निकुंज नव-नव रंग रेली ॥३॥
आश्विन शुक्ल दूज कर उत्सव,
मंगल गान करत मिलि हेली।
कृष्णमूर्त्ति सुखराम सहचरी,
कृपादृष्टि तव चहत नवेली ॥४॥४७५॥

* झूमके की बधाई *

* पद *

बजत बधाइयाँ री केशव काश्मीर सुधाम।
प्रमुदित हे हरी हिलमिल गात मंगल वाम ॥१॥
श्रीभटदेव जू री प्रगटे रसिक जनन विश्राम।
निधि अस पाय के री भयो सब पूरण जन-मनकाम ॥२॥४७६॥

* पद *

सखि श्रीभट्ट स्वामी प्रगट भये।

रँगमहलते आय दयानिधि, निज दासन को दरस दये ॥१॥
आश्विन शुक्ला दूज परम दिन, तन मन उपजत मोद नये ।
'युगलसखी' नित यह जस गावत, जियके सब सन्ताप गए ॥२॥४७७

* पद *

आज सखि सरस बधाई गावो ।
श्रीभट देवाचार्य प्रगट भये, निरखि छवि बलि जावो ॥१॥
रंग अली की हित् सहेली, निज हिय सदन बसावो ।
आश्विन शुक्ला दौज तिथी को, सब विधि मोद मनावो ॥२॥
काश्मीरि-सुत पद पंकज पै होय भ्रमर मँडरावो ।
'जुगल-सहचरी' नव निकुंज में, अंग खवासी पावो ॥३॥४७८॥

* पद *

प्रगट भये आज सखी श्रीभट्ट बधाई है बधाई है ।
पठाये राधा नागर नट, बधाई है बधाई है ॥टेर॥
पतित पावन दया सागर, सदा निज जनके हितकारी ।
बने भवसिन्धु के केवट, बधाई है बधाई है ॥१॥
विश्व अज्ञान सब खोवे, पठावैं धाम जीवन को ॥
अहो ऐसी है इनकी हठ, बधाई है बधाई है ॥२॥
शरण चरणों की जो आवैं, सहज जगजाल छुट जावैं ।
सो पावे वास रविजा-तट, बधाई है बधाई है ॥३॥
'जुगल सखी' भाव दृढ़ धरिके, करें गुनगान जो इनका ।
मिलैं तिहि दम्पती झटपट, बधाई है बधाई है ॥४॥४७९॥

* पद *

सजनी प्रगटे श्रीभटदेव बधाई गावणा री ॥टेर॥
रंगमहलसे हितू पधारी, रसिकन पर करि कृपा अपारी।
धरचौ अचारज रूप, निरखि बलि जावणा री ॥१॥
आश्विन मास परम सुखदाई, शुक्ला दूज भाग सो आई।
पूरण भई मन आस, हरष उपजावणा री ॥२॥
हंसवंश के भूषण स्वामी, सब विधि समरथ अन्तरयामी।
सकल सुखन की खान, जनन मन भावणा री ॥३॥
कुंजमहल रस के दातारी, 'युगल सखी' के प्राण अधारी।
इन पद शरणैं आय जनम फल पावणा री ॥४॥४८०॥

* दोहा *

श्रीआचारज जन्म महोत्सव, जो करि हेत मनावै।
तन मन धन सब अर्पण करिके मन में अति हुलसावै ॥१॥
ताको अपनो करि प्रिय प्यारी, निज छवि दरस करावै।
'जुगलसखी' जग जीत जन्म को, अन्त परम पद पावै ॥२॥४८१॥

* पद *

बात सुने यह हरषे सब भक्त।
प्रगटचो श्रीभटदेव प्रतापी, बढ़ी हृदय अति भक्ति ॥
आनन्द द्वार-द्वार घर-घर मधि, छायो श्याम अनुरक्ति।
श्रीभट नाम कियो प्रभु नीको, मदन गुपाल केलि जब जक्त ॥४८२॥

* पद *

रसिक मुकुट श्रीभट प्रगट उडुपति सुजन चकोर हित।

जुगल विमल जस मधुर गाय रसिकन सुख दीनो ।
वृन्दाविपिन निकुंज रहसि रस दृढ़ व्रत लीनो ॥
गदगद सुर दृग-वारि पुलक तन मन प्रसन्न अति ।
करुणा वारिधि उमंगि अमित अगतिन दीनी गति ॥
नन्दनन्दन वृषभानुजा अचल वसत नित जासु चित ।
रसिक मुकुट श्रीभट्ट प्रगट उडुपति सुजन चकोर हित ॥४८३॥

* पद *

ब्रजवासी हौं ढाढी श्रीहंसवंश को सुभग शिरोमनि नाम जु ।
विमल मति मेरी ढाढिन हम ज्ञान गुनी के जाम जु ॥
श्रीगोवर्धन ते उत्तर दिसि, निंबग्राम सुख धाम जु ।
तहाँ वसत हूं और न जाँचू, कुल परम्परा चल आयो जु ॥
हंस सनकादिक नारद निम्बारक, श्रीनिवास भवखेवा जु ।
द्वादश आचारज पद वन्दौं, अष्टादश गुन गाऊ जु ॥
केशव काश्मीरी पट मंडन, श्रीभटदेव लडाऊँ जु ।
सुफल फली आशा मों मनकी, रस सुरधुनी कहा के जू ॥
परिकर मध्य हितू वपु इनको, अब ऋषिराज अनूपा जू ।
सब रसको रसराज कहत जेहि, सो इन आश्रय पावे जु ॥
भवहित करनधार तुव लालन, पार बधाई पाऊँ जु ।
ढाढी चरन धूर मो मस्तक "प्रियादर्षि" मोहि दीजै जु ॥४८४॥

* पद—ढाढी *

दीजिये नेग कृपा करि मेरो ।

सनक सम्प्रदा को हों ढाढी, गोवर्धन उत्तर दिशि खेरो ॥
सेऊँ द्वार अन्त नहि जाऊँ, पाऊँ सीत रहूं गुन तेरो ।
केशवलाल मधुर रस भोगी, सदा रहो मो आँखिन नेरो ॥
श्रीवृन्दावन कुंजमाधुरी, प्रिय आलिन संग पाऊँ बसेरो ।
बीन बजाय रिझाऊँ युगलवर, सदा हंस बंसिन को चेरो ॥
रसना नाम स्रवण जस प्यारी, नैन दरस ब्रजमंडल केरो ।
'हरिप्रिया' गुरु चरित चिन्तामनि, आवत हिए मिटयोजु अँधेरो ॥४८५॥

※ पद-ढाढी ※

ढाढिन हितू मिलन को आई ।
बिछुड़े बहुत दिन दुख पायो, घर बन कछु न सुहाई ॥
आवत याद गरो भर आवे, कुंजकेलि मन भाई ।
तजे चरन अब कहाँ सचुपाये, यह निश्चय ठहराई ॥
प्यासे नेन दरस के लोभी, छिन-छिन में अकुलाई ।
वह सुख सुमिरत हूक उठे हिय, अंग-अंग मुरझाई ॥
कृश तन पाँय धरे धरनी ये, गहर उसाँस सुनाई ।
नीची दृष्ट नृत्य गति साधे, अर्थ अलाप जताई ।
जाकी जाको लाज जगत सो यों कहि के ललचाई ॥
लीनी कंठ लगाय सहेली, मुख पोंछत मुसकाई ।
मस्त हस्त धरयो स्वामि निज वतन, भयो पीन जिये सरसाई ।
ऊंचे सुर बिरदावलि गावत, रंग अली जस अटल सदाई ।
'हरिप्रिया' ढाढिन पद धूरी, सो में भूरि बधाई पाई ॥४८६॥

* दोहा *

सुरतर चिन्तामनि विपुल, सुरनर मुनि जिहि सेव ।
पराभक्ति प्रद श्रीहितू, प्रगटे श्रीभट देव ॥१॥

* सवैया *

प्रगटे श्रीश्रीभटजू वसुधातल,
दूरि किए कलिके अघ भारे ।
निज आश्रित के हित कल्प सुपादप,
संसृति ताप विनाशन हारे ॥
गुण सिन्धु लखो रसकेन्द्र सही,
दशधा सुठि भक्ति के आपु अगारे ।
श्रीराधे सुकृष्ण स्वरूप सुभावन,
है लीलारस सागर सारे ॥
जिहि के सिर पंकज पाणि धरे,
परतत्व हिए के किए अधिकारे ।
हरि भक्तन भूप लखो द्विज में,
वर वंश गोपाल है सन्त के प्यारे ॥

* दोहा *

ढाढी अति उमग्यो हिये, बोल्यो अति प्रिय बैन ।
जगत गुरु जनमे सुने, जाऊँ बधाई लैन ॥१॥
सनक सम्प्रदा को प्रिया, हौं निज ढाढी कहाऊँ ।
अघट बधाई लाऊँगो, तू रहियो इहि ठाउँ ॥२॥४८७॥

* छठी पद *

श्रीभट्टदेव आचार्य जन्मदिन, उत्सव छठी मनाना है।
श्रीहंसवंश कुल दीपत चन्द्रमा, का प्रकाश दिखलाना है ॥१॥
कामादिक जो पंच भूत से, ग्रसित असंख्यन प्रानी थे।
उन भाग्यवान भक्तों के समय में, प्रगट हुए सुखदानी थे ॥२॥
अपनी प्रियवाणी से अमृत रस, बरसा तरु पल्लवित किया।
जो शून्य हृदय भक्ति रससे, अवतार धार रस दान दिया ॥३॥
श्रीयुगलमन्त्र श्रीयुगल नाम, सुख दायक रसिकन श्रवण किया।
उस भक्ति रूप तरु की शाखा, जगमगा रही प्रेमिन के हिया ॥४॥
श्रीजगद्गुरु आचार्य शिरोमणि, का शुभ सुयश सुनाते हैं।
जय होय सदा सब मिल करके, हय प्रभु गोपाल गुण गाते हैं ॥५॥४८८

* पद *

कहाँ लगि बरनो कृपा तुम्हारी।
मही कागद मसि उदधि लेखनी, तरु लिखे गणेश लेह नहि पारी ॥
लम्पट लोभी कन्दर्प मूढ़ मति, पांव रही न भाग्य कुविचारी।
सो करि कृपा कियो निज चेरो, दीनो विपिन वास हितकारी ॥
काम क्रोध पूरित अघ मूरति, विषय विवश अंग अंग विकारी।
सो विरंचि शिव पूज्य परम धन, युगल-चरन कीनो अधिकारी ॥
डोल्यो द्वार-द्वार हार पर्यो, कहुँ न उदर भर मिल्यो अहारी।
सो सुरेन्द्र दुरलभ अधरामृत, पावत निसदिन भरि भरि थारी ॥
जरत रह्यो नित त्रिविध अनल में, सुखद जानि सुत पितु धन नारी।
सो विज्ञान ज्ञान असि तीक्षण, अति ही कठिन मोह फाँसि निवारी ॥

नाना कर्म धर्म पुनि नाना, भटकत फिरयो बुद्धि भ्रम भारी।
सो निश्चय करि एक युगल पद, दीनी प्रेम भक्ति भय हारी॥
पावत हु सुख रोम रोम नित,
नाम-सुधा निज वदन उचारी।
श्रीगुरुदेव समान आन जग,
नाहिन स्वारथ बिन उपकारी॥
बनत न निज कारज सदगुरु बिन,
श्रुति पुरान सब कहत पुकारी।
'किशोरी दास' हरिव्यास नाम रटि,
मगन भये जुग चन्द्र निहारी॥४८६॥

* दोहा *

विधि शिव शारद देवगण, बन्दित चरण रसाल।
गुरु स्वरूप बन्दहु सतत, सो श्रीहितू कृपाल॥

* छप्पय *

उन लख विरही क्रौंच सरस्वति मुख में आयी।
इन चख चख व्रज दिव्य भूमि मन मोहनि गायी॥
उन विधि आज्ञा पाय रमायण ग्रन्थ बनायो।
केशव गुरु परसाद 'युगल शत' इन निरमायो॥
सबै जबै संस्कृत लिखत, इन छांड़ी कवि लीक।
व्रजभाषा के आदि कवि जय श्रीभट वाल्मीक॥

* दोहा *

आश्विन शुक्ला द्वितीया, कीनी अनुपम लीक।
हितु प्रगटी श्रीभट्ट वन, रसिकन की वाल्मीक॥

※ बड़ा मंगल ※

(१)

जय जय श्रीभटदेव महल की हितु सखी।
युग पद पद्म मलिन्द सु अनिमिष रस चखी ॥
ब्रह्मादिक पद वन्द्य युगल आज्ञा लयी।
कमल माल जो धाम छवि युत संग भयी ॥
संग भयी सो तासु सँग में मधुपुरी पावन करी।
गौड़ द्विजवर वंश पावन जन्म लीनेउ शुभ घरी ॥
आश्विन शुक्ला द्वैज जयन्ती रस मखी ॥१॥

(२)

जय जय श्रीभटदेव मही ब्रज अवतरे।
केशव गुरु पद पद्म जाय निज सिर धरे ॥
रस दरसेउ मुनिराज सोइ उर सुख अरे।
निरमेउ पद सुठि लच्छ महल ब्रज रस भरे ॥
महल ब्रज रस भरे पद लख गुरु जमुना सरि बहे।
कृपा कीनी जमुन अलि तव पद जु शत तट पै रहे ॥
आदि वाणि ब्रजवाणि रसिक लख रस रटे ॥२॥

(३)

जय जय श्रीभटदेव रसिक प्रतिपाल हैं।
ब्रजवाणी आचार्य रसिक रस जाल हैं ॥
अर्चत वंशी सुवट मदन गोपाल हैं।
प्रथम शरण जिन लई जु वचन रसाल हैं ॥

वचन हैं जु रसाल जिनके प्रिया पद हरि लोटने।
दरस कीने स्वदृग सुखकर रस जु विजया घोटने॥
केशव भट के कुँवर जु परम दयाल हैं॥३॥

(४)

जय जय श्रीभटदेव प्रतिज्ञा आपु कर।
जो हम गावैं रचैं सु लीला युगल वर॥
वंशीवट थिन कीन भावना एक दिन।
भीजत देखौं कवै युगल हौं इन नयन॥
नयन युग इन देखिहौं कब सुनत तिहि छन कुंज से।
निकस आये लाल ललना, मेघ बरसत गुंज से॥
'गंगअली' सोइ याच देहु कटांच्छ भर॥४॥४६०॥

❋ छोटा मंगल ❋

नमो नमो श्रीभट्ट पियारे।
गौर अंग कनक द्युति सुन्दर, घुंघराले कच दृग रतनारे॥
वंशीवट की शीतल छैयाँ, पद्मासन बैठे सुख सारे।
अंक विराजत युगल लाडले, लख छवि कोटि काम गए हारे॥
सर्व प्रथम ब्रजभाषा लेखक, आखर जिनके सुखद सुखारे।
ब्रज भूमि मोहनि दृग दरसी, चिन्मय वपु तरु लता सुधारे॥
निज दृग केलि लखी जो अनुपम, अजहु गाय गाय कवि हारे।
चरण पलोटत श्री राधा के, दर से दृग निज नन्द-दुलारे॥
केशव कृपा आपु मुख गाई, होरी लीला दरस भिकारे।
ब्रज-रसिकन के जनक मुकुटमनि, खास खवास युगल के प्यारे॥

जिहि प्रतिज्ञ हम गावैं सोई रचत सु लीला लाल हमारे।
कृपा कटाक्ष कोर कन 'गंग अली' ठाढ़ी गुरु द्वारे।
मदन गुपाल मूर्ति के सेवक, लई शरणागति वच मुख धारे ॥४६१॥

✻ बधाई ✻

मधुपुर बाजत आज बधाई।
गौड़ विप्र कुल प्रिया लाड़ली, हित् अली महि आयी ॥
युगल लालकी हितकारिणि नित, हित की कथा सुहायी।
जग रसिकन हित नरतनु धारेउ, लिखहि ग्रन्थ सुखदायी ॥
हित अनुराग सिखावन कारण, गावन गुण युग राई।
दिखरावत जग हित सब फीके, पुत्र पौत्र गृह छाई ॥
सत्य हेत जग युगल लाल को, यहै सिखन रस गाई।
हित अनहित जग जीवन जानत, जेते लोग लुगाई ॥
अत हित अली देत सुठि शिक्षण, अध्यापक महि भायी।
श्रुति हेत जो निज मुख गायो, सो भाषा में गायी ॥
जिहि हित लहि जग जन्म सुसंकर फंसेउ जाल नसजायी।
'गंग अली' जिहि हित लहि मंजुल, पावन बहत सुहायी ॥४६२॥

३५—श्रीहरिव्यास देवाचार्य जी महाराज

[कार्तिक कृष्णा द्वादशी]

❋ श्लोक ❋

वन्दारु मन्दार पदारविन्दां
शरण्यकारुण्यगुणौघपूर्णाम् ।
प्रियप्रियाप्रेमभरामुदारां
हरिप्रियां तामहमानतोऽस्मि ॥

❋ दोहा ❋

धनि धनि कृष्णा द्वादशी कार्तिक मंगल मूल ।
जाने मेटी सकल सुर नर जक मन की शूल ॥१॥
कार्तिक कृष्णा द्वादशी, रसिकन मन अवतंस ।
श्रीभट गृह हरिव्यास पुन प्रगटे श्रीहरि हंस ॥२॥

❋ बड़ा मंगल ❋

(१)

जय जय श्रीहरिव्यास हंस कुल भूषणा ।
रसिक राज राजेश प्रकृति मग दूषणा ॥
श्रीवृन्दावन कुंज रहस्य रस मधुकरम् ।
श्यामा-श्याम पद-कुंज लुब्ध नित निर्भरम् ॥
निर्भरं नित लुब्ध पंकज पद जु श्यामा-श्याम के ।
रहत नितप्रति रहसि रस रति, नित विहार सुधाम के ॥

आदि मधि अवसान तिनको, अनन्य भक्ति अदूषणा ।
जय जय श्रीहरिव्यास हंसकुल भूषणा ॥१

(२)

जय जय श्रीहरिव्यास युगल आज्ञा दई ।
निज परिकर संयुक्त कलौ प्रगटे मई ।
रुचिर पंच रस भक्ति भक्त जीवन रचे ।
ब्रज लीला निज महल निर्मल ह्वै सुख सचे ॥
सचे सुख ह्वै मध्य बाहर द्विधा रूप जु धारि के ।
प्रिया प्रीतम संग हरिप्रिया नित्य विहार-विहारि के ॥
सनकादि मारग आदि सुखनिधि, रीति सोई खंग्रई ।
जय जय श्रीहरिव्यास युगल आज्ञा दई ॥२॥

(३)

जय जय श्रीहरिव्यास सदा सेवन किए ।
भये भवार्णव पार चरण रज जिन छुए ॥
महा अनुभाव सुभाव दीन सों हित करें ।
प्रगट आप परताप तापत्रय परिहरें ॥
परिहरें भय ताप तिनकी अभय आप प्रताप सों ।
भये निर्भय अभय जगमें छूटे नाना पाप सों ॥
चतुर व्यूह जो रूप धरिन्धरि निज जनन आनन्द दिये ।
जय जय श्रीहरिव्यास सदा सेवन किए ॥३॥

(४)

जय जय श्रीहरिव्यास रसिक चूड़ामणी।
थाप्यो मत अविरोध, शरण भये सब दुनी॥
निर्गुण महापुराण परम धन भागवत।
पर उपकार प्रवीन करन पावन पतित॥
पतित पावन करन पन करि पुरुष रूप जु गुन धर्यो।
शरण लई जिन शीश कर धरि, जन्म-मृत्यु संकट हर्यो।
कृपा करि हरिदास कीने, 'दास द्वारका' के धनी।
जय जय श्रीहरिव्यास रसिक चूड़ामणी॥४॥

* छोटा मंगल *

नमो नमो जय श्रीहरिव्यास।
नमो नमो जय श्रीराधा माधव, राधासर्वेश्वर सुखरास॥
नमो नमो जय श्रीवृन्दावन, जमुना पुलिन निकुंज निवास।
'रसिक गोविन्द' अभिराम श्याम भज, नमो नमो रस रास विलास॥४६४

* चर्चरी *

जय जय श्रीहरिव्यास देव रसिकन सुखदाई।
राजत हैं नित्य धाम, सहचरि हरिप्रिया नाम,
परिचर्या करत श्याम-श्यामा मनभाई॥१॥
महावाणी प्रगट करी, उज्वल रस प्रेम भरी,
महली श्रीरंग दहसि केलि मधुर गाई॥२॥
श्रीभट पद-शरण आय, भक्ति बल तेत पाय,
प्रगट्यो जग यश-वितान, अखिल लोक छाई॥३॥

देवी को शिष्य कियो, अनगन जन प्रेम दियो,
'रूपरसिक' वार-वार चरणन बलि जाई ॥४॥४६५॥

* पद *

श्रीहरिव्यास देव जू प्रगटे।
युगल किशोर चरणरति दैके, त्रिविध दुख सब हीके मेटे ॥१
जिनकी कृपादृष्टि के होतहि गौर श्याम सों सहजहिं भेंटे।
श्रीवृन्दावन नव निकुंज बसि, 'प्रिया सखी' अति आनन्द लूटे ॥२॥४८६

* पद *

फूले अति मन माहि रसिक सब।
प्रगटे भक्त रूप मन मोहन, प्रेम न हृदय समाय ॥१॥
गावत मंगलचार सुहाये, निरखत नैन सिराय।
आज दिवस शुभ भयोर भैया, कलि कल्मष दुख जाय ॥२
देत नेग जिय भायो जाको, श्रीभट सुत जश छाय।
गोपाल लाल शिर दियो चरण निज, कृपा प्रसाद सरसाय ॥३॥४६७

* पद *

आज हम मंगल मोद भरे मन।
फूले अंग न मात स्वातिज्यों, पायो श्रीहरिव्यास नाम धन ॥१॥
नाचत हँसत बजावत गावत, छायो रोम रोम आनन्द तन।
प्रगट होत तीनों गुन जाते, ताको शिष्य करी जा प्रभु बन ॥२॥
बह्यो जात हौं भव सागर में, लागि दया करि खैंच कियो जन।
अधम उधारन बानि विरद की, दीनबन्धु राखत अपनो पन ॥३॥

जो तजि कपट शरण आवत जन, पावत युगल चरण वृन्दावन।
'किशोरीदास' हरिव्यास सुनो प्रभु, करहुँ कृपा सुमिरो पल छिन छिन॥

* पद *

श्रीहरिव्यास प्रताप महा छिति मण्डल नाक रसातल छायो।
निगमागम पंकज मंजु खिले, द्युति भानु उदै अघ-पुंज नशायो॥१॥
रस स्वाति की बूँदन वृष्टि झरै जन चातक पीवत मोह न भायो।
नव नित्य विहार अहार लहे, जस गावत गोविन्द रसिक सुहायो।।४६८

* पद *

आज बधायो री हेली श्रीभटदेव के।
सुख उपजायो री हेली यह फल भालके॥१॥
भाल के फल यह जु सजनी मिलो मंगल गाइये।
जन्म दिन हरिव्यास को सो बड़े भागन पाइये॥२॥
शरद् ऋतु कार्तिक जु द्वादशि, श्याम घटा मन भावनो।
माल बन्दन वार कदली, चौक रचहिं सुहावनो॥३॥
रसिक मन भायो री हेली, यह दिना अति है भलो।
सुभग सुहायो री हेली, सब या सुख पलो॥४॥
पलो सब या सुखहि सजनी, प्रेम प्रगट्यो आय के।
ज्यों हंस ह्वै सनकादि नारद, निम्ब आदित लाय के॥५
ज्यों हितू श्रीहरिप्रिया ह्वै, रस प्रकाश्यो अवनि में।
तजि अभिमान समान सोई लहे रस नव अवनि में॥६॥
जो सुरस दुरलभ री हेली, सो इनते जानिए।
महल निरासन री हेली हिय तब आनिए।७॥

आनिए हिय तबहि सजनी, जबहि मन वांछित सवै ।
श्याम-श्यामा हिये राजैं, दृगन छाजैं लहित वैं ।।८।।
रसिक रूप स्वरूप भावैं, और न आवे दृष्टि में ।
छकि चढ़ी अँखियाँ अनानी, प्रेम आनन्द वृष्टि में ।।६।।
अब मिली नाचो री हेली, मादक चढ़ि रह्यो ।
यह सुख सोंचोरी हेली, हिय जो बढ़ि रह्यो ।।१०।।
रह्यो बढ़ि जो हिये सजनी, दिवस रजनी विलसिये ।
पाये लाल किशोर गोवर्धन, अब नाही जु अलसिये ।।११।।
शरण श्रीगोविन्द कृपानिधि, उत्तम दास उदार है ।
धर्यौ 'धीरम दास' राधानाथ के लै चरण द्वै ।।१२।।५००

* पद *

भयो लाल रसिक प्रतिपाल जु श्रीभट राज के ।
चल्यो लेन बधायो वाल सकल सिरताज के ।।१।।
सुर वनितान सहेन विमानन पै चढ़ें ।
हरषत बरषत फूल चितैं चौंपन चढ़ें ।।२।।
विप्र उचारत वेद महा रस रीति सों ।
शुभ सुधर्म अरु कर्म करावत प्रीति सों ।।३।।
नाम धर्यो हरिव्यास व्यास जन गंजने ।
द्वितीय दिवाकर प्रगट भक्ति हरि संजने ।।४।।
कृष्णा द्वादशि कातिक कोधनि ह्वै रही ।
खगर नगर की वानिक जात नहीं कही ।।५।।

घर-घर मोतिन चौक पुरे छबि छाजहीं।
महल ध्वजा फहरात मदन लखि लाजहीं ॥६॥
द्वारन वन्दनमाल कोरन कदली लसी।
मनहुँ कल्पतरु वहन आन द्वारन बसी ॥७॥
अमित गुनीजन मही दुनी के आय के।
परमहंस शुभ वंश लडावत गाय के ॥८॥
ईश समान मुनीस पुरावत आस है।
लेहु री लेहु उचारत बढ़ै हुलास है ॥६॥
हौं यह कौतिक देखि भई मति बावरी।
नैवन को गहनो भयो यह उत्साह री ॥१०॥
'रूपरसिक' हिय हेत पुरावन काज री।
प्रगटे कोउ परमहंस धरनि पर आज री ॥११॥५०१॥

❋ पद ❋

नगर में शोभा सरस सुहाई।
श्री हरिव्यास की बरस गाँठ है ताकी बजत बधाई ॥१॥
जुरि मिलि चलो सकल पुरवासिन, और सवासन बाई।
गावो मंगलचार बधायो, श्रीरसिकेश मनाई ॥२॥
कार्तिक कृष्ण द्वादशी शुभ तिथि, प्रगट भये हरिराई।
फूले सन्त समाज मुदित मन, घर-घर नवनिधि आई ॥३॥
शुभ नच्छत्र शुभ वार मुहूरत, लियो जन्म सुत माई।
कीयो नाम जुगल पद सेवी, श्रीहरिव्यास सुखदाई ॥४॥
बाजत ताल मृदंग दमामो, बीना नव सहनाई।
गीत नृत्य अति सरस सुनावत, सुरमनि जन ललचाई ॥५॥

जाचक सबं दान मनमाने, जो जाके चित भाई।
'गोपाल लाल' हिय प्रेम बढ़ावत, जस वितान जग छाई ॥६॥५०२

* पद-चर्चरी *

जय जय गुरुदेव हरि चरन शरण आई।
वन्दौं नररूप हरी, रजनी भव दूर करी,
हृदय आनन्द भरी, प्रेम अंग छाई ॥१॥
लीये जब बहुत शरण, दारुण दुख दोष हरण,
तापत्रय दूर करन, प्रगटे सुखदाई ॥२॥
मोहादिक दूर भये, तन मन आनन्द छये,
निज जन पै दृष्टि दये, कृपासिन्धु गाई ॥३॥
महिमा पद अमित कही, विधि शिव मुख सखि सही,
'रूपरसिक' शरण लही, पद रज बलि जाई ॥४॥५०३

* पद *

आज महामंगल भयो माई।
प्रगटे श्रीहरिव्यास जगतगुरु, आनन्द रह्यो तिहूं पुर छाई ॥१॥
पावन काल पुनीत योग सब, दास अनन्य भई चित चाई।
जयति जयति जै जयति जयति धुनि, कुसुम गुच्छ बरषे वनराई ॥२॥
आनन्द सिन्धु उमड़ दिसि विदिसन, मोद प्रमोद बढ़्यो सुखदाई।
रुचि रमनी कमनी अवनी जहाँ, दूर्वांकुर मखतून बिछाई ॥३॥
गुल्म लता रस द्रवत हितू हित, मुकुलित द्रुमन बेलि लपटाई।
फूल फलन छायो वृन्दावन, भौंर परत जमुनाजल माई ॥४॥
शीतल मन्द सुगन्ध समीर, हिलोरत कुल करार गिराई।

पुलिन पवित्र वेदि यज्ञशाला, श्रीवंशीवट निकट सुहाई ॥५॥
शुभदिन सुघड़ी शोधि श्रीभट प्रभु, दीक्षा हित बैठे मुनिराई ।
संस्कार करि पंच पंचरस, पंचक्रिया पंचार्थ जनाई ॥६॥
शान्त दास्य वात्सल्य सख्य पुनि, छत्रपति शृंगार जताई ।
श्रीसर्वेश्वर पूज्यपाठ पद, गोष्ठि-रहस्य सु प्राप्ति सुभाई ॥७॥
भिन्नाभिन्न मठाधिपतेश्वर, नाम धाम लीला ठकुराई ।
श्रीवनराज बधाई बाजत, यामें नाहि कछु प्रभुताई ॥८॥
श्रीहरिप्रिया एक वपु धारयो, ताते फूल बढ़ी अधिकाई ।
प्रफुलित कंज पराग उड़ावे, खग मृग शब्द करें चहु धाई ॥९॥
भवँर भेरि बन्दीगन चामक, दुन्दुभि स्रोत नदी उमगाई ।
नटन सिखण्डी मेघ मृदंगो, कोकिल कीर सुराग सुनाई ॥१०॥
पुरजन सारस हंस वधुन सह, ले ले भेट चले मग जाई ।
वन पशु सहज ही मिलत वैर तजि, भूलि अपनपो देत बधाई ॥११॥
रंग कदम्ब अम्ब श्रीफल चल, थिरकि रहे नहि शर्म लखाई ।
मनहुं समाधि योग धर्म हित, हँस सनक ऋषि नारद ध्याई ॥१२॥
निम्बारक द्वादश अष्टादश, श्रीभट सुवन की करत बड़ाई ।
जाको नाम लेत यम डरपे, सोइ कृपाकर दीन दिखाई ॥१३॥
आशा-बेली भई डहडही, रसफेलो दें अकन अकाई ।
विमुख दुरि ते शरण परसे, आवत कठिन परे ये ही धाई ॥१४॥
रसिक-चूड़ामणि चिरजीवो जोरी, रोरी अक्षत भाल चढ़ाई ।
उद्धव देत 'हरिप्रिया' स्वामी, लीजे परिकर मांहि बुलाई ॥१५॥५०४॥

* पद *

भूतल प्रगट भये सखि आन ।
श्रीहरिव्यास देव आचारज, रसिक शिरोमणि जान ॥१॥
महावाणी कर्त्ता दुखहर्त्ता, जीवन करन कल्याण ।
रसिक जनन के पूर्ण मनोरथ, भक्तन जीवन प्राण ॥२॥
लाल-लाड़िली केलिकलाको, श्रीमुख कियो बखान ।
अद्भुत रस सागर नव नागर, नव नागरि सुख दान ॥३॥
रहस्य निकुंज पुंज सुख सरवस, रसिक जनन दियो आन ।
अति कृपाल लाड़िली श्यामा, 'गोपालक' गुणगान ॥४॥५०५

* पद *

मंगल मूरति श्रीहरिव्यास ।
मंगल सनकादिक नारद मुनि, मंगल नियमानन्द निवास ॥१॥
मंगल श्रीद्वादश आचारज, अष्टादश श्रीभट्ट प्रकाश ।
मंगल केशवभट्ट मुकुटमणि, जगमें कीयो प्रेम प्रकाश ॥२॥
मंगल श्रीभट हितू युगल जस, गावत मंगल रास विलास ।
मंगल श्रीवृन्दावन यमुना, मंगल गौर श्याम सुखरास ॥३॥
मंगल श्रीहरिप्रिया चरणसिर, मणि मञ्जरि हिय भरी हुलास ।
मंगल जै जै 'अलीमाधुरी', चरण शरण पूजी मन आस ॥४॥५०६॥

* कुण्डलिया *

कल तरोवर भक्त हित, प्रगटे श्रीहरिव्यास वपु ।
नखशिष सुन्दर ध्यान सदा त्रयताप नसावन ।
श्रीकृष्ण भक्ति को दान अमित पतितन कियो पावन ॥

करि दिग्विजय सुधर्म दशों दिसि भक्ति दृढ़ाई।
त्रिगुण प्रसूती शक्ति मन्त्र दै विनय कराई॥
सन्तन मधि मनो उडुपति, तरत विश्व जिहि नाम जपु।
कल्पतरोवर भक्त हित, प्रगटे श्रीहरिव्यास वपु॥५०७॥

* कुण्डलिया *

प्रगटे श्रीहरिव्यास रवि, नासन तम अज्ञान।
कृपादृष्टि करि विपुल नर, तारै कृपा निधान॥
तारै कृपा निधान, स्वकर सर्वेश्वर सेवा।
करत भरत आनन्द, चरण वन्दन नरदेवा॥
शिक्षा है चेली करी, नचत चराचर जासु वस।
'दास किशोरी' हित करन नाम लेत उर सरस रस॥१॥
हरिरिति अक्षर मूल व्यास विस्तारत हरिजस।
देवी करी स्वशिष्य, देव संज्ञा जानो अस॥
श्री जुत श्रीहरिप्रिया, सहचरी श्रीराधा की।
महावाणी रसधाम, करी जो फल नवधा की॥
भूषण ज्ञान विराग भक्ति सागर भरि।
निज मत भिन्नाभिन्न सदा आराधन श्रीहरि॥२॥५०८

* दोहा *

शाक्त शैवते आदि जे, मतवादी गजराज।
पञ्चानन निज रूप बल, जीति दियो हरि साज॥१॥
कोटि जन्म के सुकृत जो, उदय एक सँग होय।
ताह पै हरिकृपा बल, चरण शरण लहै कोय॥२॥

श्रीहरि श्रीहरिव्यास वपु, एक भागवत साखि ।
'किशोरीदास' हरिव्यास विनु, हरि दुर्लभ कह्यो लाखि ॥३॥

* पद *

प्रीति के लच्छण यह सुनि लीजै ।
मिल्यो रहै अनमिल्यो-सो दीखै,
निमिष वियोग प्राण तजि दीजै ॥१॥
सुनत नाम सुख आय जाय तन,
पुलक प्रेम असुवन सब भीजै ।
अन्तर रहित सदा सेवा में,
सावधान नित निरखि के जीजै ॥२॥
प्रीतम हित होय क्लेश लेश मन,
राखि न रूप सुधा रस पीजै ।
सुर दुर्लभ तन पाय चतुर नर,
हरिपद कमल प्रीति दृढ़ कीजै ॥३॥
लख चौरासी भोग लह्यो तन,
मानुष सो पुनि छिन-छिन छीजै ।
'किशोरीदास' हरिव्यास कृपा विनु,
फिरि फिरि जन्म जन्म पछतीजे ॥४॥५०६॥

* पद *

हौं हरिव्यास को निपढ़ा ।
वेद व्याकरण कछु न जानत, जैसे भैंस पड़ा ॥

राधा मोहन लाल सों करि प्रीति सनमुख लड़ा।
लोक वेद मरजाद छाँड़ी, गही अड़न अड़ा॥
श्रीराधा पद जलजात मधुकर, प्रेम लै मन मढ़ा।
'किशोरी दास' बलि द्वारे ठाढ़ो, चहत भवनिधि कढ़ा॥५१०॥

* सोरठा *

बीते जन्म अनेक, लह्यो न सुख लवलेश कहुँ।
अब लीनी दृढ टेक, चरण शरण हरिव्यास की॥१॥
शीतल जन हित चन्द, नाम लेत तापहि हरत।
भटकत कत मतिमन्द, छाँड़ि द्वार हरिव्यास पद॥२॥

* कुण्डलिया (क) *

प्रगटे श्रीहरिव्यास वपु, धरि हरि आप कृपाल।
पूरि रहे सब विश्व में, जिनके शिष्य मराल॥
जिनके शिष्य मराल, करत निर्भय अगानंत खल।
कृष्ण भक्ति को दान सदा ब्रज चलत जो अविचल॥
दे प्रसाद निज पद दियो स्वपच सकल अघखान।
'दासकिशोरी' जन कियो, ग्रसत मोह मद मान॥

(ख)

श्रीहरिव्यास जु नाम की छाप सकल पद माहि।
आचारज सम्बन्ध ते, सज्जन सुनि पुनि गाहि॥
सज्जन सुनि पुनि गाहि परी जहँ चूक जो होई।
गुणगाहक किरपाल शोधि लीजो तहाँ सोई॥

अर्थ छन्द जानो न कछु, नाय आसरो पाय।
प्रेरक श्रीगुरुदेव उर, 'दास किशोरी' गाय ॥५११॥

* दोहा *

श्रीवृन्दावन परमधन, जो चाहत अनयास।
'दास किशोरी' काट तजि, भजि स्वामी हरिव्यास ॥१॥
जो भूले हरिव्यास पद, सुर दुर्लभ तन पाय।
तो निगमागम सासि जन, आतम हन गति जाय ॥२॥

* पद * राग विभास *

जय जय श्रीहरिव्यास कृपानिधि, जय जय श्रीहरिव्यास।
हंस वंश अवतंस प्रशंसक, ज्ञान विराग भक्ति परकास ॥१॥
महावानी आनन्द रस सानी, दानी कुंज विलास।
करुणा सागर सदगुन आगर, नागर रसिक उपास ॥२॥
जो देवी सुरनर मुनि सेवी, करी शिष्य अनयास।
पावन पतित अमित अगतिन गति, श्रीभट सुभट सुदास ॥३॥
युगलकिशोर प्रेमपरिपूरण, श्रीहरिप्रिया खवास।
'किशारीदास' के प्राण जीवन धन, करहु कमल हृदि वास ॥४॥५१२॥

* कवित्त * (क)

करुणा निधान गुन खान कोटि भानु सम,
प्रगट प्रतापवान सदा सुखरास जू।
आनन्द को धाम नाम श्याम को सुनाय जग,
अचल विश्राम देत निकट निवास जू॥

भक्ति हित कामधेन, शोभा लखि लाजै मैन,
दशधा के ऐन फैली जगत सुवास जू।
जाचत 'किशोरी दास' वृन्दावन वास दीजै,
निटक निवास जय जय स्वामी हरिव्यास जू ॥१॥

(ख)

कलपतरोवर हो रूप के सरोवर हो,
उजलधरोवर हो करुणानिधान हो।
आनन्द के धाम हो शरण अभिराम हो,
हरण मति वाम हो प्रकाश कोटि भान हो ॥
रसिक-शिरोमणि हो शक्तिदण्ड-दोहन हो,
विश्व-अघ खोहन हो सर्व गुण खान हो।
जाचत 'किशोरी दास' सुनो हरिव्यास प्रभु,
वृन्दावन वास दीजे दाता दीन दान हो ॥२॥

(ग)

दशधा के आगर हो, रूप बल सागर हो,
रसिक उजागर हो आनन्द के धाम हो।
शोभा सब लायक हो सन्त मन भायक हो,
कुमति के घायक हो जन अभिराम हो ॥
कलुष विहण्डन हो हँस कुल मण्डन हो,
आजानभुज दण्डन हो अचल विश्राम हो।
जाचत 'किशोरीदास' सुनो हरिव्यास प्रभो,
वृन्दावन वास दीजे दानीश्वर नाम हो ॥३॥

(घ)

सदा मन भावन लखत नर तन युग,
विपिन सुहावन में अचल निवास जू।
लिये बीरी पानि रहे सदा सावधान लखै,
युगल सुजान करैं मिलि परिहास जू॥
युगल लडावैं जस गावैं नित युगल को,
युगल हँसावैं सुख पावैं सुखरास जू।
जाचत 'किशोरीदास' बृन्दावन वास दीजै,
निकट निवास जय जय स्वामी हरिव्यास जू॥४॥

(ङ)

द्विज-कुल-कमल हो, ज्ञान हिये अमल हो,
भक्ति हरि विमल हो, आरति हरन हो।
विदुष धुरन्धर हो, सद्गुण-मन्दिर हो,
नखशिख सुन्दर हो मंगल करन हो॥
करुणा के धाम हो प्रणत अभिराम हो,
सुखद दिन-याम हो, अनाथ के शरण हो।
सुनिये दयाल श्रीगोपाल के खवास निज,
जाचत 'किशोरीदास' जुगल चरण हो॥५॥

(च)

हरिगुण गात मत्त, चित्त हरिनाम सदा,
हरि के चरित्र कहैं रसिक समाज में।

सन्त ओर-पास लसैं, तृषित चकोर मानो,
लीलामृत पान करैं जैसे उडुराज मैं ॥
प्रबल प्रचण्ड शक्ति भक्तिबल शिष्य करी,
जोरि कर विनय करी, भीज गई लाज मैं ।
जाचत 'किशोरी दास' वृन्दावन वास दीजै,
छोड़ि और आश प्रभु परस आयो आज मैं ॥६॥५१३

* कुण्डलिया *

श्रीहरिव्यास उदार मन शरणागत प्रतिपाल ।
विरद प्रबल अति विपुल खल तारे हर भव जाल ॥
तारे हर भव जाल सदा यह रीति पुरातन ।
भक्तन हित अवतार लियो हरि व्यास सनातन ॥
वांछित फल दातार नित, अघ-तम नाशन जिमि तरणि,
नाम लेत निर्भय करत, 'दास किशोरी' हित करन ॥५१४॥

* कवित्त * (क)

यह मन मति मन्द, करै नित छल-छन्द,
नहीं जाने भव-फन्द पन्थ अगम सुनीजै जू ।
मैं तो पचि हार्यो, बहु भाँति पुचकार्यो,
नहि सुनत हमारो बोल उलटो धुनीजै जू ॥
लगत न हरि ओर अतिहि कठोर शठ,
जीते निज जोर घनघोर हु सुनीजै जू ।
ताते भयो त्रास, सुनो प्रभु हरिव्यास,
दीजै वृन्दावन वास, आश 'दास की' सुनीजै जू ॥१॥

(ख)

ऐसो ढीठ मन नहि तजे निज पन,
रहे विच ही मगन झूठे तन ही सों लाग्यो है।
फिरत विकानो लोभ उपजै न प्रेम गोभ,
ताते अति होत क्षोभ छूटत न पाग्यो है॥
करत न सन्त-संग मान मद रंग भसो,
डोलत कुसङ्ग हीये अति अनुराग्यो है।
कहत 'किशोरी दास' सुनो हरिव्यास प्रभु,
निपट उदास भयो चरन सुहाग्यो है॥२॥

(ग)

मन महाबली नहि माने सिख भली,
करै छल-छन्द छली हरिपद न सुहायो है।
चाहे नित भोग जाये भर सब रोग,
कैसे मिटे सब सोग, हिये त्रास हू सवायो है॥
आवत न लाज सजौं कपट को साज,
माँगों जुगल समाज कैसे होत मनभायो है।
कहत 'किशोरीदास' सुनो हरिव्यास प्रभो,
मोसे खल कोटि तारे, यातें शरम आयो है॥३॥

(घ)

फिरत भुलानो बिन जाने हरिपद शठ,
करत गुमान तन धन दिन चार को।

सुत पितु मात बन्धु जग सन बन्ध बन्ध्यो,
पावत आनन्द संग भूल्यौ निज यार कौ ॥
लावत न मोरयुत मुकट अलक मुख,
नवल किशोर चितचोर सुकुमार कौ ।
ऐसो मन मूढ़ नहि जानत है वेद गूढ़,
गुरुपद-धूरि मिले पावै कृष्णसार कौ ॥४॥

(ङ)

जो लौं निज घर नहि आवै तो लौं खरवत,
फिरत लदन नहि जानत चन्दन कौं ।
भूल्यौ निज स्वामी करैं जगत गुलामी,
ऐसो नमक हरामी छोड़ी आनन्द कन्दन कौं ॥
जानत न नित्य सुख त्रिपक्यो अनित्य हीये,
विषय लागि पचत जो कारण फन्दन कौं ।
मन तो कुचाल चलै, सन्त तो कृपाल अति,
मेटि भव-जाल मिलै नन्द के नन्दन कौं ॥५॥

(च)

तुम्हरो ह्वै दास करे जगत की आश,
सुनो प्रभु हरिव्यास फाँसी भव की निवारिये ।
जनम अनेक लहे कबहु न सुख छहे,
ताते आनि चरन गहे, कुमति सुधारिये ॥
दीखत न द्वार आन वेद में प्रधान आप,
करुणानिधान यह अरजी हमारिये ।

चाहत विपिन-धन जुगल किशोर जन,
कीजिये मगन मन आपनो ही पारिये ॥६॥५१५॥

* सवैया *

ब्रजराज भजो सब काज तजो,
सोइ साज सजो जामें होय भलाई।
नित नाम रटो मनि वाम हटो
रस रूप चटो जग लाज बिहाई॥
सत संग रसो वन अभंग वसो
न कुसंग फँसो मानो सीख सुहाई।
नित ध्यान करो असनान करो
जलपान करो जमुना अवगाई॥१॥
साँचो जोग करो भवरोग हरो यम लोग डरो तहाँ होत सजाई।
मन लोभ बचो क्यों छोभ रचो हिय गोभ सचो हरिभक्ति दृढाई॥
कत लाजत नाम गुरु हरि धाम अनूपम ठाम की गैल बताई।
तजि क्रोध को मूल मिटै भव-शूल होय अनुकूल न भूलहि भाई॥२॥
निज मेल मिलो मति पेल पिलो सुख खेल खिलो रससिन्धु समाई।
नहि मानहि मोर कह्यो शठ बौर लहै दुख घोर न आन सहाई॥
सुन मन यार लखो निज सार गए दिन चार से होय हँसाई।
तजो सब आश भजो हरिव्यास 'किशोरीदास' सदा चितलाई॥३॥५१६

* पद *

जयति हरिव्यास जै जयति श्रीभट प्रभु,
दास दासाधिपं देवदेवम्।

जयति करुणाकारं जयति जन-भय-हरं
जयति जै जयति महागाध भेवम ॥ टेक ॥१॥
जयति नवलाल नव लाड़िली सेव-
परवीन जय जयति सद्गुणागारम ।
जयति वृन्दाविपिन नित्यलीला प्रगट
करन जय जयति प्रभु अति उदारम ॥२॥
जयति भक्तेश रसिकेश सर्वेश प्रभु,
जयति जय जयति महाचार्य-भूपम ।
जयति दिगजीत सब भक्त जन मीत जय
जयति जय जयति अव्यय अभूपम ॥३॥
जयति जय हंस-वंशावतंसं विभो,
जयति देव्यादि गुरुवर कृपालम ।
जयति तिहुँ लोक में सुयश प्रगट करन,
हरन जन-ताप संसार जालम ॥४॥
जयति जय अज अचल आदि जय जय गुणा-
तीत जय जय भरन रसिक आशम ।
जयति मंगल महा मूर्त्ति जय जयति जय
जयति जय जय सदा स्वप्रकाशम् ॥५॥
जयति जय जयति हरिभक्त अम्बुज दिने-
शं जयति दीननाथं मुनीशम् ।
जयति हरि भक्त रसराज अमृत उदधि
मग्न जय जपति सब जगत ईशम् ॥६॥

जयति जय भक्तवाञ्छा कलपतरु अमित
रूप सब राग-रागिनी सिन्धो।
जयति राधारमन पाइ आज्ञा अवनि
प्रगट युग-युग विषै रसिक-बन्धो ॥७॥
जयति जय आदि मधि अन्तरैक रस सदा,
हरिप्रिया रूप निज धामवासी।
भणत 'गोविन्द' सुर संकल गुरुवर सुयश
जा प्रभु महावाणी प्रकाशी ॥८॥५१७॥

* पद *

जयति जय हरिप्रिया स्वामिनी भामिनी,
महा अभिरामिनी कृपा की जय।
सकल सुख भवन राधारमन पद कमल
अमल की मोहि नित सेव दीजै ॥१॥ टेक॥
जयति प्यारी प्रिया सहचरी रंगभरी,
भक्त जन दुख हरी करी गवनी।
जयति जय महल की टहल परवीन
आधीन तुव सर्वदा रवन-रवनी ॥२॥
जयति उरमाल छवि जाल अति राजहीं,
छाजही हार अति चार मोती।
जयति कर मुद्रिका पहोंची के चूर चूरी,
कटक झूमफन विमल जोति ॥३॥

जयति मुख कोटि राकेश छवि लाजहीं,
आज हीं रत्नमय कर्णफूला।
माँग गुलिकन रचित अमित हीरन खचित,
शीश दिवि फूल शोभा अतूला॥
जैति गज-मुक्त नथ अकथ छवि फवि रही,
युगल छवि भरे दृग-कमल मंता।
जैति दिवित तप्त हाटक वरनि तरणि मणि,
चरनि नूपुर धरनि छवि अनन्ता॥५॥
पदा भूषण विविध भाँतिकी कान्ति नख-
पाँति को देख मन्थन लजावे।
धन्य बड़ भाग नर तासु अनुराग वश,
जासु हिय लाग ए ध्यान आवै॥६॥
श्वेत सारी किनारी जरद सोहहीं,
मोहही छवि निरखि छवि सुचारा।
नील लहंगा सुमहंगा वन्यो कञ्चुकी,
लाल मधि रंग बूटी अपारा॥७॥
जयति जय पाइ आज्ञा युगल कुवँरकी,
देवि नित जीउ उद्धार काजै।
अवनि में प्रगट हरिव्यास होइ अवतरी
संग लै आपुनो निज समाजैं॥८॥
जो कृपा सागरी हरिप्रिया नागरी
रूप गुन आगरी अति उदारा।

प्रणत "गोविन्द" सु उरसि मम स्वामिनी,
धरो श्रीयुगल को नित विहारा ॥६॥५१८॥

* श्लोक *

हरिप्रियामहं वन्दे राधाराधनतत्पराम् ।
यत्कृपाकणमात्रेण कुंजकेलिरसोदयः ॥१॥

* दोहा *

राधाराधन-तत्परा वन्दहु हरिप्रिय आलि ।
लहत कृपा-कणमात्र जिहि, कुंजकेलि रसजाल ॥१॥

* छप्पय *

हरिप्रिय युग-आदेश मही ब्रज में प्रगटायी ।
श्री भट गुरु के अंक लखेउ जब युगल सुहायी ॥
लै दीक्षा वट वेणु लखेउ युग योग सो पीठा ।
रंगदेवी कर चवँर पृष्ठ थित झाँकी मीठा ॥
लिखेउ महावाणी सोई रही छवि जो चखत भर ।
जय आचार्य हरिव्यास मुनि, रसिक राज राजेश्वर ॥१॥

* दोहा *

नमो कार्त्ति वदि द्वादशी, प्रगटी मंगलमूल ।
हरिप्रिया हरिव्यास वन, प्रगटी यमुना-कूले ॥१॥

* बड़ा मंगल *

(१)

जय जय श्रीहरिव्यास आचार्य हरिप्रिया अली ।
युगल सु इच्छा रूप महल टहली पली ॥

द्वितीय रूप वैकुण्ठ सु तुलसीमाल है।
तिहि सँग प्रगटी आपु मधूपुर बाल है॥
मधूपुर सो बाल प्रगटी गात तिय बड़ भाग से।
आजु देखी दिन जु आयो रसिक हिय के लाग से।
धन्य कार्त्तिकी कृष्ण द्वादशी रंग रली॥१॥

(२)

जय हरिव्यास अचार्य गुरु चरनन परे।
तिनकी आज्ञा पाय प्रदच्छिण गिर करे॥
पूछेउ देखेउ युगल अंक नाहीं जवै।
द्वादश वर्ष प्रदच्छ बहुरि कीनी तवै॥
बहुरि कीनी तवै गुरुवर राखे लालन अंक है।
चरण नाय सु शरण लीनी भये रसिक रस वंक है।
सतत सिन्धु-रस मगन नाम युग मुख धरे॥२॥

(३)

जय हरिव्यास अचार्य कृपा गुरुपद लही।
जो रसिकन रस रीति महल की अलि गही॥
वंशीवट सुठि छाँह पीठ सुठि योग लख।
परसेउ युगलकिशोर भयउ उर अति हरष॥
भयउ उर अति हरष मनिवर कहेउ यह ही महल है।
भरम भूलो रसिक नहिं कोउ इह कृपा रस सहल है।
सो बृन्दावन धाम रसिक जन रज गही॥३॥

(१)

जय हरिव्यास अचार्य समाधि रस भरं।
लिखी मंजु महावाणी कृपा रसिकन धरे॥
रत्नांजलि भागौत व्याख्या मुनि लिखी।
कीनी खेचरि शिष्य महल रस सुख सखी॥
महल रस सुख सखी कीनी सुयश चाँदनी जग तनी।
नहीं कोऊ रसिक ऐसो जो न जाने यह दुनी॥
"गंगअली" पद-रेणु प्रतिछण सिर धरे॥१४॥५१६॥

* छोटा मंगल *

जो हरिव्यास देह नहि धारत।
मोहन-महल महानिधि कोटरि कौन कपाट उघारत॥१॥
नन्दनन्दन वसुदेव सुनन्दन ये दोउ सब जानत।
इन सर्वोपरि ललना लालन को पहँचान करावत॥२॥
नीर-छीर वत मिलेउ जु श्रुति रस, को तिहि श्रवण सुनावत।
को सब तज भज महावाणी जस रस निधि ग्रन्थ रचावत॥३॥
अष्टयाम मंजुल सेवा प्रिय कौन दृगन दरसावत।
रसिक जनन हित लिख सिद्धान्तन को रस पथ परचावत॥४॥
श्रुतिप्रतिपाद्य महामाया जो यह जग सृष्टि बनावत।
ताके गले बाँधि कंठी को श्रीहरिनाम सुनावत॥५॥
को वेदान्त कामधेनु को दुहि-दुहि दूध पिवावत
को वेदान्त पारिजातहु की छाया सघन बिठावत॥६॥

तिहि सौरभ मकरन्द सुहावन नासा कौन सुँघावत।
सुमिरण प्रात ही युगल लाडले को रस-सिन्धु चितावत ॥७॥
युगल मन्त्र मुनि कहे सुहावन को जन मन्त्र सुनावत।
श्यामबिन्दु सुठे गोपीचन्दन कौन ललाट लगावत ॥८॥
कण्ठी गले दुलहरी धारी युगल जु झाँकी छावत।
ताहि कौन ब्रजवासिन गल में बिन हरिव्यास बँधावत ॥९॥
"रसो वै सः" जो रस श्रुति गावत को विस्तार जनावत।
को हरिव्यासी नाम सुहावन सुखद सुशाखा छावत ॥१०॥
अमित जीव भव सिन्धु परेनको को रस-सिन्धु न्हवावत।
"गंगअलिहु" कृपा-कोर लहि, रसमय सरित बहावत ॥११॥

* श्रीमहावणीजीका बड़ा मंगल *

* दोहा *

नित्य विहारिनि लाड़िली, नित्य नवीन किशोर।
श्रीहरिप्रिया लडावहीं, जो सबको शिरमौर ॥१॥
वाणी जग में अमित हैं, तिन सबके सिरताज।
महावाणी याते कही मधुर सिन्धु रस राज ॥२॥
न भयो नहै न होयगो महावाणी सम ग्रन्थ।
सांगोपांग उपासना, परम प्रेम पुनि पन्थ ॥३॥

* मंगल *

(१)

जय जय श्रीमहावाणी प्रेम रस दायिनी।
महामधुर रस सार रसिक मन भायनी ॥

जामें नित्य विहार युगल जस गायनी ।
लीला रहस्य निकुञ्ज अमित सुख पायनी ॥
पायनी लीला ललन की सहचरी नित लाडही ।
एक पलक न बिलग दोऊ, तदपि रति चित चाडही ॥
विविध भाँति विहार विलसत, सुरत सुखनिधि बाढ़हीं ।
सखिन उर-सर करत निशिदिन, विमल छविनिधि गाढहीं ॥१॥

(२)

जय जय श्रीमहावाणी रसनिधि है भरी ।
रसिक जनन हित मोद आप परगट करी ॥
पंच पदी रस अथ पंच सुख में धरी ।
सेवा उत्सव सुरत सहज सिद्धान्त खरी ॥
खरी सुख सिद्धान्त बरनत निगम पार न पावहीं ।
रहत आगम थकित सब श्रुति सूत्र काहे मुकलावहीं ॥
अति अमित ऐश्वर्य अति माधुर्य नेति सुनावहीं ।
सोई वृन्दाविपिन अधिपति युगल रसिकनी गावहीं ॥२॥

(३)

जै जै श्रीमहावाणी मधुर रस वर्षणी ।
चातक रसिकनि वृन्द पीवत रस हर्षणी ॥
दिव्य कनकमय भूमि चित्त आकर्षनी ।
अमल अमित दल कमल रूप सुख सर्षनी ॥
सर्षनो जेहि रूप अद्‌भुत चिदानन्द प्रकाशही ।
अमित कुंजनि मध्य केशर, नित्य निकुंज सुभाषही ॥

महल मोहन मध्य दंपति, विविध केलि विलासही ।
महारस माधुर्य सिन्धु श्रीहरिप्रिया बल चासही ॥३॥

(४)

जै जै श्रीमहावाणी सर्वोपरि राजही ।
पराभक्ति फल देन प्रेम रस साजही ॥
सब रस के रससार सुखद जन काजही ।
प्रेम सहित करै गान सुनत तम भाजही ।
भाजही तम हृदय जनके नित्य लीला जगमगे ।
श्रीराधाकृष्ण स्वरूप बिन कछु और मन रुचि नहि लगे ॥
पगै रस माधुर्य निशिदिन, विश्व सोवत सो जगे ।
श्रीहरिप्रिया अलि गोमती हिए, प्यारी-पिय-रस-रंग-रंगे ॥४॥

छोटा मंगल

नमो नमो जय श्री महावाणी ।
रसिक अनन्यन की सुखदायक,
परा प्रेम रस केलि सु सानी ॥१॥
लाडिली लाल रसाल अंस भुज,
मंद मंद जामें मुसक्यानी ।
अली गोमती श्री हरिप्रिया सहचरी,
चन्द्रप्रभा दम्पति मन मानी ॥२॥५२२॥

—❀:०:❀—